आरोग्य का

स्वमूत्र

लेखक
रावजीभाओ मणिभाओ पटेल
अनुवादक और संपादक
हंसराज 'हंस'

आरोग्यका अमूल्य साधन

(स्वमूत्र)

[गुजराती 'मानव-मूत्र' का हिन्दी अनुवाद]

लेखक
रावजीभाओी मणिभाओी पटेल
संयोजक, भारत सेवक समाज, गुजरात
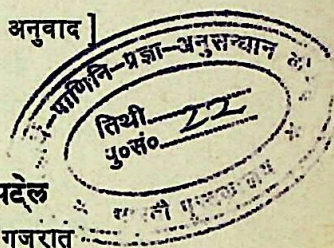
अनुवादक और संपादक
हंसराज 'हंस'

वक्तव्य
श्री मोरारजीभाओी देसाओी

प्रस्तावना
काका कालेलकर

भारत सेवक समाज प्रकाशन

प्रकाशक
भारत सेवक समाज, गुजरातकी ओरसे
पन्नालाल बालाभाअी झवेरी
पानकोर नाका, अहमदाबाद

मुद्रक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद – १४

प्रथम संस्करण, ५००० प्रति, मअी, १९६१

☞ अुपचारके बारेमें पत्रव्यवहारका पता :—
व्यवस्थापक
प्राचीन चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र
लाल बंगला, हरिजन आश्रम
अहमदाबाद–१३

प्राप्तिस्थान
भारत सेवक समाज
लालभाअी सेठका वंडा
पानकोर नाका, अहमदाबाद–१

मूल्य रु० ३.५०

समर्पण

दरिद्र अेवं पीडित जनताको रोग-निवारणार्थ
श्रद्धापूर्वक स्वमूत्रका अुपयोग करनेकी
आशा सहित

प्रकाशकीय

मूल गुजराती पुस्तक — 'मानव-मूत्र' का प्रथम संस्करण मार्च १९५९ में प्रकाशित हुआ और पांचवां संस्करण अक्तूबर १९६० में। अर्थात् क़रीब डेढ़ बरसमें १३ हज़ार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं और छठे संस्करणकी तैयारी है। यह साफ़ मालूम होता है कि रोगपीडित जनताने अिससे काफ़ी फ़ायदा अुठाया है और पुस्तक-प्रकाशनके अुद्देश्यको सार्थक करनेमें हमारी मदद की है। जिसके लिये हम अुसके आभारी हैं।

देशके अन्य प्रांतोंकी मांग ओर अुपयोगिताको ध्यानमें रखकर राष्ट्रभाषा हिन्दीमें यह संस्करण प्रकाशित किया गया है। अनुवादक श्री हंसराजने गुजराती संकलनको क्रमबद्ध अेवं व्यवस्थित करनेका भरसक प्रयत्न किया है, जिससे मार्गदर्शन सरल हो गया है तथा अुपयोगिता बढ़ गयी है। आशा है कि भारतकी जनता अधिकसे अधिक लाभ अुठाकर हमारे प्रयत्नको सार्थक करेगी और हमारे अुत्साहमें वृद्धि।

यह सूचित करते हुअे हमें खुशी होती है कि मूत्रचिकित्सा केन्द्रके लिये हरिजन आश्रम, साबरमतीके ट्रस्टियोंने १५०० मुरब्बा गज़ ज़मीन देनेकी अुदारता की है। परंतु अभी तो हरिजन आश्रमके लाल बंगलेके किरायेके भागमें १४ अगस्त १९६० को 'प्राचीन चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र' शुरू कर दिया है; जिसमें दस रोगियोंके रखनेकी व्यवस्था है।

अिसे पढ़कर जो व्यक्ति, सरल, अमूल्य अेवं अचूक मूत्रोपचारको अपनाकर अपने रोगसे छुटकारा पायें और स्वस्थ बनें वे अपनी रोग-मुक्तिका विवरण भेजकर लोकहितके कार्यमें सहयोग दें।

अहमदाबाद
ता० १५–५–'६१

पन्नालाल झवेरी
मानद मंत्री, भारत सेवक समाज, गुजरात

वक्तव्य

बड़ी अुमरमें और अस्वस्थ दशामें श्री रावजीभाअीने मूत्र-चिकित्साका नया प्रयोग खुद आज़माया और लाभ अुठाया। लोक-हितके लिये अितनी शक्ति अेवं हिम्मतसे अिस प्रयोगका प्रचार किया और अनुभव जुटाया कि जिसे देखकर नौजवानका सिर भी नीचा हो जाय, और यह छोटी (अब बड़ी—सं०) पुस्तक तैयार कर डाली। शुरूसे ही अुन्होंने मुझे अपने अिस प्रयोगसे परिचित रखा था, और जॉन डब्ल्यू० आर्मस्ट्रॉङ्गकी पुस्तक—'दी वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' मुझे भेज दी थी। किसी दवा पर आधार न रखते हुअे केवल मूत्रसे अनेक रोगोंको दूर करनेकी चिकित्सा-पद्धतिकी गणना नैसर्गिक अुपचारमें की जा सकती है। परन्तु सामान्य रूपसे जिसे नैसर्गिक अुपचार कहा जाता है, अुसमें अिस अुपचारका समावेश नहीं किया गया है।

किसी भी वैज्ञानिक विषयमें प्रयोगोंके अनुभवसे जो सिद्धियां मिलती हैं, मुख्यतः वही अधार-शिला होती हैं। अिसमें किसी भी प्रकारके चमत्कार या गुप्त कारण या भेदके लिये स्थान नहीं हो सकता। मैं नहीं जानता हूं कि मूत्रचिकित्साके बारेमें आर्मस्ट्रॉङ्गकी पुस्तकके अतिरिक्त कोअी अन्य पुस्तक भी है। यूं तो आयुर्वेदमें मनुष्यके अतिरिक्त भिन्न-भिन्न प्राणियोंके मूत्रका औषधके रूपमें अुपयोग बताया है और साथ ही अुसके सफल अुपयोगका अुल्लेख भी मिलता है। परन्तु हर किसी रोगमें मूत्रके अुपयोगका अनुभव जिस ढंगसे अिस पुस्तकमें प्रस्तुत किया गया है, वह सबके आकर्षणका विषय है। अभी और अधिक प्रयोग किये जायें और अुपलब्ध अनुभवोंके आधार पर सारी चिकित्सा-पद्धति व्यवस्थित हो जाय, तो मामूली खर्चसे अनेक असाध्य रोगोंको दूर करनेमें खासी मदद मिले।

अिस चिकित्सामें मुख्य कठिनाअी यह है कि मूत्रके नामसे ही शरम और नफ़रत आती है। अिसलिये लोगोंकी मनोवृत्तिमें अितना परिवर्तन हो जाना चाहिये कि वे अन्य गंधवाली और बे-स्वाद दवाअियोंकी तरह मूत्र पी सकें तथा अुससे मालिश कर सकें। लेखकने अिस बारेमें खास मेहनत की है। अपने और स्वजनोंके अनुभवोंके अतिरिक्त शिक्षित अेवं अशिक्षित भाअी-बहनोंके अनुभव भी दिये हैं। श्री बापालाल वैद्यका अेक अनुभवसिद्ध लेख भी अिसमें है। परिशिष्टमें मार्गदर्शक प्रश्नोत्तरीके रूपमें श्री रावजीभाअीने अिस चिकित्साका रहस्य प्रस्तुत किया है, जो पाठकके अनेक संशयोंको दूर करनेमें सहायक सिद्ध होगा। अिस युगमें आये दिन विलक्षण अगणित दवाअें बड़े पैमाने पर तैयार होती रहती हैं। मुझे आशा है कि अैसे युगमें यह सुन्दर अेवं सरल चिकित्सापद्धति अपना योग्य स्थान प्राप्त करेगी।

ता० १२–१–'५९ मोरारजी देसाअी

अपनी बात

"न जाना जानकीपतिने कि प्रातःकाल क्या होगा!"

राजसिंहासनके बजाय वनवास मिला, फिर भी रामका चेहरा हंसता ही रहा और अुन्होंने अुसी हर्ष अेवं अुल्लासके साथ वल्कल पहनकर वनकी राह ली। अिन प्रकरणोंको लिखनेमें कुछ अैसा ही हुआ है। जीवनभर मैं राजनीतिके मैदानमें खेलता रहा और समाज-सेवाका मज़ा लूटता रहा। वैसा जीवन जीनेमें तो यथासंभव मैंने संयमसे काम लिया है। मनके घोड़ेकी लगामको क़ाबूमें रखनेकी काफ़ी कोशिश की है। अिसमें मुझे सुख अेवं आनन्दका अनुभव हुआ है। आखिर आत्मसन्तोष ही सच्चा सुख है। और अिस आत्म-सन्तोषकी प्राप्तिके लिये मैं सदा लालायित रहा हूं। अिस प्रकार जीकर अेक साधारण मानवके नाते अपनी जीवन-कथा 'जीवननां झरणां' के दूसरे भागमें लिखकर मैंने संतोष माना है। और मानो मैं जीवनसे निवृत्त होकर परम मित्र मृत्युकी राह देखता हुआ शान्तिसे बैठा था।

परन्तु यहां क्या अपनी मरज़ीसे काम होता है? '**अीश्वरेच्छा बलीयसी**' के न्यायसे सभी काम होते रहते हैं। अैसा ही हुआ। मेरे सिर पर तो मौत नाच रही थी। अीश्वरने मुझे अैसी प्रवृत्तिमें डाल दिया, जिसका जीवनमें कभी स्वप्न तक भी न आया था। मैं तो पीडाहीन जीवन जीनेके लिये प्रयत्नशील था कि अनायास ही मेरे सामने मूत्रोपचारके प्रचारका कार्य अकस्मात् अुपस्थित हो गया। आयुर्वेद, अॅलोपैथी, होमियोपैथी, नेचरोपैथी, हाअीड्रोपैथी या बायोकॅमिक; अैसी किसी चिकित्सा-पद्धतिको मेरी बला जाने। भला मेरा अिनसे क्या वास्ता? मैं तो अिनके अटपटे नामोंका अुच्चारण भी न कर पाअूं और मुझे अिसका दुःख भी नहीं है। अैसे क्षेत्रमें अीश्वरने मुझे डाल

दिया। किस लिये? मुझे कुछ पता नहीं। फिर भी मैं अिस ओर क्यों आकृष्ट हुआ? अिसलिये कि वह सर्वात्मा हम सबमें ओतप्रोत है। दुःखियोंकी सेवाका अवसर मिलता हो तो स्वर्गको ठुकरा कर भी मैं नरकमें जानेके लिये तैयार हूं, अैसी मेरी वृत्ति और हिम्मत है सही। गांधीजी तो गुणोंके सागर थे, परन्तु मेरी अितनी सामर्थ्य कहां कि अुनके दो चार गुणोंको भी अपना सकता। फिर भी महात्माजीके लोकसेवाके गुणको समझने और अपनानेके लिये मैं प्रयत्नशील रहता था। परन्तु सेवाधर्म तो परम गहन है और सेवा करना लोहेके चने चबाना है अेवं कांटोंका ताज पहनना है। कोअी मरजीवा ही अुन्हें हज़म कर सकता है और सिर पर रख सकता है। बापूके सहवासमें मैं लोकसेवाके गुणको थोड़ा-बहुत सीख पाया और अिसीमें मैंने सन्तोष माना।

प्रभु तो अन्तर्यामी ठहरे। लोकसेवाके सीखे हुअे गणको चरितार्थ करनेका अवसर मेरे लिये प्रस्तुत कर दिया। लोग तो मूत्रके नामसे ही नाक-भौं चढ़ाने लगते हैं, अुसकी चिकित्साकी बात तो दर-किनार। मानो मेरी श्रद्धा अेवं निष्ठाकी परीक्षा करनेके लिये मूत्र-चिकित्सा जैसी घिनौनी चीज़ अीश्वरने मेरे सामने अुपस्थित कर दी और अुसे अपनानेके लिये प्रेरित किया। अब मैं मौतकी घड़ियां गिनना छोड़कर मूत्रोपचारके प्रचारमें जुट गया। 'हिम्मते मरदां मददे खुदा' के न्यायसे जहां-तहांसे अेकके बाद अेक मुझे सहायक मिलने लगे और अपने अपने पुराने अनुभव सुनाने लगे। जिससे मेरे हृदयमें श्रद्धाका बीज अंकुरित हुआ।

मैंने मूत्रोपचारके प्रश्न पर न तो आयुर्वेदिक दृष्टिसे विचार किया है और न ही डाक्टरी दृष्टिसे। मुझे अिसकी ज़रूरत भी महसूस नहीं होती। कुशलसे कुशल डाक्टर, धन्वन्तरी जैसे वैद्य और लुक़मान-से हकीम भी विश्वकर्माकी सृष्टिको समझ नहीं पाते हैं। अुसकी सृष्टि तो श्रद्धाका विषय है। मैं क़ुदरतमें श्रद्धा रखता हूं। मूत्र

किसी प्रचलित चिकित्सा-शास्त्रका विषय नहीं है। यह तो जीवमात्रके लिये अीश्वरकी अपूर्व देन है। प्राकृतिक वनस्पतियोंके अभ्याससे आयुर्वेदका जन्म हुआ होगा। मूत्रकी देन तो अुससे भी पहले की है और यह देन विध्यात्मक है, नकारात्मक नहीं। अीश्वरने जीवको अपने शरीरकी रक्षाके लिये यह साधन जन्मसे ही दिया है। अिसलिये यह किसी रोगका अुपाय नहीं है, किन्तु शारीरिक स्वास्थ्यका साधन है। यह श्रद्धा मेरे हृदयमें घर कर गयी। कैसे? क्यों? किस आधार पर? अैसे प्रश्न अपने-आपको पूछकर मैंने दीर्घसूत्री बननेकी धृष्टता नहीं की। सूर्य है। मैं देखता हूं। भला, अुसे सिद्ध करनेके लिये किसी युक्तिकी ज़रूरत है क्या? अीश्वरने मनुष्य या किसी भी जीवजन्तुके शारीरिक स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये वैद्यकी रचना नहीं की है। परन्तु अुसके लिये हर अेकको साधन दे दिया है। यह अटल अेवं सच्ची श्रद्धाकी बात है। फिर जीव अपनी मूर्खतासे चाहे जैसा आचरण करे। और मानवने तो विश्वके सभी छोटे-बड़े जीव-जन्तुओंकी अपेक्षा अधिक मूर्ख बनकर अपने लिये चिकित्सकोंकी संस्था खड़ी कर डाली। भले अैसा हुआ; परन्तु अिस कारण असल बातको किस लिये तिलांजलि दी जाय? जिस मनुष्यके शरीरकी रचना करके अीश्वरने कमाल कर दिया, अुस मनुष्यको अुसने परावलम्वी बनाया होगा? और दूसरे जीव-जन्तु, पशु-पक्षी और कीट-पतंगको स्वावलम्बी बनाया! अीश्वरने तो जीवमात्रका शरीर संपूर्ण अेवं स्वाधीन बनाया है और अुस संपूर्णता अेवं स्वाधीनताको क़ायम रखनेके लिये प्रत्येकको अपना-अपना साधन दे दिया है। यह बात आजके सुसंस्कृत तथा सभ्य (कलचर्ड अॅन्ड सिविलाअीज़्ड) माने जानेवाले समाजको चाहे अरुचिकर लगती हो; परन्तु यह नग्न सत्य है, सूर्यकी भांति स्वयं प्रकाशित है। अिस सत्यके प्रकाशको कहां तक छिपाये रखा जा सकता है?

अैसे अनेक प्रश्न मेरे सामने अुपस्थित हुअे और मेरे दिलमें बस गया कि जगतकी पीडित मानवजातिकी सेवा करनेके लिये यह विशाल

क्षेत्र है ही। मैं नाचीज़ क्या कर सकूंगा, अिसे मैं नहीं जानता हूं। न मुझमें सामर्थ्य है और न मेरी शारीरिक स्थिति है। फिर भी प्रभुने जिस प्रकाशसे मेरे हृदयका अंधकार दूर किया है, अुस प्रकाशसे दूसरोंके हृदयका अंधकार दूर कर पाअूं तो मैं कृतार्थ हो जाअूं, अिस भावनासे अिन प्रकरणोंको लिखने बैठा हूं। परन्तु लिखने मात्रसे यह महान् कार्य सिद्ध नहीं होगा; क्योंकि अिस कार्यके सिद्ध होनेमें जहां अनेक अनुकूलताअें हैं वहां सिद्धिके लिये बाधक कुछ प्रतिकूलताअें भी हैं। अनुकूलताअें ये हैं :— (१) मूत्र अीश्वरदत्त है। (२) शरीरके स्वास्थ्यकी किसी भी प्रकारकी कमीको पूरा करनेके लिये यही अेक अद्‌भुत और वैज्ञानिक दृष्टिसे संपूर्ण द्रव्य है। (३) यह अर्थ और गुणकी दृष्टिसे अमूल्य है। अिसका अुपयोग करनेके लिये धातु या काग़ज़के सिक्कोंकी जरूरत नहीं है; किन्तु श्रद्धा और निष्ठा अपेक्षित है। (४) और किसी भी पदार्थकी अपेक्षा यह अधिक प्रभावशाली है। (५) आयुर्वेदने अिसे विषघ्न अेवं रसायन कहा है। 'विषघ्न' अर्थात् शरीरके आन्तरिक तथा बाह्य विषका नाशक और 'रसायन' अर्थात् वृद्धावस्थाको रोक कर रोगरहित यौवन देनेवाला है। (६) यह निर्दोष है अर्थात् अिसके अुपयोगसे किसी भी प्रकारकी हानि नहीं होती। अैसे कल्याणकारी द्रव्यका महत्त्व जनताके हृदय पर अंकित किया जा सके तो अिससे जनताकी और आयुर्वेदकी बड़ी से बड़ी सेवा होगी। यह सच है कि आयुर्वेदके प्रति मुझे पक्षपात है; फिर भी मैं यह मानने लगा हूं कि मूत्रचिकित्सा आयुर्वेदकी जननी है। मेरे अिस कथनसे कोअी आयुर्वेदका भक्त व्याकुल अेवं खिन्न न हो। वह सोच-समझकर निर्णय करे, फिर भी मेरी बात अुसे मंजूर न हो और मूत्रोपचारको आयुर्वेदका अेक अंग माने तो भी मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। और यह अेक विशेष अनुकूलता है कि हमारे देशकी दरिद्र अेवं रोग-पीडित जनता अिस अुपचारको तुरन्त अपना लेगी; क्योंकि वह प्रचलित चिकित्सापद्धतिकी दवाओंके बोझसे शारीरिक,

मानसिक और आर्थिक दृष्टिसे शोषित अेवं सत्त्वहीन हो गयी है और तंग आ गयी है।

अब प्रतिकूलताअें बतायी जाती हैं:—(१) मूत्र समाजमें घृणापात्र समझा जाता है और अुसके स्वाद तथा गंधके बारेमें अेक झूटा खयाल बन गया है। (२) हम यह मान बैठे हैं कि मूत्र द्वारा शरीरमें से ज़हर निकलता है और अिस मान्यताका प्रचार भी किया जाता है। (३) सैंकड़ों बरसोंसे मूत्रचिकित्सा बंद है, अिसलिये अुसके अुपयोगकी शास्त्रीय पद्धतिका ज्ञान नहीं है। (४) मूत्रोपचारमें यथोचित परहेज़ रखनेमें हम लापरवाह हैं और आहार-विहारमें संयमी नहीं हैं। (५) आधुनिक समाज यह समझता है कि मूत्र-चिकित्सा तो अुच्च अेवं सांस्कृतिक जीवनके विरुद्ध है। (६) अन्य चिकित्सापद्धतियोंके व्यवसायी अपने निहित स्वार्थोंकी रक्षाके लिये, स्वच्छता, संस्कृति अेवं सभ्यताकी दुहाअी देकर मूत्रोपचारका विरोध जी-जानसे करते हैं, जिससे अुपर्युक्त प्रतिकूलताअें और दृढ बनती हैं। यद्यपि अनेक वैद्य यह मानते हैं कि मूत्रचिकित्सा आयुर्वेदका अेक अंग है, तथापि धनार्थी वैद्य अिसके विरुद्ध प्रचारमें सहयोग देते होंगे। (७) हममें और हमारे समाजमें अितनी नैतिक हिम्मत नहीं है कि अपने कल्याणके लिये झूठी मान्यताओं और कुविचारोंको ठुकरा कर सत्य आचरण कर सकें।

अुपर्युक्त प्रतिकूलताओंके होते हुअे भी मेरा दृढ विश्वास है कि आयुर्वेदके अनुभवी पंडित सत्यनिष्ठासे प्रयत्न करें तो मूत्रचिकित्सा द्वारा रोगको दबानेवाली डाक्टरी पद्धतिको नामशेष नहीं तो प्रभावहीनं बनाकर भारतकी जनताको अुसके शिकंजेमें से छुड़ाया जा सकता है। अिसके लिये आयुर्वेदके भक्तोंको तप करना होगा, अन्वेषण करना होगा और अपने जीवनका बलिदान देना होगा। अब तो डाक्टरी चिकित्सा सीमाका अुल्लंघन करने लगी है। अिसमें शक नहीं कि सदाचारी, परोपकारी और निःस्वार्थी डाक्टर भी हैं। परन्तु आटेमें नमकके

समान! अुनकी आवाज़ नक़्क़ारखानेमें तूती जैसी है! कुछ भले और साफ़दिल डाक्टर तो कह देते हैं — "डाक्टरीका पेशा सीखा है, अिसलिये यह पेशा करते हैं। सच पूछें तो हम निमित्तमात्र हैं, हम डाक्टरकी अपेक्षा दवा बनानेवालों और दवा बेचनेवालोंके दलाल अधिक हैं।" (और कुछ सरलहृदय डाक्टर गुपचुप यह स्वीकार कर लेते हैं कि बुखार या जुकाममें वे खुद तो चिरायतेके काढ़ेका या हरड़का अुपयोग करते हैं और रोगीको अेकाध रुपयेका अिंजेक्शन लगाकर पांच-सात रुपये ले लेते हैं।) डाक्टरीके प्रमाणपत्रको सार्थक करनेवाले और रोगीको सचमुच आराम देनेवाले कुशल डाक्टर तो हज़ारमें से सौ-पचास होंगे। बाक़ी सब तो अुन्हीं कुशल डाक्टरोंके बलपर निभते हैं और अपनी सनदके आधार पर कमा खाते हैं। फिर भी समर्थ और असमर्थ डाक्टर दोनों परस्पर पोषक हैं और अेक-दूसरेके सहारे समाज पर अपूर्व प्रभुत्व रखते हैं। समाजका कल्याण करके वे प्रभुत्व जमायें तो यह चिन्ताकी बात नहीं है। परन्तु दुःख तो अिसलिये होता है कि वे समाजके तन, मन और धनको नष्ट करके प्रभुत्व जमाते हैं। समाजका कोअी भी अंग अपनी भौतिक या आध्यात्मिक शक्तिसे अधिकार जमाये तो यह आपत्तिजनक नहीं है; परन्तु अैसी किसी शक्ति बिना ही जगत्का अुद्धारक अेवं दुःखहारक बनकर बैठ जाय और संसारका सत्यानाश करे तो अुसकी शिकायत करना कर्तव्य बन जाता है। विश्वमें आज-कल डाक्टरी पेशेकी कुछ अैसी दशा हो गयी है कि जगत्के रोगोंका नाश करनेके आन्दोलनमें वह निष्फल सिद्ध हुआ है। अितना ही नहीं, किन्तु पुराने रोग पहलेसे अधिक तीव्र हुअे हैं और नये-नये रोग पैदा हो गये हैं। दिन-प्रति-दिन किसी भी देशके गांव, क़सबे और शहर अधिक सुखसुविधावाले तथा स्वच्छ बनते जाते हैं, फिर भी वहां रोगोंकी और साथ ही डाक्टरों अेवं अन्य चिकित्सकोंकी

संख्या अनेकगुनी बढ़ती जाती है, यह अत्यन्त खेदका विषय है। अिस बारेमें अेक जीता-जागता दृष्टान्त प्रस्तुत करता हूं।

सन् १९३१–३२ में और सन् १९५७–५८ में अहमदाबादकी आबादी, म्युनिसिपलिटीका बजट और चिकित्सकोंकी संख्या अिस प्रकार है :—

शहरकी आबादी	सन्	म्युनि० का बजट	रजिस्टर्ड डाक्टर और वैद्य-हकीम
३,८२,०००	१९३१–३२	३०,८०,०००	२०० (लगभग)
९,७०,०००	१९५७–५८	३,०७,००,०००	८०० (लगभग)

ये हैं अहमदाबाद शहरकी प्रगतिके आंकड़े! अिनसे पता चलता है कि पिछले पच्चीस बरसमें शहरकी आबादी २५० प्रतिशत बढ़ी है। शहरको स्वस्थ, सुखी और सुन्दर बनानेके लिये सफ़ाअी, सेनिटेशन, सड़कें, नालियां, गुंजान आबादीके लिये नये आवास, छोटे-बड़े बाग़ आदि पर पच्चीस बरस पहले जो खर्च होता था, वह लगभग ९०० प्रतिशत बढ़ गया है। सुख अेवं स्वास्थ्य संबंधी म्युनिसिपलिटीके अिस बढ़े हुअे खर्चके अनुपातमें जनता पर आरोग्यके खर्चका बोझ कम होना चाहिये था, परन्तु अुस खर्चमें ४०० प्रतिशतकी वृद्धि हुअी है; क्योंकि जनता पर निभनेवाले डाक्टरों और वैद्य-हकीमोंकी संख्या चौगुनी हो गयी है। अिसका क्या कारण? प्रत्येक विचारशील व्यक्तिके लिये यह प्रश्न गंभीरतासे विचारणीय है। जनताका स्वास्थ्य सुधरनेके बजाय खूब बिगड़ा है, जो रोग थे वे अधिक तीव्र हुअे हैं और अनेक नये रोग पैदा हो गये हैं; अिस ठोस सत्यसे भला कोअी अिनकार कर सकता है? यह स्थिति केवल अहमदाबाद शहरकी ही नहीं है, परन्तु भारतके किसी भी छोटे-बड़े गांवकी, क़सबेकी और शहरकी अैसी ही चिन्ताजनक दशा है। अिसके लिये जिम्मेदार कौन? जो संस्था या वर्ग यह कहता है कि जनताके

आरोग्यकी ज़िम्मेदारी अुस पर है, वह रक्षक है, अुसीकी सेवामें मैं यह नग्न सत्य प्रस्तुत करता हूं।

सन् १९०९ में गांधीजीने 'हिन्द स्वराज' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें वकीलों और डाक्टरोंकी कड़ी आलोचना की गयी है। (वकालत, डाक्टरी और वेश्यावृत्ति, अिन तीनों पेशोंको अुन्होंने अेक कोटिका माना है।) ४९ वर्ष पूर्व जब मैंने अुनका चकित करनेवाला अभिप्राय 'हिन्द स्वराज' में पढ़ा, तब मुझे महसूस हुआ कि बापूजी जैसे सौम्य अेवं सन्त पुरुष स्वयं बैरिस्टर होकर भी जब अैसा कठोर अभिप्राय देते हैं तब अुसमें कुछ तथ्य तो होगा ही। और गांधीजी तो सदा सत्यकी खोजमें रहे, अतः वे अपने बदले हुअे विचार या अभिप्रायको, चाहे वह किसी कालका क्यों न रहा हो, तुरंत प्रकट कर देते थे। परन्तु अिस बारेमें अुन्होंने अैसा कुछ नहीं किया। स्वानुभवसे भी मुझे गांधीजी की अिस मान्यतामें संपूर्ण सत्यकी प्रतीति होती है। वकील, डाक्टर (वैद्य-हकीम) और वेश्या ये तीनों मानव तो हैं ही, अिसलिये अुनकी मानवता जिस हद तक अुनके पेशे पर प्रभुत्व जमाती हैं अुस हद तक वे सज्जन और समाजके लिये अुपकारी सिद्ध होते हैं। परन्तु जीवनभरका अनुभव तो यह बताता है कि धनार्थी वकालतने समाजके सामाजिक अेवं नैतिक स्वास्थ्यका नाश किया है। और अैसे ही चिकित्साके व्यवसायने जनताके शारीरिक स्वास्थ्यका सत्यानाश कर डाला है। थोड़े-बहुत जो सहृदय अेवं सज्जन वकील-डाक्टर हैं वे भी बिजलीके प्रकाश जैसी स्पष्ट अिस बातको नहीं मानते हैं और यदि मानते हों तो वे रूढिके चक्कर और दलबन्दीमें से निकलते नहीं हैं, यही दुःखकी बात है।

अिसलिये जनताको स्वयं सजग होना चाहिये और अिस प्रगतिके युगमें समाजके बुद्धिजीवी लोग सामाजिक, नैतिक और शारीरिक स्वास्थ्यका जो अुन्मूलन कर रहे हैं अुससे अपनी रक्षा करनेके लिये प्रयत्नशील अेवं कटिबद्ध होना चाहिये।

जले दिलसे अुपर्युक्त कठोर अेवं अप्रिय निवेदन करनेके लिये सहृदय पाठक मुझे क्षमा करें और अुसमें रहे हुअे सत्यका दर्शन अेवं चिन्तन करें। 'सुज्ञेषु किं बहुना।'

अन्तमें अपनी खास खुशीका ज़िक्र करना चाहता हूं। श्री मोरारजीभाअी देसाअी, वित्तमंत्री भारत सरकारने अिस पुस्तकके बारेमें अपना वक्तव्य लिखकर मुत्रोपचारकी यथार्थताका समर्थन किया है, जिससे मुझे खूब प्रोत्साहन मिला है और आनन्द भी। भला, स्वजनका कहीं अुपकार माना जाता है?

ता० ७–१२–'५८ रावजीभाअी मणिभाअी पटेल

विज्ञान-निष्ठाकी हिम्मत

आदमी अन्न खाता है, पानी पीता है और अिस तरह अपने शरीरको संतोष और पोषण देता है। शरीर अुस अन्न और पानीका पूरा-पूरा अुपयोग करके अुसमेंसे जो चीज़ कामकी नहीं, शरीरसे बाहर फेंक देता है। साथ-साथ शरीरके कअी दोष भी अुसके साथ निकल जाते हैं। पशु-पक्षियोंकी भी यही हालत है। सब प्राणी अपने शरीरके पोषणके लिये अन्न खाते हैं, पानी पीते हैं और शरीरके मलको मूत्र और विष्ठाके रूपमें बाहर फेंक देते हैं। सब प्राणी कभी-कभी अपनी विष्ठाको और मूत्रको सूंघते हैं और नाक अूंचा करके नफ़रत बताते हैं। सबसे पवित्र चीज़ है अन्न और पानी; और सबसे अपवित्र गंदी चीज़ है विष्ठा और मूत्र।

मनुष्यके शरीरसे और भी दो चीज़ें बाहर आती रहती हैं, वे हैं अुसका श्वास और पसीना। हम शुद्ध हवा पेटमें लेते हैं। अुसके द्वारा हमें रक्तशुद्धि-कारक प्राणवायु मिलती है। लेकिन जब हम वही हवा पेटसे बाहर निकालते हैं तब अुसमें प्राणवायुकी जगह प्राणनाशक कार्बन-डायोक्साअिड पाया जाता है। कभी-कभी मुंह या नाकसे निकलने-वाला श्वास दुर्गंधयुक्त भी होता है।

गर्मीके दिनोंमें और परिश्रम करने पर शरीरमें से पसीना निकलता है। वह भी अस्वच्छ पदार्थ है। कभी-कभी अुसकी गंध भी अच्छी नहीं होती।

क़ुदरती तौर पर मनुष्यके मनमें अपने शरीरसे निकलनेवाली अिन चारों चीज़ोंकी तरफ़ नफ़रत या घृणा होती है। अिसीलिये वह अिन क्रियाओंके बाद नहा लेता है और बार-बार शरीरको साफ़ करता रहता है।

किन्तु क़ुदरतके वहां कोअी चीज़ निकम्मी नहीं होती। जो प्राणनाशक वायु हम मुंहसे बाहर निकालते हैं, वही है वनस्पतिका आहार। और वनस्पति अपने पत्तोंके द्वारा जो प्राणवायु बाहर छोड़ती है, वह है मनुष्यका आहार। कअी पशु-पक्षी और मछलियां मनुष्यकी विष्ठा खा जाते हैं। मनुष्य भी अपनी विष्ठा और मूत्रका खाद बनाकर वनस्पतिको खिला देता है। और अिस तरह अुसका वनस्पतिमें रूपांतर होने पर कंद, मूल, फल, छाल, पत्ते, अंकुर, फूल या फलके रूपमें अुसे खा जाता है। वनस्पतिका व्यवहार दवाके तौर पर भी किया जाता है।

किसीने ठीक ही कहा है कि जिस तरह हम पेशाब करते हैं, टट्टी ज़ाते हैं, अुसी तरह अपने मुंहसे गंदी हवाको बाहर फेंक देते हैं। टट्टी जाना और पेशाब करना अगर नफ़रत-अंगेज़ (घृणास्पद) गंदी क्रिया है, तो मुंहसे श्वास बाहर निकालना भी अुतनी ही गंदी क्रिया है। लेकिन मुंहसे श्वास बाहर निकालनेकी अैसी गंदी क्रियाके द्वारा ही मनुष्यने अपने जीवनकी अेक सर्वश्रेष्ठ सिद्धि पायी है। मुंहमें से श्वास बाहर निकालनेसे ही मनुष्य बोलने लगा; और आगे जाकर गाने भी लगा। वाणी, भाषा, संभाषण, वक्तृता और संगीत — यह सब पेटमें से गंदी हवा बाहर फेंकनेकी क्रियाका ही फल है!!

मनुष्यकी जिज्ञासा अीश्वरकी सिसृक्षासे कम नहीं है। अीश्वर सृष्टिको पैदा करता है और मनुष्य अिस सृष्टिके सब व्यापारोंको समझना चाहता है। और समझने पर हरेक चीज़से और हरेक प्रक्रियासे लाभ अुठाना भी चाहता है। वनस्पति और खनिज धातु पर अनेक प्रयोग करके मनुष्यने दवाअियां और रसायन बनाये और वह रोगमुक्त होने लगा। क़ुदरती चीज़ोंमें से मनुष्यने तरह तरहके प्रयोग करके नशेका सामान भी ढूंढ़ निकाला। फल, गुड़, अनाज और दूध जब सड़ते हैं तब अुनमें से दुर्गंध पैदा होती है। ये चीज़ें फिर खाने लायक़ नहीं रहतीं। लेकिन मनुष्यने सड़ी हुअी चीज़ोंमें से भी शराब

आदि पेय तैयार किये और पेनिसिलिन आदि अद्‌भुत दवाअियां भी बनायीं। सजीव पनीरका व्यवहार पश्चिममें होता ही है।

हमारे आयुर्वेदने न जाने कितने प्रयोग किये होंगे। अुन्होंने दवाके तौर पर तरह तरहके रक्त और मांसका अुपयोग तो किया ही। लेकिन बिल्लीकी विष्ठा तक नहीं छोड़ी। पश्चिमके लोगोंने अूंटकी लीदमेंसे अमोनिया तैयार किया।

अब मनुष्य गाय-बैल आदि पशुओंके गोबर द्वारा और अपनी विष्ठा और मूत्रके द्वारा खादके अुपरांत गैस भी बनाने लगा है, जो घरमें दिया जलानेके और रसोअी बनानेके चूल्हे—स्टोवमें भी काम आता है।

आयुर्वेदने प्रयोग करके देखा कि गायके पेशावमें और गोबरमें कुछ विशेष गुण हैं। अुसने मनुष्यको सुझाया कि गायका दूध, दही, घी, मूत्र और गोबर सबके मिलाननेसे जो पंचगव्य होता है वह शरीर-शुद्धिके लिये बहुत ही मुफ़ीद है। लेकिन गायके मूत्रका और विष्ठाका सेवन कौन करे? धर्मने मददमें आकर नफ़रतको तोड़ दिया। जनेअू बदलनेके दिन सारे द्विजोंको पंचगव्य लेना ही पड़ता है। चन्द रोगोंमें गायका ताज़ा मूत्र रोगीको दिया जाता है। और हमने अैसे भी गौ-भक्त देखे हैं कि जो रोज़ सुबह अुठते ही गायके पीछे पीछे जाकर अुसका थोड़ासा मूत्र पेटमें ले ही लेते हैं। और अपनी अिस गौ-भक्तिका अिक़रार और प्रदर्शन भी करते हैं।

हमारे देशमें कअी जगह लोग गाय-भैंसके छान या गोबरसे कंडे या अुपले बनाते हैं। और अुनके जलनेके बाद अुनकी काली राख लेकर दांतको घिसते हैं। अनुभवी लोगोंका कहना है कि किसी भी टूथ पाअुडर या दंत-मंजनसे अैसी 'राखुंड़ी' की काली राख दांतके लिये अधिक मुफ़ीद है।

हमारे धर्माभिमानी लोग पश्चिमके लोगोंको कभी-कभी अभिमान पूर्वक समझाते है कि हमारे पुरखाओंकी विज्ञान-निष्टा आप लोगोंसे

कम नहीं थी। जो चीज़ हितकर साबित हुअी अुसका सेवन करते वे कभी भी हिचकिचाये नहीं। विज्ञानसे लाभ अुठाते अुन्होंने क़ुदरती नफ़रतको बीचमें आने नहीं दिया। हमारा पंचगव्यका सेवन अिसका अच्छेसे अच्छा सबूत है। आंखमेंसे जो अश्रु निकलते हैं अुनका भी अुपयोग आयुर्वेद में और यूनानी तिब्बमें दवाके तौर पर बताया है।

अिस तरह क़ुदरतमें जो जो चीज़ पायी जाती है अुसका अुपयोग ढूंढ़ते मनुष्यने कोअी भी चीज छोड़ी नहीं है।

मैं अेक दफ़ा योगका साहित्य पढ़ रहा था। आजकलका नहीं, प्राचीन कालका योग-साहित्य। अुसमें अेक जगहपर लिखा था कि कसरत करनेके बाद जो पसीना आता है अुसे मालिश करते करते चमड़ीके अन्दर ही सुखा देना चाहिये। बात पढ़ते विचित्र-सी लगी। कसरत करने पर या धूपमें बैठने पर जो पसीना आता है अुसके साथ चमड़ीके सूक्ष्म रंध्र या छेदमें अिकट्ठी हुअी गंदगी बाहर निकल जाती है। अैसी गंदगी दूर करनेके लिये हम लोग अक्सर शरीरको तेल लगाते हैं और बादमें गरम पानीसे नहाकर चमड़ीको साफ़ करते हैं। अथवा साबून लगाकर शरीरके सारे रोम-रंध्र साफ़ करते हैं। गरम पानीसे नहानेके बाद जो दूसरा पसीना आता है अुसे भी हम शरीर पर नहीं रहने देते। मोटा तौलिया लेकर पसीना चूस लेते हैं। अिसकी जगह शरीरका पसीना मालिश करके चमड़ीके अन्दर ही सुखा देनेका रिवाज बिलकुल गंदा-सा लगता है। लेकिन योगके ग्रंथोंमें अिसका लाभ बताया है। पूरी जांच किये बिना अुस सूचनाका हम विरोध न करें, अितना ही आज कह सकते हैं।

कोअी बात पुराने ग्रंथोंमें लिखी है, अिस वास्ते अुसे मानना ही चाहिये अैसी हमारी मनोवृत्ति नहीं है। पुराने लोग (ऋषि मुनि भी) ग़लती कर सकते हैं, ग़लत रास्तेपर जा भी सकते हैं; लेकिन पूरी जांच किये बिना किसी चीज़का स्वीकार करना जितना अंध विश्वास है अुतना ही पूरी जांचके बिना किसी चीज़का अस्वीकार करना,

विरोध करना या अुसे ग़लत-क़रार कर देना अंध विश्वास ही है। चाहे अुसे हम अंध अविश्वास कहें।

श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेल हमारे आश्रमके अेक पुराने आदरणीय साथी हैं। गांधीजीके साथ दक्षिण-अफ्रीकामें रह चुके हैं। न साहित्यिक होनेका अिनका दावा है, न कोअी डॉक्टर या वैद होनेका, तो भी आज तक अिन्होंने जो लिखा है वह अच्छे साहित्यमें शुमार हो चुका है। अिनके जीवन के प्रधान प्रेरक तत्त्व हैं सत्यनिष्ठा और समाजसेवा। अिसी कारण समाजमें अिनका प्रभाव है। अेक अंग्रेज़ी किताब पढ़कर अेक अिलाज अिनके हाथमें आया। मनुष्य अगर अपना ही पेशाव दवाके तौर पर ले ले तो कअी रोगोंसे वह मुक्त हो सकता है। अिन्होंने पूरी निष्ठासे और अुत्साहसे अिस अिलाजको आज़माया और अपनाया। अिसका सारा अितिहास रावजीभाअीने अिस कितावमें दिया है। सत्यनिष्ठा और विज्ञाननिष्ठाके वलपर सफलता पानेके वाद अुन्होंने अपना और अनेकोंका अनुभव अिस कितावमें दिया है। अिस अिलाजके प्रति जो क़ुदरती नफ़रत होती है वह अिस किताबको पढ़ते पढ़ते ढीली हो जाती है। निरोगी मनुष्य अिस अिलाजके प्रति आसानीसे सहानुभूति नहीं वता सकता। लेकिन रोगपीडित आदमी जव देखता है कि तरह तरहकी कड़वी, तीखी और महंगी दवाअें दीर्घकाल तक लेकर परेशान तो हो चुके हैं। अव यह तो अपने ही शरीरसे निकले हुअे आखरी पानीका (पेश-आवका) सेवन करनेकी वात है। तव देखें तो सही। मनुष्य हिम्मत करके अनुभव करने लगता है। अैसे लोगोंके अनुभव रावजीभाअीने अपनी किताबमें अिकट्ठा किये हैं। आरोग्यप्राप्तिके लिये मनुष्य क्या न करेगा? गायका पेशाव अगर पवित्र है, आरोग्यकर है, तो अपने ही पेशावका प्रयोग कर देखनेमें हरजा क्या है?

आजकल पश्चिमके वैदकमें अेक नया प्रयोग दाखिल हुआ है। मनुष्यके शरीरमेंसे अुसका गरम-गरम खून निकालकर फ़िर अुसीको

अुसके शरीरमें पिचकारी द्वारा अिन्जेक्ट करते हैं। शायद अुसे 'प्रोटीन शॉक' कहते होंगे। हमारे ही शरीरसे निकली हुअी चीज़ फिर शरीरमें डालनेसे कुछ अद्भुत परिणाम लाती है। क़ुदरतका मार्ग अद्भुत है।

अिसी तरह श्री रावजीभाअीने स्वमूत्रका अेक अिलाज आज़माया। अनेक लोगोंके अनुभव देख लिये। और केवल परोपकारके लिये अुसका वे प्रचार कर रहे हैं, अुनका कर्तव्य शायद यहां समाप्त होता है। श्री रावजीभाअीने गुजरातीमें जो किताब लिखी अुसकी कअी आवृत्तियां निकल चुकी हैं। अब व्यापक प्रचारके लिये वे यह हिन्दी आवृत्ति शाया कर रहे हैं। श्री ढेबरभाअी और श्री मोरारजीभाअी जैसोंके अभिप्राय अिन्होंने यहां दिये हैं। श्री रावजीभाअीकी अिस प्रवृत्तिका पुरस्कार करते श्री ढेबरभाअी कहते हैं कि 'अपने पेशाबके सेवनसे क्या क्या लाभ होता है सो तो रावजीभाअीने बताया। लेकिन सत्त्व, रज, तम तीन गुणोंके विस्तारका जिन्होंने अनुभव किया है अुनको चाहिये कि वे देखें अिस अिलाजसे शरीर पर या मनपर कोअी बुरा असर तो नहीं होता? केवल मनमें शंका लाकर हम बैठ नहीं सकते। संशोध-प्रवृत्ति चलानी ही चाहिये। श्री रावजीभाअी कहते हैं कि अुनके दो तीन सालके अनुभवमें कोअी बुरा असर नहीं पाया गया। लेकिन अितना सबूत बस नहीं है। संशोधका भी अपना अेक शास्त्र है। अुसके अनुसार बरसों तक शोध-खोज चलानी चाहिये। विज्ञानवेत्ता डॉक्टरोंका, वैद्योंका, हकीमोंका यह काम है।

मेरा अेक दूसरा भी सुझाव है।

जब दुनिया मलेरियाके बुखारसे परेशान हुअी तब किसीने ढूंढ़ निकाला कि सिंकोना पेड़की छाल अुबालकर अुसका कड़वा क्वाथ पीनेसे मलेरिया दूर हो सकता है। तुरन्त दवा बेचनेवालोंकी दुकानमें और सरकारी डाकघरोंमें भी सिंकोनाकी छालके टुकड़े मिलने लगे। लेकिन अितनेसे विज्ञानको संतोष नहीं हुआ। विज्ञानवेत्ताओंने सिंकोनाकी छालका पृथक्करण करके अुसमेंसे वह तत्त्व निकाला जो मलेरियाको

हटाता है। वह था क्वीनाअिन। यह क्वीनाअिन थोड़े प्रमाणमें लेनेसे काम चलता है। आगे जाकर क्वीनाअिनकी जगह पॅल्युड्रीन जैसी दूसरी दवाअें भी तैयार होने लगी हैं। अिसी तरह मनुष्यके मूत्रमेंसे कौनसे तत्त्व रोगनिवारक हैं यह देखकर अुस तत्त्वको अलग करना विज्ञानकी शक्तिसे परे नहीं है। अिस दिशामें वैद्यकशास्त्रको तुरन्त अनुसंधानकी प्रवृत्ति शुरू करनी चाहिये। और अत्यंत सूक्ष्म प्रमाणमें यही दवा लेनेका असरकारक प्रकार ढूंढ़ निकालना चाहिये।

अिस गवेषणामें होमियोपैथीसे भी हम लाभ अुठा सकते हैं। अॅलोपैथी (डॉक्टरी दवा) में और होमियोपैथीमें यह बड़ा फ़रक़ है। होमियोपैथीमें औषध बहुत ही सूक्ष्म प्रमाणमें दिया जाता है और अनुभवसे मालूम हुआ है कि औषधीका प्रमाण जितना सूक्ष्म अुतना ही अुसका असर तेज़ और जलद होता है। यहां तक कि दवा सूक्ष्म प्रमाणमें देते मामूली डॉक्टर डरते हैं।

सत्याग्रह जैसे नैतिक और आध्यात्मिक अिलाजमें भी पाया गया है कि अिलाज अगर योग्य परिस्थितिमें अधिकारी व्यक्तिके द्वारा सूक्ष्म रूपसे काममें लिया जाय तो अुसका असर कल्पनातीत होता है। स्वमूत्र-सेवनमें भी अिसी दिशामें गवेषणा तुरन्त चलानी चाहिये और विज्ञानका लाभ मानवजातिको मिलना चाहिये।

आरोग्य-रक्षाका सबसे अुत्तम अुपाय विज्ञानकी मददसे निश्चित किया हुआ क़ुदरती और योग्य आहारविहार ही है। शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, काफ़ी मात्रामें धूपका (सूर्य किरणोंका) सेवन, शुद्ध सात्त्विक प्रमाण-वद्ध आहार और वह भी विज्ञानकी दृष्टिसे युक्त – याने balanced हो तो मनुष्य बीमार ही नहीं पड़ेगा। साथ साथ मनका स्वास्थ्य भी संभालना चाहिये। जब मनुष्य राग, द्वेष, ईर्षा, असूया, मत्सर आदि विकारोंके वेगमें फंस जाता है तब अुसका स्वास्थ्य विगड़ जाता है। फिर तो खोये हुअे स्वास्थ्यको फिर पानेके लिये बड़ी साधना करनी पड़ती है। मनुष्यनें स्नान, लंघन, केवल जलपान, निद्रा

और व्यायामसे लेकर पारदकी दवाअियां खाने तक अनेक अिलाज आज़माये हैं। पुराने लोग पारेको महादेवका वीर्य कहते हैं। अुस पारेकी दवा अगर अच्छी तरहसे बन सकी तो कहते हैं कि अुस रसायनसे मनुष्य वज्रकाय होगा। लेकिन पारदशुद्धि न होने पर अुसकी कच्ची दवासे तरह तरहके रोग हो जाते हैं। अैसे पारदके अद्‌भुत गुण बताकर आयुर्वेद अन्तमें कहता है कि सबसे श्रेष्ठ रसायन तो ब्रह्मचर्य ही है। मनको क़ाबूमें रखकर जीवनक्रम अगर सात्त्विक बनाया और सेवामय जीवनके द्वारा मनका स्वास्थ्य संभाला तो भी मनुष्य वज्रकाय हो सकता है।

जो हो, कोअी भी दवा मनुष्यको अति आहार करनेका, अतिविलास करनेका या विकृत जीवन व्यतीत करनेका अधिकार नहीं दे सकती। नैसर्गिक, शुद्ध, सात्त्विक, अुद्योगपरायण और समाधान-युक्त जीवन ही आरोग्यकी सच्ची कुंजी है। अिसमें जब मनुष्य दुर्दैवसे या ग़लती करनेसे रोगी बन जाता है तब अुसके लिये आयुर्वेद, निसर्गोपचार आदि अनेक अिलाज किये जाते हैं। अैसे अिलाजोंके करनेके साथ मनुष्यको दृढ संकल्प करना ही चाहिये कि जो ग़लतियां हुअीं सो हुअीं। अीश्वरकी कृपासे बचनेका अुपाय भी मिल गया। अब आयन्दा हम ग़लतियां नहीं करेंगे। निसर्गका द्रोह नहीं करेंगे। योग और प्रयोगके द्वारा जो ज्ञान और विज्ञान प्राप्त हुअे हैं अुनकी मददसे संयमित और शुद्ध जीवन ही व्यतीत करेंगे। सादगी और सात्त्विकता छोड़ेंगे नहीं और मनको भी प्रसन्न और समर्थ बना कर अुसकी मदद आरोग्यके लिये ले लेंगे।

यह बात भी समझमें आनी चाहिये कि करोड़ों मनुष्योंके रोगोंके लिये अिलाज भी मनुष्यको सस्तेमें और आसानीसे मिलने चाहिये। आयुर्वेद अगर कहता है—

यस्मिन् देशे हि यो जातः।
तज्जं तस्यौषधं हितम्॥

(जिस देशमें आदमी पैदा हुआ, जिस देशमें रहता है और जहां की खुराक पाता है, अुसके लिये दवा भी अुसी देशकी पैदा हुअी होनी चाहिये; वही हितकर है।) तो क्या हम अैसा भी कह सकेंगे कि शरीरमें जो रोग होते हैं अुनके अिलाज भी शरीरमेंसे ही और शरीरके रिवाजी आहारसे ही मिलने चाहिये?

मसूरी
२१-५-'६१

—— काका कालेलकर

अनुवादकका निवेदन

प्राणिमात्रको सुख प्रिय है और दुःख अप्रिय। सुख-दुःखका सरल, सहज अेवं सुन्दर लक्षण यह किया गया है—

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
अेतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥
(मनुस्मृति ४–१६०)

अर्थात् जीवन और तदुपयोगी साधन-सामाग्रीकी स्वाधीनता सुख और पराधीनता दुःख है। कहा और माना तो यह जाता है कि विज्ञानने मनुष्य जातिके लिये सुखसुविधाओंके साधन पैदा किये हैं और आये दिन अुनमें वृद्धि हो रही है। परन्तु ज़रा गंभीरतासे विचार किया जाय तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि मनुष्य जातिको अुन साधनोंने स्वार्थी अेवं पराधीन वनाया है, जिससे अुसके शारीरिक अेवं मानसिक स्वास्थ्यकी बहुत हानि हुअी है और हो रही है।

भारतीय संस्कृतिमें चार पुरुषार्थ माने गये हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। अिन पुरुषार्थोंकी साधना स्वस्थ शरीर द्वारा ही हो सकती है। अिसलिये शारीरिक स्वस्थता जीवनकी प्रथम अेवं अनिवार्य आवश्यकता है। स्वानुभवके आधार पर मेरा नम्र निवेदन है कि स्वमूत्र शरीरको नीरोग अेवं स्वस्थ रखनेका सरल, सहज, स्वाधीन अेवं संपूर्ण साधन है।

'मानव-मूत्र'के वयोवृद्ध लेखक श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेलसे मेरा सामान्य परिचय तो सन् १९४३ में साबरमती (अहमदाबाद) सेन्ट्रल जेलकी चारदीवारीमें हुआ था और विशेष परिचय सन् १९६० में स्थानीय पंचशील सोसायटीमें स्थित अुनके अपने भवनमें हुआ। अुन्हें जब यह मालूम हुआ कि मूत्रोपचारमें मेरी श्रद्धा अेवं अनुभूति

है तब अुन्होंने अपनी लोकोपयोगी तथा लोकप्रिय पुस्तक — 'मानव-मूत्र' का हिन्दी भाषान्तर करनेके लिये मुझसे कहा, जिसे मैंने सहर्ष स्वीकार किया। लोक-कल्याणकारी कार्यमें सहयोग देना जीवनको सार्थक करना है।

सन् १९६० के मअी मासमें अुपर्युक्त पुस्तकका चौथा संस्करण प्रकाशित हुआ था। अुसी संस्करणकी अेक प्रति मुझे दी गयी और मैंने १५ जूनको अनुवादका श्रीगणेश कर दिया। श्री रावजीभाअी तो चाहते थे कि चार छः मासमें ही हिन्दी संस्करण प्रकाशित हो जाय। अिसके लिये अुन्होंने अनेक बार मुझे सावधान भी किया। परन्तु मैं अुन्हें 'सहज पके सो मीठा हो' की याद दिलाता रहा। अुनकी धीरता और अुदारताके कारण ही मैं अभीष्ट कार्य अभीष्ट ढंगसे कर सका। जिसके लिये मैं अुनका अत्यन्त आभारी हूं।

हिन्दी संस्करणकी विशेषता —

अनुवाद मुख्यतः भावात्मक है और कहीं कहीं तो आशयको ध्यानमें रखकर स्वतंत्र भी लिखा है। अनुवाद पूर्ण होने आया कि विचार आया — विषय अेवं प्रकरणोंको क्रमबद्ध अेवं व्यवस्थित किया जाय। फिर रावजी काकासे निवेदन किया और अुन्होंने मेरे विचारको मान्य किया। मेरा कार्य बढ़ा और अुत्साह भी।

यों तो सारी पुस्तकको क्रमबद्ध और व्यवस्थित करनेका भरसक प्रयत्न किया है। परन्तु प्रथम और तृतीय खंडके प्रकरणोंको व्यवस्थित करनेके लिये खूब काट-छांट की गयी है। रोगियोंके विवरणोंको आगे-पीछे किया गया है और प्रकरणोंके नाम तक बदल दिये हैं। तृतीय खंडके प्रकरण विविध रोगोंके अनुसार व्यवस्थित किये गये हैं, जैसे, हृदय रोगके भिन्न-भिन्न रोगियोंके विवरण 'हृदयके रोग' नामक प्रकरणमें दिये गये हैं। अिसी प्रकार क्षय, दमा, कैन्सर आदिके रोगियोंके विवरण अुस अुस नामके प्रकरणमें दिये हैं। जिससे मूल पुस्तकका संकलन बहुत

व्यवस्थित हो गया है। अतः गुजरातीका छठा संस्करण, मराठी और अंग्रेज़ीके संस्करण भी हिन्दी संस्करणके अनुसार तैयार हो रहे हैं।

आभार—

विद्वान् अेवं सहृदय मुनि श्री नेमिचन्द्रजीने अनुवाद तथा संपादनके कार्यमें मेरी हर तरह और हर समय मदद की है। अुन्हींके सहयोग तथा परामर्शसे मैं हिन्दी संस्करणको यह रूप दे सका हूं। अिस कार्यके दौरानमें अुनसे अितनी आत्मीयता हो गयी है कि अुनका आभार माननेका दुःसाहस करना धृष्टता होगी।

योगाभ्यासी वैद्य श्री रामरतनदासजी, नेत्र-विशेषज्ञ डा० गोविन्द भाअी पटेल, सहृदय डा० टी० आर० सावन और आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरतके आचार्य श्री बापालाल ग० वैद्यने चिकित्साशास्त्र संबंधी विषयोंको समझानेमें मेरी विशेष सहायता की है, जिसके लिये अुन सबका मैं हार्दिक आभार मानता हूं। और भी अनेक स्नेहियोंने मेरी कुछ न कुछ मदद की है, अतः अुनका भी मैं आभारी हूं।

स्वानुभव—

अिस समय मेरी आयुका साठवां वर्ष चल रहा है। पिछले दस बारह बरसोंसे मैं गठियेकी व्याधिसे पीडित रहा हूं। जिसके लिये अपने मित्र डा० शिवव्रतलाल औदीच्यसे होमियोपैथिक दवा लेता रहा हूं। लगातार खुराकें खानेसे कुछ समयके लिये तो काफ़ी आराम हो जाता, परंतु फिर वही पीडा शुरू हो जाती और कभी बढ़ भी जाती। आखिर सन् १९५८–'५९ में मेरी व्याधिने अुग्र रूप धारण कर लिया। घुटनोंका दर्द अितना बढ़ गया कि अेकाध मील कछवेकी गतिसे चल पाता। खानेके समय पलथीसे बैठना मुश्किल हो गया और शौचके समय पाओंके बल पर बड़ी मुश्किलसे बैठ पाता।

मैं कार्यवश हरिजन आश्रम गया। वहां गुजरात विद्यापीठके भूतपूर्व सहयोगी श्री नारायण ओधवजी सलारियासे अकस्मात् भेंट हो

गयी। मूत्रप्रयोग संबंधी अुनके प्रेरक अनुभव सुनकर अंग्रेज़ी पुस्तक —'दी वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' पढ़ी और मूत्रप्रयोग आज़मानेका निश्चय किया। अपने मित्र होमियोपैथके परामर्शसे ८ नवम्बर, '५९ को जलकी भांति स्वमूत्रका अुषापान किया; क्योंकि मनमें अुसके प्रति घृणा न थी, श्रद्धा थी। दिनमें तीन बार मूत्रपान करने लगा। जिसकी पहली प्रतिक्रिया यह हुअी कि कुछ दिनों तक रोज़ाना दस्त जैसी तीन-चार टट्टियां आती रहीं और पेट साफ़ रहने लगा। फिर श्री रावजीभाअीके परामर्शसे १९ नवम्बरको मूत्रमालिश भी शुरू कर दी। क़रीब दो मास बाद अेक और प्रतिक्रिया हुअी। मुख्यतः टांगों पर सफ़ेद मुंहकी छोटी-बड़ी फुंसियां निकलने लगीं। श्री रावजीभाअीकी सूचनासे पंद्रह दिनके लिये नमक छोड़ देनेसे अुनका निकलना बंद हो गया। ज़ोरसे मूत्रमालिश करने पर फुंसियां फूट जातीं और फिर धीरे धीरे नष्ट हो जातीं। अिस दौरानमें अेक ख़ास बात यह हुअी कि मैंने अेक बड़ी फुंसी पर मरहम लगा दी, जिससे वह मिट तो गयी पर अपना दाग़ छोड़ गयी। और किसी फुंसीका कोअी दाग़ नहीं है। अिससे यह फलित होता है कि मूत्रोपचारके दौरानमें अन्य कोअी भी अुपचार करना ठीक नहीं है।

लाभ —

१. मेरी दायीं पलक पर सरसोंके दाने जितना अेक मसा था, जो २४ नवम्बर, '५९ को अर्थात् सोलह दिनमें सूखकर झड़ गया।

२. सिरके बालोंका गिरना बन्द हो गया है।

३. मलशुद्धि ठीक होती है, पेट साफ़ रहता है और भूख अच्छी लगती है।

४. सर्दीमें मेरी चमड़ी रूखी हो जाती थी और फट जाती थी, जिसके लिये रोज़ाना तेलकी मालिश करनी पड़ती थी। मूत्रमालिशसे वह अितनी चिकनी और कोमल हो गयी है कि पंजाबकी सर्दीका भी

अुस पर कुछ असर नहीं हुआ। सर्दीके दो मौसिम बिना तेलमालिशके गुज़र गये हैं।

५. मूल व्याधि क़रीब बारह आने मिट गयी है। हाथ-पाओं और कंधोंकी हड्डियोंमें जो दर्द होता था वह मिट गया है। घुटनोंकी पीडा भी लगभग नष्ट हो गयी है। चार-छः मील विना थकानके पैदल चल सकता हूं, दस-बारह मील साअिकिल चला सकता हूं और पलथी लगाकर दो-अेक घंटे बैठ सकता हूं।

आज भी मेरा प्रयोग चल रहा है। रोज़ाना तीन बार मूत्रपान और अेक बार क़रीव आध घंटा मूत्रमालिश करता हूं। पुराना मूत्र आंखोंमें लगाता हूं, कानोंमें डालता हूं और मसूड़ों पर घिसता हूं। अिस तरह स्वमूत्र मेरे लिये अंजन, मंजन, तेल-साबुन और दुःख-भंजन सिद्ध हुआ है।

विनय —

अन्तमें पाठकवृन्दसे रामभक्त गोस्वामी तुलसीजीके शब्दोंमें निवेदन है —

जड़-चेतन गुण-दोषमय विश्व, कीन्ह करतार।
संतहंस गुन गहहिं पय, परिहरि वारिविकार॥

अहमदावाद — हंसराज
ता० १५–५–'६१

अनुक्रमणिका

द्वितीय खंड : पुनरुद्धारकके अनुभव

तृतीय खंड : सर्वानुभवकी कसौटीपर

चतुर्थ खंड : चिकित्सकोंकी दृष्टिमें

आरोग्यका अमूल्य साधन

[स्वमूत्र]

प्रथम खंड

मूत्रोपचारका तात्त्विक विचार

सत्यमेव जयते नानृतम्
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ।।

सत्यकी ही जय होती है, असत्यकी नहीं। जिस मार्गसे कृतार्थ ऋषिगण जाते हैं, और जहां अुस सत्यका परम निधान है, देवोंका वह मार्ग हमारे लिये सत्यके द्वारा ही खुलता है।

१

अगोचर शक्ति

प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यदनुग्रहेण।
यन्नेति नेति वचनै र्निगमा अवोचु-
स्तं देवदेवमजमच्युतमाहुरग्रचम् ॥

जो मन और वाणीके लिये अगोचर है, जिसकी कृपासे सभी तरह की वाणी प्रकट होती है, वेद भी जिसका वर्णन 'यह नहीं, यह नहीं' कहकर ही कर सके हैं, जिसे ऋषियोंने देवोंका देव, अजन्मा, अच्युत और सबका आदि कहा है, सवेरे अुठकर मैं अुस ब्रह्मका भजन करता हूं।

वही ब्रह्म मेरे हृदयमें भी विराजमान है। अुस अन्तर्यामीका स्मरण करके मैं अपने मंगल कार्यका श्रीगणेश करता हूं। और मेरी नम्र प्रार्थना है कि वह कृपासागर मेरे जैसे वामनको अुच्च तथा विशाल दृष्टि दे। क्षणभरमें हज़ारों मीलकी दौड़ लगानेवाले मनकी पहूंचसे भी जो परे है, भला, वह चक्षुका विषय हो सकता है? अैसे ब्रह्मकी लीलाको कौन समझ सकता है? मनुष्य चाहे गर्व करे, परन्तु अुसकी दृष्टि कितनी? अुसकी दृष्टि तो कुअेंके मेंडक जितनी! अुसने अपनी मर्यादित दृष्टिसे अुस अगोचर अेवं अगम्य शक्ति — ब्रह्मके भिन्न-भिन्न नाम रखे हैं। अेक भक्त कविने ठीक ही कहा है:—

बाबा, नाहीं दूजा कोअी।
अेक अनेकन नाम तुम्हारे, मो पै और न होअी
अलख अिलाही अेक तू, तू ही राम, रहीम;
तू ही मालिक, मोहना, केसौ नाम करीम।

साओीं सरजनहार तू, तू पावन, तू पाक;
तू कायम करतार तू, तू हरि हाजिर आप।
अविगत अल्लह अेक तू, गनी गुसाओीं अेक;
अजब अनूपम आप है, 'दादू' नाम अनेक।

विश्वमें जो अगोचर अेवं अगम्य शक्ति ओतप्रोत होकर काम कर रही है, वही कभी अंशावतारके रूपमें प्रगट होती है, कभी पैग़म्बर बनती है, कभी ओीशपुत्र और कभी अन्य धर्मप्रवर्तकका रूप लेती है। सभी अवतारी मनुष्य देशकालकी परिस्थितिके अनुसार भिन्न-भिन्न धर्मोंकी स्थापना करते हैं। भिन्न-भिन्न धर्म अुपासनाके भिन्न-भिन्न मार्ग हैं। अिस लिये विश्वभरकी प्रजा अुस अुस धर्मके द्वारा अुसी अगम्य शक्तिकी शरणमें जाती है।

श्रीकृष्ण द्वारा दी गयी दिव्य दृष्टिसे अर्जुनने विश्वका जो विराट् दर्शन किया, अुसमें अनेक प्राणियों और पदार्थोंके समूह दिखायी दिये, हज़ारों सूर्यका तेज दिखायी दिया, सारा भूमंडल और आकाश दिखायी दिया। और ब्रह्माके भी आदि कर्ता, देवाधिदेव, सत् तथा असत्से पर, आदि देव, विश्वके परमनिधान, अित्यादि विशेषणोंसे अर्जुनने अुस ब्रह्मकी स्तुति की। फिर भी अुस शक्तिके आदि, मध्य और अन्तको वह देख नहीं सका। देखता भी कैसे? जो अनादि है अुसका आदि कहांसे हो? जिसका आदि नहीं अुसका मध्य कहांसे हो, और जब मध्य नहीं तो अुसका अन्त भी कहांसे हो? अैसी अगोचर अेवं अगम्य शक्तिकी शरणमें अर्जुनने परम शान्ति प्राप्त की; क्योंकि वह अगम्य शक्तिकी शरण लेकर तद्रूप हो गया अर्थात् अगम्य शक्तिमें आत्मसमर्पण करनेसे, अगम्य शक्ति गम्य हो सकी। वह किस तरहसे गम्य हुअी, आअिये अुसपर विचार करें।

२

ओश्वरकी लीला

ओश्वर अगोचर, अगम्य, अनादि तथा अविनाशी है, यह सब तो ठीक, परन्तु वैसा ही बना रहनेका अर्थ क्या? अिसमें अुसे भी क्या मज़ा? क्या आनन्द? अुसे गोचर होना ही चाहिये, गम्य होना ही चाहिये, अन्यथा अिस विश्वरचनाका कुछ अर्थ नहीं। अिसलिये अुसने लीला की। ओश्वरकी लीला है सृष्टि। सृष्टिमें सब कुछ ही आ जाता है। पृथ्वीके अतिरिक्त आकाशमें अनेक ब्रह्मांड हैं; तारे, चन्द्र अेवं सूर्य, ये सभी अुसमें आ जाते हैं। खेचर, जलचर और भूचर सभी प्राणी अुसीमें समाविष्ट हैं। स्थावर या जंगम, छोटे-बड़े पदार्थ, अिन सबका समावेश अुसमें होता है। यह है ओश्वरकी सृष्टि। जिसके द्वारा अगोचर अेवं अगम्य ओश्वर गोचर अेवं गम्य बना। जैसे कवि अपनी कवितामें है, शिल्पी अपने शिल्पमें है, चित्रकार अपने चित्रमें है, वैसे ओश्वर अपनी सृष्टिके अणु-अणुमें है। और जैसे वह संपूर्ण है वैसे अुसकी सृष्टि या अुसका छोटा-बड़ा अंग संपूर्ण है। हम अपूर्ण और हमारी दृष्टि अपूर्ण, तो फिर अुसकी पूर्णताको हम कैसे पा सकें? हम प्रकृतिकी समीपता साध नहीं सके। हम प्रकृतिके साथ तद्रूप नहीं हो सके। हम अुससे बहुत दूर हैं। जितने अुससे दूर हैं अुतने अुससे अज्ञान हैं। जहां अज्ञानता हो वहां रसिकता कहांसे हो? वहां तन्मयता कहांसे हो? यदि रसिकता न हो, तन्मयता न हो, तो यह स्वाभाविक है कि प्रकृति हमें अुग्र, भयंकर अेवं तुच्छ प्रतीत हो। जब हम प्रकृतिके स्रष्टाकी शरणमें होते हैं तभी प्रकृतिमें हमारा विश्वास होता है और अुसके साथ हमारी तद्रूपता हो सकती है। हमारे हृदय-पटल पर यह अंकित हो जाना चाहिये कि प्रकृतिका छोटा या बड़ा, सौम्य या भयंकर अंग हमारा ही अंग है। अैसी श्रद्धाके साथ वैसी प्रतीति भी करनी चाहिये।

'यथा पिंडे तथा ब्रह्मांडे' का पाठ तो हम रट डालते हैं। परन्तु न तो अुसमें हमारी श्रद्धा होती है और न ही अुसकी प्रतीति करनेकी तड़प होती है। अिसलिये हम दीन ही बने रहते हैं और प्रकृतिके साथ अेकरूपता नहीं साध सकते। हम यह कहते ज़रूर हैं कि विश्वके सभी जीवोंमें अेक ही नियंता बस रहा है; फिर भी हमें अपने कथनमें विश्वास नहीं है और अिस मान्यताको हमने अपने जीवनमें चरितार्थ नहीं किया है।

सन् १९१० के सालकी बात है। मैं बम्बअीसे दक्षिण अफ्रीका जानेके लिये अेक जर्मन स्टीमरमें सवार हुआ। अेक दिन जब जहाज़ समुद्रके अैन बीचमें जा रहा था, तब मैं स्टीमरके अगले डेक पर प्रभुलीलाका मज़ा लूट रहा था। अुस वक़्त मेरे साथ अेक जर्मन सज्जन बैठे थे। अुन्होंने मुझसे अेकाअेक पूछा — "आप तो हिन्दू हैं न ?" "हां, मैं हिन्दू हूं," मैंने जवाब दिया। अुन्होंने पूछा — "आप मांस नहीं खाते ?" "नहीं खाता हूं। मैं तो बिल्कुल शाकाहारी हूं।" "आप मांस क्यों नहीं खाते ?" अुन्होंने प्रश्न किया। "अिसलिये कि जिस प्राणीका मांस खाया जाता है अुसमें भी मेरे जैसा जीव है और वह भी मेरी तरह ही सुखदुःखका अनुभव करता है। मेरेमें और अुसमें अेक ही आत्मा ओतप्रोत है, अैसा हिन्दू धर्म मानता है और मैं अिस मान्यतामें श्रद्धा रखता हूं।" मैंने निष्ठा अेवं दृढताके साथ अुत्तर दिया।

वे मेरी अैसी बात सुनकर कुछ मज़ाक़में बोल अुठे — "तब तो आपको भी किसी दिन अुस मछलीका अवतार लेना पड़ेगा, ठीक है न ?" मैंने निश्चयपूर्वक कहा — "मछलीके रूपमें मैं भूतकालमें था अथवा भविष्यकालमें होअूंगा, अिसका तो मुझे पता नहीं। पर मैं अपने धर्मकी दृष्टिसे यह अवश्य जानता हूं और मानता हूं कि मेरेमें और अुसमें अेक ही तत्त्व ओतप्रोत है।"

यह प्रकरण लिखते हुअे मुझे अुक्त प्रसंग याद आ गया और अुस दृष्टिसे मछली या मगर-मच्छ, सिंह और व्याघ्र जैसे हिंसक प्राणी

अथवा नाग और सांप जैसे ज़हरीले प्राणी अेक ही कोटिके माने जाने चाहिये। साथ ही सृष्टिमें आकार पाये हुअे स्थावर या जड पदार्थ भी प्रकृतिके अेक अविभाज्य अंग गिने जाने चाहिये। अैसा जाननेवाले और अनुभव करनेवालेको यह सृष्टि सुन्दर, सौम्य और सत्, चित्, आनन्दसे परिपूर्ण लगती है।

अैसे विचारमें रमण करनेवालेको यह वात स्पष्ट मालूम होगी कि जैसे सृष्टिका निर्माता संपूर्ण है वैसे अुसकी रची हुअी सृष्टिका प्रत्येक अंग संपूर्ण अेवं स्वाधीन है। कलाकार संपूर्ण होता है तो अुसकी कला भी संपूर्ण होती है, अुसी प्रकार विश्वका निर्माता संपूर्ण है तो अुसकी सृष्टिका प्रत्येक अंग संपूर्ण होना चाहिये।

देखिये, खोज निकालिये कि सृष्टिमें कोअी भी जीव अैसा है कि जिसके जन्मके साथ अुसके जीवनकी सभी ज़रूरतें तैयार न हों? कअी वार नया जन्म लेनेवालेके शरीरमें कुछ न कुछ कमी मालूम होती है, वह तो अुसे जन्म देनेवाली माता या अन्य पार्थिव दोषके कारण होगी। प्रकृतिने जीवमात्रके शरीरकी रचना संपूर्ण और स्वाधीन वनायी है।

हम मानव-जन्मको ही लें। प्रभुने वालकको जन्म दिया, और साथ ही अुसकी खुराकके लिये माताके स्तनोंमें दूध दिया। माताके दूधमें विकृति न हो, माता संयमी अेवं मिताहारी हो, तो अुसके स्वस्थ अेवं स्वच्छ दूधसे वालकका पोषण होता रहता है और अुसका विकास भी। फिर भी माता-पिताके किसी अनाचारसे दूधमें विकृति आ जाय और जिससे वालकमें कोअी व्याधि पैदा हो जाय, तो अुससे छुटकारा पानेके लिये अीश्वरने अुस वालकको साधन दिया ही है, और वह है वालकका अपना मूत्र। प्रकृतिने अुसे अिस अमूल्य साधनके साथ अिस भूलोकमें भेजा है। अिसलिये मैंने लिखा है कि जैसे अीश्वर संपूर्ण है वैसे अुसकी सृष्टिका छोटा-सा अंग भी संपूर्ण और स्वाधीन है।

३

प्रकृति और बुद्धि

अीश्वरकी सृष्टिमें मनुष्य अेक महत्त्वपूर्ण अंग है। जीव-सृष्टिमें मनुष्यका स्थान सर्वोत्तम माना जाता है। अैसा कहा जाता है कि मानव-जीवनमें ही प्रकृतिके साथ तद्रूपता सिद्ध हो सकती है अर्थात् अीश्वरके साथ अेकरूपता सध सकती है। अिस स्थितिको प्राप्त करनेके लिये अीश्वरने मनुष्यको दो मुख्य साधन दिये हैं — मन और बुद्धि। सामान्यत: मन मनुष्यमें अेक नियामक शक्ति है और वुद्धि मनका अन्तिम निर्णय करनेवाली शक्ति है।

मनके निर्णयका आधार आसपासकी परिस्थिति, संपर्क, पुरुषार्थ और पूर्व संस्कारों पर भी रहता है। बुद्धिका यह काम है कि वह मनके संकल्प-विकल्पोंको पूरा करनेकी योजना बनाये। दूषित वातावरणसे घिरा हुआ मन अच्छी बुद्धिको भी अपने साथ घसीट ले जाता है। परन्तु मन अपने सुसंस्कारोंके कारण प्रकृतिके नियत नियमोंमें श्रद्धा अेवं प्रीति रखता हो तो बुद्धि मनको प्रकृतिकी रचनाका अर्थात् प्रकृतिके निर्माताकी सृष्टिका सहायक बनानेमें मदद करती है। और मन अपने कुसंस्कारों या खराब संपर्कके कारण प्रकृतिमें श्रद्धावान् न हो, तो वुद्धि अुसे प्रकृतिके सामने मोरचाबन्दी करनेमें तथा प्रकृतिकी स्पर्धा करनेमें सहायता करती है। संस्कार जैसे व्यक्तिगत होते हैं वैसे समूहगत भी। समूहगत संस्कारोंके आधार पर भिन्न-भिन्न संस्कृतियोंका निर्माण होता है, जैसे पूर्वकी संस्कृति और पश्चिमकी संस्कृति।

प्रकृतिके स्रष्टाके नामसे धर्मप्रवर्तकोंने तो अपनी धर्माज्ञाओंमें स्पष्ट शब्दोंमें आदेश दिया है — "तू अपनी रोज़ी पसीनेकी कमाअीसे खा। तुझे दो हाथ और दो पांव दिये हैं। जो यज्ञार्थ पुरुषार्थसे नया

पैदा करके नहीं खाता है वह चोर है और जो अैसे अन्नका खुद ही अुपभोग करता है वह पाप खाता है।" प्रत्येक धर्मके धार्मिक वृत्तिवाले सत्पुरुष अिस आदेशका पालन करते हैं। तब अेक प्रश्न खड़ा होता है कि यदि मेहनत करके अपना निर्वाह करनेके लिये मनुष्यको दो हाथ और दो पैर दिये हैं तो फिर बुद्धिका क्या अुपयोग?

प्रत्येक धर्मके सन्त पुरुषने अिसका अुत्तर यह दिया है कि अीश्वरने बुद्धि तो प्रकृतिके सहकारके लिये दी है। अर्थात् किसी भी कारणसे प्रकृतिके किसी अंगमें कोअी दोष या कमी आ जाय तो अुसे दूर करनेमें सहायता करनेके लिये अीश्वरने मनुष्य जातिको बुद्धि प्रदान की है। बुद्धिका अुपयोग परोपकार अेवं परसेवाके लिये हो तो यह संसार गुलज़ार बन जाय। बुद्धिका अुपयोग केवल स्वार्थके लिये हो तो यह विश्व श्मशान बन जाय। परार्थ बुद्धिसे प्रकृति संतुलित अेवं सुन्दर बनती है और स्वार्थबुद्धिसे प्रकृति विषम अेवं कुरूप बनती है, और मनुष्य जाति पर ही नहीं, अपितु जीवमात्रपर आफ़त आती है। परन्तु बुद्धिके अुपयोगके आधार हैं मनके संस्कार। मनके निर्णयमें बुद्धि साधन है। मन सुसंस्कारी हो, विवेकी हो, तप और त्यागकी भट्टीमें तपकर शुद्ध हुआ हो, तो बुद्धिका अुपयोग मानव जातिके कल्याणके कार्यमें होगा। किन्तु मन स्वेच्छाचारी हो, महत्त्वाकांक्षी हो, सत्तालोलुपी हो अेवं कामी, लोभी और क्रोधी हो, तो वह अपनी बुद्धिका अुपयोग मानव जातिका सत्यानाश करनेमें करेगा।

अुपर्युक्त विचारसे यह फलित होता है कि प्रकृति और प्रकृतिके कल्याणकारी नियमोंके अधीन रहकर यदि मन अपनी बुद्धिका अुपयोग करता है, तो बुद्धि प्रकृतिके लिये सहायक सिद्ध होती है, जीवमात्रके लिये अुपकारी सिद्ध होती है और संसारकी श्रेष्ठ सेवा करती है। परन्तु आज हम क्या देखते हैं? मानव-मनकी प्रेरणासे बुद्धिने खूब प्रगति की है, अुसने मनुष्यजातिको आश्चर्यचकित करनेवाली शक्ति

खूब वढ़ायी है। बुद्धिने प्रकृतिकी शक्तिका अभ्यास किया, अुसके गुण-दोषको जाना और अुसमेंसे नयी नयी शक्तियां पैदा कीं। अुससे प्राप्त की हुअी सामर्थ्य द्वारा बुद्धिने अुसीके सामने मोरचा लगाया है। वह सामर्थ्य है विज्ञान। विज्ञान बुद्धिका अद्भुत चमत्कार है।

गत महायुद्धमें अणुबम द्वारा की गयी हीरोशीमाकी संहारलीलाके स्मरण मात्रसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। अुस संहार-लीलासे यह बात अेकदम स्पष्ट है कि अिस अणुयुगमें मानव, पशु-पक्षी और वनस्पति-जगत् कितने अरक्षित हैं! अत्यन्त खेदका विषय है कि फिर भी विश्व सो रहा है और अणुयुद्धके स्वप्न देख रहा है। अुसी विज्ञानने हमारे जीवनक्षेत्रमें विनाशकताके बीज बो दिये हैं। वह हमारे जीवनको सुविधाप्रिय और आरामतलब बनाता जा रहा है और सत्य, अहिंसा, धैर्य, तितिक्षा, सहिष्णुता, सादगी, श्रमशीलता आदि सात्त्विक गुणोंका नाश कर रहा है। दिन प्रतिदिन हम अुस विनाशक विज्ञानकी दिशामें अंधी दौड़ लगा रहे हैं।

महाकवि कालिदासने जिस शरीरको धर्म — कर्तव्यका प्रथम साधन कहा है। अुसका स्वास्थ्य विगाड़नेमें बुद्धि-संचालित विज्ञानने क्या हिस्सा लिया है, अुसे बतानेका मैं कुछ प्रयत्न करूंगा।

४

मूत्रप्रयोगकी परंपरा

पूर्वी परंपरा

दूसरे प्रकरणमें हम अिस निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि स्रष्टाकी तरह सृष्टिका छोटा-बड़ा अंग भी संपूर्ण है। और अीश्वरने जीवमात्र की शारीरिक रचनाको संपूर्ण अेवं स्वाधीन बनाया है और अुसे अपने स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये अमूल्य साधन अर्थात् मूत्र प्रदान किया है। चौपाये पशु जो हमारे संपर्कमें आते हैं, अुन्हें देखनेसे यह साफ़ पता चलता है कि प्रकृतिने अुनके शरीरकी रचना ही अैसी की है कि अुनकी जीभ मूत्रेन्द्रिय तक पहुँच जाती है और वे सहजभावसे अपने मूत्रका अुपयोग करके अपने स्वास्थ्यकी रक्षाका प्रयत्न करते हैं।

प्राचीन भारतके अितिहास अेवं परंपरासे यह मालूम होता है कि मनुष्य भी मूत्रके अुपयोगसे अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करते थे। अयुक्त आहारसे, असंयमसे, दुर्व्यसनसे, अनियमित रहनसहनसे, अतिशय श्रम या श्रमहीन जीवनसे अथवा किसी अन्य कारणसे यदि मनुष्य किसी रोगका शिकार हो जाते थे, तो अुस कारणको दूर करके मूत्रप्रयोगसे अपने रोगका नाश करते थे। जैसे पचास बरस पहले अपने देशमें घर-घर वृद्ध दादियां वनस्पति या खनिज क्षारोंसे बच्चों और बड़ोंके बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको ठीक कर लेती थीं, वैसे प्राचीन कालमें मूत्रप्रयोग स्वास्थ्य सुधारनेका अेक घरेलू अुपाय था। पुराणकालमें लिखी गयी संस्कृत पुस्तक 'शिवाम्बुकल्प' में मूत्रके माहात्म्यका वर्णन है। अुसकी शैली पौराणिक है अेवं शिवजी तथा पार्वतीके संवादके रूपमें है। अुसमें से कुछ अुपयुक्त अंश मैं नीचे दे रहा हूं :—

"हे पार्वती! अब मैं तुझे क्रियाकी सिद्धिको देनेवाले और शास्त्रके जानकारों द्वारा प्रयत्नपूर्वक बताये हुअे पात्रोंके बारेमें कहता

हूं। सोनेका, चांदीका, तांबेका, कांसेका, पीतलका, लोहेका, जस्तेका, मिट्टीका, काचका, बांसका, बेलका, शंख, सीप या हड्डीका, चमड़ेका और पत्तोंका बना हुआ पात्र हो। अिनमेंसे किसी भी प्रकारके पात्रमें साधक शिवाम्बुको धारण करे। हे देवी! मिट्टीका पात्र अुत्तम और तांबेका सर्वोत्तम है।

"खारे और तीखे पदार्थ न खानेवाला, श्रमरहित और जितेन्द्रिय साधक रातको भूमिपर सो जाय। चौथे पहरमें अुठकर विवेकी अेवं अुच्च आशयवाला साधक पूर्व दिशाकी ओर मुख करके मूत्रोत्सर्ग करे और आदि तथा अन्तकी धाराको छोड़कर मध्यकी धाराको ग्रहण करे, क्योंकि मूत्रपानका यह अुत्तम प्रकार है। जैसे सांपके मुंह और पूंछमें जहर होता है वैसे ही मूत्रधाराके विषयमें यही बात प्रसिद्ध है। शिवांबु दिव्य अमृत है, वृद्धावस्था और रोगका नाश करनेवाला है। अुसका पान करके योगी अपनी साधना करता है।"

आगे चलकर शिवांबु पीनेकी विधि और अुसका फल बताया है। अुसमें पौराणिक पद्धतिके अनुसार बहुत अतिशयोक्ति मालूम होती है। अुसके सावधिक (अमुक समय तक) अुपयोग करनेसे जो जो लाभ होते हैं, वे अिस प्रकार हैं:—

"सबसे पहले मुखशुद्धि करके आवश्यक क्रियाअें करनेके बाद जन्मरोगके नाशक अेवं निर्मल शिवांबुके पानका प्रयोग अेक मास तक करनेसे अन्तर निर्मल होता है।"

फिर अुसमें बारह मासके प्रयोगसे लेकर बारह बरसके प्रयोगसे मिलनेवाली सिद्धियोंका अुल्लेख है, जिनका विवरण यहां देनेकी ज़रूरत नहीं है। अपना प्रयोजन तो शारीरिक स्वास्थ्यसे है।

शिवांबुकल्पमें अन्यत्र अिस प्रकार लिखा है:—

"जो योगी प्रातः शिवांबु नाकसे लेता है, अुसके वात, पित्त और कफके रोग नष्ट हो जाते हैं, जठराग्नि प्रदीप्त होती है और शरीर खूब बलवान् बनता है।

"दिनमें तीन बार और रातमें तीन बार जो शिवांबुसे शरीरकी मालिश करता है वह दीर्घायु होता है, अुसके सभी अंगोंके जोड़ मज़बूत हो जाते हैं और सर्वथा रोगरहित होकर परम आनन्द प्राप्त करता हैं।

"अहोरात्र शिवांबुसे तीन बार अंग-मर्दन करनेवालेकी काया सुनहली अेवं सुन्दर हो जाती है।

"हे पार्वती! जो तीन वर्ष तक अेक वार शिवांबुका पान करता है और शिवांबुसे मालिश करता है, अुसका शरीर महापराक्रमी अेवं अत्यन्त तेजस्वी हो जाता है, वह कला तथा विज्ञानसे युक्त होकर वाक्सिद्धिको प्राप्त करता है और जहां तक चांदतारे हैं वहां तक जीता है।"

अुपर्युक्त अवतरणोंमें प्रतीत होनेवाली अतिशयोक्तियोंको छोड़ देने पर भी निम्नलिखित बातें फलित होती हैं, जिन्हें स्वीकार करनेमें किसीको भी आपत्ति नहीं हो सकती।

(१) मूत्रप्रयोग कोअी नयी खोज नहीं है।

(२) सैकड़ों बरस पहले भारतवर्षमें यह प्रयोग प्रचलित था।

(३) मूत्रके अुचित अुपयोगसे किसी भी भूल या दोषसे खोया हुआ शारीरिक स्वास्थ्य पुनः प्राप्त किया जा सकता है और वर्तमान स्वास्थ्यको बनाये रखा जा सकता है।

अिसी पुस्तकमें यह वर्णन भी है कि भिन्न-भिन्न अनुपानके साथ मूत्रका सेवन करनेसे भिन्न-भिन्न रोग नष्ट हो जाते हैं; जिससे हमें कुछ वास्ता नहीं है। परन्तु अुस वर्णनसे यह निश्चित सार तो निकाला जा सकता है कि सभी रोगोंको मिटानेकी शक्ति मूत्रमें है। अिस पुस्तकके अुल्लेखके अतिरिक्त यह बात सुविदित है कि हमारे योगी आत्मदर्शन अेवं योगसिद्धिसे पहले अपने शरीरको पूर्ण स्वस्थ अेवं नीरोग बनानेके लिये मूत्रका ही अुपयोग करते थे। दक्षिणमें वरसों तक योग-सिद्ध महात्माओंके पास रहकर योगसिद्ध होनेवाले मेरे अेक मित्रने मेरे स्वानुभवका लेख पढ़कर तुरंत मुझे पत्र लिखा था, जिसका आशय

यह है कि अुन्होंने भी अपनी साधनाके कालमें मूत्रप्रयोग किया था। मूत्रप्रयोगसे न केवल शरीर ही स्वस्थ अेवं नीरोग बनता है किन्तु अिन्द्रियों और मनको निर्विकार बनानेमें भी मदद मिलती है। परन्तु यदि अिस प्रयोगके दौरानमें भगवानका स्मरण होता रहे और अुसकी प्रार्थना अेवं भक्तिमें चित्त सदा लीन रहे तो सफलता मिलती ही है। अुन्हें अपने गुरुसे अिस प्रकारका प्रयोग करनेकी आज्ञा मिली थी, जिसे अुन्होंने प्रेमसे और किसी भी प्रकारके संकोच बिना स्वीकार किया। शुरूमें तो अुन्होंने यही समझा था कि मनसे घृणामात्रको दूर करनेके लिये वैसी आज्ञा दी होगी . . . . परन्तु साथ ही यह भी सच है कि शरीर पूर्ण स्वस्थ न हो तो योगसाधनामें बारंबार बाधा आती है, अिसलिये योगसाधनासे पहले प्रत्येक साधकको अपना शरीर संपूर्ण स्वस्थ बना लेना चाहिये। अुन्होंने किसी भी प्रकारके आहारके बिना केवल मूत्रप्रयोगसे सवा मासका अुपवास करके शरीरको स्वस्थ बनाया और समता अेवं शांतिसे संयमकी आराधना की। अन्तमें वे लिखते हैं — "आपने मूत्रप्रयोगसे जो लाभ अुठाया अुसे निःसंकोच भावसे जगत् के समक्ष प्रस्तुत किया, जिससे आपने अेक अपूर्व लोकसेवाका काम किया, अैसा मुझे प्रतीत होता है।"

जैन धर्ममें भी विशेष प्रकारकी प्रतिमा अर्थात् प्रतिज्ञा स्वीकार करनेवाले मुनिके लिये मूत्रपानका विधान है। अिस बारेमें आचार्य भद्रबाहुकृत व्यवहारसूत्रका मूल पाठ और भावार्थ नीचे दिया जाता है: —

दो पडिमाओ पन्नत्ताओ। तं जहा – खुड्डिया वा मोयपडिमा, महल्लिया वा मोयपडिमा। खुड्डियाणं मोयपडिमं पडिवन्नस्स अणगारस्स कप्पइ — से पढमनिदाहकालसमयंसि वा चरमनिदाहकालसमयंसि वा बहिया गामस्स वा (बृ० १ उ०, सू० ६) रायहाणीए वा वणंसि वा वण-दुग्गंसि वा पव्वयंसि वा पव्वयदुग्गंसि वा भोच्चा आरुभइ चोदसमेण पारेइ; अभोच्चा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ। जाए जाए मोए आईयव्वे दिया आगच्छेइ। ॥४१॥ महल्लियाणं मोयपडिमं जाव पव्वयदुग्गंसि

वा भोच्चा आरुभइ सोलसमेणं पारेइ; अभोच्चा आरुभइ अट्ठारसमेणं पारेइ। जाए जाए मोए आइयव्वे दिया आगच्छइ ॥ ४२॥

भावार्थ :— दो प्रतिमाअें (दृढ संकल्पपूर्वक प्रतिज्ञाअें) बतायी हैं। वे अिस प्रकार हैं — छोटी मोक (मूत्र) प्रतिमा और बड़ी मोकप्रतिमा। छोटी मोकप्रतिमाको स्वीकार करनेवाला मुनि ग्रीष्मऋतुके प्रारंभमें अथवा ग्रीष्मऋतुके अन्तमें (या शरत्कालके प्रारंभमें भी) गांवके बाहर या नगरके बाहर, राजधानीमें, वनमें, वनसमूहमें, पहाड़ पर, अनेक पहाड़ोंके बीचमें, गुफा आदि अेकान्त स्थानमें अिसे धारण करे। अगर वह मुनि आहार करके अिस प्रतिमाको स्वीकार करता है, तो छः अुपवास करके पारणा करें, और आहार किये बिना अिस प्रतिमाको स्वीकार करता है, तो सात अुपवास करके पारणा करे। बड़ी मोकप्रतिमा भी अुपर्युक्त स्थानोंमेंसे किसी अेक स्थानमें स्वीकार करे। आहार करके स्वीकार करे तो सात अुपवास करके पारणा करे और आहार किये बिना स्वीकार करे तो आठ अुपवास करके पारणा करे। अुपवासके दौरानमें दिनभरके मूत्रका दिनमें ही पान करे।

तिब्बतमें लामा तो मूत्रका खूब अुपयोग करते आये हैं। यह मूत्र का ही प्रताप है कि वे डेढ़ सौ बरस तक अपने स्वास्थ्यको सुरक्षित रख सकते हैं। स्वर्गस्थ मोरिस विल्सनने हिमालयके अुच्चतम अेवं प्रसिद्ध शिखर अेवरेस्ट पर आरोहण करनेसे पहले अिस प्रयोगको लामाओंसे जान लिया था। अुन्होंने चढ़ाअीके दौरानमें पीने और मालिशके लिये अपने मूत्रका अुपयोग किया था, जिससे वे हर प्रकारकी छोटी-बड़ी बीमारीसे अपने शरीरकी रक्षा कर सके और अुसी अमूल्य साधनसे अुपवास तथा मालिश करके अपनी चेतना अेवं जीवनशक्तिको क़ायम रख सके।

रेगिस्तान और समुद्रके यात्री भी मूत्रका अुपयोग किया करते थे। मरुभूमिके यात्रियोंके खानपानकी सामग्री जब समाप्त हो जाती थी तब कअी दिनों तक वे अपना पेशाब पीकर राज़ी-खुशीसे अपनी

मंज़िल पर पहुँच जाते थे। अिसी प्रकार नाविकोंके अितिहासमें यह वर्णन आता है कि समुद्रमें तूफ़ान आ जानेसे जब जहाज़ अपना रास्ता भूल जाते थे और पीनेका पानी तथा खानेका सामान कम हो जाता था तब नाविक यात्रियोंको अुन्हींका पेशाब पिलाकर टिकाये रखते थे और यों करते-करते कुछ दिनोंमें दूसरा जहाज़ मिल जाता या किनारा हाथ लग जाता, जिससे वे सभी ज़िन्दा बच जाते थे।

परन्तु मनुष्य आख़िर मनुष्य है। अुसमें अनेक कमज़ोरियां हैं। कोअी माअीका लाल ही अुन कमज़ोरियोंसे छुटकारा पा सकता है। बाक़ी सब तो अिस संसारमें ग़ैर-ज़िम्मेदार बनकर अनेक छोटी-बड़ी बुरी आदतोंसे अपनी तंदुरुस्तीको बिगाड़ते ही आये हैं। मनुष्य जैसे-जैसे प्राकृतिक जीवनसे दूर होता जाता है वैसे-वैसे अुसका स्वास्थ्य भी बिगड़ता जाता है। और अिस वैज्ञानिक युगमें तो अुसकी अस्वस्थता शायद पराकाष्ठाको पहुँची होगी! अिससे बढ़कर दुर्दशा और क्या होगी? अिस दुर्दशाका बीज तभी बोया गया होगा कि जब मनुष्यने शारीरिक स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये प्रकृतिकी सरल अेवं अमूल्य देन — मूत्रके शुद्ध अुपयोगको छोड़कर आसपासकी वनस्पतियोंके अनुपानके साथ अुसका अुपयोग शुरू किया होगा और धीरे-धीरे अनुपानकी वस्तुओंका सेवन ही प्रधान बन गया होगा अर्थात् मूल वस्तु — मूत्रका सेवन गौण हो गया होगा। अुस कालके शरीर-शास्त्री अरण्यमें क़ुदरतकी गोदमें रहते थे और अन्वेषणकी वृत्तिसे अनेक अनुभव अेवं प्रयोग करते थे। अिस प्रकार अुन्होंने आयुर्वेदकी रचना की होगी। आरम्भमें मूत्रको केन्द्रमें रखकर अनुपानके रूपमें वनस्पति-द्रव्योंका अुपयोग शुरू किया होगा। फिर अंतमें मूत्रको भी तिलांजलि देकर पानी, शहद, घी या दूध आदिका अुपयोग शुरू हुआ होगा, अैसा मालूम होता है। जिसका परिणाम यह आया कि मूलद्रव्य मूत्रका स्थान वनस्पति-द्रव्योंने ले लिया। अिससे अितना लाभ तो अवश्य हुआ कि प्रकृतिका संपर्क बना रहा, परन्तु प्रकृतिकी मूल देनको बिल्कुल भुला दिया गया।

जैसे आजकी अॅलोपैथी, विज्ञानकी दृष्टिसे अितनी आगे बढ़ गयी है और समाज पर अुसने अितना अधिक क़ाबू पा लिया है कि यदि आयुर्वेदका गठबंधन अुसके साथ कर दिया जायगा तो आयुर्वेदके नामशेष हो जानेकी पूरी-पूरी संभावना है। अिसी प्रकार आयुर्वेदके प्रचण्ड वेगके कारण प्रकृतिकी मूल वस्तु भुला दी गयी होगी। अिस विस्मृत दिव्य देनकी कुछ झलक आज भी लोक-जीवनमें दिखायी देती है। गांवमें बूढ़ी मातायें अपने बच्चोंको बीमारीमें अुन्हींका मूत्र पिलाकर अुनके स्वास्थ्यकी रक्षा करती हैं। समाजमें आज भी जो यह मान्यता प्रचलित है कि 'यह आदमी तो कटी अुंगली पर भी पेशाब नहीं करता,' जिसका अर्थ यही है कि पेशाबमें जख्मको ठीक करनेकी शक्ति है। अिसीलिये चाहे जैसा ज़ख्म पेशाबसे ठीक हो जाता है। गांवकी सीममें डेरे डालकर मेहनत-मज़दूरी पर गुज़र करनेवाले खानाबदोश लुहार अपने बैलको अुसीका सारा पेशाब पिलाते हैं और बैल मूत्रमें रहे हुअे पोषक तत्त्वोंको पाकर मस्त अेवं बलवान् बनता है। अिसे मैंने अपनी आंखोंसे देखा है।

तो फिर यह प्रश्न स्वाभाविक ही है कि वर्तमान कालमें मूत्रका अुपयोग क्यों बन्द हुआ? अिसके अुत्तरमें यही कहा जा सकता है कि हमारे जीवनके मूल्य बदल गये हैं। जैसे हम अेक दिशामें जा रहे हों तब जो जो वृक्ष, मकान या दृश्य हमारी दायीं ओर आते हैं, वे सभी लौटती बार दायीं ओर नहीं आते। अिसी प्रकार जीवन और जीवनकी पद्धतिके बारेमें हमारे विचार जैसे-जैसे प्रकृतिसे दूर हटते गये वैसे-वैसे प्राकृतिक साधनोंका अुपयोग हम भूलते गये। यह प्रगति विज्ञान-विभूषित युगका लक्षण है! फिर भी अनेक मनुष्य हैं जो अिस क़ुदरती साधनसे पूरा-पूरा लाभ अुठाते हैं। यहां और विदेशमें ज्ञात-अज्ञात बहुत-से व्यक्ति हैं जो आधुनिक युगके विज्ञानसे पूर्ण अभिज्ञ होते हुअे भी अुसके दोषों और कष्टोंसे दूर रहकर सच्चे प्राकृतिक साधनसे पूरा-

पूरा फ़ायदा अुठाते हैं। भारतमें साधु-संत, योगी-संन्यासी, यति-महात्मा और सत्यके आग्रही अनेक हैं तथा विदेशमें भी हैं।

मूत्र-प्रयोगकी प्रणाली प्रकृतिकी रचनाके अनुसार होनेसे दोषरहित अेवं धर्मयुक्त है; क्योंकि मूत्रप्रयोगसे जीवनको संयमी तथा सादा-सरल बनानेमें प्रोत्साहन मिलता है। प्राचीन कालमें शारीरिक स्वास्थ्यके लिये मूत्रका अुपयोग खूब होता था, परन्तु मध्यकालमें अिसे भुला दिया गया। यह हर्ष अेवं गौरवका विषय है कि मूत्रप्रयोगका पुनरुद्धार हो रहा है। विज्ञान-प्रधान अिस युगमें दिन प्रति दिन रोगोंके अिस प्राकृतिक अुपचारका प्रचार बढ़ता जा रहा है। आशा है कि विश्व अिसे सहर्ष अपना लेगा और यह प्राचीन कालकी भांति पुनः प्रतिष्ठित होगा।

पश्चिमी परंपरा

यह मूत्रप्रयोग पश्चिमके देशोंमें कबसे प्रचलित था, अिसकी निश्चित जानकारी नहीं मिल पाअी है। परन्तु अैसा लगता है कि अीसाके अेक वाक्यके आधार पर श्रद्धालु अीसाअियोंने यह प्रयोग शुरू किया होगा। 'दी वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' के लेखक स्व० जॉन डब्ल्यू० आर्मस्ट्रॉङ्गने भी पुरानी बाअिबिलसे अिसकी प्रेरणा प्राप्त की थी। अुसके पांचवें अध्यायमें यह आज्ञा है—"Drink waters out of thine own cistern." अर्थात् अपने ही शरीरसे निकलनेवाले जल (मूत्र)का पान कर। अिस वाक्यने आर्मस्ट्रॉङ्गकी अनेक स्मृतियोंको ताज़ा कर दिया और अुन्होंने अिस प्रयोगको अपने पर आज़माया; जिसका विवरण द्वितीय खंडमें दिया गया है। परन्तु अिससे यह अवश्य फलित होता है कि पश्चिमी देश अिस प्रयोगको जानते थे और अिससे लाभ अुठाते थे। और नयी बाअिबिल (मेथ्यू ६–१७) में अैसा अुल्लेख है—"When thou fastest, anoint thy head and wash your face." अिस वाक्यको पढ़ते ही आर्मस्ट्रॉङ्गको

यह सूझा कि मूत्रपानके साथ मूत्रमालिश भी करनी चाहिये। अतः अुन्होंने मालिश भी शुरू कर दी और वे खासकर गले, मुंह और सिरकी मालिश अच्छी तरहसे करने लगे। आखिर अुन्हें धर्मपुस्तक बाअिबिलके कथनकी यथार्थता समझमें आयी।

अिस प्रकार पश्चिमकी प्रजाने धर्मपुस्तक बाअिबिलसे अिस प्रयोगकी प्रेरणा प्राप्त की है। बाअिबलके अुपर्युक्त आदेश पर श्रद्धा रखनेवाले अेक प्रसिद्ध मिशनरी डाक्टर गुजरातमें रह चुके हैं। अुनकी अुपचार-पद्धति अिस प्रकारकी थी कि वे रोगीसे जांचके बहाने अुसका पेशाब ले लेते और फिर अमुक परिमाणमें अुस पेशाबको दवामें मिलाकर अुस रोगीको दे देते; जिससे वह शीघ्र ही ठीक हो जाता। अिस तरह अुन्होंने हज़ारों रोगियोंके अनेक रोगोंको मिटाया था और ख्याति अेवं कीर्ति प्राप्त की थी। अुनकी अिस अुपचार पद्धतिको सहायक डाक्टरके सिवा और कोअी नहीं जानता था।

गत सदीके शुरूमें अिंग्लैण्डमें अेक अद्‌भुत पुस्तक प्रकाशित हुअी थी, जिसका नाम— 'वन थाअूज़ेंड नोटेबल थिंग्ज़' (अेक हज़ार जानने योग्य बातें) था। अुनमेंसे कुछ बातें निम्नलिखित हैं:—

(१) शरीरकी भीतरी और बाहरी प्रत्येक रोगका सर्वव्यापक तथा अुत्तम अुपाय यह है कि सुबह लगातार नौ दिन तक अपना मूत्र पियें। वह प्रशीताद (स्कर्वी) को मिटाता है और आपके शरीरको हलका तथा प्रफुल्लित बनाता है।

(२) अिसी प्रकार मूत्रका प्रयोग करनेंसे जलोदर और कमलरोग मिटता है।

(३) गरम मूत्रसे कानको धोया जाय तो बहरापन, कान बजना और कानके अनेक रोग दूर होते हैं।

(४) आंखोंको मूत्रसे धोने पर अुनकी पीडा, लाली और सूजन दूर हो जाती है और दृष्टि निर्मल अेवं तेजस्वी हो जाती है।

(५) मूत्रसे हाथ धोये जायें और अुनकी मालिशकी जाय तो अुनकी जडता ठीक हो जाती है, अुनका फटना मिट जाता है, अुनके छाले दूर हो जाते हैं और अुनके जोड़ लचीले हो जाते हैं।

(६) मूत्र द्वारा धोनेसे ताज़ा ज़ख्म ठीक हो जाता है।

(७) मूत्रमालिशसे खाज या जलन मिट जाती है।

(८) गुदाको बार बार मूत्र द्वारा धोनेसे बवासीर और अन्य पीडा नष्ट हो जाती है।

अिसके अलावा सन् १६९५ में 'सॅल्मन्स अिंग्लिश फ़िज़ीशियन' सॅल्मनका अंग्रेज़ चिकित्सक) नामकी पुस्तक प्रकाशित हुअी थी। जिसमें मूत्र संबंधी अद्‌भुत बातें मिलती हैं। अुनमेंसे कुछ यहां दी जाती हैं:—

"मनुष्य और बहुतसे चौपाये जानवरोंका मूत्र अनेक अुपयोगमें आता है। मनुष्यके मूत्रका अुपयोग मुख्यत: भौतिक विज्ञान अेवं रसायन-शास्त्रमें होता है। मूत्र रुधिरका जलीय अंश है। रुधिर रक्तवाहिनियों द्वारा गुरदेमें जाता है, वहां अुसका जलीय अंश अलग होकर खमीर की प्रक्रियासे मूत्रमें बदल जाता है। पुरुष या स्त्रीका मूत्र अुष्ण और रुक्ष होता है। यह जमावोंको पिघलाकर साफ़ करता है और सड़ान अेवं विकारको रोकता है। अिसका पान किया जाय तो जिगर, तिल्ली और पित्ताशयके रोग, जलोदर, मासिक धर्मका अवरोध, पांडु-रोग, प्लेग और सभी प्रकारके विषैले ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

"ताज़े या गुनगुने मूत्रसे मालिशकी जाय तो चमड़ी साफ़ और मुला-यम हो जाती है। यह चाहे जैसे ज़हरीले हथियारके ज़ख्मोंको ठीक करता है। त्वचाके भयंकर रोगोंको मिटाता है। बुखारमें शरीर पर मालिश करनेसे बुखारकी गरमीको कम करता है। शरीरके कंपन, अंगोंकी शून्यता और लक़वेके लिये मूत्र-मालिश श्रेष्ठ अुपाय है। मूत्र चुपड़ने और मसलनेसे तिलीके दर्द मिट जाते हैं।

"मूत्रमें अैसे क्षार भी हैं जो हवामें अुड़ जाते हैं, वे अत्यन्त गुणकारी होते हैं। वे अम्लताको चूस लेते हैं और शरीरके बहुत-से रोगोंको

जड़-मूलसे नष्ट करते हैं। वे गुरदे, आंतों और गर्भाशयकी पीडाओंको दूर करते हैं। मुंहकी सूजन, चक्कर आना दिमाग़की नसोंका टूटना या खिंचना, सुस्ती आना, आधा सिरदर्द, लक़वा, लंगड़ापन, बहरापन, किसी अंगका निरुपयोगी हो जाना या सूख जाना, ज़ुकाम; सिर और दिमाग़की बीमारियां, ज्ञानतंतुओं और जोड़ोंके रोग, प्रदर आदि गर्भाशयके रोग; अिन सब व्याधियोंके लिये मूत्र अमूल्य अेवं श्रेष्ठ अुपाय है। वह गुरदे और मूत्रमार्गके अवरोधोंको और अुनमें जमे हुअे क्षारोंको गलाकर दूर करता है और गुरदेकी पथरीको तोड़कर बाहर निकाल देता है। मूत्रका रुक जाना, पीडाके साथ मूत्रका आना, अित्यादि मूत्र संबंधी सभी बीमारियोंके लिये वह अेक खास अिलाज है।"

मूत्रका अुपयोग फ्रान्समें भी होता था। अठारहवीं सदीके आरम्भमें तो पेरिसके दंत-चिकित्सक मूत्रसे दांत धोकर दांतोंके सभी रोग दूर करते थे।

दिन प्रतिदिन मूत्र संबंधी हमारा अज्ञान दूर होता जाता है। जहां आधुनिक विज्ञानका बोलबाला है वहां भी अंग्रेज़ी चिकित्साके कुशल अेवं विख्यात डाक्टर अिस बातको मानने लगे हैं कि मानव-मूत्रमें शरीरको स्वस्थ बनाये रखनेकी अनोखी शक्ति है। जीवशास्त्रके प्रसिद्ध प्रोफ़ेसर जीन रोस्टेंडने मनुष्यके शरीरमें रसग्रन्थियोंकी खोज करके यह सिद्ध किया है कि अुन ग्रन्थियोंमें से झरनेवाले जीवन-रस, जिन्हें 'होरमोन्स' कहते हैं, शरीरके लिये अेक अुत्तम आहार हैं। तभीसे शरीर-शास्त्री मूत्र-शक्तिकी यथार्थताको समझने लगे हैं; क्योंकि अुन ग्रन्थियोंमें से झरनेवाले रसोंका कुछ भाग गुरदेमें छनकर मूत्रके साथ बाहर निकलता है, जिसका फिर अुपयोग करनेसे अस्वस्थ शरीरको स्वस्थ बनाया जा सकता है। अिस तरह जीव-शास्त्रकी अेकदम अंतिम प्रकारकी खोजसे मालूम होता है कि मूत्र कोअी निकम्मी चीज़ नहीं है, किन्तु अेक अमूल्य वस्तु है। वह तो चमत्कारी अद्भुत रसायन है। अंग्रेज़ शरीर-शास्त्री अेलिस बारकर का यह अभिप्राय है कि हमारा शरीर किसी भी औषधि

द्रव्यकी अपेक्षा अधिक चमत्कारी द्रव्य बनाता है, जो सबसे अधिक संपूर्ण है, और अुस में शरीरके विषैले जन्तुओंका नाश करनेवाले विरोधी तत्त्व हैं; वह द्रव्य अपना ही मूत्र है।

अिंग्लैंडके अेक प्रसिद्ध डाक्टर टी० विलसन डीचमेन पी अेच० सी०, अेम० डी० अेक पत्रिकामें लिखते हैं कि प्रत्येक रोगीके शरीरकी भिन्न-भिन्न रुग्ण अवस्थाके कारण अुसके मूत्रका स्वरूप भी भिन्न-भिन्न होता है। अिसलिये, किसी अंगके टूट जानेसे या किसी अंगमें कुछ कमी होनेसे जो रोग होते हैं अुन्हें छोड़कर बाकी सभी रोगोंको ठीक करनेके लिये वह मूत्र अत्यन्त अुपयोगी है। दवाओंकी संख्या तीन हज़ार से भी अधिक है। अुनमें से रोगीके लिये अुपयुक्त दवा पसन्द करनेमें जो भूल होती है, मूत्र अुस भूलसे डाक्टरको बचाता है। शरीरके भीतरी बल जिसे ठीक नहीं कर सकते अुसे बाहरी बल भी ठीक नहीं कर सकते।

अेक अंग्रेज़ लेखक सीरिल स्कॉटने अपनी पुस्तक — 'डाक्टर्स, डिज़ीज़ अॅण्ड हॅल्थ' (डाक्टर, रोग और स्वास्थ्य) में अिंग्लैंडके लीड्ज़ और हेरोगेट शहरके जे० पी०, स्व० डब्ल्यू० अेच० बक्सटरके मूत्र-प्रयोगका जो रोचक विवरण दिया है वह अिस प्रकार है।

"बक्सटर महाशय नियमित अपना मूत्र पीते थे और अुन्होंने मूत्रके बारेमें अनेक लेख भी लिखे थे। अुनकी आयु खूब लंबी थी। अुन्होंने अपने अति भयंकर कैन्सरके रोगको मूत्र-पट्टी रखकर और मूत्रपान करके मिटाया था। अुन्होंने अपने अन्य रोगोंको भी अिसी सरल अुपचारसे दूर किया था। अुनकी यह दृढ मान्यता थी कि जगत्में मूत्र ही सर्वोत्तम जन्तुनाशक द्रव्य है। आगन्तुक रोगसे अपनी रक्षा करनेके लिये वे रोज़ाना तीन टंबलर पेशाब पीते थे। वे मूत्रपानको निर्दोष अेवं हितकर समझते थे। वे अपनी दृष्टि की रक्षाके लिये सदा अपनी आंखोंमें मूत्र डालते थे। वे ज़ख्म, सूजन, फोड़े आदिके लिये भी मूत्रोपचारका समर्थन करते थे। वे मूत्रको अद्वितीय रेचक मानते थे।"

अब तो मूत्रका अुपयोग विलासकी सामग्री बनानेमें भी होने लगा है। अिंग्लैण्डके रसायनविशारदोंने मूत्रके क्षारोंसे श्रेष्ठ प्रकारके नहानेके साबुन और बढ़िया अेवं बहुमूल्य क्रीम तैयार किये हैं। अिस प्रकार मानव-मूत्रका अुपयोग होता रहता है, जिसे न हम जान सकते हैं और न देख सकते हैं। कुछ समयके बाद यह भी संभव है कि चिकित्सक गुप्त रीतिसे मूत्रोपचार द्वारा अपने रोगियोंके रोगोंको दूर करके यश तथा धन कमाने लग जाअें।

५

मानवमूत्रका मूल सिद्धान्त

पिछले प्रकरणमें यह बताया गया है कि स्वमूत्रको शारीरिक आरोग्यका सच्चा साधन मानकर प्राचीन कालमें अुसका अुपयोग होता था और आज भी हो रहा है। आम लोगोंकी नीति, रीति, पद्धति और अुक्ति में सामान्य समझ खूब होती है। जैसे, "वह तो पेशाब पीकर अुसके पीछे पड़ा है।" "यह भला आदमी [illegible] कटी अुंगली पर भी नहीं मूतता।" गांवमें विवाह के अवसर पर गाये जानेवाले गीतोंके साथ-साथ ताना-मेहना मारनेका रिवाज भी है। कन्यापक्षकी गानेवाली स्त्रियां वरको ताना देती हैं–"तेरी मांने तुझे मूत पिलाकर बड़ा किया, पर अब तूने घी-दूध पीना।" छोटे बच्चेको सफ़ेद-पीले दस्त आते हों तो बूढ़ी दादी बच्चेकी माताको कहती है–"देखती नहीं, बच्चे को सफ़ेद-पीले दस्त लगे हैं? किसीको क्या पूछना है? बच्चेका ही मूत लेकर तनिक पिला दे न।"

अिन सब बातोंमें कुछ रहस्य है और अिनमें सामान्य समझ है। यह सामान्य समझ पीढ़ियोंके संस्कारसे आती है। चाहे साधारण जनताके सीधे-सादे शब्दोंवाली भाषा अपने आपको सभ्य अेवं सुशिक्षित माननेवाले

समाजको पसन्द न आती हो, परन्तु अुसीने हमारे समाजको गढ़ा है और अुसके दैनिक जीवनमें वह सामान्य समझ ओतप्रोत है। साधारण जनता धर्म या तत्त्वज्ञानके मुख्य अेवं गूढ सिद्धान्तोंको नहीं समझती, परन्तु अुन सिद्धान्तोंका सामान्य बोध अुसकी वाणीमें ओतप्रोत हो जाता है। विश्वप्रेमकी पंडिताअू व्याख्यासे भले वह अपरिचित हो; परन्तु अुसके ये सरल अुद्गार – "अपने जैसा दूसरोंको समझो," "भाअी भाअी बनकर रहो," "जो बरताव तुम्हें अच्छा नहीं लगता वह दूसरोंके साथ मत करो," "बुराअीका बदला भलाअीसे दो," अित्यादि अुसके सामान्य बोधका परिचय देते हैं। ये अुद्गार मूल विश्वप्रेम तथा अेकात्म-भावके सर्वश्रेष्ठ सिद्धान्तोंका परिपाक हैं। जिस तरह सामान्य बोध का मूल विश्वप्रेम अेवं अेकात्मभावके सिद्धान्तमें है। अुसी प्रकार मूत्र-संबंधी अुक्ति या सामान्य समझ भी अपने मूल सिद्धान्तका परिपाक है। वह मूल सिद्धान्त कौनसा है, आअिये, हम अुसे समझें।

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, ये पांच महाभूत हैं, जिनसे यह सृष्टि बनी हुअी है। मानव-देह भी अिन्हीं पांच तत्त्वोंसे बनी हुअी है। अीश्वरने प्रत्येक मनुष्यको अेक जैसी देह दी है और प्रत्येक स्वस्थ देहमें समुचित परिमाणमें ये पांच तत्त्व होते हैं। मनुष्यके अपने दोषसे जब अुस परिमाणमें कमी-बेशी होती है तब अुसका स्वास्थ्य बिगड़ता है। अुस बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको फिरसे ठीक करनेके लिये पांच तत्त्वोंके परिमाणकी कमी-बेशीको ठीक कर लेना चाहिये। यह कार्य करनेकी शक्ति केवल स्वमूत्रमें है। पृथ्वीको जितना समुद्रका आधार है, अुतना ही आधार मानवदेहको स्वमूत्रका है। पृथ्वीके निर्माण तथा जीवनमें समुद्र का जो स्थान है, मानव-देहमें वह स्थान स्वमूत्रका है। और जैसे सभी महाभूतोंको आत्मसात् करनेकी शक्ति जलमें है वैसे शरीरमें रहे हुअे सभी तत्त्वोंको आत्मसात् करनेकी शक्ति अुसके मूत्रमें है। अिसीलिये मानव-शरीरके बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको फिरसे ठीक करनेके लिये स्वमूत्र प्राणिमात्रके लिये क़ुदरती देन है।

जो सत्य मानव-देहको लागू होता है वही सत्य जीवमात्रकी देह को लागू होता है। अुपर्युक्त सिद्धान्तके अनुसार अिस मूत्र द्रव्यको मैं साधारण औषध नहीं समझता, मैं तो अिसे जीवनका अमृत मानता हूं। मेरी यह बात बहुत-से लोगोंको मूर्खता-पूर्ण अेवं विचित्र लगती है। पेनिसिलिनमें मानव-देहके लिये अनेक हानिकर तत्त्व हैं, अैसा अब सिद्ध हुआ है। फिर भी अुसे नवजीवनदाताकी अुपाधिसे विभूषित करनेवाले वैज्ञानिक वहमियोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे अिस जीवनके अमृतका अनुभव करें और साथ ही मैं अुन्हें यह विश्वास दिलाता हूं कि अैसा करनेके लिये अुन्हें हाथ मलने नहीं पड़ेंगे; क्योंकि किसी भी व्यक्तिको अुसके अुचित अुपयोगसे नुक़सान तो होता ही नहीं, बल्कि फ़ायदा अचूक होता है।

कुछ हमदर्द चिकित्सकोंकी सूचना है कि मूत्रकी गंध और स्वादमें रुचिकर परिवर्तन हो जाय तो बहुत सरलता हो जाय। अपेक्षित परिवर्तनके लिये मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। परन्तु मूत्रकी मूल शक्ति क़ायम रहनी चाहिये। मैं मानता हूं कि मूत्रके स्वाद और गंधको बदलनेसे मूत्रकी शक्तिके नाशकी भी पूरी संभावना है।

कअी प्रेमी वैद्योंका कहना है कि मूत्रके साथ कुछ वनस्पति-द्रव्य अनुपानके रूपमें लिये जायें तो बहुत लाभ हो। अिस बातसे भी मैं संमत नहीं हूं। क्योंकि वनस्पति द्रव्योंके मिश्रणसे जो लाभ होगा, अुसके असली हक़दारका निर्णय कैसे होगा? फिर तो बुद्धिकी कुश्ती चलेगी और यह दैवी द्रव्य पैसा कमानेका साधन हो जायगा। हम तो मूत्र-प्रयोगको आबालवृद्धके लिये सरल अेवं सुलभ बनाये रखना चाहते हैं और अुसे घर-घरका वैद्य बनाना चाहते हैं। यह तभी संभव है कि न तो अुसके स्वरूपको विकृत किया जाय और न ही अुसे किसी अन्य द्रव्यसे मिश्रित किया जाय। जबसे वद्य या डाक्टरका पेशा धन कमाने का साधन बना तबसे मानव जातिकी पीडा बढ़ गयी। अुसे पीडा-मुक्त करना हो और लोक-कल्याण करना हो तो मूत्रको सट्टेबाज़ोंके हाथोंकी कठपुतली न बनने दिया जाय।

६

मानव-मूत्रकी वैज्ञानिकता

अेक दिनकी बात है, मैं अपने दो मित्रोंके साथ मोटरमें बैठा था। मेरी आजकी मूत्रोपचारकी प्रवृत्तिके बारेमें बात चल पड़ी। दो में से अेक मित्र बोल अुठे–"रावजी भाअी, मूत्रका वैज्ञानिक अन्वेषण तो कराना चाहिये न?" यह सुनकर तुरन्त दूसरे मित्रने कहा–"क्या खाक अन्वेषण? जो खुद ही विज्ञान है अुसका अन्वेषण करानेकी क्या ज़रूरत?"

मैं यह निश्चयात्मक अुत्तर सुनकर चौंक अुठा। 'विज्ञान' वैज्ञानिक है कि नहीं, अिसका अन्वेषण करनेवाला विज्ञानको ही नहीं समझता। यह भी कुछ अैसी ही बात है। अुपर्युक्त अुत्तर अेक विचारशील अेवं ज़िम्मेदार व्यक्तिके दिलका था। तब मुझे पता चला कि 'मूत्र' द्रव्यमें अुस व्यक्तिका कितना विश्वास है! "मैं अुस अुत्तरसे केवल अुत्साहित ही नहीं हुआ, अपितु मेरे लिये वह अेक मननीय प्रश्न बन गया। जीवनके बहत्तर वसन्त बितानेके बाद मैं अेक नया विद्यार्थी बन बैठा हूं। मेरे पास मूत्र संबंधी कोअी साहित्य तो है नहीं, जो थोड़ा-बहुत मिला अुसमें से मुझे अिस कार्यकी प्रेरणा मिली। मैं समझता हूं कि आयुर्वेदकी पुरानी पुस्तकोंमें से बहुत कुछ मिल सकता है; परन्तु आयुर्वेदके जानकार और अनुभवी भी आधुनिक विज्ञानके चक्करमें पड़े हैं अथवा अुसके विरुद्ध अपना विचार प्रदर्शित करनेकी क्षमता अुनमें नहीं है। चाहे जो हो, परन्तु आग जैसे राखसे दब जाती है, वैसे सत्य बात पर 'वैज्ञानिक वहम' का काला परदा गिर गया है और सर्वोत्तम तथा सर्वशुद्ध द्रव्यको मैला, गंदा और ज़हरीला कहकर अपने विज्ञानका टट्टू चलाते रहते हैं।

भले चलायें, मुझे अुससे द्वेष नहीं है। मुझे तो मानव जातिके लिये जो अुत्तम प्रतीत हुआ है अुसका प्रचार जान पर खेलकर भी

करनेके लिये मैं अुत्सुक हूं। मेरा यह प्रचार वैज्ञानिक होगा और ज्ञानपूर्वक भी।

अिस दौरानमें मुझे अेक पत्र मिला। रांदेर (सूरत) में श्री झवेरी रहते हैं, जिनकी अुमर ८० वर्षकी है। अुन्होंने पंच महाभूतोंका गहरा अध्ययन किया है और अिस विषयमें अंग्रेज़ी भाषामें अेक बड़ी पुस्तक लिखी है अेवं अनेक लेख भी। अुन्होंने मेरी प्रवृत्तिको जानकर प्रेमपूर्वक अुत्साहित करते हुअे लिखा है—"पंच महाभूतोंके तत्त्वोंका विचार करते हुअे मुझे विश्वास हो गया कि समुद्र न हो तो पृथ्वीका अस्तित्व भी न हो। परन्तु आपकी 'मानवमूत्र' पुस्तक पढ़ते हुअे मैं अेक और नवीन सत्य समझ सका, जिसे आज तक नहीं समझ पाया था। वह सत्य यह है कि जैसे पृथ्वीका आधार समुद्र है वैसे मानव-शरीर या किसी भी प्राणीके शरीरका आधार अुसका मूत्र है। समुद्र नहीं तो पृथ्वी नहीं, मूत्र नहीं तो शरीर नहीं"। यह मूत्र स्वयं विज्ञान है, स्वयंसिद्ध है।

अपने अनुभवसे जो समझमें आये वह 'ज्ञान'। वही ज्ञान जब अनेकोंके अनुभवमें सिद्ध हो जाये तो 'विज्ञान'। जब यह बात सूर्यकी भांति स्पष्ट है कि पृथ्वीके जीवनमें जो स्थान समुद्रका है वही स्थान प्राणीके शरीरमें मूत्रका है। तो फिर मूत्र स्वयं विज्ञान नहीं है, अैसा कौन वैज्ञानिक कह सकेगा? यह सृष्टि पांच महाभूतोंकी बनी हुअी है —आकाश, वायु, पृथ्वी, जल और अग्नि। मानव-देह भी अिन्हीं पांच महाभूतोंकी बनी हुअी है और सब देहोंमें ये पांच महाभूत समुचित परिमाणमें होते हैं। अिनमेंसे जल तत्त्व अितना शक्तिशाली है कि शरीरके सभी भागोंको आत्मसात् कर सकता है। अिसलिये शरीरके प्रत्येक छोटे-बड़े अवयवके साथ अिसका संपर्क रहा करता है। अैसे जल तत्त्वपर सारे शरीरका आधार है। यह तत्त्व निर्जीव नहीं किन्तु सजीव है। अतः शरीरके सभी कोषोंके साथ अिसका संपर्क रहता है और अुनके रक्षण अेवं विकासकी शक्ति अिसमें है। सच पूछें तो प्रकृतिने हमारे शरीरको

अनेक रोगोंसे बचानेका काम अिसे सौंपा है। अिस लिये स्वमूत्र प्रत्येक प्राणीके शरीरका वैद्य है।

फिर भी किसी कारणसे जो पूर्वग्रह बन चुका हो वह भला आसानीसे दूर हो सकता है? अिस वैज्ञानिक युगकी ॲलोपैथीके अनुयायी अैसा कहते हैं कि मूत्र तो शरीरका विकार है और अुसमें शरीरके लिये हानिकर तत्त्व होते हैं। अिसलिये अुसके अुपयोगसे शरीरको नुक़सान पहुंचता ही है। अिस देशमें नैसर्गिक अुपचार भी पाश्चात्य विचारधाराकी अुपज है। अिसलिये यहांके प्राकृतिक चिकित्सक भी प्राय: डाक्टरोंकी हां में हां मिलाते हैं। मैं अुन्हें अैसी मान्यताके लिये दोषी नहीं ठहराता हूं; परन्तु यह अवश्य जानना चाहता हूं कि प्रत्येक बात को विज्ञानकी कसौटी पर कसनेकी दुहाअी देनेवाले डाक्टरों अथवा वैज्ञानिकोंने स्वमूत्रको शास्त्रीय पद्धतिसे हानिकर सिद्ध किया है? यद्यपि कुछ वैद्य या डाक्टर मनुष्यसे कुछ मिलता-जुलता आहार करनेवाले पशुओंके मूत्रका अुपयोग कुछ रोगोंके लिये करते हैं। अब मैं अिस चर्चामें पड़ना नहीं चाहता कि वैसा करना किस हद तक वैज्ञानिक या अवैज्ञानिक है। परन्तु यदि गाय, बकरी, अूंट और गधेका मूत्र रोगीको पिलानेमें आपत्ति नहीं है, तो फिर रोगी मनुष्यको अुसीका मूत्र पिलानेमें आपत्ति कैसी? अिसके जवाबमें सभी व्यवसायी चिकित्सक अेक निरर्थक दलील यह देते हैं कि मनुष्यके शरीरका विकृत तत्त्व अुसके मूत्रमें होता है। तो क्या गाय, बकरी, अूंट और गधेके मूत्रमें अुनके शरीरका अमृत तत्त्व होता है? दिनभर गंदगी और बदबूदार कूड़ा-करकट खानेवाली भटकती हुअी गायका खालमें पड़ा हुआ अस्वच्छ अेवं मलिन मूत्र रोगीको देनेकी अपेक्षा रोगीका अपना मूत्र गुण और स्वच्छताकी दृष्टिसे हज़ार गुना अुत्तम है, अैसा आयुर्वेद-विशारद श्री बापालाल वैद्यने खुद मूत्रप्रयोग करनेके बाद स्वानुभवसे घोषित किया है। जो लोग मूत्रके गुणदोषसे अपरिचित हों, अुससे दूर भागते हों और अुसका अनुभव

न रखते हों, अुन्हें स्वमूत्रको शरीरका ज़हर अेवं विकार कहनेका क्या अधिकार है? अुन्हें कैसे वैज्ञानिक समझना?

स्वानुभव हो और फिर अुसे अनेकोंके अनुभवका समर्थन मिले, अिससे बढ़कर वैज्ञानिक क्या हो सकता है? चमड़ी पर तेज़ाब डालनेसे वह जल जाती है, अैसा अनुभव दो चार प्रयोगोंसे हो जाय तो फिर अुसे शास्त्रीय पद्धतिसे सिद्ध समझा जाय कि नहीं? चमड़ी पर तेज़ाब गिरनेसे वह जल जाती है, अिसे सिद्ध करनेके लिये सर्वानुभवकी ज़रूरत है क्या? मूत्रका अुपयोग प्राचीन कालसे होता आया है। अुसके विषयमें पूर्वग्रह होने पर भी, अुससे लगभग सभीको लाभ हुआ है। मैं अपनी जानकारीकी ही बात करूं तो सैंकड़ों रोगियोंने मूत्रोपचार किया है, जो सभीके लिये लाभकारी ही सिद्ध हुआ है। अिस अुपचारके दौरानमें यदि कोअी व्यक्ति परहेज़ न रखे या विजातीय द्रव्यका सेवन करता रहे तो अुसे हानि पहुंचनेकी पूरी संभावना है। अैसा अनुभव होने पर भी यह कहना कि मूत्र शरीरमें से निकला हुआ हानिकारक द्रव्य है और फिरसे शरीरके भीतर जानेके लिये नहीं बना है, अिस बातको वहम नहीं तो और क्या कहा जाय? खुद अनुभव न किया हो अथवा किसी दूसरेका अैसा अनुभव देखा न हो, फिर भी पूर्वग्रहसे वैसा मानते रहना ही तो वहम है न?

वैज्ञानिक विश्लेषणसे मालूम हुआ है कि स्वस्थ मनुष्यके मूत्रमें शरीरके लिये पोषक अेवं अुपयोगी अनेक तत्त्व हैं। डाक्टर फ़ॅरनने अपनी विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक — 'इंट्रोडक्शन टु बायोकॅमिस्ट्री' (जीव-रसायन-शास्त्रका परिचय) में बताया है कि स्वस्थ मनुष्य के मूत्रमें भिन्न-भिन्न परिमाणमें अुन्नीस तत्त्व पाये जाते हैं, जिनका अुल्लेख अगले प्रकरणमें किया जायगा। आहारशास्त्री और शारीरिक रसायनविद्याके जानकार अुन सभी तत्त्वोंको शारीरिक पोषण अेवं स्वास्थ्यके लिये आवश्यक मानते हैं। अुनमेंसे अेक तत्त्व यूरिया भी है, जो सबसे अधिक परिमाणमें होता

है, अर्थात् ३४०० मिलिग्राम मूत्रमें १४५९ मिलिग्राम यूरिया रहता है और वह मानव-शरीरके लिये बहुत पोषक है।

अहमदावादके अेक प्रसिद्ध अेफ़० आर० सी० अेस० डाक्टरको जब मेरे मूत्रप्रयोगकी बात मालूम हुअी, तब अुन्होंने मुझे बताया कि आपके मूत्रप्रयोगकी बातमें काफ़ी सचाअी है; क्योंकि यूरिया नामका क्षार शरीरकी अच्छी रक्षा करता है। वह यूरिया मूत्र द्वारा बाहर निकलता है। अुसे शरीरमें दाखिल करनेसे स्वास्थ्य पर अच्छा असर होता है। अुसकी कमीको पूरा करनेके लिये डाक्टर बनावटी अर्थात् रासायनिक बनावटका यूरिया अुपयोगमें लेते हैं अर्थात् दवामें मिलाकर रोगीको देते हैं। अब, यदि मूत्र शरीरके लिये हानिकर है तो अुसमें अधिकसे अधिक परिमाणमें पाया जानेवाला तत्त्व—यूरिया शरीरके स्वास्थ्यकी रक्षा के लिये डाक्टर क्यों देते हैं? रासायनिक यूरिया तो आयाके दूध जैसा है। यदि आयाका दूध शरीरके लिये लाभदायक हो तो अपनी मांके दूध जैसे यूरियासे भरपूर अपना मूत्र पीनेसे भला शरीरको हानि पहुंच सकती है? थोड़ी देरके लिये मान लें कि दवामें बनावटी यूरिया देनेसे असली यूरियाकी कमी पूरी हो जाती है। परन्तु मूत्रमें पाये जानेवाले अन्य क्षारोंकी पूर्ति कैसे होगी? तो फिर ज्ञात-अज्ञात सभी क्षारोंकी पूर्तिके लिये मूत्रका ही अुपयोग क्यों न किया जाय?

अुपर्युक्त विवेचनसे मैं यह सिद्ध करना चाहता हूं कि स्वमूत्रको शरीरके लिये हानिकर मानना सत्यका गला घोंटना है और रेतकी दीवार बनाना है। स्वमूत्र तो चिकित्सा-शास्त्रकी दृष्टिसे सजीव रस (लिविंग सोल्यूशन) है। अुसमें अैसे तत्त्व हैं कि जो मांस, रुधिर और कोष-तंतु-जाल (टिश्यूज़)को बनाते हैं, पुष्ट करते हैं और सजीव करते हैं। आयुर्वेदमें मानव-मूत्रको विषघ्न अेवं रसायन कहा है। जगत भरमें अैसी अेक भी प्रयोगशाला नहीं है कि जो मूत्र जैसा शुद्ध, विषघ्न (ज़हरको मारने वाला) और निर्दोष द्रव्य बना सके। अिसे तो प्राकृतिक देहकी प्रयोग-शालामें ही तैयार किया जा सकता है। मानव-मूत्रकी अेक और

विशेषता यह है कि वह जन्तुनाशक होते हुअे भी निर्दोष है। तारपीन, टिंचर वेन्ज़ोअिन, अेसिड आदि अनेक द्रव्य जन्तुनाशक तो हैं, पर निर्दोष नहीं हैं। अुन्हें पीनेसे मनुष्य मर जाता है। मूत्रपानमें अैसा कोअी खतरा नहीं है; प्रत्युत यह मनुष्यको चिरजीवी बनाता है।

मूत्रके बारेमें अेक और बात भी विचारणीय है। रोगके कारण शरीरमें जो विकृति आ जाती है, अुस विकृतिके तत्त्व भी मूत्र द्वारा बाहर आते हैं। अर्थात् प्रत्येक रोगीके मूत्रमें सहज पोषक तत्त्व और विकृत तत्त्व दोनों प्रकारके तत्त्व होते हैं। अिसलिये मूत्रपान अेवं मूत्र-मालिश द्वारा अुपयोगी तथा पोषक क्षार शरीरमें जाकर अपना स्थान ले लेते हैं और साथ ही रोगके विकार वाले तत्त्व वापस शरीरमें जाकर होमियो-पैथिक या वॅक्सीनेशनके सिद्धान्तके अनुसार अॅन्टीबॉडीके रूपमें काम करके रोगका नाश करते हैं। आजकल जर्मन डाक्टर रोगीको पेशाबके अिंजेक्शन देते हैं। और अब तो रोगीके मलमेंसे अमुक द्रव्य लेकर तैयार किये हुअे अिंजेक्शन भी अुसे लगाये जाने लगे हैं। यदि यह पद्धति वैज्ञानिक समझी जाय तो मूत्र चिकित्सा वैज्ञानिक क्यों नहीं ?

अन्तमें मूत्रोपचारकी अेक महत्त्वपूर्ण बातका स्मरण दिला देना ज़रूरी समझता हूं। वह यह है कि रोगीका रोग मिटानेके लिये अुसीका मूत्र पिलाना चाहिये। चाहे जैसे नीरोग मनुष्यका मूत्र पिलानेसे हानिकी संभावना है। अतः मैंने यह निष्कर्ष निकाला है कि किसी भी मनुष्य या पशुका मूत्र अुसीके लिये संपूर्ण वैज्ञानिक द्रव्य है।

७

मूत्रकी गुणदोष-समीक्षा

मैंने अबतक मूत्रकी गुणगाथा ही गायी है। परन्तु मेरी अिस बातसे सभीको सम्मत होना ही चाहिये, अैसी आशा भला मैं कैसे रख सकता हूं। जीवशास्त्र, शरीरशास्त्र, रसायनशास्त्र और विज्ञान-शास्त्र, अिनमेंसे किसी शास्त्रका भी मैंने अध्ययन नहीं किया है। फिर भी मैं यह जानता हूं कि जीवशास्त्रियों या शरीरशास्त्रियोंका अध्ययन अभी तक किसी अन्तिम निर्णय तक नहीं पहुंच सका है। शरीरशास्त्री कोअी नयी बात खोज निकालते हैं और विश्वको दावेके साथ कहते हैं कि अुनकी यह अन्तिम खोज है। कुछ ही वरसोंमें कोअी दूसरा शरीरशास्त्री अन्य खोज करता है, जिससे अन्तिम मानी जानेवाली खोज पर न केवल परदा ही गिरता है, किन्तु अुसका नाम तक मिट जाता है और नयी खोज संपूर्ण खोज कहलाने लगती है। रसायनशास्त्रियों अेवं विज्ञानशास्त्रियोंकी खोजकी भी यही दशा है। जो द्रव्य कल तक सर्वोत्तम तथा विश्वकल्याणकारी मालूम होता था, वह द्रव्य आज निःसार अेवं प्रतिष्ठाहीन हो गया है और आज जो द्रव्य श्रेष्ठ अेवं तथा प्रतिष्ठित समझा जाता है, कल अुसकी दयाजनक दशा होनेवाली है, यह निश्चित है। परन्तु मूत्रकी यह स्थिति नहीं है। यह तो सनातन अेवं अव्यय है। जैसे अीश्वर संपूर्ण है वैसे अुसकी सृष्टि भी संपूर्ण है। और मूत्र अीश्वरकी अद्‌भुत अेवं संपूर्ण देन है, जो मानवके शारीरिक स्वास्थ्यके लिये अमूल्य अेवं अचूक साधन है। मैं अुसे शारीरिक स्वास्थ्यके लिये संपूर्ण मानता हूं। अीश्वर और प्रकृतिके प्रति श्रद्धा की यह बात है, केवल बुद्धि पर आधार रखनेवाले विज्ञान की यह बात नहीं है।

मुझे तो मूत्रमें गुण ही गुण दिखायी दिये हैं, अेक भी दोष नज़र नहीं आया; अिसलिये दोष कैसे बताअूं ? रसायनशास्त्री तो अिसके गुण और दोष दोनों बताते हैं; यद्यपि वे भी अिस बारेमें अेकमत नहीं हैं। सभी अपनी-अपनी बुद्धिमत्ताके गीत गाते हैं। दुनियाको नयी खोजका अुपहार देकर मनुष्यजातिकी अुत्तम सेवा करनेके बदलेमें पुरस्कार प्राप्त करते हैं। परन्तु थोड़े ही समयके बाद वह खोज पुरानी अेवं महत्त्वशून्य हो जाती है, जैसे नाअिट्रोजन बम अब हाअिड्रोजन बमके सामने महत्त्वहीन हो गया है। परन्तु जो वस्तु सत्य है वह कभी पुरानी अेवं महत्त्वशून्य नहीं हो जाती। सत्य पुराना नहीं होता, प्रेम तत्त्व पुराना नहीं होता, श्रद्धा तत्त्व पुराना नहीं होता और आत्म तत्त्व पुराना नहीं होता; क्योंकि वह खोजनेकी या वर्णन करनेकी वस्तु नहीं है, अपितु स्वानुभव करनेकी वस्तु है। और तत्त्वकी श्रद्धा बिना स्वानुभव हो नहीं सकता। श्रद्धाको अंधश्रद्धा या अज्ञानता कहकर बदनाम करना ठीक नहीं है। श्रद्धा तो आखिर श्रद्धा ही है। अुसे किसी विशेषणकी ज़रूरत नहीं है। अंधश्रद्धा शब्द ही मिथ्या है। अुसे वहम कहिये, भ्रम कहिये, अज्ञानता कहिये। जिस प्रेममें संयम नहीं है, श्रेय नहीं है, वह प्रेम कैसा? वह तो मोह ही है। अिसलिये मूत्रके गुणोंके प्रति मेरी जो श्रद्धा और प्रीति है वह तर्कसिद्ध, अनुभवसिद्ध और बुद्धिगम्य है। मूत्रके असरमें कुछ कमी मालूम हो तो वह अुसकी नहीं है, परन्तु अुसके अयोग्य या अशास्त्रीय अुपयोगकी है, अैसा मैं मानने लगा हूं।

यह तो मूत्रको क़ुदरती देन मानकर अपनी श्रद्धाकी दृष्टिसे मैंने बात की। परन्तु यह भी जानना चाहिये कि वैज्ञानिक दृष्टिसे मूत्रमें कौन-कौनसे तत्त्व हैं। डाक्टर फॅरनने अपनी विश्वविख्यात पुस्तक 'अिन्ट्रोडक्शन टु बायोकॅमिस्ट्री' (जीव-रसायनशास्त्रका परिचय) में बताया है कि स्वस्थ मनुष्यके मूत्रमें स्वभावतः कितने द्रव्य हैं और अुनका परिमाण क्या है। वे लिखते हैं कि १०० सी० सी० अर्थात् चार औंस मूत्रमें निम्नलिखित द्रव्य अिस परिमाणमें होते हैं :—

द्रव्य	मिलिग्राम
(१) यूरिया अॅन० (नाअिट्रोजन)	६८२.००
(२) यूरिया	१४५९.००
(३) क्रिअेटीनीन अॅन०	३६.००
(४) क्रिअेटीनीन	९७.२०
(५) यूरिक अेसिड अॅन०	१२.३०
(६) यूरिक अेसिड	३६.९०
(७) अॅमिनो अॅन०	९.७०
(८) अॅमोनिया अॅन०	५७.००
(९) सोडियम	२१२.००
(१०) पोटाशियम	१३७.००
(११) कॅल्शियम	१९.५०
(१२) मॅग्नेशियम	११.३०
(१३) क्लोराअिड	३१४.००
(१४) टोटल सल्फ़ेट	९१.००
(१५) अिनऑर्गेनिक सल्फ़ेट	८३.००
(१६) अिनऑर्गेनिक फ़ॉस्फ़ेट	१२७.००
(१७) PH	६.४०
(१८) टोटल अेसिडिटी अॅज़ सी० सी०	
(१९) अॅन / १० अेसिड	२७.८०

अुपर्युक्त विश्लेषणसे यह पता चलता है कि स्वस्थ मनुष्यके मूत्रमें पाये जानेवाले सभी क्षार मानव-शरीरके स्वास्थ्यके लिये बड़े महत्त्व के हैं। पर यह ध्यान रहे कि स्वस्थ मनुष्यके मूत्रमें क्षारोंका परिमाण सदा अेक-सा नहीं रहता। अयुक्त आहारसे क्षारोंका परिमाण न्यूनाधिक हो जाता है। 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' के लेखक जॉन आर्मस्ट्रॉङ्गने स्वानुभवसे यह सिद्ध किया है कि कअी बार किसी मनुष्यके मूत्रमें खांडकी मात्रा अधिक होती है, फिर भी अुसे मधुप्रमेहका रोग नहीं होता।

अुन्होंने खुद अेक दिन खाँडकी बनी हुअी चीज़ें खायीं और साथ ही अनेक मधुर शीतल पेय भी पिये। चौदह घंटे बाद अुनके पेशाबमें खांड ही खांड मालूम हुअी और डाक्टरने कहा कि अुन्हें मधुप्रमेहका रोग है। परन्तु वस्तुत: अुन्हें वह रोग न था। अैसा अनेक बार होता है। अिसका यह अर्थ नहीं है कि जिसके पेशाबमें खांड अधिक हो अुसे मधुप्रमेहका रोग है, यह मान्यता मिथ्या है। अुपर्युक्त दृष्टांत देकर लेखक यह बताना चाहता है कि मनुष्यके भोजन पर मूत्रके तत्त्वोंका बहुत आधार है। मीठा या मिठाअी खानेकी और शरबत या अन्य मधुर पेय पीनेकी आदत जिसे ज़्यादा होती है अुसके पेशाबमें खांड अितनी रहती है कि वह जल्दी मधुप्रमेहका शिकार हो जाय और रोग बना रहे। कुछ रोगियोंके खूनमें खांड घुल-मिल जाती है और पेशाबमें मालूम नहीं होती। अयुक्त आहारसे मूत्रके द्रव्योंमें जो तात्कालिक परिवर्तन होता है वह अनेक बार डाक्टरोंको भी भ्रममें डाल देता है। और मेरा यह निजी अनुभव है कि ऋतुके परिवर्तनसे भी मूत्रके द्रव्योंका परिमाण न्यूनाधिक हो जाता है।

कुछ डाक्टरोंकी अैसी मान्यता है कि मूत्रमें शरीरमें से जो द्रव्य बाहर निकलते हैं वे निकम्मे और शरीरके लिये हानिकर होते हैं। मूत्रके द्रव्योंका जो विश्लेषण अूपर दिया गया है अुससे यह भली भांति समझमें आ जायगा कि डाक्टरी मान्यतामें कितनी अज्ञानता है। वे सभी द्रव्य शरीरके लिये अत्यन्त हितकर हैं। यदि अैसा न हो तो डाक्टर अुन्हीं द्रव्योंको दवामें मिलाकर फिरसे शरीरमें क्यों दाखिल करते हैं? रसायनिक क्रियासे तैयार किये हुअे खनिज द्रव्योंको शरीर-स्वास्थ्यके लिये अुत्तम मानकर डाक्टर दवाके साथ रोगीको देते हैं। क़ुदरतने वैसे द्रव्योंको ही मानव शरीरमें पैदा किया है, अुन द्रव्योंको शरीरके लिये हानिकर समझनेवाले डाक्टरोंको अक़्लका दुश्मन न कहा जाय तो क्या कहा जाय? दूसरे शब्दोंमें यह कहना होगा कि डाक्टर अपने डाक्टरी प्रमाण-पत्रके बल पर किसी भीप्रकारका सच्चा-झूठा निवेदन

अथवा खरी-खोटी दलील जनताके सामने प्रस्तुत करनेका दुःसाहस कर सकते हैं। सच बात तो यह है कि चिकित्साशास्त्रकी दृष्टिसे भी मूत्र निर्जीव वस्तु नहीं है, किन्तु सजीव रस (लिविंग सॉल्यूशन) है। यह सिद्ध हो चुका है कि मूत्रमें अैसे तत्त्व हैं कि जो मांस, रुधिर और क्षीण अेवं निर्जीव कोष-तन्तुजाल (टिश्यूज़) को बनाते हैं, बढ़ाते हैं और सजीवन करते हैं।

मूत्रमें यह अेक खास दोष बताया जाता है कि अुसका स्वाद अितना विचित्र है कि मुंहके पास ले जाते ही नाक-भौं सिकुड़ने लगते हैं और शरीर थरथराने लगता है। अैसा तर्क प्रायः वही लोग करते हैं कि जिन्होंने मूत्रके अुपयोगका प्रयत्न कभी न किया हो। मुझे तो यह निजी अनुभव है कि मैंने दवाखानेमें कितनी ही अैसी दवाअें पी थीं कि जिनके पीनेसे कंपकंपी होने लगती थी। विटाज़ाअीम अेक पाचक औषधि है। वह खाना खानेके बाद तुरन्त मुझे दी जाती थी। वह अितनी ख़राब, बेस्वाद और बदबूदार थी कि अुस की दुर्गन्धसे दवा देनेवालेका जी मतलाने लग जाता था। भला, मेरी क्या दशा होती होगी? फिर भी नियमित रूपसे दिनमें दो बार पीनेसे वह मुझे सध गयी। मूत्रका स्वाद कोअी खास विचित्र नहीं है। विलायती नमक पीनेवालेको मूत्र ज़रा भी बेस्वाद नहीं लगेगा। स्वस्थ शरीरके मूत्रका स्वरूप वर्षाके ताज़ा पानी जैसा होता है और वह ज़रा खारी होता है। गरमीकी स्थितिमें मूत्रका परिमाण कम हो जाता है, तब अुसके तत्त्वोंमें सघनता आ जानेसे अुसका रंग कुछ अधिक लाल-पीला हो जाता है और वह मूत्र स्वादमें कुछ अरुचिकर-सा लगता है सही। वह खारा, खट्टा, कसैला और कड़वा होता है, जिसे पीनेमें हिचक ज़रूर होती है। हम बहुतसी दवाअियां खाते और पीते हैं, जो मूत्रसे भी अधिक बेस्वाद और दुर्गन्धवाली होती हैं। आखिर स्वाद तो जीभका विषय है। अिस छोटी-सी जीभके बहकावेमें आकर हम अपने शरीरके नाशको निमंत्रण दे रहे हैं। हमें अपने हितके लिये जीभकी ग़ुलामी छोड़नी होगी। जीभको क्षणभर समझाकर पी हुअी वस्तु शरीरके लिये

गुणकारी हो तो अुस वस्तुकी अवहेलना करनेसे हम अपने शरीरका द्रोह करते हैं। मूत्रकी गंधके बारेमें भी अैसी ही दलील है। पहली बात तो यह है कि जो नियम जीभके लिये तै किया है वही नियम नाकके लिये होना चाहिये। गंध व्यक्तिगत घ्राणेन्द्रियका विषय है। किसी चीनीको मल-मूत्रकी गंध नहीं आती; क्योंकि अुसका सदुपयोग करनेसे वह मल-मूत्रकी गंधसे अभ्यस्त हो गया है। मैं खुद गुलावके फूलकी गंधको परख नहीं सकता, परन्तु मोगरे या चंपेकी सुगन्धको खूब पहचान सकता हूं। निथरे हुअे घीकी मीठी सुगन्ध हमें कितनी अच्छी लगती है, परन्तु दक्षिण अफ्रीकाकी जूलु स्त्री अुसी घी को सूंघकर 'नुगागावी' — दुर्गन्ध मारता है, अैसा कहकर नाक-भौं चढ़ाती है। किन्तु वही जूलु स्त्री अेरंडीके तेलमें तराबोर कपड़े या चमड़ेका घाघरा दिन रात पहनती है, जो गरमीमें पसीना आनेसे अैसी गंध मारता है कि अुस स्त्रीके पास खड़ा भी न रहा जा सके। अब आप ही बताअिये कि सुगन्ध और दुर्गन्धकी परख क्या है? अिसलिये गंध भी घ्राणेंद्रियकी रोज़-बरोज़की आदतका विषय है। घ्राणेन्द्रियसे भी हम कह सकते हैं कि सारे शरीरके श्रेयके लिये तू अपनी अच्छी या बुरी आदतको तिलांजलि दे दे।

मूत्र मानवमात्रके स्वास्थ्यके लिये क़ुदरती बख्शिश है, अैसी मेरी मान्यताके विरोधमें यह दलील पेश की जा सकती है कि मनुष्यमें जन्मसे ही मूत्रका अुपयोग करनेकी क़ुदरती प्रेरणा क्यों नहीं है? मेरा अुत्तर यह है कि जीवमात्रमें अैसी प्रेरणा है ही। पशु अिसी प्रेरणासे प्रेरित होकर अपने रोगके लिये अुसका अुपयोग करते हैं। पशुओंमें अेक और प्रेरणा भी है कि बीमार होते ही वे अपना खाना छोड़ देते हैं। चाहे जैसी अच्छी चीज़ अुनके मुंहके सामने रखी जाय वे अुसे छूते तक नहीं, अपनी बीमारी मिटने पर ही वे खाते हैं। परन्तु क़ुदरतने मनुष्यको अच्छे बुरेका विवेक करनेकी बुद्धि दी है। परन्तु खेद है कि मनुष्य अपनी सहज विवेक बुद्धिसे काम नहीं लेता, अपितु

अुस बुद्धिके अनुसार काम करता है कि जिस बुद्धिका संचालन अिन्द्रियाधीन मन करता है, परिणामतः मनुष्य क़ुदरतसे दूर हटता जाता है। शराब पीनेवालेको पहली बार तो शराबसे घृणा आती है। यह घृणा क्या है? अुसकी क़ुदरती प्रेरणा है। परन्तु मन और मनसे संचालित बुद्धिके प्रभावसे अुसकी क़ुदरती प्रेरणा धीरे-धीरे कम होती जाती है और आखिर वह पक्का शराबी वन जाता है। अिसी प्रकार बुद्धिके वलसे मनुष्यने वनस्पति द्रव्य खोज निकाले। अुन द्रव्योंमें कुछ सरलता अेवं सुविधा लगी होगी और वे अिन्द्रियोंके लिये अनुकूल प्रतीत हुअे होंगे, अिसलिये मानवने सहज प्रेरणाको भुला दिया और विज्ञानकी झंझटमें पड़ गया और अव तो मनुष्यजाति विज्ञानके चंगुलमें वुरी तरह फंस गयी है।

दूसरी विचारणीय बात यह है कि जो वैज्ञानिक मूत्रके अुपयोगके विरोधमें जो दलील देते हैं वही वैज्ञानिक वनस्पति-शास्त्रमें अुसी दलीलका आश्रय लेते हैं। खेतीकी अुपजको अच्छा करने और वढ़ानेके लिये किसी भी वैज्ञानिक खादकी अपेक्षा वनस्पति या धान्य खानेवाले पशुओंका गोवर अधिक अुत्तम माना जाता है। और साल भर हरी घास खानेवाले अूंटका मल-मूत्र तो गोवर से भी वढ़कर समझा जाता है। मेरी अेक याद ताज़ा हो आयी है। संवत् १९५६ के दुष्कालमें मेरी आयु ग्यारह-बारह वरसकी होगी, तब हमारे अेक चाही खेतमें बाजरा वोया था और अुसमें अूंट विठाये गये थे। जिस जगह अूंटका मल-मूत्र अधिक गिरा था अुस जगह बाजरेका जो पौधा अुगा था अुसकी १०५ वालोंको मैंनें खुद गिना था। अब भी कृषिशास्त्रके नवीन प्रयोगों में हरी खाद और कम्पोस्ट खाद अधिक महत्त्वकी मानी जाती है। यह अेक सिद्ध तथ्य है कि किसी फलदार वृक्षके हरे-सूखे पत्ते अुस वृक्षके मूलमें डाल दिये जायें, तो अुनकी खादसे फल अधिक परिमाणमें, वड़े और ज्यादा मीठे होते हैं। क़ुदरतका नियम तो क़ुदरतके सभी अंगोंमें समान रूपसे लागू होता है, तो फिर मूत्र जो शरीरका पोषक तत्त्व है

अुसे फिर शरीरमें दाखिल करनेसे शरीरको नुक़सान होता है, अैसी डाक्टरोंकी दलील वैज्ञानिक दृष्टिसे भी कितनी हास्यास्पद है! क़ुदरतका जो अंग बुद्धिके अधीन होकर खुद ही के सामने मोरचाबंदी करता है तो अुसका फल अुसे भोगना ही पड़ेगा। आजकल हम अपने जीवनमें शारीरिक स्वास्थ्यके बारेमें क़ुदरतका जिस हद तक अनादर करते हैं अुस हद तक अुसके कड़वे फल हमें चखने ही होंगे।

स्वर्गस्थ जॉन आर्मस्ट्रॉङ्गने तो खूब अनुभव किया है और मुझे भी वैसा ही अनुभव हुआ है कि मूत्र पीनेसे वह शरीरकी सभी ग्रन्थियोंमें से गुज़र कर छनता है और जैसे-जैसे अधिक छनता है वैसे-वैसे अधिक स्वच्छ होता है। पानी और मूत्रके साथ अेक दिनका अुपवास करनेसे भी प्रत्येक व्यक्तिको अैसा अनुभव होगा। मूत्र पहले शरीरको स्वच्छ करता है और फिर शरीरमें जहां तहां जमे हुअे विजातीय द्रव्योंको दूर करता है। और अन्तमें रोगसे जीर्ण-शीर्ण होने-वाले अंगोंको पुनर्जीवन प्रदान करता है। सच बात तो यह है कि मूत्र केवल फेफड़ों, पित्ताशय, जठर, मस्तिष्क, हृदय आदिको ही ठीक नहीं करता; किन्तु अनेक असाध्य रोगोंको भी मिटाता है। संक्षेपमें मूत्र और जलके साथ अुपवास करनेसे हम जैसा अद्भुत लाभ अुठा सकते हैं, क़ुदरती अुपचार करनेवाला पानी तथा फलके रसके साथ अुपवास करनेसे वैसा लाभ कभी नहीं अुठा सकता। स्वर्गस्थ जॉन आर्मस्ट्रॉङ्गने मूत्रोपचारसे जिन अनेक रोगोंको ठीक किया है अुनमें से कुछका यथार्थ विवरण और अपने देश — खासकर गुजरातमें जिन रोगियोंने रोगसे मुक्ति पायी है अुनका सच्चा हाल, अिस पुस्तकके आगेके प्रकरणोंमें दिया है, जिन्हें पढ़कर पाठक अुपर्युक्त विवेचनके तथ्यको भली भांति समझकर लाभ अुठानेका प्रयत्न करेंगे।

८

अनेक रोगोंकी अेक दवा!!!

अिस पुस्तकमें मैंने अिस बातका ज़िक्र बार बार किया है कि मूत्र किसी रोगकी दवा नहीं है, परन्तु बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको ठीक करनेके लिये प्राकृतिक साधन है। अिसीलिये तो पुस्तकका नाम 'अनेक रोगोंकी अेक दवा', अैसा नहीं रखा गया है। परन्तु पूर्वग्रहमें फंसे हुअे कुछ लोग यह प्रश्न पूछते हैं—'सैंकड़ों बीमारियोंकी कहीं अेक दवा होती होगी? रोग तो विपरीत गुणदोषवाले होते हैं। वात, पित्त और कफके रोग अुन्हींके नाशक द्रव्योंसे मिटते हैं, और मूत्रमें अिन तीनों दोषोंको मिटानेवाले तत्त्व कैसे हो सकते हैं? अिसमें परस्पर घर्षण हो जाय तो शारीरिक प्रकृतिको लेनेके देने पड़ जायें। साधारण मनुष्य जो चिकित्साशास्त्रका सामान्य ज्ञान भी नहीं रखते हैं, वे अैसा प्रश्न करें तो कुछ समझा जा सकता है। परन्तु वैद्यकका व्यवसाय करनेवाले और डिग्री लेकर बड़े डाक्टर होनेका दावा करनेवाले अैसा प्रश्न अुठायें तो यह आभास होना स्वाभाविक है कि वे जानबूझकर मूत्रोपचारका विरोध करनेके लिये और लोगोंके दिलमें वहम पैदा करके अुसके प्रचारमें बाधा डालनेके लिये झूठा प्रचार करते हैं, अथवा वैद्यराज और बड़े डाक्टर होने पर भी अुन्हें वस्तुस्थितिका ज्ञान नहीं है और अुन्होंने अिस बातको समझनेका ही प्रयत्न नहीं किया है।

अनेक रोगोंकी अेक दवा नहीं हो सकती। मैं तो यह कहनेका साहस करता हूं कि गायके मूत्रसे कअी रोग मिटते हैं और वैद्य अुसका अुपयोग करते हैं। अिसी प्रकार आयुर्वेदमें आठ या नौ प्राणियोंके मूत्रका औषधके रूपमें अुपयोग बताया है। भले अुसका अुपयोग किया जाय और जितना लाभ अुठाया जा सके अुठाया जाय। परन्तु अुसे शास्त्रीय अेवं वैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता। किसी भी प्राणीका मूत्र

अुसके लिये श्रेयस्कर होनेसे अुसका अुपयोग वैज्ञानिक है। परन्तु चाहे जैसे स्वस्थ प्राणीके मूत्रके बारेमें छाती ठोककर यह नहीं कहा जा सकता कि वह दूसरे रोगी पशु या मनुष्यके लिये कल्याणकारी है, अिस लिये अुसका अुपयोग शास्त्रीय नहीं हो सकता। वैद्यराज श्री बापालालने 'मनुष्य-मूत्र' नामके अपने लेखमें (पुस्तकके चौथे खंडमें दिया है) लिखा है कि अुन्होंने अपनी घोड़ीकी गरदनके बड़े ज़ख्मको, घरके मनुष्योंके मूत्रमें राख मिलाकर अुस पर बार-बार छींटनेसे ठीक किया था।

जैसे गाय, बकरी या अूंटके मूत्रसे मनुष्यके अमुक रोग मिटते हैं, अुसी प्रकार मनुष्यके मूत्रसे घोड़ीका ज़ख्म भर गया। क्योंकि मनुष्यों और पशुओंका आहार काफ़ी हद तक समान होनेसे अुनके मूत्रमें कुछ समान तत्त्व रहते हैं; अतः कुछ हालतोंमें वह लाभदायक होता है। और साथ ही मैं विश्वासपूर्वक कह सकता हूं कि यदि श्री बापालाल वैद्यने घोड़ीका अपना ही मूत्र अुपयोगमें लिया होता तो बहुत जल्दीसे आराम हो जाता। परन्तु अुसी घोड़ीका मूत्र अेकदम कैसे प्राप्त करते? अिसलिये अुन्होंने मानव-मूत्रका अुपयोग किया। बहुतसे वैद्य मानव-मूत्रकी अुपयोगिता समझते हैं। परंतु समाजमें मूत्रके प्रति जो घृणा पैदा हो गयी है अुसका विरोध वे नहीं कर सकते और खुले आम यह नहीं कह सकते कि मानव-मूत्र लाभदायक है। वे अभी तक यह भी नहीं समझते कि रोगीके निजी मूत्रके अुपयोगकी बात है। आयुर्वेदमें आठ पशुओंके मूत्रके गुणदोष बताये हैं, जिससे मनुष्यके किसी रोगके लिये अुसका अनुकूल अुपयोग किया जा सकता है। परन्तु अिसे कौन बता सकता है कि जिस किसी पशुका मूत्र अुसके अपने स्वास्थ्यके लिये कैसा है? सच्ची बातका पता तो तभी चले कि जब वह पशु ही अपना अनुभव कहे। वे बेचारे चुपचाप अपनी बीमारीके वक़्त भूखे रहकर, अपना मूत्र चाटकर स्वस्थ हो जाते हैं। अुनका मूत्र अुनके लिये अुष्ण, वायुकारक या पित्तकारक है, अैसा तभी मालूम हो कि जब वे खुद कहें और तभी

सच्ची बातका पता चल सकता है। परन्तु मनुष्य अपने लिये अुनके मूत्रका अुपयोग करके अुसे दूषित समझे, तो यह क्या अुचित है? मैंने कहीं भी यह नहीं कहा है कि अुन पशुओंका या मनुष्यका मूत्र किसी दूसरेके लिये श्रेयस्कर है। मैं तो यह मानता हूं और मानव-मूत्रका यह सिद्धान्त है कि रोगीका निजी मूत्र ही अुसके स्वास्थ्यके लिये अुपयोगमें लिया जा सकता है। दूसरे किसी भी स्वस्थ मनुष्यका मूत्र अुसे पिलानेका निषेध है। यही बात पशुके मूत्रमें लागू हो सकती है।

अितनी स्पष्टताके बाद अब हम समझ सकेंगे कि मूत्र सब रोगोंकी दवा नहीं है; परन्तु रोगीका अपना मूत्र अुसके रोगकी दवा है। जब यह बात है तो फिर कोअी भी बुद्धिमान् व्यक्ति यह बात कैसे कह सकता है कि मूत्र अनेक रोगोंकी दवा है। प्रत्येक मनुष्यके मूत्रमें अुसकी शारीरिक प्रकृतिके अनुसार द्रव्य होते हैं, जो अुसीके लिये अुपयुक्त हैं, दूसरेके लिये नहीं। शायद दूसरेके लिये हानिकर भी हों। वैसा करनेसे दूसरेका रोग अुसमें दाखिल होनेका खतरा है। अिसलिये रोगीका अपना मूत्र ही अुसके लिये श्रेयस्कर है और वैज्ञानिक भी। सूर्यके प्रकाश जैसी अिस स्पष्ट बातको जो न समझे या स्वीकार न करे, अुसके लिये मुझे किसी विशेषण लगानेकी ज़रूरत नहीं है।

अुपर्युक्त विवेचनके बाद अब मैं यही प्रश्न पूछता हूं कि अिसे क्या अनेक रोगोंकी अेक ही दवा कहा जाय? जितने जीव अुतनी दवाअें समझी जायें। प्रकृतिने प्रत्येक जीवको अुसके शारीरिक स्वास्थ्यके लिये अमृतकुप्पी दे ही रखी है। अुस कुप्पीका द्रव्य अेक जैसा नहीं होता, हर अेकमें कुछ न कुछ फ़र्क़ होगा ही। अिसलिये अिसका अर्थ यही हुआ कि जितने जीव अुतनी दवाकी कुप्पियां। प्रत्येक जीवके पास अपना पाथेय तैयार ही है। अुसे अपने भिन्न-भिन्न रोगके लिये कब, किस परिमाणमें और किस प्रकारसे अुपयोगमें लेनेकी विधि ही काल-प्रवाहमें लुप्त हो गयी है। अुसका अन्वेषण करके अनेक रोगियोंके

अनुभवसे अुसे निश्चित करनेका काम हमें करना है। जिन वैद्यों या डाक्टरोंके दिलमें यह बात घर कर गयी हो कि अुनका कर्तव्य रोगीका स्वास्थ्य सुधारना है, वे सद्भावसे और सेवाभावसे अिस कामको हाथमें लें तो संसारकी बड़ी सेवा हो सके।

अन्तमें निवेदन है कि अुपर्युक्त स्पष्टता करनेके बाद और अुसे पढ़ लेनेके बाद कृपया कोअी व्यक्ति मूत्रोपचारके बारेमें झूठा प्रचार न करे।

९

मूत्रोपचारकी विधि

मूत्रके महत्त्वके बारेमें और अधिक लिखनेकी ज़रूरत नहीं है। आज तकके जीवनमें मूत्रके प्रति हमारे मनमें पूर्वग्रहकी जो जड़ जम चुकी है, अुसे अुखाड़ फैंकनेके लिये मैंने भरसक प्रयत्न किया है। परन्तु मूत्रोपचार हमारे लिये कितना कल्याणकारी है, अिसका ठीक पता तो, आगे दिये जानेवाले अनुभव-सिद्ध दृष्टांतोंसे ही चलेगा। मुझे विश्वास है कि अुन दृष्टांतोंको जानकर चाहे जैसे वहमों या पूर्वग्रहोंके पहाड़ चूर-चूर हो जायेंगे। क्योंकि लाखों मन दलीलोंकी अपेक्षा अेक रत्ती अनुभव अत्यधिक महत्त्व रखता है।

अंग्रेज़ी पुस्तक — 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़'के लेखक अेवं कुशल अनुभवी स्व० जॉन आर्मस्ट्रॉङ्गने अपनी पुस्तकमें भिन्न-भिन्न प्रसंगों पर मूत्रोपचारकी जो स्पष्टता की है, अुसे मैंने प्रायः अेकत्रित कर दिया है। और साथ ही अपने तथा दूसरोंके अनुभव भी दे दिये हैं। अब मैं मूत्रोपचारकी विधि विस्तारसे लिखता हूं। रोगी अपनी परिस्थितिके अनुसार अुपचारके क्रममें परिवर्तन कर सकता है।

मूत्रोपचारके पांच प्रकार

(१) मूत्रसे सारे शरीर पर मालिश करना।
(२) मूत्र पीना।
(३) केवल मूत्र और पानीके साथ अुपवास करना।
(४) मूत्रकी पट्टी रखना।
(५) मूत्रके साथ अन्य प्राकृतिक तत्त्वोंका अुपयोग करना।

(१) **मूत्रमालिशकी विधि**—बड़े फोड़े, चमड़ीकी सूजन, चीरे, ज़ख्म, फफोले और आगके घाव आदिको छोड़कर शेष सभी रोगोंके अुपचारका आरंभ मूत्रमालिशसे करना चाहिये। मालिशके लिये पुराना मूत्र अधिक कारगर होता है। 'शिवांबुकल्प' में ३६ घंटेके पुराने मूत्रका अुपयोग बताया है, जब कि आर्मस्ट्रॉङ्गने पांच सात दिनके पुराने पेशाबके अुपयोगकी सलाह दी है, जिसे मैं अधिक लाभदायक समझता हूं। क्योंकि पांच सात दिनके पेशाबमें अॅमोनिया नामका द्रव्य अधिक परिमाणमें पैदा होता है, अुसकी गंध तीव्र होती है और वह विशेष गुणकारी भी होता है, अर्थात् अॅमोनियाके कारण पेशाब शरीरके छिद्रोंमें जल्दीसे और अधिक परिमाणमें दाखिल हो जाता है। साधारण क़दके मनुष्यको मालिशके लिये हर रोज़ आठ दस औंस पेशाबकी ज़रूरत है। सात बड़ी शीशियोंमें सात दिनके पुराने पेशाबका संग्रह रखा जाय। शीशियोंका मुंह बंद रखें ताकि कोअी जीवजन्तु अंदर जाकर मर न जाय। मूत्र स्वयं जन्तुनाशक है। अिसलिये अुसमें जीव-जन्तु अुत्पन्न नहीं होते हैं। अुपयोगकी सुविधाके लिये शीशियां क्रमसे रखी जायें। चौड़े मुंहकी शीशियां रहें ताकि पेशाब सीधा अुन्हींमें किया जा सके। रोज़ाना मालिशसे जो शीशी खाली हो अुसे साफ़ करके अुसी दिनके पेशाबसे भरकर रख लिया जाय। मालिश शुरू करनेसे पहले पेशाबको थोड़ा गरम कर लेना चाहिये—खास करके सरदीकी ऋतुमें। किसी काचके प्यालेमें या बड़ी कटोरीमें आधा पेशाब लेकर आधे शरीरकी मालिश करें अर्थात् पाओंके

तलवोंसे या सिरसे शुरू करके कमर तक मालिश करें। जो पेशाव वच जाय अुसे गिरा देना चाहिये; क्योंकि मालिशके दौरानमें वह मैला हो जाता है। फिर बाक़ीके साफ़ पेशावसे शरीरके शेष आवे भागकी मालिश करें। मालिश ज़ोर देकर नहीं करनी चाहिये, किन्तु हलके हाथसे करनी चाहिये। अर्थात् मालिश अिस ढंगसे की जाय कि बीमारको तकलीफ़ न हो। मालिश करते समय हाथ या हाथोंको अूपर नीचे ले जाना चाहिये। अेक बारकी मालिशमें दो घंटे लगाये जायें। दो बार मालिश करें तो अेक मालिशमें सवा घंटा लगायें। तलवे, सिर, गला और मुंह — अिन अंगोंकी मालिशमें अधिक समय लगायें। दो घंटेकी मालिश हो तो १५ मिनट पाओंके तलवों पर और ३० मिनट सिर, मुंह और गले पर मालिश करें। मालिशके लिये किसी कारणसे अपना मूत्र पर्याप्त न हो तो दूसरे स्वस्थ व्यक्तिका मूत्र अुपयोगमें लिया जा सकता है।

किसी भी रोगमें मूत्रप्रयोगका श्रीगणेश मालिशसे किया जाय तो पहले सप्ताहमें ही अुसका फ़ायदा मालूम होगा। यह संभव है कि चार पांच दिनकी मालिशके बाद शरीरकी खोटी गरमी बाहर आने लगे अर्थात् शरीरमें खाज होने लगे या सफ़ेद मुंहकी फुंसियां निकलने लगें; परन्तु अिससे न तो घबरायें और न ही कोअी अन्य अुपचार करें। पेशावसे ही ज़रा ज़ोरसे फुंसियों पर मालिश करें। मालिशसे शरीरके छिद्रों द्वारा पेशाब अंदर जानेसे छोटे-छोटे रोग भागने लगते हैं। जिसकी यह पहली प्रतिक्रिया है। खुजली, दाद, तर चंवल (अॅक्ज़ैमा) आदि और शरीरके अंदरके सामान्य रोग केवल दस पन्द्रह दिनकी मालिशसे ही दूर होने लगते हैं। परन्तु गंभीर रोग हो, अनेक दिनोंसे घर करके बैठा हो और दवाकी पुड़ियां खा खाकर या दवा की घूंटें पी पीकर या अनेक प्रकारकी सूअियां लगवा लगवाकर कोमल शरीरको विषैले द्रव्योंसे भर दिया हो तो अुस जीर्ण रोगको मिटानेके लिये पेशाब और निर्दोष अेवं निर्मल पानीके साथ अुपवास करना ही होगा। मालिशके संबंधमें अेक

महत्त्वकी सूचना यह है कि मालिश करनेके दो अेक घंटे बाद नहाना चाहिये। नहाते समय किसी प्रकारके साबुनका अुपयोग न करें। रोगी अपनी प्रकृति अेवं स्थितिके अनुसार ठंडे या गुनगुने पानीसे स्नान करे।

स्व० आर्मस्ट्रॉङ्गने मूत्रमालिश पर बहुत ज़ोर दिया है। अुन्होंने अिस प्रयोगको अत्यन्त महत्त्वका माना है। पेशाब और पानीके साथ चाहे जितने अुपवास किये. हों, अुपवासके दौरानमें यदि पेशाबसे नियमित मालिश न की जाय तो अुपवासका असर जाता रहता है और अभीष्ट लाभ नहीं होता। किन्हीं दो वस्तुओंके संघर्षणसे गरमी पैदा होती है। और मालिश करनेसे जो गरमी पैदा होती है अुससे शरीरकी त्वचाके छिद्र खुल जाते हैं। यदि कोअी यह प्रश्न अुठाये कि पानीसे भी शरीर पर मालिश करनेसे गरमी पैदा होती है और त्वचाके छिद्र भी खुलते हैं तो फिर पेशाबसे मालिश करनेकी क्या ज़रूरत है? अिसका अुत्तर अति स्पष्ट है। पेशाबके साथ अुपवास करनेमें पेशाब पीनेके बाद हृदय और गुरदेको अधिक काम करना पड़ता है, जिससे हृदयकी धड़कन बढ़ती है। आर्मस्ट्रॉङ्गने अपने पहले अुपवासमें हृदयकी धड़कनके बढ़नेका अनुभव किया था, क्योंकि अुन्होंने मालिश नहीं की थी। अुनकी धड़कन लगभग दुगनी हो गयी थी। मूत्रको आत्मसात् करनेके लिये हृदयको ज्यादा काम करना चाहिये और ज्यादा काम करनेसे रुधिरकी गति बढ़नी चाहिये। रुधिरकी गति न बढ़े तो जैसे पंपमें पानी न आता हो और अिंजनकी गति बढ़ जाय तो ख़ाली पाअिप अधिक आवाज़ करता है, वैसे हृदय की धड़कन बढ़ जाती है। अुस अवसर पर आर्मस्ट्रॉङ्गको बाअिबिलका यह सूत्र याद आया — "जब तू अुपवास करे तब अपने सिरको मसल और मुंह को धो।" (नयी बाअिबिल, मेथ्यू, ६–१७) अिस सूत्रका अर्थ अुन्होंने यह लगाया कि अपने सिर, मुंह और गलेपर पेशाबसे मालिश करनी चाहिये। यह कहा जा सकता है कि अुन्होंने तोड़-मरोड़कर अैसा अर्थ लगाया, फिर भी परिणाममें वह अर्थ सच्चा निकला। पेशाबसे सिर,

मुंह और गले पर तथा सारे शरीर पर मालिश करनेसे ख़ूनकी गति वढ़ी और परिणामस्वरूप हृदय की धड़कन कम हुअी। अितना ही नहीं अपितु अुनमें अितनी शक्ति रही कि अुपवासके दिनोंमें भी वे अपना दैनिक कार्यक्रम नियमित रूपसे कर सकते थे। साथ ही मालिशसे यह भी लाभ हुआ कि त्वचाको यथेष्ट पोषण मिलनेसे वह रोगहीन, कोमल और तेजस्वी हो गयी।

(२) मूत्रपानकी विधि—मूत्रसे समाज घृणा करता है और अुसके स्वाद अेवं गंधके वारेमें लोगोंके मनमें व्यर्थका पूर्वग्रह घुस गया है। अिसलिये वे मूत्र पीनेसे हिचकते हैं। यह स्थिति सन्त कबीरकी अुक्तिकी याद दिलाती है।

जिन खोजा तिन पाअियां, गहरे पानी पैठ।
वग बिचारा क्या करे, जो रहा किनारे बैठ॥

जो व्यक्ति हिम्मतसे, समभावसे श्रेय समझकर मूत्रपान शुरू कर देता है वह बाज़ी मार लेता है और जो व्यक्ति दूर बैठे-बैठे नाक-भौं चढ़ाता है तथा थरथराता है वह आरोग्यकी प्राप्तिसे वंचित रहता है। यदि स्वास्थ्य प्राप्त करना हो तो मूत्रप्रयोगसे वढ़कर सरल, सस्ता और अचूक अुपाय दूसरा नहीं है। यह अच्छा होगा कि मालिशके दिनोंमें ही मूत्रपानका अभ्यास कर लिया जाय। शुरू शुरूमें मूत्रसे दांत साफ़ कीजिये और गरारे कीजिये, जिससे घृणा दूर हो जायगी और यह लाभ होगा कि अगर दांत हिलते होंगे तो अुनका हिलना बन्द हो जायगा और वे मज़बूत हो जायेंगे। फिर दिनमें अेक बार सुबह अुठकर मुंह साफ़ करके और आंखें बन्द करके आध पाव मूत्र पी डालें अर्थात् गटक जायें। फिर तो दूसरी बार पीनेमें कठिनाअी नहीं होगी।

मूत्रपानमें अिस बातका खास ध्यान रखें कि अपना ही मूत्र पिया जाय, चाहे अुसका रंग कैसा ही हो, स्वाद कैसा ही हो और गंध

कैसी ही हो; चाहे वह गाढ़ा हो या गदला हो। अर्थात् अुसके बाहरी रूपरंगको देखकर झिझकना नहीं चाहिये, क्योंकि वह गुणकारी होता है। और अिसकी स्पष्टता अिसी पुस्तकमें दिये हुअे अनुभव-सिद्ध दृष्टान्तोंसे हो जायगी।

परन्तु विशेष परिस्थितिमें रोगीको दूसरेका मूत्र पिलाना आपद्धर्म बन जाता है। यदि कोअी रोगी मूर्च्छित अवस्थामें हो, किसी व्यक्ति को सर्प या अन्य जहरी जन्तुने काट लिया हो और वह अपना मूत्र पीनेकी स्थितिमें न हो तथा किसीको पेशाब न आता हो, तब अुसे दूसरे स्वस्थ मनुष्यका मूत्र पिलाया जा सकता है। जैसे आर्मस्ट्रॉङ्गके पास अेक अैसा गंभीर रोगी आया था कि जिसे अपना पेशाब होता ही न था, वैसी स्थितिमें अुन्होंने अुस रोगीको शुरूमें अपना ही मूत्र पिलाया था ताकि अुसे पेशाब आने लगे।

(३) अुपवासकी विधि — गंभीर अेवं पुराने रोगोंके लिये मूत्रके साथ अुपवास करना बहुत ज़रूरी है। स्व० आर्मस्ट्रॉङ्ग अैसे रोगोंके अुपचारका श्रीगणेश अुपवाससे ही करते थे। रोगीकी स्थितिके अनुसार अुपवास की संख्याका निर्णय किया जाय। अुपवासमें मुख्यतः अपना मूत्र पीना होता है अर्थात् दिनरातका सारा मूत्र पी डालना चाहिये। परन्तु जो व्यक्ति केवल दिनका मूत्र पीना चाहता है अुसे अुपवासकी अवधि बढ़ानी होगी अर्थात् अधिक दिन तक अुपवास करने होंगे ताकि रातको न पीनेकी कमी पूरी हो सके। अैसी दशामें रातका मूत्र मालिशके अुपयोगमें लिया जाय। आवश्यकताके अनुसार अुपवासमें पानी भी पिया जा सकता है। पानी निर्दोष अेवं निर्मल होना चाहिये। संभव है कि मूत्र पीते समय जी मतलाने लगे। अुस समय दो चार क्षणके लिये मूत्र पीना बन्द कर दिया जाय, चित्त स्वस्थ हो जाने पर बाक़ीका मूत्र पी लिया जाय। अुपवासके दौरानमें मालिश नियमित होनी चाहिये। मालिशके बिना अुपवास यथेष्ट लाभकारी नहीं होता है। मालिशके लिये अपना मूत्र

न बचे या अपर्याप्त हो तो किसी स्वस्थ मनुष्यके मूत्रका अुपयोग करनेमें कोअी आपत्ति नहीं है।

मूत्र पीकर अुपवास करनेसे हृदयकी धड़कन बढ़ती है और नाड़ी तेज़ चलने लगती है। अैसी स्थितिमें बिलकुल घबराना नहीं चाहिये। हृदय और नाड़ीकी गति अपने आप ठीक हो जायगी। मालिश करनेमें दोष या कमी न आये तो हृदयकी धड़कन बढ़ेगी भी नहीं। मूत्रके साथ अुपवास करनेमें रोगीको बहुत कमज़ोरी महसूस नहीं होती; क्योंकि आहार में रहे हुअे जिन क्षारोंसे हमारे शरीरका पोषण होता है, वे क्षार अपने असली स्वरूपमें मूत्रमें होते हैं, जिनसे बीमारको पोषण मिलता रहता है और अुसे भूखकी अशक्ति मालूम नहीं होती। रोगी जितना अधिक मूत्र लेगा अुसे अुतनी अधिक खुराक मिलेगी।

परन्तु अिस अुपवासके दौरानमें रोगीको खूब सावधान अेवं धीर बने रहना चाहिये। शरीरमें जमा हुआ कचरा या हानिकारक द्रव्योंके पटल या आंतोंमें चिपके हुअे हानिकर पदार्थ, छाती, फेफड़े, पेट आदि अंगोंमें जमा हुआ कफ और अन्य जमाव — अिन सबको खोज खोजकर बाहर निकालनेका कार्य मूत्र करता है। अिसलिये अुपवासमें दस्त, क़ै आदिकी प्रतिक्रिया होने लगे तो बिलकुल न घबरायें। यही समझें कि शरीरका विकार निकल रहा है और अुसकी सफ़ाअी हो रही है। अुस समय स्थितप्रज्ञ-से बनकर सभी क्रिया-प्रतिक्रियाअें देखते रहें। क़ुदरतको अपना काम करने दें। अधीर अेवं व्याकुल होकर किसी प्रकारका आन्तरिक या बाह्य अुपचार करनेकी धृष्टता न करें। अुसे दबाने या मिटानेके लिये न तो किसी प्रकारकी दवा लें और न ही कोअी अैसी-वैसी चीज पेटमें डालें। दृढता खो बैठें, विश्वास अुठ जाय तो प्रयोग बन्द करके ही मनमाना करें।

लंबे अुपवासमें जितनी सावधानता रखनी होती है, अुससे कहीं अधिक सावधानता अुसे छोड़नेके बाद अेक सप्ताह तक तो अवश्य रखनी चाहिये। आठ, दस या बीस अुपवासके पारणेमें खूब सावधान

रहना चाहिये। जितने अधिक दिनोंका अुपवास हो अुतने अधिक दिनों तक आहार-विहारमें संयम रखनेकी ज़रूरत है। सामान्यतः मोसंबी या संतरेका रस पीकर अुपवास छोड़नेकी प्रणाली है। यदि मोसंबी बे-मौसिमकी हो और ज़रा भी खट्टी हो तो अुसका रस न लेवें। अुसके बदले पांच-सात खजूरोंको या छटांक भर काली द्रक्षाको बीज-रहित करके रातको काच या चीनीके बरतनमें अेक पाव पानीमें भिगो रखें और पारणे के समय अुन्हें अच्छी तरह मसलकर साफ़ कपड़ेसे छानकर रोगीको पिला दें। परन्तु मधुमेहके रोगीको यह रस न दिया जाय। दोपहरमें फलोंका रस और शामको पपीता, चीकू आदि रसदार फल दिये जायें। दूसरे रोज़ सुबह वही रस कुछ अधिक मात्रामें दिया जाय। दोपहर और शामके समय भी कलकी तरह फलोंका रस और रसदार फल दिये जायें। तीसरे दिन प्रातः मोसंबी या संतरेका रस, दोपहरमें बहुत कम नमकवाला मूंगका पानी और शामको गायका दूध दिया जाय। अिस प्रकार रुचि और शक्तिके अनुसार आहार बढ़ाते जायें। संभव है कि दस या अधिक दिनके अलूने आहारके बाद नमक खानेसे मुंह पर ज़रा सूजन आ जाय, परन्तु घबरायें नहीं, अपने आप ही वह दूर हो जायगी।

(४) **मूत्रकी पट्टी रखनेकी विधि** — शरीरके किसी भागमें बड़ा फोड़ा हो, छुरी आदिका ज़ख्म हो, फफोला हो या चमड़ी जल गयी हो, सूजन हो, ददोरे या अन्य अुभार हों, आंख दुखती हो, तब मूत्रसे तर की हुअी दो-चार तहवाली पट्टी अुस भाग पर रखनी चाहिये; क्योंकि पीडाके कारण मालिश तो हो नहीं सकती। अुस पट्टी पर पेशाब डालते रहें ताकि वह सूख न जाय। आवश्यकताके अनुसार कअी घंटों तक पट्टी रखी जा सकती है। अुपवासके दौरानमें भी पट्टी रख सकते हैं। अिस क्रियासे मूत्रके रोगनाशक तत्त्व रोगीके शरीरमें दाखिल होकर भीतर और बाहरसे लाभकारी होंगे। अिस प्रयोगके लिये रोगी का अपना मूत्र पर्याप्त न हो तो

किसी स्वस्थ अेवं नीरोग व्यक्तिका मूत्र अुपयोगमें लिया जा सकता है। परन्तु यह ध्यान रखें कि रोगी पुरुषके लिये स्वस्थ पुरुषका और रोगी स्त्रीके लिये स्वस्थ स्त्रीका मूत्र ही काममें लिया जाय।

(५) **मूत्रके साथ अन्य प्राकृतिक तत्त्वोंका अुपयोग करना**— स्वानुभवके आधार पर मुझे यह सूझा है कि मूत्रके साथ अन्य प्राकृतिक तत्त्वों—पृथ्वी, जल आदिका अुपयोग हो सकता है। पांच तत्त्वोंसे बना हुआ यह शरीर अस्वस्थ हो जाय तो अुसे स्वस्थ बनानेके लिये अुन्हीं तत्त्वोंकी सहायता लेना ही स्वाभाविक मर्यादा हो सकती है। अुस मर्यादाका अुल्लंघन करें तो प्राकृतिक क्षेत्रसे निकलकर अप्राकृतिक क्षेत्रमें दाखिल हो जायें। जिसका जो कटु परिणाम आज हम भोग रहे हैं अुसमें वृद्धि हो जाय। अब मूत्रके साथ अन्य प्राकृतिक तत्त्वोंके अुपयोगकी बात लिखी जाती है।

१. कंकर रहित चिकनी मिट्टी मूत्रमें भिगोकर पेट, पेड़ू, सिर आदि पर रखना।

२. मूत्र मिले हुअे पानीका अेनिमा लेना।

३. मूत्रको गरम करके अुपयोग करना।

४. मूत्रसे सेंक करना।

५. जल-मिश्रित मूत्रकी भापसे स्नान करना।

६. शीशीमें रखे हुअे मूत्रको और रोगीको सूर्यकी किरणें देना।

७. आधी भरी शीशीमें मूत्रको अनेकबार हिला-हिलाकर अुसकी शक्ति बढ़ाना और अुपयोग करना।

८. मूत्रकी नसवार लेना अर्थात् अुसे नाकसे सूंघना।

रोगीकी प्रकृति, आयु, शारीरिक रचना, रोग आदिको ध्यानमें रखकर अुपर्युक्त अुपायोंका अुपयोग करें। अन्य अुपाय भी हो सकते हैं परन्तु अुपर्युक्त मूल मर्यादाको न छोड़ें।

१०

मूत्रप्रयोगमें ख़तरे और चेतावनियां

मूत्रप्रयोगके दौरानमें जो क्रिया-प्रतिक्रियाअें होती हैं अुनका अुल्लेख रोगीके अुपचारके विवरणमें जहां-तहां आयेगा ही, फिर भी सरलता और सुविधाकी दृष्टिसे खास-खास खतरों और चेतावनियोंको अेक अलग प्रकरणमें देना ठीक समझता हूं। अिसलिये प्रयोग करनेवालों से निवेदन है कि वे प्रयोग शुरू करनेसे पहले अिस प्रकरणको खूब अेकाग्रता और सावधानीसे पढ़ लें और सदा ध्यानमें रखें।

ख़तरे

(१) मूत्रसे पांच-सात दिन तक मालिश करनेके बाद शरीरमें खाज होने लगती है, वह मालिशसे ही मिट जायगी।

(२) कअी बार गरमी बाहर आती है और सफ़ेद मुंहवाली लाल फुंसियां शरीर पर फूट निकलती हैं। खूनमें जो खोटी गरमी होती है वह पेशाबकी मालिशसे न्यूनाधिक मात्रामें बाहर आ जाती है। वह मूत्रप्रयोगसे शरीर-शुद्धि होनेका चिह्न है, जिससे घबरानेकी ज़रूरत नहीं है। अुस दशामें मालिश अितने ज़ोरसे की जाय कि फुंसियां फूट जायें और अुनमें पेशाब दाखिल हो जाय। फिर दो-अेक घंटेके बाद साबुन आदि लगाये बिना ही गुनगुने पानीसे नहा लें।

(३) जिस विकारसे शरीरमें रोग पैदा हुआ है अुसके बाहर निकल जानेसे ही रोग निर्मूल होता है। वह विकार तीन रास्तोंसे बाहर निकलता है। मुंहके द्वारा अुलटीसे, गुदाके द्वारा दस्तसे और शरीरके छिद्रों द्वारा गरमी अर्थात् फोड़े-फुंसी आदिसे बाहर आता है। मूत्रप्रयोगमें अिन तीन प्रतिक्रियाओंकी संभावना है। खांसीसे कफ धीरे-धीरे अलग होकर बाहर निकले तो अुलटियां न भी हों। बार-

वार टट्टी आनेसे अंदरका विकार निकल जाय तो दस्त न भी लगें। अगर वह न निकले तो प्रयोगके अुपवासके दिनोंमें दस्त लगने और अुलटी आनेकी पूरी-पूरी संभावना है। अैसा हो तो बिलकुल न घबरायें। क़ुदरत को अपना काम करने दें। अुसमें कल्याण ही है। किसी की सलाह से अुसे बन्द करनेके लिये किसी भी प्रकार की दवाअी या अिंजेक्शन न लेवें। वैसा करनेसे बहुत हानि होगी। अिस प्रयोगसे ही वह प्रतिक्रिया अपने आप शान्त हो जायगी। किसीके शरीरकी विशेष रचना या प्रकृतिके कारण वैसी प्रतिक्रिया न हो तो भी चिन्ता न करें।

(४) कअी बार मुख्य रोग छिपा रहता है और दूसरा रोग अुभर आता है, जिससे रोगी मुख्य रोगको गौण समझकर जरूरी परहेज़ नहीं रखता। जिसका परिणाम यह आता है कि छिपा हुआ मुख्य रोग भयंकर बन जाता है। अैसी स्थितिमें विवेक अेवं सावधानता रखनेकी बे-हद ज़रूरत है।

(५) रोगीको पर्याप्त मूत्र न होता हो तो प्राय: अुसके शरीर पर सूजन आ जाती है। तब अुसके पेड़ू पर यथाविधि मूत्र-पट्टी सतत रखी जाय तो मूत्र बढ़नेकी पूरी संभावना है।

चेतावनियां

(१) मूत्र अेक दिव्य साधन है। मूत्र किसी रोगकी दवाअी नहीं है, किन्तु अपने शारीरिक स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये और खोये हुअे स्वास्थ्यको पुन: प्राप्त करनेके लिये प्राकृतिक साधन है।

(२) जो व्यक्ति पुस्तकमें बतायी हुअी सूचनाओं और अुदाहरणों को ध्यानमें रखकर या किसी अनुभवीकी सलाह लेकर नियमित रूपसे, अुचित मात्रामें, अनुभव से निश्चितकी हुअी पद्धतिके अनुसार और श्रद्धाके साथ पूरा परहेज़ रखकर मूत्रप्रयोग करेगा अुसे अवश्य ही

लाभ होगा। यदि कोअी व्यक्ति अश्रद्धासे, असावधानतासे, बद-परहेज़ी से और 'तीर नहीं तो तुक्का ही सही', अैसी अधकचरी मनोदशासे यह प्रयोग करेगा तो अुसे फ़ायदा नहीं होगा, शायद नुक़सान ही हो जाय। जिससे मानवहितकारी प्रयोग बदनाम होगा और मनुष्य जातिकी कुसेवा होगी। अतः कृपा करके कोअी व्यक्ति अिस प्रकार मानवजातिकी कुसेवा करनेका दुःसाहस न करे।

(३) अिस साधनका अुपयोग करनेवालेको अपने शरीरका चिकित्सक स्वयं ही बनना चाहिये। अपने शरीरकी आदत, क्षमता, प्रकृति और प्राकृतिक जलवायुके विषयमें अुसे अच्छी जानकारी होनी चाहिये। जिसे अिन सब बातोंकी जानकारी नहीं होगी वह अिस प्रयोगसे पूरा लाभ नहीं अुठा सकता। अैसी दशामें साधनमें दोष निकालनेकी धृष्टता न की जाय।

(४) कोअी रोगी अत्यन्त अुत्साहमें आकर अेकाअेक पूरा प्रयोग करने न लग जाय। आज तक आपने रोगको मिटानेके लिये जो अनेक प्रकारके अच्छे या बुरे तत्त्वोंवाले द्रव्य दवा या अिंजेक्शन द्वारा अपने शरीर में डाले हैं, अुनका भी विचार करें। वे सब आपके शरीरमें छिपे बैठे हैं और अुनके कारण आपका शरीर अमुक प्रकारकी आदतवाला बन गया है। अुन सब दुष्ट द्रव्योंको धैर्यके साथ निकालना चाहिये तथा अपने शरीर अर्थात् अपनी प्रकृतिको साधना चाहिये। अति विवेक और धैर्यके साथ अिस प्रयोगको शुरू करें ताकि आपका मन और शरीर नये प्रयोगका विद्रोह न करें और यदि करें तो आप दृढतासे अुसका सामना कर सकें। आपको यह श्रद्धा होनी चाहिये कि मेरा मूत्र मेरे शरीरका पोषक है अेवं मेरा हितकारी है। अिससे कभी भी मेरा अहित नहीं होगा।

(५) मूत्रप्रयोग शुरू करनेसे पहले दूसरी दवा या अिलाज छोड़ देना चाहिये और कमसे कम चार दिनके बाद अुसे शुरू किया जाय। क्योंकि मूत्र अेक रसायन है। दूसरे अप्राकृतिक अेवं विजातीय तत्त्वोंके

साथ अिसका मेल नहीं बैठ सकता, प्रत्युत हानिकर सिद्ध होगा। मूत्र-प्रयोगके दौरानमें भी किसी प्रकारकी दवा न ली जाय। यदि दूसरी दवा लेनी हो तो मूत्रप्रयोग बन्द करके चार दिनके बाद ही लें।

(६) कुछ लोग यह समझते हैं कि अुपवास अर्थात् अन्न न खाना परंतु फल खाना, अुनकी यह समझ मिथ्या है। अुपवासमें अन्न, फल या फलका रस कुछ भी न लेना चाहिये। अिस प्रयोगके अुपवासमें तो दिन भरका मूत्र पीना होता है और आवश्यकता अेवं अिच्छाके अनुसार पानी पिया जा सकता है। परंतु और कुछ भी नहीं लिया जा सकता।

(७) जिस रोगीके खूनका दबाव (ब्लड प्रॅशर) कम हो और जिसका हृदय दुर्बल हो अर्थात् ठीक काम न करता हो, अुसे अुपवास नहीं करना चाहिये, क्योंकि अुसमें खतरा है। यदि वैसा रोगी अुपवास करता है तो अुसके खूनका दबाव और कम होता जाता है और जैसे जैसे खूनका दबाव कम होता है वैसे-वैसे अुस रोगीकी अशक्ति बढ़ती है। अुसके हृदय पर खराब असर होता है और अुसके जिगर तथा गुरदे पर भी असर पड़ता है। अिसलिये वह भूल कर भी अुपवास न करे। परन्तु मालिश करे, जितना मूत्र पचा सके अुतना पिये और अेक बार हलका खाना खाकर अपनी शक्ति बनाये रखे, यह ज़रूर है कि अैसा करनेसे रोगीको अधिक समय तक यह अुपचार करना पड़ेगा। अुपवासके साथ अुपचार करनेसे यदि पंद्रह दिनमें आराम हो सकता है तो अुपवास बिना प्रयोग चालू रखनेसे दो तीन मासमें पूरा आराम हो सकेगा। तब तक अुसे धीरज रखनी ही होगी।

(८) प्रचलित चिकित्सा पद्धतिने हमारी संयम-वृत्तिका नाश किया है, जिससे चिकित्साके व्यवसायको तो काफ़ी लाभ पहुंचा है, परन्तु हमारे शारीरिक स्वास्थ्यकी खूब हानि हुअी है। अिस प्रयोगमें संयमकी किसी भी मर्यादाका अुल्लंघन नहीं करना चाहिये। जो व्यक्ति पूरा संयम रखकर परहेज़का पालन नहीं कर सकता और प्रयोगके प्रति

अेकनिष्ठ नहीं रह सकता, अुसे कृपा करके अिस प्रयोगको बंद कर देना चाहिये और फिर वह मनचाहा कर सकता है।

(९) अिस प्रयोगमें किसी भी रोगीको सफलता मिल जाने पर वह यह न मान बैठे कि अब अुसे स्वच्छन्दतासे मनमाना आहार-विहार करनेका परवाना मिल गया है। अुसका स्वास्थ्य जिस कारणसे बिगड़ा था, अुस बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको सुधार लेने पर भी अपथ्य, अयुक्त और अति आहार करनेसे पुनः शरीर अस्वस्थ हो जायगा। अिसलिये शारीरिक स्वास्थ्यके सामान्य नियमोंका पालन तो अुसे सदा करते ही रहना चाहिये। भगवान भी किसीको स्वास्थ्यके नियमोंसे मुक्त नहीं कर सकता।

(१०) अिस पुस्तककी पहली आवृत्तिमें मैंने मूत्रप्रयोगके विषयमें जो आशंका व्यक्त की थी वह सच निकली। मुझे पक्का पता चला है कि कअी वैद्य-डाक्टर रोगीके ही मूत्रसे अुसका रोग मिटाकर धन और यश कमाने लग गये हैं। अैसी कुछ बातें मेरे पास आयी हैं। यह तो पाप कर्म है। वे अपने बुद्धिदाता परमेश्वरके द्रोही हैं। भगवान अुनका भला करे और अुन्हें सद्बुद्धि दे! पर खबरदार कोअी भी रोगी अैसे ठग वैद्यों या डाक्टरोंकी बातोंमें न आये। अेक वैद्यराजने आमवातके अेक रोगीको अुसके अपने मूत्रके साथ लेनेके लिये भस्मकी पुड़ियाअें दीं और कहा कि 'यह रत्नकी भस्म है, जिसके अेक तोलेका मूल्य ७००–८०० रुपये हैं।' रोज़ाना अेक पुड़िया स्वमूत्रके साथ लेनेके लिये कहा गया और अुस अेक पुड़ियाकी क़ीमत चार रुपये ली गयी। वह रोगी लगभग ठीक होने लगा कि अिस अर्सेमें अुसने 'जन्मभूमि' के साप्ताहिक अंकमें 'मानव-मूत्र' से लिये हुअे कुछ अवतरण पढ़े और अुसे रहस्यका पता चला। फिर वह मेरे पास आया और मुझे सारी आपबीती सुनायी। वह भस्मकी पुड़िया भी दिखायी। वास्तवमें, वह भस्म किस चीज़की थी, अिसे तो वैद्य जाने। परन्तु अुस रोगीने सच्ची वस्तु-स्थितिको जानकर बाक़ी सब पुड़ियां

मेरे सामने फेंक दीं और फिर शुद्ध मूत्रप्रयोग करके वह स्वस्थ अेवं सशक्त हो गया। कृपया कोअी भी व्यवसायी चिकित्सक पवित्र सेवाके अिस यज्ञको अिस प्रकार धनप्राप्तिका साधन बनाकर दूषित न करे। कोअी भी व्यक्ति धन कमानेकी दृष्टिसे प्रकृतिकी अिस पवित्र देनका अुपयोग न करे। दरिद्र अेवं रोग-पीडित जनताको धोखेमें डालकर अिस शुद्ध कार्यको अशुद्ध न करे। अैसी मेरी नम्र विनय है।

आवश्यक सूचनाअें

१. निर्दिष्ट पद्धतिके अनुसार अर्थात् शास्त्रीय ढंगसे प्रयोग करें।

२. प्रयोगके दौरानमें किसी भी प्रकारकी दवाका अुपयोग न करें, चाहे वह दवा वैद्य या डाक्टरकी दी हुअी क्यों न हो।

३. तम्बाकू, शराब या अैसा कोअी व्यसन हो तो अुसे तिलांजलि देकर ही यह प्रयोग शुरू करें।

४. मिर्च मसालेदार और तली हुअी चीज़ न खायें।

५. दानेदार खाँड़, जो 'रिफ़ाअिन्ड शूगर' कहलाती है अुसका और सेक्रीनका परित्याग करें, गुड़ या खंडसारीका अुपयोग करें।

६. मैदेकी बनी हुअी चीज़ न खायें।

७. मशीनसे साफ़ किये हुअे चावल न खायें। कोदों या हाथकुटे चावलोंका अुपयोग करें।

८. टीनके डब्बोंमें या बोतलोंमें बंद करके रखे हुअे फल या अन्य खाद्य अुपयोगमें न लावें।

९. पेश्च्यूराअिज्ड दूध और अुससे बनी हुअी चीज़ें न खायें।

१०. डालडा घी (वनस्पति घी) का अुपयोग न करें।

११. अधिक खट्टे, खारे और तीखे पदार्थ—आचार आदि न खायें।

विनति

अन्तमें मेरी विनति है कि जिन्होंने अपने किसी भी गंभीर अेवं भयंकर रोगको मूत्रोपचारसे नष्ट किया हो, वे अपने रोगका निदान, पहले किये हुअे आयुर्वेदिक या डाक्टरी या अन्य अिलाजका स्पष्ट विवरण और मूत्रप्रयोगके दौरानमें होनेवाली क्रिया-प्रतिक्रियाओं आदिका विस्तृत विवरण मुझे अवश्य लिख भेजें। हमें अिस प्रयोगकी जो वैज्ञानिक पद्धति तैयार करनी है वह अनेक लोगोंके अनुभवसे ही निश्चित हो सकती है। जिसके लिये अैसे विवरण अत्यन्त अुपयोगी सिद्ध होंगे और लोक-कल्याणमें सहायक होंगे। अिसलिये वे अपने विवरण भेजकर मानव-सेवामें मेरा सहयोग देकर मुझे आभारी करें।

आरोग्यका अमूल्य साधन

[स्वमूत्र]

द्वितीय खंड

पुनरुद्धारक के अनुभव

The Urine-therapy is a Nature-cure in the, most literal sense of the word. and to employ measures which are contrary to Nature at the same time, would not only be quite illogical but even dangerous.

—John W. Armstrong

मूत्रचिकित्सा बिल्कुल सच्चे अर्थमें प्राकृतिक अुपचार है। अिस चिकित्साके दौरानमें प्रकृति-विरुद्ध अुपायोंका अुपयोग करना केवल असंगत ही नहीं होगा अपितु खतरनाक भी।

—जॉन० डब्ल्यू० आर्मस्ट्रॉङ्ग

१

पुनरुद्धारक का स्वमूत्र-प्रयोग

आधुनिक कालमें मूत्रचिकित्साके पुनरुद्धारक स्व० जॉन० डब्ल्यू आर्मस्ट्रॉङ्गका जीवनचरित मिलना मुश्किल है। जैसे दूसरे लेखक अपने आपको प्रकाशमें लानेकी स्वाभाविक अिच्छा रखते हैं, वैसी अिच्छा अुन्हें न थी। अुन्हें जो वस्तु हितकर मालूम हुअी अुसे पहले खुद आज़माया और फिर हज़ारों रोगियोंको रोगमुक्त किया। फिर भी अुन्हें अपने अनोखे अनुभवको पुस्तकके रूपमें प्रकाशित करनेकी लालसा न थी। परंतु अनेक मित्रोंके अनुरोधसे अुन्होंने पुस्तक तैयार की। पुस्तक पढ़नेसे पता चलता है कि अुन्होंने गंभीर से गंभीर बातको कम से कम शब्दोंमें बताया है। अिसलिये मूत्रप्रयोगके साहित्यमें अुनकी पुस्तक — वॉटर ऑफ़ लाअिफ़ — सूत्रात्मक है। अिसलिये अुनकी बातको भली प्रकारसे समझने के लिये अुसे अनेक बार पढ़ना चाहिये। अुन्होंने मूत्रप्रयोगसे हज़ारों बीमारोंको तन्दुरुस्त किया है। कुष्ठरोग प्रायः अिंग्लैंडमें नहीं होता है। अिसलिये किसी कुष्ठरोगीके अुपचारका अवसर अुन्हें नहीं मिला। अन्य सब प्रकारके रोगी अुनके पास आये, जिन्हें मूत्रप्रयोगसे ही आराम हुआ। अुनके माता-पिता साधारण स्थितिके थे। अुनकी पुस्तकसे पता चलता है कि अुनके पिता अनेक बार गाय, घोड़ा, कुत्ता आदि जानवरोंके रोग अुन्हीं जानवरोंके पेशाबसे मिटाते थे। अुनका यह पेशा न था, परन्तु शुग़ल था। गाय या घोड़ेको अुसका पेशाब पिलानेके लिये हम बाँसकी नलीका अुपयोग करते हैं, परन्तु वे सींगसे काम लेते थे। आर्मस्ट्रॉङ्गने अपने पिताकी अिस प्रवृत्तिकी स्मृतिके आधार पर पशु-पक्षियोंके रोगोंको दूर करनेका वर्णन भी अपनी पुस्तकमें दिया है।

जब हम यह सोचते हैं कि आर्मस्ट्रॉङ्ग जैसे साधारण व्यक्तिने किस परिस्थितिमें मूत्रप्रयोग शुरू किया और अुसमें कितनी सफलता प्राप्त

की, तब हमें अुनके धार्मिक विश्वास, नैतिक साहस, धैर्य, समभाव, प्रकृतिमें अटल श्रद्धा, धन या प्रतिष्ठाकी निःस्पृहा, परोपकारकी भावना आदि सात्त्विक गुणोंका परिचय मिलता है। अिन्हीं गुणोंके आधार पर हमें यह स्पष्ट पता चल जाता है कि अुनमें अेक साधु अेवं योगी जैसी अद्‌भुत शक्ति थी। अिसके अतिरिक्त अुनके सामान्य ज्ञानकी समृद्धि का परिचय पुस्तकके पन्ने-पन्ने पर होता है। मैं मानता हूं कि यदि अुनके जीवन-संस्मरण प्राप्त हों तो किसी भी समाजके लिये हितकर होंगे। परन्तु अभी तो अितने से ही सन्तोष मानना होगा।

आर्मस्ट्रॉंगने मूत्रप्रयोगकी प्रथम कसौटी अपना ही शरीर वनाया, जिससे अुनका अंतिम कोटिका क्षय नष्ट हुआ। अुन्होंने अपने प्रयोगका जो वर्णन किया है अुसका हिन्दी अनुवाद यहां प्रस्तुत किया जता है :—

“यद्यपि अिस पुस्तकमें सर्वनामके प्रथम पुरुषके अुपयोगको मैं टालना चाहता हूं। परंतु यदि मुझे अपनी वातको दूसरोंके हृदय-पटल पर अंकित करना है तो प्रथम पुरुषोका अुपयोग करना ही होगा; क्योंकि मेरी सैंकड़ों दलीलोंकी अपेक्षा स्वानुभवका अेक दृष्टांत अधिक प्रभावशाली होगा।

“मेरा प्रथम रोगी मैं खुद वना। वात यह हुअी कि प्रथम युद्धके समय अर्थात् सन् १९१४ में मेरी आयु ३४ वरस की थी। मैं फ़ौजमें भरती होना चाहता था। भरती संवंधी डरवी योजनाके अनुसार मैं अपनी शारीरिक योग्यताकी परीक्षाके लिये परीक्षक डाक्टरोंकी सेवामें अुपस्थित हुआ। चार डाक्टरोंने मेरे शरीरकी जाँच करके फ़तवा दिया कि मैं क्षय रोगका शिकार हुआ हुं, अिसलिये मैं भरतीके अयोग्य हूं। साथ ही मुझे सूचित किया गया कि मैं किसी कुशल डाक्टरसे अपना अिलाज कराअूं। तदनुसार मैंने क्षयके एक विशेषज्ञकी सलाह ली। अुन्हें मेरी स्थिति कोअी विशेष चिन्ताजनक नहीं लगी, और मुझे कहा कि क्षय जैसी कोअी वात नहीं है; परंतु जुकामकी बीमारी है। अिसलिये अुन्होंने मुझे अपनी नेक सलाह दी कि मैं अैसी जगहमें रहूं कि

जहां खूब ताज़ा हवा हो, यथेष्ट सूर्य-प्रकाश हो और पौष्टिक आहारकी सुविधा हो। मैंने अुनकी सूचना पर अमल किया, अेक वरसमें मेरा वज़न २८ पौंड वढ़ा, फिर भी मुझे अपनी शारीरिक स्थितिसे सन्तोष न हुआ। अिसलिये मैंने क्षयके अन्य विशेषज्ञ की सलाह ली। अुन्होंने यह वताया कि मेरे दोनों फेफड़े क्षयका शिकार हो गये हैं और पहले डाक्टरकी बातको दिमाग़से निकाल कर क्षयका अुपचार करनेके लिये सावधान किया। साथ ही यह सूचना दी कि खांड और स्टार्चसे परिपूर्ण आहार लेकर मुझे अपनी शरीरकी शक्तिको सुरक्षित रखना चाहिये। वैसा आहार लेनेका परिणाम यह आया कि मधुमेहने मुझे आ घेरा। अुससे मुक्ति पानेके लिये मझे अेक कठिन प्रयोगका आश्रय लेना पड़ा। अुस प्रयोगमें सप्ताहमें चार दिन हर रोज़ दस औंस ठंडे पानीके छः गिलास मुझे चुसकी लेकर पीने पड़ते थे और बाक़ीके तीन दिन नियत मात्रामें थोड़ा भोजन दिया जाता था ताकि जठराग्नि ज़रा प्रदीप्त हो सके। और हिदायतके अनुसार मुझे हर कौरको खूब चवा-चवाकर खाना पड़ता था। जिसका परिणाम यह हुआ कि मुंहमें छाले पड़ गये, दांतोंमें दर्द होने लगा, मसूड़े सूज गये और जीभ पर भी सूजन आ गयी। अिस दुःखमें और वृद्धि यह हुअी कि मुझे अनिद्रा और वेचैनीने आ घेरा, मेरे ज्ञानतन्तु क्षीण हुअे और स्वभाव खूब चिड़चिड़ा हो गया। यह प्रयोग सोलह सप्ताह तक चला। यद्यपि मेरी खांसी, सरदी, दुःखदायी पाओंकी नसकी सूजन, ये सब तकलीफ़ें तो मिट गयीं। तथापि नामालूम यह आराम मुझे रोगसे भी बुरा लगने लगा। दो वरसके डाक्टरी अुपचारका अन्तिम परिणाम यह आया कि डाक्टरोंमें मेरी श्रद्धा अुठ गयी और अुनकी सलाह तथा चेतावनी की अवहेलना करके मैं अपने आप पर प्रयोग करने लगा।

"अब मैं अिस विषयकी छोटी-छोटी बातोंका विवरण देकर अपने वक्तव्यको लम्बा करना नहीं चाहता। अितना ही कहना काफ़ी होगा कि जब मैं बहुत बीमार अेवं कमज़ोर हो गया तब मुझे पवित्र

बाअिबिलके पांचवें अध्यायकी अिस आज्ञाका स्मरण हो आया — 'तू अपने शरीरसे निकले हुअे पानी को पी।' अिस आज्ञाकी याद आते ही मुझे अेक केस याद आया कि अेक छोटी लड़की गलेमें श्वास-नलीकी सूजनसे पीडित हो रही थी, तब पिताने अुसे अुसीका पेशाब पिलाया था और तीन दिनमें वह रोगमुक्त हो गयी थी। अिसी प्रकार अेक व्यक्तिका पांडु रोग अिसी अुपायसे मिटा था। फिर तो मुझे अपनी बात भी याद आ गयी। कुछ बरस पहले मेरे डाक्टरने मेरे पेशाबकी जांच की थी। जांचके बाद अुन्होंने बताया कि मेरे फेफड़े और जिगरके नीचेकी रसग्रंथि ख़राब हो गये हैं और वे दिन प्रति दिन क्षीण हो रहे हैं। डाक्टरके अिस निदानको सुनकर अुस वक़्त मैंने अज्ञानतासे प्रश्न किया कि यदि मैं अपने शरीरके महत्त्वपूर्ण रस और खांड़के तत्त्वको पेशाब द्वारा बाहर निकालता हूं तो मुझे अपना पेशाब पीकर अुन्हीं तत्त्वोंको वापस शरीरमें क्यों नहीं डालना चाहिये? मेरे अिस प्रश्नके अुत्तरमें अुन्होंने कहा, "शरीर अैसे मृत द्रव्योंको आत्मसात् नहीं कर सकता।" डाक्टरका यह अुत्तर केवल कपोल-कल्पित और सत्यशून्य था। सच पूछें तो अुन्होंने अैसा अुत्तर देकर कोरी गप ही मारी थी।

"अब हम मूल बात पर आते हैं। मैं यह स्वीकार करता हूं कि धर्मपुस्तक बाअिबिलका जो सूत्र अूपर अुद्धृत किया है अुसका अमुक अर्थ ही होना चाहिये, अैसा दावा करनेमें बुद्धिमत्ता नहीं है; क्योंकि अनेक मनुष्योंको बाअिबिलमें अपनी भावनाके अनुसार अभीष्ट अर्थ मिल जाता है। फिर भी मैं मानता था और अब भी मानता हूं कि मेरे द्वारा अुद्धृत सूत्र तथा अन्य अनेक सूत्रोंका अुल्लेख हमारे शरीर से निकलनेवाले प्राण-रक्षक रसको लक्ष में रखकर ही किया है, अैसी दृढ मान्यताके साथ मैंने वैसा किया और अन्तमें मुझे विश्वास हुआ कि वही रस मेरे शरीरको रोगमुक्त करनेवाला सिद्ध हुआ। अिस प्रकार धर्मपुस्तकके सूत्रोंका मेरा अर्थ सच्चा ही है, अैसी श्रद्धाके

दुर्गमें सुरक्षित रहकर मैंने केवल मूत्र और नलके पानीके साथ पैंतालीस दिनका लंबा अुपवास किया। यद्यपि डाक्टरोंका यह स्पष्ट अभिप्राय था कि भोजन बिना मनुष्यका शरीर ग्यारह दिनसे अधिक नहीं टिक सकता। फिर भी मैंने अुनके अभिप्रायकी अवगणना करके वह अुपवास किया। साथ ही मैंने अपने मूत्रसे शरीर पर मालिश की। अिस प्रयोगमें यह क्रिया भी अति महत्त्वकी है। मैंने कच्चा मांस खाकर अुपवास छोड़ा, जिससे मुझे कड़ी भूखके सिवा और कोअी बेचैनी महसूस नहीं हुअी। मैं कुछ समय तक आहारमें सावधान रहा और अपना मूत्र पीता रहा। मूत्रपानके दौरानमें मूत्रके परिमाण, स्वाद, रंग आदिके परिवर्तनका मुझे अच्छा अनुभव हुआ। मैं जो खाना खाता था, जो पेय पीता था और जितना श्रम करता था, अुसके अनुसार मुख्यतः मूत्रमें परिवर्तन होता था।

"अिस प्रयोगके अंतमें मुझे लगा कि मानो मुझे नवजीवन प्राप्त हुआ है। मेरा वज़न १४० पौंड हो गया था। मैं चेतना अेवं स्फूर्ति से भरपूर था। मैं अपनी असली उमरसे ११ बरस छोटा मालूम होता था। मेरी चमड़ी छोटी लड़कीकी चमड़ी जैसी कोमल अेवं तेजस्वी हो गयी थी। अुस समय मेरी अवस्था ३६ वरसकी थी और अिस प्रकरणको लिखते समय मेरी आयु साठ वरससे अधिक है। मैं यह महसूस करता हूं कि अपने मूत्रकी बूंद-बूंद पीनेसे, युक्त आहारसे और ज़रूरतसे ज़्यादा कभी न खानेसे मैं समान आयुवालोंकी तुलनामें बहुत छोटी आयुका दिखायी देता हूं और मैं छोटी-बड़ी शारीरिक व्याधिसे अपने आपको मुक्त रख सकता हूं।

"मैंने क्षयरोगसे मुक्ति पानेका और अुस मुक्तिको सुरक्षित रखनेका सच्चा हाल बता दिया है। अुसके बाद मुझे जो भान हुआ अुसे भी बता देना चाहता हूं। वह भान यह था कि हमें अपने ज्ञानको स्वार्थवृत्तिके तालेमें बन्द नहीं रखना चाहिये, अपितु मनुष्य जातिके कल्याणके लिये दूसरोंको भी अुसमें भागीदार बनाना चाहिये।

अिसलिये स्वानुभवके आधार पर मैं दूसरोंको यह सलाह देने लगा कि वे भी अपने रोगोंसे मुक्ति पानेके लिये मेरी तरह मूत्रप्रयोग करें। अितना ही नहीं अपितु अुनके प्रयोगकी आवश्यक देख-भाल भी करने लगा। अतः अिस पुस्तकके बाक़ीके भागमें यह वर्णन है कि मूत्रप्रयोगने किन किन रोगियोंको किस-किस रोगसे मुक्ति दिलायी है। और साथ ही किसी अंगका बेकार हो जाना या मर जाना, कैन्सर जैसे रोग जो आजकी चिकित्सा-पद्धतिमें असाध्य माने जाते हैं, अुन रोगोंके मिट जानेका विवरण भी दे दिया है।"

२

गेन्ग्रीन* (अंगका मर जाना)

गेन्ग्रीन चिकित्साशास्त्रकी दृष्टिसे अेक असाध्य रोग माना जाता है। शरीरकी जठराग्नि मंद हो जानेसे शरीरके किसी दूरके अंगको रुधिरका पोषण न मिलनेसे वह अंग रक्त-हीन मृत — निर्जीव होकर सूख जाता है या सड़ने लगता है। अैसे रोगको 'गेन्ग्रीन' कहा जाता है। अिसका रोगी शायद ही बचता है। अिस रोगकी जड़ गहरी होती है। पैरका अंगूठा निर्जीव हो गया हो तो अुसे काट डालने से ही काम नहीं बनता। अुसे काटने पर भी पैरकी निर्जीवता बढ़ती जाती है और अन्तमें असाध्य हो जाती है। अिस भयंकर रोगके मूल कारण अनेक रोग होते हैं।

(१) सीतलाका टीका लगवानेके बाद पक्षाघातके रोगसे गेन्ग्रीन रोग होता है।

(२) मधुमेहसे यह रोग हो जाता है।

---

* रोगोंके अुपयुक्त देसी नाम न मिलनेसे अथवा प्रचलित न होनेसे अिस पुस्तकमें मूल अंग्रेज़ी नाम ही रखने पड़े हैं।

(३) शरीरका कोओी भाग भारी वज़नसे ज़ख्मी हो जाय तो अुससे भी यह रोग अुत्पन्न हो जाता है।

(४) किसी मनुष्यके खूनका पानी बननेसे 'अॅनीमिक' दशा हो जाती है, जिससे यह रोग लागू हो जाता है।

(५) हाथ पैरका कोओी भाग कट जानेके बाद शरीरके किसी आन्तरिक रोगके कारण वह भाग गेन्ग्रीनका शिकार हो जाता है।

(६) क्षयके रोगीको कओी बार गेन्ग्रीन हो जाता है।

(७) अत्यन्त गरम तरल पदार्थसे जला हुआ भाग भी गेन्ग्रीनसे आक्रान्त हो जाता है।

यह रोग डाक्टरोंकी दुनियांमें असाध्य माना जाता है। परंतु स्व० आर्मस्ट्रॉङ्गके अनुभवके अनुसार मूत्रप्रयोगसे अिसके रोगी शीघ्र स्वस्थ हो गये हैं, जिसका विवरण मूल अंग्रेज़ी पुस्तकके आधार पर यहां दिया जाता है :—

आर्मस्ट्रॉङ्गके पास गेन्ग्रीनका प्रथम रोगी सन् १९२० में आया। वह ५३ वरसकी स्त्री थी। वह ब्रेडफ़ोर्डके अेक प्रसिद्ध डाक्टरका अिलाज करती थी। वे डाक्टर अुपवास अेवं युक्त आहारके विशेषज्ञ माने जाते थे। वह स्त्री अॅनीमियाका शिकार हो चुकी थी। अुसके फेफड़ोंकी स्थिति गंभीर थी। अुसका अेक पाओं सूखकर निर्जीव हो गया था और दोनों टांगों पर विविधि आकारके चकत्ते अुठ आये थे। पांडुरोगसे अुसकी आंखें पीली हो गयी थीं और चेहरेका रंग युरेज़ियन स्त्री जैसा लगता था। अुसके डाक्टर चाहते थे कि कमसे कम अेक मास तक अुसे मूत्रप्रयोग पर रखा जाय। परन्तु आर्मस्ट्रॉंग अुसका अुपचार करनेसे झिझकते थे; क्योंकि वे अुसे नीरोग बनानेके लिये दो ढाओी मासके मूत्रप्रयोगकी ज़रूरत समझते थे। आखिर वे अुपचार करनेके लिये तैयार हो ही गये। मूत्रप्रयोगका तुरन्त अितना अच्छा असर हुआ कि आर्मस्ट्रॉंग चकित हो गये और अुन्हें पहली बार यह मालूम हुआ कि गेन्ग्रीन अितना निराशाजनक रोग नहीं है, जितना कि लोग और डाक्टर समझते

हैं। रोगीको अुपवास पर रखा गया। दिन भरका सारा मूत्र वह पीता था और प्यास लगने पर नलका पानी पी लेता। साथ ही साथ अुसके शरीर पर मूत्रसे मालिश की जाती थी और पीडावाले स्थान पर मूत्रसे भीगी हुअी पट्टियां रखी जाती थीं। दस दिनके बाद आंतें और गुरदे अच्छी तरह काम करने लगे। आरंभमें चकत्ते कुछ अधिक निकले परन्तु अुनकी पीडा कम होने लगी। श्वासोच्छ्वास सरल अेवं नियमित हो गया, नींद सुधरी और मृत पैरमें कुछ चेतनाकी झांकी होने लगी। अठारह दिनके अुपवासके अनन्तर पैरकी स्थिति स्वाभाविक हो गयी। मूत्रने चमड़ी नयी कर दी और पैरमें रोगका कोअी दाग़ तक न रहने दिया।

अुपर्युक्त रोगी ठीक होकर गया कि गेन्ग्रीनका दूसरा रोगी आ पहुंचा। वह क़रीब ४० बरसकी स्त्री थी। अुसकी दायीं टांग अितनी ज़्यादा सड़ गयी थी कि डाक्टरोंने अुसे कटवा डालनेकी सलाह दी थी। क़रीब दो बरस पहले टखनेकी सूजनसे यह रोग अुत्पन्न हुआ था। अुस स्त्रीको अपना धन्धा पत्थरकी सख़्त ज़मीन पर घुटने टेक कर करना पड़ता था, जिससे वह अिस बीमारीका शिकार हो गयी। अुसने सभी प्रकारके चिकित्सकोंसे अपना अुपचार कराया, परन्तु 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की।' वह कड़ा क़ब्ज़, बवासीर, अॅक्ज़ैमा, अॅनीमिया अनिद्रा आदि अनेक व्याधियोंसे पीडित थी। अिसके अतिरिक्त निर्जीव टांग कअी जगहसे ख़ोखली हो गयी थी। अितनी तकलीफ़ोंके होते हुअे भी वह स्त्री हिम्मतवाली थी और मूत्र पीकर अुपवास करनेके लिये वह अेकदम तैयार हो गयी। दिनभरका सब मूत्र वह पी लेती और रोज़ाना तीन पिन्ट अर्थात् क़रीब चार पौंड पानी चुसकी चुसकी पीती थी। पांच दिनके तपसे अुसकी टांगके घाव मिटने लगे और शरीरके सभी अंगोंकी चमड़ी हर तरहसे अच्छी मालूम होने लगी। मुंहकी पीडा तो दूसरे दिन ही शान्त हो गयी। अनेक सप्ताहोंकी अनिद्राके बाद तीसरी रातको वह गहरी नींद सोयी। अेक सप्ताहके

अनंतर अुसकी आंतें और गुरदे अच्छी तरह काम करने लगे। अुस की ववासीर मिट गयी। दो सप्ताहके अनंतर तो गेन्ग्रीनका नाम-निशान न रहा। और ज़ख्मोंके गढ़े भर जानेसे नअी चमड़ी आ गयी। पीडावाली टांग दूसरी अच्छी टांगसे दुगनी मोटी हो गयी थी, अब वह पूर्ण रूपसे अपनी स्वाभाविक स्थितिमें आ गयी थी और भयंकर रोगकी अेक भी निशानी न रही थी। पंद्रह दिनके अुपवासके बाद पहले सप्ताहमें रोगीको अंगूर, केले और कच्चे टमाटरके परिमित आहार पर रखा गया, दूसरे सप्ताहमें फलोंके साथ ताज़ा दूध (पेश्च्यूराअिज़्ड नहीं) दिया गया और तीसरे सप्ताहमें सामान्य भोजन लेनेके अिजाज़त दी गयी।

आर्मस्ट्रॉङ्गने अपने अनुभवसे यह सिद्ध कर दिखाया कि भयंकर अेवं असाध्य माने जानेवाले गेन्ग्रीन रोग पर मूत्रप्रयोग अत्यंत सफल हुआ और वह भी अनुमित समय की अपेक्षा थोड़े समयमें। अिसका कारण चिकित्साशास्त्रकी दृष्टिसे यह है कि मूत्र निर्जीव द्रव्य नहीं है, किन्तु सजीव रस (लिविंग सॉल्यूशन) है, जिसमें मांस, रुधिर और मृत कोशतंतुजालको सजीव बनाकर विकसित करनेका तत्त्व है। अुन्होंने अैसे अनेक रोगियोंका अुपचार किया है, जिन्हें डाक्टरोंने रोगग्रस्त अंग कटवा देनेकी सलाह दी थी। भिन्न-भिन्न कारणोंसे जिन्हें गेन्ग्रीन रोग हुआ था अुनमें से कुछका संक्षिप्त विवरण अिस प्रकार है:—

श्रीमती ओ० को सीतलाका टीका लगवानेके बाद पक्षाघातका रोग हुआ और फिर दोनों पाओं गेन्ग्रीनका शिकार हो गये। पेशाब और पानीके साथ ४८ दिनका अुपवास करनेसे बिलकुल आराम हो गया।

श्रीयुत डी० को मधुप्रमेहका रोग था, जिससे अुसकी बायीं भुजा कुहनीसे कलाअी तक गेन्ग्रीनसे ग्रस्त हुअी। मधुमेहके लिये ४८ दिनका अुपवास करना पड़ा। फिर १८ दिनमें वह भुजा बिलकुल ठीक हो गयी और रोगका कोअी निशान भी न रहा।

श्री जे० डब्ल्यू० बी० नामके व्यक्तिकी आयु ६० वरस की थी। लुहारका काम करते हुअे अंगूठे पर हथोड़ा लगने से अंगूठेका पहला और दूसरा जोड़ गेन्ग्रीनसे आक्रान्त हो गया था। १८ सप्ताह अन्य अुपचार किया, परन्तु दशा सुधरनेके वजाय विगड़ गयी। पहले जोड़ तक हड्डी निकाल देनी पड़ी। कलाअी तक चमड़ीका रंग वदल गया। अुसने विधिपूर्वक मूत्र पीकर अुपवास किया और हाथ तथा भुजा पर मूत्रकी पट्टियां रखीं। अेक सप्ताहमें आराम हो गया।

कुमारी सी० अे०, आयु १० वरस, अुसे अॅनीमिया था। सोराअिसिस (चमड़ीकी सूजनका रोग) के दमनकारी अुपचारसे दोनों टांगें गेन्ग्रीनसे ग्रस्त हो गयीं। पिंडलियां सूज गयीं थी। मूत्र पीकर अठारह दिनका अुपवास करनेसे विलकुल आराम हो गया। अॅनीमिया और सोराअिसिस भी मिट गया। किसी प्रकारका दाग़ न रहा। अुपवासके दिनोंमें अुस लड़कीकी अूंचाअी डेढ़ अिंच वढ़ी।

श्री जे० आअी०, अवस्था ५४ वरस। मछलीकी हड्डीसे अगूंठा कट गया था। अुसी समय डाक्टरने जांच की थी। परिणामस्वरूप गेन्ग्रीन हो गया था। अंगूठा कटवा डालनेकी डाक्टरी सलाहको अुसने नहीं माना। १४ दिन मूत्रके साथ अुपवास किया, मूत्रसे शरीर पर मालिश की और अंगूठे पर वहुत तेज़ पुराने पेशावकी पट्टी रखी। तीन दिनके वाद कुछ सुधार हुआ और वारह दिनमें विलकुल आराम हो गया।

श्रीयुत अॅन०, आयु ५५ वरस, क्षयग्रस्त दोनों टांगें गेन्ग्रीनसे आक्रान्त हुअीं। डाक्टर अुन्हें कटवा देना चाहते थे। परन्तु अुसकी पत्नीने विरोध किया। रोगीकी स्थिति वहुत कमज़ोर थी। दवाअें खा खा कर निराश हो गया था। विधिपूर्वक ४२ दिनका अुपवास करनेसे वह पूर्ण स्वस्थ हो गया। स्वस्थ पुरुषकी भांति चलने लगा और व्यायामका मज़ा लेने लगा।

श्रीमती अेल०, अुमर ४८ बरस की। अुसकी टांगें खौलती हुअी चरवी गिरनेसे जल गयी थीं। डाक्टरोंने तीन सप्ताह तक प्लास्टर लगाये और मरहम पट्टी की; परन्तु हालत ज्यादा ख़राब हो गयी। आखिर दोनों टांगें और पाओं गेन्ग्रीनसे आक्रान्त हुअे। सविधि २८ दिनका अुपवास किया। दस दिनमें काफ़ी सुधार हुआ और पन्द्रह दिनमें पूरा आराम हो गया।

अिसी प्रकार गेन्ग्रीनके अन्य अनेक रोगी भी मूत्रप्रयोगसे स्वस्थ हुअे हैं। अुन सवका विवरण देनेकी ज़रूरत नहीं है।

३

ग्रोथ और कैन्सर

(वाहरी और भीतरी जहरी गांठ)

मानव शरीरके सभी रोग प्रायः अयुक्त आहारसे अुत्पन्न होते हैं। यदि मनुष्य पोषक आहार संयमपूर्वक लेता है तो अुसे किसी भी रोगसे डरनेकी ज़रूरत नहीं है और अुस के शरीरमें अितनी जीवन-शक्ति रहती है कि महामारी तक अुससे दूर भागती है। कैन्सरके अनेक प्रकार हैं। यह शरीरके भिन्न भिन्न भागोंमें होता है। कैन्सर अेक भयंकर अेवं असाध्य रोग माना जाता है। अिसकी गांठ शरीरके अन्दर होती है। शरीरके वाहर अुभरी हुअी वैसी गांठ 'ग्रोथ' कहलाती है। परन्तु शरीर पर अुठी हुअी अैसी सभी गांठें विषैली या असाध्य नहीं होती हैं, जैसे रसौली। अुपर्युक्त दोनों प्रकारकी गांठोंसे अर्थात् ग्रोथ अेवं कैन्सरसे आजकी मानवजाति त्रस्त हो गयी है। कैन्सरसे आक्रान्त होनेका अर्थ यह माना जाता है कि 'राम नाम सत्य है।' डाक्टरोंकी यह मान्यता है कि आहारमें क़ुदरती क्षार न रहनेसे कैन्सर या ग्रोथ जैसे रोग हो जाते हैं। लंडनके अेक प्रसिद्ध डाक्टर अॅफ़० फॉर्ब्स रोसने 'कैन्सर — अिसकी अुत्पत्ति और चिकित्सा' (Cancer —

its Genesis and Treatment) नामकी पुस्तक लिखी है। जिसमें वे अपने पच्चीस बरसके अनुभवके आधार पर यह दावा करते हैं कि सहज अेवं सुपच पोटाश-क्षार वाले आहारसे कैन्सरका रोग नष्ट हो जाता है। अुसी पुस्तकमें यह विवरण भी है कि अुन्होंने आहारमें अुचित परिवर्तन करके अनेक रोगियोंके विविध कैन्सर मिटाये हैं। परन्तु रूढिप्रिय अेवं कट्टर-पंथी डाक्टर तथा निहित स्वार्थ वाले अुक्त तथ्यको प्रकाशमें नहीं आने देते हैं और कहते रहते हैं कि कैन्सरके लिये चीरफाड़ तथा रेडियम किरण, यही दो अुपाय हैं। ऑपरेशन करनेसे और रेडियम किरण देनेसे, कमसे कम ३० प्रतिशत कैन्सरके रोगी ठीक होते हों तो भी किसी हद तक संतोष माना जा सकता है। परंतु ब्रेडफ़ोर्डके स्वर्गस्थ डाक्टर राबाग्लिआटीका अनुभव अुतना संतोष भी नहीं मानने देता। अुन्होंने ग्रोथ अेवं कैन्सरके ५०० रोगियोंका ऑपरेशन करनेके बाद यह स्वीकार किया है कि "कैन्सर और ग्रोथका ऑपरेशन करनेके बाद शायद ही कोअी रोगी जीवित रहा होगा।"

आर्मस्ट्रॉङ्गकी पुस्तकमें अेक अनुभवी नर्सका ज़िक्र आता है। अुस नर्सने ग्रोथ और कैन्सरके ५० रोगियोंकी सेवा-शुश्रूषा की थी। वह ख़ुद ज़हरीली गांठका शिकार हो गयी। डाक्टरने ऑपरेशन करना चाहा, परन्तु अुसने साफ़ अिनकार कर दिया; क्योंकि अुसने अपनी आंखोंसे यह देखा था कि ग्रोथ और कैन्सरके रोगमें ऑपरेशनसे पहले जो पीडा होती है, ऑपरेशनके बाद वह पीडा बहुत ज़्यादा बढ़ जाती है, जिससे रोगी और अधिक बेचैन हो जाता है। ऑपरेशनके बाद कैन्सरकी गांठ फिरसे अुभर आती है, तब अधिक पीडा होती है। अैसे अनेक दृष्टांत हैं कि कैन्सरका ऑपरेशन करनेके बाद कुछ ही दिनोंमें अुसी रोगीके दूसरे भागमें कैन्सरकी गांठ निकल आयी और अुसका ऑपरेशन करनेके बाद तीसरे स्थानमें गांठ अुठ आयी। अिस तरह रोगी की पीडा बढ़ती ही जाती है। कैन्सरका प्रचलित अुपचार अितना निष्फल

सिद्ध हो चुका है, फिर भी डाक्टरोंकी वैज्ञानिक दुनियामें अन्य कोअी अुपचार मान्य नहीं होता है, यह भी अेक आश्चर्यपूर्ण अेवं अुल्लेखनीय बात है। कैन्सर और विषैली गांठोंके रोगियोंको ऑपरेशन तथा रेडियम किरणोंसे ठीक करनेके प्रयत्न सर्वथा निष्फल हुअे हैं। फिर भी कैन्सर संबंधी अन्वेषण-केन्द्र अपने मंडलके बाहरके किसी अन्वेषक चिकित्सकके नये कारगर अुपायको मानता ही नहीं है, जिससे कुछ अंग्रेज़ी चिकित्सा-विशारद असंतुष्ट हैं।

परन्तु अिस बातका अिन प्रकरणोंसे कोअी संबंध नहीं है। अुपर्युक्त विवरण अिसीलिये लिखा है कि विषैली गांठ और कैन्सर जैसे भयंकर रोगके विषयमें प्रचलित अुपचारकी स्थितिका पता चल जाय। अब आर्मस्ट्रॉङ्गने अपने प्रयोगसे तथाकथित असाध्य रोगके रोगियोंकी व्याधि कैसे दूरकी अुसके कुछ दृष्टांत नीचे दिये जाते हैं।

आर्मस्ट्रॉङ्ग लिखते हैं कि सरकारी क़ानूनके अनुसार कोअी अप्रमाणित चिकित्सक कैन्सरके रोगीका अुपचार नहीं कर सकता है। मूत्रप्रयोगसे कैन्सरकी व्याधि नष्ट हुअी हो तो भी वे अैसा नहीं कह सकते कि अुन्होंने कैन्सरके बीमारका अिलाज किया था। मूत्रके अुपचारमें किसी रोगका निदान करनेकी जरूरत ही नहीं है। क्योंकि मूत्र किसी रोगका अुपचार नहीं है, किन्तु आरोग्य प्राप्त करनेका साधन है। प्रमाणित डाक्टर जिन व्यक्तियोंके लिये कैन्सरके रोगी होनेका फ़तवा दे देते थे, वे रोगी सर्वथा निराश होकर आर्मस्ट्रॉङ्गके पास आते थे। तब सामान्य रोगीकी भांति अुनसे मूत्रप्रयोग करवाया जाता था, जिससे वे पूर्ण स्वस्थ हो जाते थे। जो व्यक्ति सचमुच कैन्सरका रोगी होता परन्तु यदि डाक्टरने अुस पर कैन्सरका रोगी होनेकी मुहर नहीं लगा दी तो यही समझा जाता कि वह सामान्य गांठका रोगी होगा। अैसी स्थितिमें आर्मस्ट्रॉङ्गने मूत्रोपचारसे असाध्य माने जाने वाले कैन्सर या गांठके जिन रोगियोंको ठीक किया अुनमें से कुछका हाल यहां लिखा जाता है :—

श्रीमती आर०, आयु ४० बरसकी (सन् १९२३)। अुसका शरीर क्षीण अेवं कान्तिहीन था। अुसकी अूंचाअी और वज़न अुमरकी दृष्टिसे कम थे। अुसकी छाती पर मुरग़ीके अंडे जितनी गांठ अुठ आयी थी। कैन्सरके विशेषज्ञ डा० रावाग्लिआटीने अुस गांठको कैन्सर बताया और शीघ्र ऑपरेशन करानेकी सूचना दी। रोगीने दृढतासे ऑपरेशनका विरोध किया। अुसने मूत्रके साथ अुपवास किया और हर रोज़ लगभग पौने चार सेर पानी पिया। अुसके पतिने अपने पेशावसे हर रोज दो घंटे तलवोंसे सिर तक मालिश की और छातीके दोनों भागों पर पेशावकी पट्टियां दिनरात रखी गयीं। दस दिनमें आराम हुआ। बारहवें दिन वह स्त्री डा० रावाग्लिआटीके पास गयी। डाक्टरने अपने पुराने रोगीकी जांच की और अुसकी छाती पर गांठका कोअी दाग़ तक भी न देखा। अॅनीमिया भी जाता रहा और वह स्त्री संपूर्ण स्वस्थ हो गयी।

सन् १९२५ में मझली अुमरकी अेक स्त्री अुनके पास आयी। अुसकी वग़लमें गांठ निकली थी। दो सर्जनोंने चीरफाड़ करानेकी सलाह दी। परन्तु अुसकी पुत्रीने अुनसे यह प्रार्थना की कि अुसकी माताको कुछ दिन आराम करनेका अवसर दिया जाय ताकि पोषक आहारसे अुसमें ऑपरेशन करानेकी शक्ति आ जाय। प्रार्थना मंजूर हुअी। अेक सप्ताह के बाद ऑपरेशनकी व्यवस्था अेक अस्पतालमें की गयी। अुस लड़कीको मूत्रप्रयोगका खूब अच्छा अनुभव हो चुका था, अिस लिये अुसने अपनी मांको समझा कर तुरंत मूत्रप्रयोग शुरू करा दिया। पांच ही दिनमें अुठी हुअी गांठका नामनिशान न रहा। दो दिनके अनन्तर रोगीको ऑपरेशनके लिये अस्पताल में दाखिल होना था। परिवारके डाक्टरने अुसे बुलाया और अपनी सलाह और व्यवस्थाकी अुपेक्षा करके मनमाना बरताव करनेके लिये अुस पर बहुत ग़ुस्से हुअे। परन्तु जब अपने रोगीकी अच्छी तरहसे जांच करने पर अुसकी शारीरिक स्थिति बहुत अच्छी मालूम हुअी, तब अुसे कुछ कहने-सुननेकी बात न थी। अितना ही नहीं, परन्तु ऑपरेशन करनेवाले साथी डाक्टरोंको

बुला कर अुसे दिखाया। वे भी रोगीको देखकर चकित हो गये। लेखकने अपनी पुस्तक सन् १९४४ में लिखी थी। अुस वक्त अर्थात् २७ वरस तक वह स्त्री विलकुल तन्दुरुस्त हालतमें जिन्दा थी।

लेखकने अेक और रोगिणी स्त्रीका अुल्लेख अिसलिये किया है कि ऑपरेशनसे रोगका बाहरी रूप नष्ट होता है परन्तु रोगका मूल दूर नहीं होता है और रोगका कारण भी नष्ट नहीं होता है। वह स्त्री सन् १९२७ में अुनके पास आयी थी। अुसकी अवस्था ४५ वरसकी थी और अुसका शरीर खूब मज़बूत था। अुसकी छातीकी बायीं ओर गांठ निकल आयी थी, अैसी गांठ दो वरस पहले दायीं ओर अुभरी थी, जिसे ऑपरेशनसे निकाल डाला था। अुस स्त्रीने दूसरी बार ऑपरेशन कराना ठीक नहीं समझा और मूत्रप्रयोग शुरू किया। १९ दिनके अुपवास और मालिशसे वह गांठ विलकुल नष्ट हो गयी। परन्तु अुसका मोटापा दूर न हुआ, अिसलिये अुपवास चलता रहा। २८ दिनके बाद अुसकी जांच की गयी तो गांठका दाग़ तक दिखायी न दिया, स्थूलता दूर होकर अुसका शरीर सुंदर दीखने लगा और वह स्वयं युवती-सी मालूम होने लगी।

अेक और रोगीका वृतान्त भी अुल्लेखनीय है। क्योंकि अिससे यह पता चसता है कि मूत्रोपचारसे अेक ही व्यक्तिके अनेक रोग जिनका अेक-दूसरेसे कोअी संबंध प्रतीत नहीं होता है, वे सभी अेकसाथ दूर हो जाते हैं। अेक युवती के दायें स्तन पर सूजन थी और बीचमें अेक ख़राब और शंकाजनक गांठ थी। साथ ही अुसकी वग़लमें दो बड़े फोड़े थे। परिवारके डाक्टरने अुसे अस्पतालमें जाकर शास्त्रीय जांच करवानेके लिये सूचित किया, परन्तु अुसने अिनकार कर दिया; क्योंकि अुसी डाक्टरने अुसकी माताकी अैसी ही गांठका ऑपरेशन किया था और अुसे मिट्टीमें दफ़नाना पड़ा था। और वह स्त्री पुराने अुदरगुहा-शोथ (क्रॉनिक पॅरिटोनाअिटिस) के रोगसे पीड़ित थी। अुसने अुपांत्र (अॅपेन्डिक्स) का ऑपरेशन भी करवाया था, परन्तु दर्दमें

कुछ फ़रक़ नहीं हुआ था। अुस स्त्रीने मूत्रके साथ अुपवास शुरू किया। परन्तु स्वजनोंके आग्रहसे अुसे अुपवास तोड़ना पड़ा। वह पक्के अिरादेकी थी। अपने रिश्तेदारोंको समझाकर तीन दिनके वाद अुसने फिरसे अुपवास शुरू किया। और वह अुन्नीस दिन तक चला। दस दिनके अुपवासमें ही स्पष्ट सुधार मालूम हुआ और अुन्नीस दिनके अुपवासके वाद न तो स्तनकी गांठ रही और न ही बग़लके फोड़े। अुनका दाग़ तक भी न रहा। परंतु अॅपेन्डिक्सके ऑपरेशनकी किसी कमीके कारण अुदरगुहा-शोथकी पीडा ज्योंकी त्यों बनी रही। अिसलिये अुस स्त्रीने और पैंतीस अुपवास कर डाले, जिससे वह संपूर्ण नीरोग हो गयी।

अुपर्युक्त रोगियोंके वृत्तान्तसे यह सिद्ध होता है कि तथाकथित वैज्ञानिक साधनोंकी अपेक्षा क़ुदरत रोग मिटानेमें अधिक प्रभावशाली और निपुण है। लेखककी यह समान्य सूचना है कि किसी भी मनुष्यके शरीरके किसी भी भागमें शंकाजनक फोड़ा या गांठ या सूजन हुअी हो तो तनिक भी बिलंब न करके तुरंत मूत्रके नैसर्गिक अुपचारको अपनानेसे अुसको मिटानेमें क़ुदरत निष्फल नहीं होगी। परन्तु अंतिम क्षण तक राह देखनेके बाद मूत्रप्रयोगकी शरण ली जायगी तो अधिक समय तक प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।

कुछ रोगियोंका विस्तृत विवरण तो अूपर दिया जा चुका है। अब और अैसा विवरण देनेकी ज़रूरत नहीं है। अिसलिये पाठकोंकी ज्ञानवृद्धिके लिये कुछ रोगियोंका हाल संक्षेपमें दिया जाता है।

अेक युवक—आयु २८ बरस, अुसकी स्थितिके बारेमें डाक्टरी निदान यह था कि वह पेटके मुखके कैन्सरसे अथवा वीर्य संबंधी रोगसे पीडित है और तीन दिन जियेगा। मूत्रप्रयोगसे वह बिलकुल स्वस्थ हो गया और बरसों तक जिया।

अेक वृद्ध महिला—अुमर ६२ बरस, आंतका कैन्सर, डाक्टरोंने ऑपरेशनकी सलाह दी थी। परन्तु अुसने मानी नहीं। अुसका वज़न

८४ पौंडसे कम था और दिन प्रति दिन घटता जर रहा था। तीन हफ़्तेमें आराम हो गया और ८४ वरससे भी अधिक जीवित रही।

अेक अधेड़ स्त्री — अवस्था ४२ वरस, छातीका कैन्सर। डाक्टरोंने ऑपरेशनके लिये अुसे कड़ी चेतावनी दी, परन्तु आरामकी कोअी निश्चित आशा नहीं दिलायी। वह चीरफाड़के लिये तैयार न हुअी। पेशावके साथ अुपवास करनेसे वह पूर्ण स्वस्थ हो गयी। अुसके बाद २१ वरस तक वह ज़िन्दा रही।

अेक दूसरी अधेड़ स्त्री — सन् १९३५ में वह रोप कैन्सरका शिकार हो गयी। सर्जनोंने तात्कालिक ऑपरेशन करानेके लिये अुस पर ज़ोर डाला, परन्तु रोगके अुन्मूलनका विश्वास वे न दिला सके। अितना ही नहीं किन्तु यह कहा गया कि ऑपरेशनके अनन्तर फिरसे कैन्सरका होना और गांठका वढ़ना सामान्यतः अनिवार्य समझा जाता है। अुस रोगीने ऑपरेशन नहीं कराया, परन्तु मूत्रप्रयोगसे तेअीस दिनमें वह संपूर्ण स्वस्थ हो गयी। अितना ही नहीं कि वह वरसों तक स्वस्थ बनी रही, किन्तु युवती-सी अेवं सुन्दर दीखने लगी।

अव और अधिक दृष्टांत देनेकी आवश्यकता नहीं है। परन्तु अेक महत्त्वपूर्ण अेवं रसप्रद डाक्टरी अभिप्राय की ओर पाठकोंका ध्यान खींचना चाहता हूं। डाक्टर रावाग्लिआटीका ज़िक्र अिसी प्रकरणके आरंभमें आ चुका है। लेखकने अुन्हें अेक सरल, तेजस्वी और अुदारहृदय चिकित्सक बताया है। अुन्होंने जब अपनी आंखोंसे यह देखा कि मूत्रप्रयोग द्वारा ग्रोथ और कैन्सरके अनेक रोगी शीघ्रतासे संपूर्ण स्वस्थ हो गये हैं। तब खुले आम अुन्होंने जो अिक़रार किया अुसका सारांश अिस प्रकार है :—

“मैंने अैसी अनेक स्त्रियोंकी जाँचकी है कि जिनका प्रचलित डाक्टरी अुपचारके अनुसार तो अेक या दोनों स्तनोंको निकाल दिया होता। अिन भली अेवं भाग्यशाली स्त्रियोंने मेरी सलाहको ठुकरानेका साहस किया और मूत्रचिकित्साकी शरण ली। फिर जब मेरे पास आयीं तब मैंने

देखा कि जहाँ असाध्य विषैली गाँठें थीं वहाँ अेक दाग़ सरीखा भी न था। कुछ स्त्रियोंकी गाँठें दो सप्ताह में ही नष्ट हो गयी थीं और किन्हीं की गाँठें तो केवल चार ही दिनमें ग़ायब हो गयी थीं। अिसलिये मुझे श्री आर्मस्ट्रॉङ्गके अिस कथनमें सचाअी की पूरी संभावना लगती है कि जो ग्रोथ्स या गाँठें निकल आती हैं अुनमें से अधिकांश गाँठें तभी विषैली अेवं असाध्य बनती हैं कि जब अुन्हें जैसी-तैसी दवाओंसे दबाने या फोड़ने की कोशिश की जाती है और अुनमें नश्तर भोंका जाता है। और यदि प्राथमिक दशामें ही सजग होकर तात्कालिक योग्य अुपचार किया जाय तो तथाकथित भयंकर अेवं असाध्य रोगोंके अिस राजाको गद्दीसे अुतार फेंकनेमें कोअी कठिनाअी न आये। वह योग्य अुपचार यही है कि सूजन, फोड़ा, गिल्टी, गाँठ जैसे शारीरिक अुभारको पिघला कर ख़ूनके प्रवाहमें बहा दिया जाय।

"यदि कोअी सामान्य अनुभवी व्यक्ति अपने अुपचारसे हज़ारों रोगियोंको ठीक करनेके प्रमाण प्रस्तुत करता है, तो मेरे साथी डाक्टर अुनसे तनिक भी प्रभावित नहीं होते और अगर वही व्यक्ति यह दावा करे कि अुसने अनेक कैन्सरके रोगियों को ठीक किया है, तो अुसके दावेकी खुले आम खिल्ली अुड़ा दी जाती है या अवहेलना कर दी जाती है। हमारे व्यवसायके लिये यह अेक दुःखद कलंक है कि वह रोग और अधिकार-युक्त अेवं भयजनक अमानुषिक प्रचारके बलपर प्रगति करता है तथा आशा-निराशाके भुलावे में डालकर रोगियों का शोषण करता है।"

४

गुरदे के रोग

गुरदेके रोग अंग्रेज़ीमें 'ब्राअीटडिज़ीज़' कहलाते हैं और गुरदेमें विकृति आ जानेसे अुत्पन्न होते हैं। जलोदर जैसा रोग भी अुसी विकृतिका परिणाम है। नशीले पदार्थ, अुत्तेजक द्रव्य, स्कारलॅट फ़ीवर जैसे विषैले बुख़ार, नमी और सरदीके कारण भी ये रोग हो जाते हैं। आहारमें खनिज क्षारोंकी कमी आनेसे अैसे रोग पैदा होते हैं।

गुरदेके अनेक रोगियोंको मूत्रप्रयोगसे आराम हुआ है, अुन सबका विवरण तो देनेकी ज़रूरत नहीं है। जिन रोगियोंको डाक्टरों ने जवाब दे दिया था और यह चेतावनी दे दी थी कि वे जल्दी ही चल बसेंगे, अुनका हाल आर्मस्ट्रॉङ्गने अपनी पुस्तकमें लिखा है, जिसका सार अिस प्रकार है:—

श्रीमती सी०—आयु ४० बरस की। दो ही दिन जीनेवाली थी। वह सरलतासे साँस न ले सकती थी, अुसका पेशाब, थोड़ा, गाढ़ा और ख़ून व पीप से मिश्रित था। अेक बरस पहले अुसकी सेहत अच्छी थी और दिखाव सुन्दर था। अूँचाअीके अनुसार अुसका वज़न १४४ पौंड होना चाहिये था; परन्तु बीमारीके बाद लगभग २८० पौंड हो गया था। डाक्टर तो अुसकी आशा छोड़ बैठे थे। परन्तु आर्मस्ट्रॉङ्ग अुसे देखने पर भी निराश न हुअे। अिसमें शक नहीं कि अुसकी शारीरिक स्थिति अतिगंभीर अेवं दुःखजनक थी। सौभाग्यसे अुसकी परिचर्या करनेवाली दोनों नर्सें वयस्क और दयालु थीं। अुनके अुदारतापूर्ण सहयोग पर लेखक भी लट्टू हो गया। परिचर्याके दौरानमें अुन्हें रोगीको अितनी अधिक, अुलटी-पुलटी और अंडबंड दवाअें देनी पड़ीं कि दवाओंमें अुनकी श्रद्धा ही न रही। दवाओंकी शीशियोंकी लम्बी क़तार देखकर यह लगा कि अभागे रोगी पर दवाओंकी आज़माअिश की गयी

थी। परन्तु अुसकी स्थिति गंभीर होते हुअे भी निराशाजनक न थी। अैसा लगता था कि वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जायगी। अुसका अुपचार शुरू हुआ। पहली बारका पेशाव दो औंस था। वह तेज़ गंधवाला, गरम, गाढ़ा, गदला और खून-पीपवाला था। फिर भी अुसको पीनेसे शरीरमें इतना असर हुआ कि चौबीस घंटेमें अुस स्त्रीने दो सौ औंस पेशाब किया। यह अेक आश्चर्यकी वात है और सच्ची वात है कि मूत्रमें अैसी अपूर्व शक्ति है कि अुसे पीने से शरीरके किसी भी भाग में हानिकर द्रव्योंके जमे हुअे थरोंको अुखाड़कर वह वाहर निकाल देता है। फिर तो जैसे-जैसे मूत्रका परिमाण बढ़ता गया वैसे-वैसे वह स्वादरहित गंधरहित, वर्षाजल-सा स्वच्छ होता गया और आपत्तिजनक न रहा।

मूत्रके अतिरिक्त वह स्त्री चुसकी ले लेकर नलका पानी भी पीती थी। चौबीस घंटेमें अुसने १०८ औंस पानी पिया था। तीन दिनके बाद अुसकी प्यास लगभग मिट गयी थी। चार दिन के वाद अुसके लिये चिन्ता करनेकी भी ज़रूरत न रही। वही दो चतुर परि-चारिकाएँ अुसकी सारसंभाल रखने लगीं। अुपवासके तेअीसवें दिन अेक परिचारिकाके अनुरोधसे अुस रोगीको गाजरका रस नींबूके रसमें मिलाकर दिया गया। जिसकी बड़ी प्रतिक्रिया हुअी। दो ही घंटेमें अुसकी दोनों भुजाओं पर चकत्ते निकल आये और खूब खुजली होने लगी। साथ हीं पेशाब वंद हुआ और पेड़ू पर सूजन दिखायी दी। फ़ौरन् ही अेक नर्सके पेशाबसे तर पट्टियाँ पेड़ू पर रखी गयीं और दोनों भुजाओं पर हलके हाथसे मूत्रमालिश की गयी। पेड़ूने चार घंटे तक मूत्रपट्टियोंकी नमीको चूसा और पेशाव जारी हो गया। फिर धीरे-धीरे रोगी अपनी मूल स्थिति में आ गया।

मूत्रचिकित्साका अेक आवश्यक अंग यह है कि आवश्यकताके अनुसार दिनभर में दो चार वार रोगी के शरीर पर अेक साथ दो घंटे की मूत्रमालिश की जाय। परन्तु यह ध्यान रहे कि अुसमें मालिश सहन करनेकी शक्ति हो। तदनुसार कोअी अेक नर्स निजी

मूत्रसे हर रोज़ दो बार अुसकी मालिश करती थी। ४८ दिन के अुपवासके बाद अुस रोगी स्त्रीकी स्थिति अितनी अच्छी हो गयी थी कि अगले रोज़ संगतरेके रससे पारणा किया। अेक सप्ताहके बाद अुसका वज़न ११९ पौंड हो गया और अेक बरस पहले के कपड़े पहन कर वह अपने कमरेमें घूमने लगी। अुसे आराम हो गया। अुसने मूत्रपान और मूत्रमालिशको चालू रखा। जिससे अुसकी चमड़ी, बाल, मुख और सामान्य दिखावमें अद्‌भुत परिवर्तन हो गया।

श्रीमती सी० के केसने सामान्य जनताका ध्यान तो खूब खींचा; परंतु डाक्टरोंके कान पर जूं न रेंगी। आम जनता तो मनमौजी होती है अर्थात् जिसे मन चाहे अुसे मानना और जिसे मन न चाहे अुसे न मानना, चाहे कितने ही सबूत क्यों न पेश किये जायें। यदि थोड़ा-बहुत विचारशील व्यक्ति किसी असाध्य या साध्य रोगसे दीर्घकालसे पीडित व्यक्ति को कहता है कि मूत्रप्रयोगसे तुम्हारा रोग नष्ट हो जायगा तो वह हां कहेगा और फिर तुरंत डाक्टरके पास जायगा और अुसकी सलाह लेगा। भला डाक्टर वैसी सलाह देगा? हमारी मनोवृत्ति भी अैसी है कि अेक डाक्टरने हमारे रोगका निदान किया और अमुक परहेज़ रखनेके लिये कहा। अुसके सामने तो हम परहेज़की बात मान लेंगे। फिर दूसरे डाक्टरसे पूछेंगे और वह डाक्टर अैसा कह दे, 'परहेज़ न रखने से भी चल सकता है।' पहले डाक्टरकी सलाह तो लाभकारी है, परन्तु तदनुसार हम आचरण नहीं करते। अैसी मनोदशाके कारण हम गंभीर प्रश्नोंको समझ नहीं सकते और समझनेका प्रयत्न भी नहीं करते। अतः मूत्रचिकित्सा जैसे विस्मृत विज्ञानके पुनरुद्धारके लिये अैसे अनेक निःस्वार्थी सेवक चाहिये कि जो कल्याणकी दृष्टिसे रोगियोंमें और विशेषतः दरिद्र रोगियोंमें अिस अमूल्य अेवं अचूक अुपचारका पूरा प्रचार करें और सक्रिय काम भी। तभी आम जनता अिस विज्ञानको अपना सकेगी।

श्रीमती सी० का केस अितना प्रसिद्ध हुआ कि वैसे अनेक रोगी आर्मस्ट्रॉङ्गके पास आये, अुनमें से दो अेकका संक्षिप्त विवरण देना ठीक मालूम होता है :—

श्रीयुत बी० गुरदेके रोगसे पीडित था। वह वरसोंसे मिर्च-मसालेदार, पोषक तत्त्वोंसे रहित और चटपटे भोजन करनेका बेहद शौक़ीन था। वह पेटू न था पर पियक्कड़ अवश्य था। वह दिन भरमें चायके आठ दस प्याले पी डालता था और रोज़ाना पच्चीस सिगरटका घुआं अुड़ा देता थां। वह बीमार होकर आर्मस्ट्रॉङ्गके पास सन् १९२० में आया। वह दो डाक्टरोंसे अुपचार करवा चुका था। अुनके अिलाजके दौरानमें अुसका वज़न २८० पौंडसे बढ़कर ४२० पौंड हो गया था और डाक्टरोंने यह फ़तवा दे दिया था कि दो दिनमें वह रामशरण हो जायगा। सन् १९२० के जूनमें अुसने ४९ दिनका अुपवास शुरू किया। चौथे ही दिन अुसका मूत्र स्वादरहित और वर्षाके जल जैसा स्वच्छ होने लगा। शरीरकी सूजन आश्चर्यकारिणी शीघ्रतासे अुतरने लगी। सात हफ़्तेके बाद अुसका अॅनीमिया काफ़ूर हो गया। अुपवासके अनन्तर अुसका वज़न ४२० पौंड से कम होकर १०५ पौंड हो गया। बीमारी दूर हो जानेसे वह हर तरहसे वीस वरस पहले जैसा तन्दुरुस्त और जवान दीखने लगा। श्रीमती सी० की भांति वह भी मूत्रचिकित्साका अनन्य भक्त बन गया। खानेकी अपनी बुरी आदतों को छोड़कर अब वह परिमित, अुपयुक्त और संतुलित आहार लेने लगा। अुसने अपने व्यसनोंको भी तिलाञ्जलि दे दी। वह सदा मूत्रपान करता रहा, जिससे वह जीवनभर सुखी अेवं स्वस्थ बना रहा।

अब अेक और अैसे केसका अुल्लेख करके अिस प्रकरणको समाप्त करूंगा। साठ बरसके अेक व्यक्तिने लगातार दो बरस तक डाक्टरी अुपचार कराया, परन्तु अुसका हृदय-रोग तो मिटा नहीं और अुसने गुरदेके भयंकर रोगको पैदा कर दिया। जब अुसके दोनों डाक्टरोंने जवाब दे

दिया तव अुसने अेक विशेषज्ञकी शरण ली। तब अुसकी स्थिति बहुत गंभीर थी। अुसकी आंखें बाहर निकल आयी थीं। जीभ भयंकर सूज गयी थी और मुंहसे बाहर निकल आयी थी। होंट अितने फूल गये थे कि सामान्य आकारसे तिगुने बड़े लगते थे। विशेषज्ञने अुसके रोगको असाध्य बताते हुअे कहा कि अब कुछ करनेकी ज़रूरत नहीं है। अैसी स्थितिमें आर्मस्ट्रॉङ्गने अुसे अपने हाथमें लिया। अुस रोगीको पांच दिनमें चालीस पिंट अर्थात् पचास पौंड पेशाब हुआ। वह बिलकुल स्वस्थ हो गया और छः सप्ताहमें अपने व्यवसायमें लग गया।

५

हृदय-रोग

सामान्यतः डाक्टरोंकी यह मान्यता है कि हृदयरोगसे पीडित व्यक्ति सावधान रहे और संतुलित आहार करता रहे तो नब्बे बरस तक जी सकता है, परन्तु रोग-मुक्त नहीं हो सकता; क्योंकि हृदय-रोग असाध्य है। किन्तु आर्मस्ट्रॉङ्गने अपने अनुभवसे सिद्ध कर दिखाया कि मूत्रचिकित्सासे हृदय-रोग भी बिलकुल ठीक हो जाता है। निम्नि-लिखित केसका विवरण जानने योग्य है।

श्रीयुत पी० मझली अुमर का था। वह अेक बरससे अपने हृदय-रोगका डाक्टरी अुपचार कर रहा था। और 'सोलर प्लॅक्सस' (नाभिचक्र)का ऑपरेशन करानेवाला था। अुसकी स्थिति अितनी बिगड़ चुकी थी कि नामालूम बीमारीका दौरा अुसे कब बेहोश कर दे। अिसलिये वह अपनी जेबमें दवाकी गोलियां रखता था और अुसने अपनी पोशाक पर अिस आशयकी अेक पट्टी चिपका रखी थी कि अुस की बेहोशीकी हालतमें लोग क्या करें। जब वह बाज़ार या गली-कूचेमें मूर्छित हो जाता तो लोग अुसे किसी पासकी दवाफ़रोश की दुकान

पर ले जाते, जहां अुसकी जेबमें से गोलियां निकाल कर दी जातीं। बादमें तो बीमारीका दौरा बार-बार होने लगा, जिसके कारण वह आसपासके प्रदेशमें 'बिचारा मिस्टर पी०' के नामसे प्रसिद्ध हो गया।

अैसी स्थितिमें वह आर्मस्ट्रॉङ्गके पास आया। अुसे पहली सूचना यह दी गयी कि वह दिन भरका सारा पेशाब पिया करे। शुरू में तो अुसे मूत्रपान अप्रिय अेवं हिचकभरा लगा, परंतु जल्दी ही अुसकी झिझक जाती रही। साथ ही अुसे मालिश की विधि भी बतायी गयी और आर्मस्ट्रॉङ्गने खुद अपने पेशाबसे दो घंटे तक अुसकी मालिश भी कर डाली। तलवों, मुंह और सिरकी मालिश विशेष महत्त्व रखती है। अिस लिये अुनकी मालिशमें ज्यादा वक़्त देना चाहिये। फिर अुसे गरम पानीसे नहलाया गया। दूसरे दिन भी यही अुपचार चला। अुसने नर्सिंग होममें जाकर ऑपरेशन करवानेका विचार छोड़ दिया। अुसे दिनमें अेक बार सादा और हलका भोजन भी दिया जाने लगा। अेक मासके अुपचारके अनन्तर वह अितना अच्छा हो गया कि अपने व्यवसायमें लग गया। बारह हफ़्तेमें वह संपूर्ण स्वस्थ हो गया। न तो हृदय-रोगका और न ही 'सोलर प्लॅक्सस' में निकली हुअी शंकाजनक गांठका कोअी निशान बाक़ी रहा। भूतपूर्व डाक्टरने भी अपने रोगीकी रोगमुक्तिको सन्तोष अेवं हर्षके साथ स्वीकार कर लिया। मूत्रोपचार शुरू करनेके बाद अुस पर कभी हृदय-रोग का आक्रमण नहीं हुआ। वह अितना निश्चित हो गया कि अुसने अपनी सुरक्षित गोलियोंको आगके हवाले कर दिया।

मूत्रोपचारसे अेक और हृदयरोगीको आराम हुआ, जिसका वृत्तांत भी जानने योग्य है। अुस रोगीका अुपचार आर्मस्ट्रॉङ्गने नहीं किया था, किन्तु अेक प्राकृतिक चिकित्सकने किया था। अुस रोगीका नाम श्रीयुत आर० था। वह जलोदर रोगसे भी पीडित था। अुसके पाओं, टाँगें और पेड़ू खूब सूज गये थे। हृदय बढ़ गया था। डाक्टरको अुसकी स्थिति खूब गंभीर मालूम हुअी और अुसे चेता दिया कि अेक मास का ही

जीवन बाक़ी है। अुसे अेक प्रसिद्ध नैसर्गिक अुपचार-केन्द्रमें दाखिल होकर अिलाज करानेके लिये प्रेरित किया गया। वहाँका अिलाज कराकर अुसे लेनेके देने पड़े अर्थात् अुसकी स्थिति अितनी विषम अेवं गंभीर हो गयी कि अुसे केन्द्र छोड़नेके लिये विनती की गयी; क्योंकि यह आशंका थी कि वह दो सप्ताहमें रामशरण हो जायगा। अुसके बाद रोगी श्री आर० हॅरो शहरके साहसी नैसर्गिक चिकित्सक ऑलिवर वॉर नोक फ़ील्डन के पास गया। अुन्होंने मूत्रोपचारसे अुस रोगीको छः हफ़्तेमें स्वस्थ कर दिया। अुसका वज़न पहले १६८ पौंड था, जो अुपवासके दौरानमें घटकर लगभग अेक सौ दस पौंड हो गया। श्री आर० बहुत ज़्यादा धूम्रपान करनेवाला था, अुपवासके दिनों में भी सूचनाके विरुद्ध कुछ हद तक धूम्रपान करता रहा, जिससे आराम होनेमें देर लगी। अुसके नीरोग होने पर पहलेका डाक्टर तो दंग रह गया।

आज स्थिति अैसी है कि बहुतसे लोग रूढ परंपराकी अुपेक्षा करके मूत्रपानका साहस अिसलिये नहीं कर पाते कि समाज अुनकी आलोचना करेगा। अुनका यह भय समझमें तो आता है, परन्तु पीडित मानवजाति के लिये कल्याणकारी मूत्रचिकित्साके प्रचारमें बाधक है। अिस प्रकरणके अन्तमें आर्मस्ट्रॉङ्ग लिखते हैं कि ज़हरीले अिंजेक्शन और सीतलाके टीके अनेक चिरस्थायी रोगों को पैदा करते हैं, जिनमें से अेक हृदयरोग भी है।

६

विविध ज्वर

ज्वरके अनेक प्रकार हैं। ज्वर आये तो प्रायः अुसे 'स्वागतम्' कहना चाहिये। मनुष्य सामान्यतः अयुक्त और ज़रूरतसे अधिक आहार करता है। जिस से शरीरमें अेक प्रकारका ज़हर पैदा हो जाता है, अुसी ज़हरको बाहर निकालनेके लिये बुख़ार आता है। शरीरके ज़हर को दूर करनेकी यह अेक क़ुदरती प्रक्रिया है। अुस बुख़ारको क़ुदरती अुपायसे दूर करना चाहिये। अिसीलिये आयुर्वेद में ज्वरके लिये लंघन — अुपवासका अुपाय बताया है। बुख़ार तो हमारा सेवक बनकर आता है, क्योंकि वह हमारे घरकी सफ़ाअी करना चाहता है। अिसलिये अुसे तत्काल दवाका चाबुक लगाकर भगानेकी ज़रूरत नहीं है। अुसे अपना काम करने दें। जब अुसका काम पूरा हो जाय तो किसी तरकीबसे निकालें। वह तरकीब है अुपवास। परन्तु धनार्थी वैद्य और डाक्टर ऐसे अचूक अुपवासका सुझाव कैसे दे सकते हैं। आख़िर अुन्हें भी तो अपना पेट पालना है। अिसलिये वे रोगको देर तक बनाये रखने में ही अपना लाभ समझते हैं। अैसी मनोवृत्तिवाले वैद्य-डाक्टरों की संख्या आये दिन बढ़ती ही जाती है। वे साधारण ज्वरको अुपवास जैसे सरल और सस्ते अुपायसे दूर करनेकी कोशिश नहीं करते हैं; परन्तु अुग्र अेवं हानिकर दवाअियाँ देते हैं और सूअियाँ लगाते हैं, जिनसे तत्काल तो लाभ हो जाता है अर्थात् ज्वरकी पीडा शान्त हो जाती है। परन्तु कुछ ही समयके अनन्तर वैज्ञानिक ज़हरीली दवाओंके असरसे वही बुख़ार किसी भयंकर रोगका चोला पहनकर सामने आता है। अैसा अनुभव अनेक बार हुआ है कि साधारण ज्वर अिंजेक्शन या कुनैनकी डोज़ोंके बिना दो अेक अुपवास करनेसे मिट गया है, जबकि अुग्र दवाअियोंने अुसे विषम बना दिया है। अैसे

अनेक आश्चर्यकारी दृष्टांत मिलते हैं कि अमुक अद्भुत औषधिसे नमोनिया का बुखार तुरन्त अुतर गया है। परन्तु नामालूम अुसी बुखारके कितने रोगी अुसी दवाके असरसे हृदयरोगसे पीडित होकर अिस दुनियासे चल बसे हैं!

ज्वरके बारेमें अितना सामान्य विवेचन करनेके बाद मूत्रप्रयोग द्वारा ठीक होनेवाले दो तीन रोगियोंका हाल अंग्रेज़ी पुस्तकके आधार पर लिखता हूँ।

अेक युवती, अुमर १७ वरस। विचित्र रूपसे बुखारका शिकार हो गयी। बहुत कमज़ोर थी। टॅम्प्रेचर १०५ था, अेक अॅम० डी० को बुलाया गया। अुसने कहा कि संयोगवश वह स्वस्थ हो गयी तो भी छः महीने तक बीमार रहेगी ही और फिर नौ महीने रोगी-सी बनी रहेगी। रोगीका पिता मूत्रचिकित्सा में श्रद्धा रखता था। अुसने आर्मस्ट्रॉंगको बुला भेजा। पहले तो अुन्हें लगा कि रोगी से काम लेना मुश्किल होगा। आखिर अुस युवती ने पेशाब और पानी के साथ अुपवास करना मंज़ूर किया। अुसे बुखार आये छः दिन हो गये थे, परन्तु टॅम्प्रेचर १०५ डिग्री ही रहा और दिन प्रतिदिन वह क्षीण होती जाती थी। अुसका पेशाब गाढ़ा, गंदा और सघन था। परन्तु मूत्रप्रयोग शुरू करनेके चौबीस घंटे बाद अुसका बुखार १०५ डिग्री से १०१ डिग्री हो गया और पेशाब भी साफ़ होने लगा। तीन दिनमें टॅम्प्रेचर ९७ डिग्री और पाँच दिनमें ९५ डिग्री हुआ। रोगीके चेहरे पर कान्ति और शरीरमें स्फूर्ति दिखायी दी। डाक्टर तो हक्का-बक्का हो गया। अठारह दिनके बाद अुपवास छोड़ा गया। रोगी की त्वचा तो छोटे बालक की त्वचा जैसी कोमल हो गयी। अुपवास छोड़नेके कुछ ही दिन बाद वह दौड़धूप करने लगी और अपने आपको संपूर्ण स्वस्थ महसूस करने लगी। वह अपना पेशाब पीती रही और स्वस्थ बनी रही। कुछ बरसोंके बाद अुस ने शादी कर ली और बच्चोंकी माता बनी।

मलेरिया

यह अेक संक्रामक रोग है। अिसका रोगी क्रमशः तीन प्रकारका अनुभव करता है — सरदी, गरमी और पसीना। आक्रमणके समय रोगीकी दशा कुछ ठीक लगती है। खूनमें पाये जानेवाले कीटाणु ही सभी प्रकारके मलेरियाके कारण माने गये हैं। मच्छर अिसके दलाल हैं। वे रोगीको काटते हैं और रोगीके कीटाणुओंसे स्वयं आक्रान्त हो जाते हैं। फिर वे दूसरेको काटकर अुन कीटाणुओंको अुसके खूनमें मिला देते हैं, जिससे वह बीमार हो जाता है। अिस तरह कीटाणुओंके आदान-प्रदानसे मलेरिया फैल जाता है। आजकल कुनैनको ही अिस बुखारका अेकमात्र अुपाय माना जाता है। परन्तु अनुभवसे मालूम होता है कि कुनैनसे मलेरिया सो जाता है और मौक़ा पाकर जाग अुठता है अर्थात् जड़मूलसे नष्ट नहीं होता। आर्मस्ट्रॉङ्ग वताते हैं कि मूत्रोपचारसे मलेरियाका अुन्मूलन हो जाता है। वे तो यहां तक दावा करते हैं कि अुनके पास मलेरियाका अेक भी केस अैसा नहीं आया कि जो दस दिनमें ठीक न हो गया हो। अुन्होंने अपनी पुस्तकमें मलेरियाके अेक रोगीका विवरण अिस प्रकार दिया है :—

श्रीयुत ब्यू० पहलवान-से लगते थे। अत्यंत संयमी और मिताहारी थे। दूर पूर्वमें वे मलेरियासे आक्रान्त हुए थे। तीन वरस तक वे मलेरियासे पीडित रहे। सन् १९२० में वे आर्मस्ट्रॉंके पास आये। तब तकमें मलेरियाके छत्तीस आक्रमण हो चुके थे। वे कुनैनकी खुराकें नियमित खाते थे। आखिर पेशाब और पानीके साथ दस दिनका अुपवास करनेसे वे संपूर्ण नीरोग हो गये। फिर न तो कुनैन खानेका अवसर आया और न ही मलेरियाका आक्रमण हुआ। पूर्ववत् खान-पानमें संयम रखनेसे और नियमित 'जीवनजल' पीनेसे वे जीवनभर सुन्दर आरोग्य भोग सके।

ब्लैकवॉटर फ़ीवर

अेक मेजर — दक्षिण अफ्रीकाके किसी जंगलमें अेक फ़ौजी अफ़सर ब्लैकवॉटर फ़ीवर (अेक बुख़ार जिसमें काले रंगका पेशाव आता है) से पीडित होकर बेहोशीकी हालतमें बड़बड़ाते हुअे पड़े थे। वहांके देशवासियोंने अुन्हें समझाकर पेशाबसे तर पट्टियां अुनके शरीर पर रखीं और पेशाव तथा पानीके साथ दस दिनका अुपवास करवाया, जिससे वे स्वस्थ हो गये। यह घटना आर्मस्ट्रॉंगसे पहले की है। अपनी पुस्तकमें अिसका अुल्लेख करके वे कहते हैं कि मूत्रचिकित्साकी खोज अुनकी नहीं है। यह चिकित्सा तो प्राचीनकालसे चली आयी है।

आर्मस्ट्रॉंग अपने अनुभवके आधार पर यह दावा करते हैं कि अुनके पास चाहे किसी भी प्रकारके बुख़ारका रोगी आया हो और चाहे अुसे कितने दरजेका बुखार क्यों न रहा हो, तो भी विधिपूर्वक मूत्रोपचार द्वारा ३६ से ७२ घंटेके समयमें अुसका टॅम्प्रेचर कम करनेमें और कुछ ही दिनोंमें अुसे नीरोग बनानेमें वे कभी निष्फल नहीं हुअे हैं। मलेरियाके दुष्परिणामोंसे बचनेके लिये विधिवत् मूत्रप्रयोग ही अचूक अुपाय है; क्योंकि वह क्षीण कोशतंतुजाल (टिश्यूज़)को फिरसे बनाता है। श्वासनलीकी सूजन (डिप्थीरिया), छोटी शीतला — चेचक, स्कारलॅट फ़ीवर (अेक भयानक संक्रामक ज्वर जिसमें शरीर पर लाल लाल दाने हो जाते हैं), अिन्फ़्लूअेन्ज़ा (संक्रामक शीतज्वर), गठियेका बुखार और तेज़ बुखार वाले अन्य तीव्र रोग — अिन सब रोगोंमें भी मूत्रोपचार सफल सिद्ध हुआ है।

आर्मस्ट्रॉङ्गने अपनी पुस्तकमें जो अुपर्युक्त बातें लिखी हैं वे पुस्तकें पढ़कर नहीं लिखी हैं, किन्तु खुद अनुभव करके और करवाकर लिखी हैं। जो बुद्धि रखता है पर अुसका अुपयोग नहीं करता, जो जागता है पर बोलता नहीं, अुसका क्या अिलाज?

७

अंडकोश-वृद्धि

अंडकोशवृद्धि अेक अत्यंत पीडाकारी व्याधि है। अिसमें अंडकोश फूल जाते हैं और कअी बार अुन पर फोड़े भी निकल आते हैं। चोटसे या सूज़ाक या कंठमालाके रोगसे अंककोश बढ़ जाते हैं।

अुन्नीस बरसका अेक नौजवान अिस बीमारीका शिकार हो गया था। वह अपने अिलाजके लिये अेक डाक्टरके पास गया। डाक्टरको अुसकी बीमारी ख़तरनाक लगी और अुसने फ़तवा दे दिया कि वह कुछ दिनका ही मेहमान है। फिर वह युवक आर्मस्ट्रॉङ्गके पास गया। अुसकी आंतें अेक सप्ताहसे काम नहीं करती थीं और गुरदे ७२ घंटेसे निष्क्रिय थे। अुसके शरीरमें अेक तरफ़ अितनी अधिक सूजन थी कि मानो चमड़ीके नीचे आधा फ़ुटवाल रख दिया हो। अुसके दोनों अंडकोश फूलकर गेंद जैसे हो गये थे। अुसका लिंग पेंसिल जैसा कठिन और लंबाअीमें चौदह अिंच, कॉर्क-स्क्रू जैसा टेढ़ा तथा काला हो गया था। अुसकी कराह दिलको दहला देनेवाली थी। अुसने तीन दिनसे कुछ भी न खाया था, केवल पानी ही पिया था; तो भी सूजन और लिंगकी वक्रता बढ़ी थी। अुसे पेशाब नहीं आता था। अिसलिये आर्मस्ट्रॉङ्गको अपना पेशाब अुसे पिलाना पड़ा।

पहले मूत्रपानके दो घंटे बाद अुसका लिंग तनिक स्वाभाविक स्थितिमें आया और पेशाबकी कुछ बूंदें निकलीं। लगभग दो अेक औंस पेशाब हुआ। वह गाढ़ा, गदला और लपसी जैसा सघन था। तो भी वह मुंह बनाये बिना और चूंचरा किये बिना अुसे पी गया। चार घंटे बाद अुसी रूपरंगका और वैसी दुर्गंधवाला पेशाब लगभग दस छटांक हुआ, जिसे भी वह नाक-भौं चढ़ाये बिना पी गया। अुपवासके दौरानमें पेटके अेसिड जीभपर अितने जम गये थे कि रोगीको

वेस्वाद मूत्रका कुछ पता ही नहीं चला। दो घंटे बाद अुसे सडाँध-वाली वहुत ही ज्यादा टट्टी हुअी, जिसे देखकर आर्मस्ट्रॉंग भी तोवा-तोवा पुकार अुठे। क्योंकि अुन्होंने सत्ताअीस वरसमें अैसी टट्टी कभी नहीं देखी थी। मलोत्सर्गके समय जो मूत्र आया था अुसे वादमें वह पी गया। वापस विस्तरे पर अुसे लिटाया गया तो वह आरामसे टांगें पसारकर लेट गया। पहले वह अुदरगुहा-शोथ (पॅरिटोनाअिटिस) आंतवृद्धि (अॅपेन्डिसाअिटिस)के रोगीकी तरह अपने घुटने पेटके साथ लगाकर लेटता था। प्रथम मूत्रपानके आठ घंटे वाद अुसका दर्द लगभग मिट चुका था। अुसकी छाती, पेड़ू और सिर पर पुराने पेशावकी पट्टियां रखी गयीं और हाथों तथा पैरों पर वैसी पट्टियां वांध दी गयीं। अुसे वहुत ज्यादा पेशाव आने लगा और वह सव पी जाता था। अुसकी आंतोंने भी क़ुदरती अुपचारका अच्छा साथ दिया अर्थात् पीडा विना स्वतंत्रतासे काम करने लगीं और टट्टी साफ़ आने लगी। चौथे दिन चौवीस घंटेमें वाअीस पिन्ट अर्थात् क़रीव १४ सेर पेशाव हुआ। वह सव पी गया।

अिस तरह अच्छी प्रगति हुअी थी। अितनेमें अेक मुश्किल खड़ी हुअी। आर्मस्ट्रॉङ्गको वाहर जाना पड़ा। अुनकी अनुपस्थितिमें अेक मित्र डाक्टरने चम्मचभर गेहूंके आटेकी पतली लपसी लेनेके लिये अुसे प्रोत्साहित किया, जिसका परिणाम भयंकर आया। मूत्रका सारा प्रवाह वन्द हो गया और सोलह घंटेमें रोगके सभी पुराने चिह्न फिरसे प्रगट हो गये, परंतु पहलेकी अपेक्षा कम पीडाकारी थे। निरुपाय ही फिरसे वही सारा अुपचार शुरू करना पड़ा। रोगीने सोलह दिनके अुपवासका पारणा संतरेका रस लेकर किया। अेक हफ़्ते तक अुसे सादे, हलके अेवं सुपच भोजन पर रखा गया। फिर वह पूर्ण स्वस्थ होकर अपने काममें लग गया।

आर्मस्ट्रॉङ्गने जब अपनी पुस्तक लिखी तव अुस युवककी आयु चालीस वरसकी थी। वह संतुलित आहार करता रहा, अपना 'जीवन-जल' रोज़ पीता रहा और संपूर्ण स्वास्थ्य का आनंद भोगता रहा।

अुपर्युक्त केसके बारेमें अेक बात विशेष अुल्लेखनीय है। स्वर्गस्थ प्रसिद्ध डाक्टर राबाग्लिआटी अुस युवककी चमत्कारपूर्ण रोगमुक्तिसे अितने प्रभावित हुअे कि अुन्होंने अुसका विस्तृत विवरण लिखकर अिंग्लैंड और अमरीकाके चार मॅडिकल जर्नलोंको भेज दिया था। परन्तु अेक भी जर्नलने अुसे प्रकाशित करनेकी अुदारता नहीं दिखायी। अत्यन्त खेद! कौवे सभी जगह काले होते हैं। निहित स्वार्थ — चाहे वे लक्ष्मीके हों, विज्ञान के हों, बुद्धिके हों या प्रतिष्ठाके हों — परन्तु अुनमें रही हुअी मनोवृत्ति तो सब जगह अेकसी होती है। अिससे हम बचें तभी संसार नये प्रकाशका दर्शन कर सकता है।

८

घाव और जलनेके ज़ख़्म

क़ुदरत यह चाहती थी कि आर्मस्ट्रॉङ्ग यह भी सिद्ध कर दिखायें कि मूत्रचिकित्सासे गहरे घाव भी ठीक हो जाते हैं। कुछ बरस पहले अेक दुर्घटनासे आर्मस्ट्रॉङ्गके पाओं पर अितनी चोट लगी कि टखने और अुंगलियोंमें चीरे पड़ गये, अुंगलियां पाओंमें धंस गयीं और अुनके नाखुन अुखड़ गये। अुन्हें बड़ा आघात पहुंचा और तीव्र पीडाका अनुभव हुआ। परंतु अुन्होंने मित्र डाक्टरकी मदद लेनेसे अिनकार कर दिया, क्योंकि वे ज़खमों पर भी मूत्रप्रयोगकी सफलता सिद्ध करनेके लिये कटिबद्ध थे। अुन्होंने किसी हड्डी बैठानेवालेसे अपने पाओंकी मोड़-मचक ठीक करवा कर पेशाब और पानीके साथ चार दिनका अुपवास किया और ज़खमी भागों पर पुराने पेशाबमें तर की हुअी पट्टियां बांध दीं। अुन पट्टियोंको वे पेशाबसे बार बार सींचते रहे। पांच दिनके बाद जब पट्टियां छोड़ी गयीं, तो वे पाओंकी हालत देखकर दंग रह गये। ज़खमोंके दाग़ तक भी दिखायी न दिये और पाओं पहले जैसा स्वस्थ

अेवं लचीला हो गया। साथ ही पाओंका दुःखदायी घट्ठा भी साफ़ हो गया।

दुर्घटनासे या अन्य प्रकारसे घायल हुअे अनेक व्यक्तियोंके जो घाव डाक्टरी अेवं अन्य अुपचारसे ठीक नहीं हुअे थे, अुन्हें भी आर्मस्ट्रॉङ्गने मूत्रोपचारसे ठीक कर दिया। और जिन ज़ख़्मी अंगोंके बारेमें डाक्टरोंकी यही राय थी कि अुन्हें काट दिया जाय, मूत्रोपचारसे वे अंग भी ठीक हो गये। अिस सिलसिलेमें आर्मस्ट्रॉङ्गने अपनी पुस्तकमें अेक ख़ास केसका विवरण दिया है, जो अिस प्रकार है:—

सन् १९१८ में अेक नौजवान अुनके पास आया। अुसकी भुजामें अेक साल पहले बंदूक़की गोली लगी थी। अुसका ज़ख़्म दस अिंच लम्बा और क़रीब आधा अिंच चौड़ा था। वह प्रति सप्ताह स्थानिक दवाख़ानेमें जाता था, परन्तु कुछ सुधार मालूम न हुआ। कभी अुस पर फोड़े निकल आते थे और कभी अुसमें पीप पड़ जाती थी। अुसके डाक्टरोंको भय लगने लगा कि कहीं वह भुजा गेन्ग्रीनसे आक्रान्त न हो जाय। अुस भयको दूर करनेके लिये ज़हरीली मरहम-पट्टी की जाने लगी। आख़िर अुस अुपचारसे तंग आकर अुसने अन्य अुपचारोंकी शरण ली। अुनसे थोड़ासा आराम तो ज़रूर हुआ, किन्तु ज़ख़्म भरा नहीं। अपनी पत्नीके विरोधके बावजूद वह आर्मस्ट्रॉङ्गके पास गया। पहले तो अुसकी सब मरहम-पट्टी निकाल दी गयी। फिर दिनमें तीन बार ज़ख़्मी भुजाको पुराने पेसाबसे धोया जाने लगा। साथ ही साथ सारे शरीर पर हलके हाथसे कअी बार अधिक समयतक पुराने मूत्रसे मालिश की जाने लगी। अुसे पेशाब अेवं पानीके साथ तीन दिन तक अुपवास पर रखा गया, और थोड़ी-थोड़ी देरके लिये सूर्यस्नान भी कराया जाता रहा। सात दिन और बीतने पर लम्बे घावके स्थान पर सोनेकी पतली तार जैसा निशान रह गया। संक्षेपमें, अेक वर्षके बाधक (मरहम-पट्टी आदिके) अुपचारके बाद दस दिनके नैसर्गिक अुपचारसे वह रोगी स्वस्थ हो गया।

अुपर्युक्त घायल व्यक्तिके ठीक होनेके बाद बीसियों घायल व्यक्ति आर्मस्ट्रॉङ्गके पास आये और वे सभी जादूकी तरह अिस अुपचारसे ठीक हो गये। आर्मस्ट्रॉङ्गका यह अनुभव है कि यदि सादे और ज़हरीले ज़ख्मोंका तत्काल मूत्रोपचार किया जाय तो वे चार छः दिनमें ही ठीक हो जाते हैं। परन्तु डाक्टरी या अन्य अुपचारसे बिगड़े हुअे अेवं गेन्ग्रीनकी स्थिति तक पहुंचे हुअे ज़ख़म दससे बीस दिन तकमें ठीक हो जाते हैं।

अग्नि तथा गरम तरल पदार्थसे जले हुअे अमरीकी रोगियोंका अितिहास जानने योग्य है। किसी अेक बरसमें लगभग आठ हज़ार व्यक्ति जलनेसे मर गये। अुनमें क़रीब आधे तो पांच बरससे छोटी अुम्रके बच्चे थे। जलनेके बाद जो हज़ारों अमेरिकन ज़िन्दा रह सके अुनके शरीर पर विचित्र प्रकारके भद्दे दाग़-धब्बे थे। बरसों तक शरीरके जले हुअे भागका अिलाज अुबाले हुअे चायके पत्तोंसे होता रहा। फिर १९२५ में अेक डाक्टरने चायके पत्तों से टेनिक अेसिड तैयार किया और जले हुअे भागके अुपचारमें अुसीका अुपयोग होने लगा। अिस तरह अुपचार कुछ वैज्ञानिक तो बना, परन्तु भद्दे दाग़-धब्बोंकी समस्या पूरी तरह हल नहीं हुअी। फिर टेनिक अेसिडके स्थान पर पिकरिक अेसिड आया। बादमें शस्त्रवैद्य शल्यचिकित्सा आज़माने लगे। जले हुअे व्यक्तिके शरीरके किसी अन्य भाग — विशेषतः नितंबकी स्वस्थ चमड़ी काटकर अुसे जले हुअे भाग पर लगाया जाने लगा। परन्तु दुर्भाग्यसे अिस नये अुपचारका कअी बार यह परिणाम आता कि शरीरके स्वस्थ भागकी चमड़ी निकाल लेनेसे जो ज़ख्म बनता वह सड़ने लग जाता, जिससे रोगीको लेनेके देने पड़ जाते अर्थात् अुसकी पीडा और बढ़ जाती। प्रसंगात् आर्मस्ट्रॉङ्गको मजबूर होकर यह कहना पड़ा कि शल्यचिकित्सा (सर्जरी) का खूब दुरुपयोग हुआ है और होता रहेगा। अैसे हज़ारों अंगोंके अनपेक्षित ऑपरेशन हुअे हैं कि जो प्राकृतिक अुपचारसे ठीक हो सकते थे।

आर्मस्ट्रॉङ्गने अिस प्रकरणके अन्तमें अमरीकाके अेक प्रसिद्ध डाक्टर जॉर्ज अेस० कॉटनके पत्रका सार दिया है, जो अिस प्रकार है :—

"आपका भेजा हुआ मूत्रोपचार संबंधी साहित्य प्राप्त हुआ। जिसे पढ़कर मैंने अनेक रोगों पर मूत्रचिकित्साको आज़माया और आश्चर्यजनक परिणाम आया। घाव आदिके अुपचारमें अन्य कोअी चिकित्सा मूत्रचिकित्साको पछाड़ नहीं सकती। मुझे लगता है कि आप अेक महान् सत्यको प्रकाशमें ला रहे हैं और पीडित मानव जातिमें अिसका खूब प्रसार करना चाहिये।"

९

अन्य छोटे-बड़े रोग

शरीरके किसी रोगको छोटा समझना अपने आपको धोखा देना है। कोअी भी रोग छोटा नहीं है। यदि रोगका अिलाज फ़ौरन् न किया जाय और अुसे जल्दीसे मिटानेवाले अुपायोंका आलंबन न लिया जाय तो वह ज़हरी सांपके बच्चेकी तरह समय बीतने पर विषधर नागका रूप धारण कर लेता है और शरीरका नाश कर डालता है। तात्पर्य कि जिस रोग पर शुरूमें ही ध्यान दिया जाय और जो योग्य अुपचार से थोड़े दिनोंमें ही मिट जाय, अुसे सामान्यतः छोटा रोग समझा जाता है। अैसे और अन्य गंभीर रोग भी मूत्रचिकित्सासे नष्ट हो जाते हैं। आर्मस्ट्रॉङ्गने अपनी पुस्तकके चौदहवें प्रकरणमें मासिक धर्मकी पीडा, म्यूकस कोलाअिटिस (श्लेष्मल स्थूलांत्रकोप), आंखकी चोट, सोराअिसिस (अेक चर्मरोग), अिन्फ़्लूअेन्ज़ाके कारण संधिज्वर, पायोरिया (दंतपूय), मोटापा, श्वासरोग, गुरदेकी सूजन, पीलिया, गंज, अेपेन्डि-साअिटिस (आंत्रपुच्छकोप), नमोनिया, मोतिया, काला मोतिया, संधि-

वात, आर्थराअिटिस (संधिकोप) आदि छोटे-बड़े रोगोंके रोगियोंको मूत्रोपचारसे ठीक कर देनेका वर्णन किया है। अुनमेंसे नमूनेके तौर पर कुछ रोगियोंका विवरण नीचे लिखता हूं।

१. मासिक धर्मकी पीडा — अेक स्त्रीका मासिक धर्म बहुत लंबा चलता था और अनेक बार आता था। अुसने पहले डाक्टरी अुपचार किया, परन्तु कुछ भी फ़ायदा नहीं हुआ। फिर वनस्पति-चिकित्सा (हरबेंलिज़म) की, जिससे थोड़ा लाभ तो हुआ, पर अुसका शरीर दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जाता था और मानसिक संतुलन भी कम होने लगा था। अेक बार अुसका मासिक रजःस्राव दो सप्ताह तक चलने पर भी बंद न हुआ। तभी अुसने मूत्रचिकित्साको आज़मानेका संकल्प किया। यद्यपि शुरूमें अुसका मूत्र मासिक स्रावके खूनसे खूब मिला हुआ था, फिर भी अुसे पीकर अुसने अपनी निष्ठा और हिम्मतका परिचय दिया। अुपवासके दौरानमें वह रोज़ाना दो तीन पिंट (लगभग ५० तोला) ठंडा पानी चुसकी ले ले कर पीती थी। तीन दिनमें अुसका मूत्र सामान्य स्थितिका हो गया। अुसने २८ दिन तक अुपवास चालू रखा। अुपवासके दौरानमें किसी स्वस्थ मनुष्यके मूत्रसे अुसकी मालिश भी रोज़ाना कअी घंटे होती रही। अुसे पूरा आराम हो गया। केवल अुसके मासिक धर्मकी व्याधि ही नष्ट नहीं हुअी, अपितु पुराना ज़ुकाम और बढ़ता हुआ बहरापन भी मिट गया।

२. गुरदेकी सूजन — अेक युवतीके गुरदेमें सूजन थी और साथ ही कुछ और पीडा भी थी। वह कअी हफ़्तों तक दो डाक्टरोंसे अपना अिलाज कराती रही। आखिर अेक विशेषज्ञकी सालह ली गयी। अुस विशेषज्ञने अुस युवतीकी मातासे कह दिया कि अुसका रोग असाध्य है और वह आगामी क्रिसमसका पर्व नहीं देख सकेगी। तब अुस रोगीको आर्मस्ट्रॉङ्गके पास ले जाया गया। अुसे मूत्रपानके लिये प्रोत्सा-हित अेवं प्रेरित करनेकी खातिर आर्मस्ट्रॉङ्ग अुसीके घिनौने मूत्रमें से थोड़ासा मूत्र खुद पी गये। मूत्र और ठंडे पानीके साथ तीस दिन

के अुपवास और मूत्रमालिशसे वह युवती सर्वथा रोगमुक्त हो गयी और फिर वह किसी बीमारीका शिकार नहीं हुअी। जब वह आर्मस्ट्रॉङ्गके पास आयी थी तब अुसका वज़न १०६ पौंड था। स्वस्थ होनेके बाद चार महीने लगातार वह मूत्रपान अेवं मूत्रमालिश करती रही और दोनों समय संतुलित पथ्य आहार लेती रही। जिसका परिणाम यह आया कि अुसकी अूंचाअी और शारीरिक गठनके अनुरूप अुसका वज़न १३६ पौंड हो गय।

३. मोटापा — ३० बरसकी अेक विवाहित स्त्रीका वज़न १७४ पौंड था। अुसके कोअी संतान न थी। सामान्यतः वह अयुक्त आहार करती थी, परन्तु पेटू न थी। वह भोजन चबा चबा कर खाती थी और भोजनसे पहले या बीचमें पानी पीती थी। अुसने अपना वज़न कम करनेके लिये आहारमें अनेक परिवर्तन किये थे, पर सभी व्यर्थ सिद्ध हुअे। अुसने केवल पानी पीकर अुपवास भी किया था; परंतु जैसे ही वह खाना शुरू करती तो अुसका वज़न पहलेकी अपेक्षा जल्दीसे बढ़ जाता था। आखिर अुसने आर्मस्ट्रॉङ्गकी सलाह ली। अुसने मूत्र और जलके साथ १४ दिनका अुपवास किया और रोज़ाना मूत्रमालिश की। जिससे अुसका वज़न १४० पौंड हो गया। फिर वह संतुलित अेवं पथ्य आहार करने लगी और दिनमें दो बार ही भोजन करती थी। अुसने मूत्रपान भी जारी रखा। अुसका वज़न १४० पौंडके आसपास रहा। तब अुसकी आयु पचास बरससे अधिक थी पर वह तेंतीस बरसकी लगती थी।

४. अेक रहस्यपूर्ण केस — ५८ बरसका अेक पुरुष निरीक्षण अेवं अुपचारके लिये कअी सप्ताहसे अस्पतालमें था। परन्तु अुस की अवधि पूरी होने पर अुसे बताया गया कि रोग असाध्य है और मौतका शिकार होनेके लिये अुसे घर भेज दिया गया। साथ ही अुसे यह हिदायत की गयी कि वह स्थानिक डाक्टरसे संपर्क रखे। अुसे अेक खास दवा दी गयी कि जो अुसके चाहे जैसे आहारको पचा दे।

अपने अेक सहृदय रोगीकी प्रार्थनासे आर्मस्ट्रॉङ्गने अुसका अिलाज करना मंजूर किया। अुस रोगीको देखते ही अुन्होंने समझ लिया कि यदि अुसकी मृत्यु निश्चित ही है तो वह रोगके कारण नहीं, परन्तु अुसे जो अुग्र अेवं ज़हरी दवा दी गयी है, अुसके कारण होगी। अुसके डेले बढ़ गये थे। अुसका शरीर पतला ज़रूर था, पर क्षीण न था। वह खान-पानमें सावधान था। वह बहुत परिश्रमी और नियमित था। अुसे कभी सर्दी नहीं हुअी थी। अुसे न तो क़ब्ज़ था और न ही अतिसार। अुसे अेक ही व्यसन था और वह था सुंघनीका। परन्तु अेक सालसे अुसने नसवारका अुपयोग छोड़ रखा था। आर्मस्ट्रॉङ्गने जब अुसे पहली बार देखा तब वे कुछ ही मिनट अुसके पास ठहरे थे, और अुसे मूत्र और जलके साथ अुपवास करनेकी सूचना दी गयी थी। अुसे और अुसकी पत्नीको यह कहा गया कि प्रयोगके दौरानमें यदि कोअी क्रिया-प्रतिक्रिया हो तो अुससे तनिक भी न घबरायें और जांचके लिये टट्टी और अुलटीको सुरक्षित रखें। रोगीने मुत्रप्रयोग शुरू कर दिया। पहली बारके मूत्रपानके चौबीस घंटे बाद अुलटियां होने लगीं और अितनी हुअीं कि गंदे मलसे दो बालटियां भर गयीं। अुसकी आंतोंमें से भी खूब मल निकला और नाकमें से चिकना कफ। अुसे नाक साफ़ करनेमें अेक दर्जन रूमाल बिगाड़ने पड़े। वे सब रूमाल केवल चिपचिपे कफसे ही खराब नहीं हुअे थे, अपितु सुंघनीसे भी मलिन हुअे थे। अुपवास चलता रहा और अेक सप्ताहमें सभी मलोंका निकलना बन्द हो गया। दस दिनके बाद अुपवास छोड़ा गया और रोगी नीरोग हो गया। सन् १९४४ में (पुस्तकका लेखनकाल) अुसकी अुमर ७० बरस से भी अधिक थी।

यह केस बहुत दिलचस्प है, क्योंकि अिससे यह पता चलता है कि मूत्रचिकित्सामें रोगके निदानकी ज़रूरत नहीं है और अिससे महत्त्वपूर्ण ज्ञान तो यह होता है कि अनेक मास पूर्व लिया हुआ विजातीय द्रव्य — प्रस्तुत केसमें सुंघनी — शरीरके कोशतंतुजाल

(टिश्यूज़) में पड़ा रहता है और हानि पहुंचाता रहता है। जब अुपवाससे शरीर-शुद्धिकी क्रिया होती है तब वह द्रव्य बाहर आता है।

५. **पीलिया** — यह कोअी स्वतंत्र रोग नहीं है, परंतु जिगरकी चिरकालिक या तात्कालिक विकृतिका परिणाम है। पीलियेका प्रथम अेवं दुःसाध्य केस आर्मस्ट्रॉङ्गके पास सन् १९१९ में आया। अुस समय अुन्होंने मूत्रचिकित्साका श्रीगणेश ही किया था। मूत्र और जलके साथ दस दिनका अुपवास करनेसे वह केस ठीक हो गया था। पीलियेके बहुतसे रोगियोंके अुपचारका अवसर तो अुन्हें नहीं मिला; परंतु जिन रोगियोंका अुन्होंने अुपचार किया अुनके अिलाजके दौरानमें अुन्हें अेक अनूठी बात यह मालूम हुअी कि अुपवासके पहले दो तीन दिनोंमें ही रोगीके शरीरका रंग बदलने लगा और अुपवास पूरा होने पर अुसका रंग स्वस्थ अेवं सुन्दर गोपकन्याके वर्ण जैसा तेजस्वी हो गया। यदि पीलियेके रोगीका जिगर कैन्सरसे पीडित न हो तो अुसका पीलिया आठ दस दिनमें ही मिट जाता है।

६. **मोतिया** — अिंग्लैंडमें तो अैसा क़ानून है कि प्रमाणित डाक्टर ही आंखका मोतिया निकाल सकता है और अगर कोअी दूसरा व्यक्ति मोतिया निकालता है तो अुसे अपराधी समझा जाता है। परंतु यहां अैसा है कि किसी आंखके डाक्टर या सर्जनसे ऑपरेशन करनेकी योग्यताका प्रमाणपत्र प्राप्त करनेवाला व्यक्ति किसी रोगीकी आंखका ऑपरेशन करता है और वह निष्फल सिद्ध होता है, तो वह रोगी अुस पर हानिकी नालिश कर सकता है और अुसे सज़ा दिला सकता है।

आर्मस्ट्रॉङ्ग तो प्रमाणित डाक्टर नहीं थे। अैसी स्थितिमें वे मोतियेके रोगीका अिलाज कैसे कर सकते? परन्तु अुन्हें कहां ऑपरेशन करना था? अुनकी मूत्रचिकित्सामें तो ऑपरेशन किये बिना ही आंखका मोतिया दूर करनेकी अपूर्व शक्ति थी। अिस चिकित्सामें तो आंखको

छूनेकी भी ज़रुरत नहीं रहती; क्योंकि आंख शरीरका अेक अंग है। अिसलिये सच बात तो यह है कि आंखकी कोअी भी बीमारी सारे शरीरकी किसी विकृतिका ही परिणाम है। शरीरके किसी अेक अंगके विशेषज्ञ होनेका दावा करनेवाले औरोंकी अपेक्षा भले अुस अंगकी रचना का अधिक ज्ञान रखते हों। परन्तु आंख, कान, नाक, सिर, दांत आदि शरीरके अंगोंके रोग स्वतंत्र नहीं होते। अुनका आधार तो समस्त शरीरकी विकृति अेवं अस्वस्थता पर है। अतः आंखकी सूजन, अुसकी दृष्टिका क्षीण होना, अुसमें मोतिया आना आदि आंखकी सभी पीडाअें समस्त शरीरकी अस्वस्थ दशाके परिणाम हैं। आर्मस्ट्रॉङ्ग अपने अनुभवके आधार पर यह दावा करते हैं कि आंखकी पुतली पर जो मोतियेकी झिल्ली आ जाती है वह पेशाव और पानीके साथ दस दिनका अुपवास करनसे घुलकर साफ़ हो जाती है और ज़िद्दी मोतिया २८ दिनके अुपवाससे दूर हो जाता है।

७. रोगी गुरदा—श्री जी० डी० का दायां गुरदा ख़राव हो गया था और अुन्हें अत्यन्त पीडा सहन करनी पड़ती थी। अुनके पेशावका रंग लाल था। अॅक्सरेसे पता चला कि अुनके गुरदेमें अेक बड़ी पथरी है। सर्जनकी यह राय थी कि विगड़े हुअे गुरदेको न निकाला गया तो अुनकी जान पर आ बनेगी। अैसी स्थितिमें सन् १९४४ में अुन्हें अस्पतालमें दाखिल तो कर दिया गया। परन्तु अुन्होंने ऑपरेशन करानेसे अिनकार कर दिया। आख़िर वे आर्मस्ट्रॉङ्गके पास गये और अुनकी सूचनाके अनुसार पेशाव और पानीके साथ अुपवास करने लगे। कुछ ही हफ़्तोंमें अुनकी हालत सुधरने लगी। अुनकी पीडा दूर हो गयी और पेशावका रंग स्वाभाविक हो गया। तीन मास बाद वे जांचके लिये अस्पताल गये। विधिपूर्वक जांच करनेके बाद अुन्हीं डाक्टरोंने फ़ैसला दिया कि गुरदा अब बिलकुल ठीक हो गया है और अुसी अॅक्सरेने यह बताया कि पथरीका नाम-निशान भी नहीं है।

आर्मस्ट्रॉङ्गने विविध भयंकर रोगोंसे पीडित अनेक व्यक्तियोंको मूत्रोपचारसे नीरोग अेवं स्वस्थ बनाया, जिसका विस्तृत विवरण अुनकी अंग्रेज़ी पुस्तक — 'दी वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' में दिया गया है। परन्तु मैंने अुस विवरणको संक्षेपमें प्रस्तुत करना ही ठीक समझा और मुझे अितनेसे सन्तोष है। अुन्होंने पशु-पक्षियोंके रोगोंको भी अिसी अुपचारसे मिटाया है, जिसका विवरण मैंने नहीं दिया है।

मैं आशा रखता हूं कि अुपर्युक्त विवरणसे पाठकगणको सन्तोष होगा। पुनरुक्ति दोष करके भी अिस प्रकरणके अन्तमें यह जता देना ठीक होगा कि कुष्ठ रोगीको छोड़कर प्राय: शेष सभी प्रकारके रोगी मूत्रचिकित्सासे रोगमुक्त हुअे हैं। कुष्ठ रोग अिंग्लैंडमें प्राय: नहीं होता है और अुनके पास कोअी कुष्ठरोगी नहीं आया; अिसलिये अुन्हें अुसके अुपचारका अवसर ही नहीं मिला।

दूसरे खंडका समस्त विवरण दीपकके मंद प्रकाश जैसा नहीं है, परन्तु सूर्यके तेजस्वी प्रकाशके समान है। फिर भी जिसे सूर्यका प्रकाश दीखता न हो वह अपनी आंखोंको बंद करके सूर्यके सामने फिरता है, अैसा क्यों न कहा जाय?

मूत्रसे घृणा कैसी ?

"अभी हमने 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' नामक पुस्तक पढ़ी थी। अुसमें लेखकने मनुष्यके मूत्रको ही वॉटर ऑफ़ लाअिफ़ कहा है। वैसे तो जानवरोंका मूत्र भी वॉटर ऑफ़ लाअिफ़ ही है। जीवनके द्वारा अुत्पन्न किया गया पानी (?—सं०) मूत्रोपचार नामक नयी पद्धतिमें बताया गया है कि मानवके मूत्रसे बहुत सारे रोग दूर किये जा सकते हैं। वैष्णवोंको यह सुनकर धक्का लगेगा और वे पूछ बैठेंगे कि मानवका मूत्र भी क्या कोअी पीनेकी चीज है? परन्तु अुस लेखकने लिखा है कि मनुष्य अेक ओर तो दवाके लिये लाखों रुपये ख़र्च करते हैं और दूसरी ओर सर्वोत्तम दवासे कोअी लाभ नहीं अुठाते। अपने मूत्रको पीना चाहिये। भिन्न भिन्न रोगोंके लिये वही अेक रामबाण दवा है। जो भाअी अुस पुस्तकको देखना चाहें वे मेरे पास आकर देख सकते हैं। रावजी भाअी पटेलने, जो कि गांधीजीके साथ दक्षिण अफ़्रीकामें थे, अुस पुस्तकके आधार पर गुजरातीमें 'मानव-मूत्र' नामकी पुस्तक लिखी है। Index (अिंडक्स) की भांति यह विषय भी अब विज्ञानका विषय हो गया है। अिसलिये कमसे कम आगेके लिये लोगोंको अब मल-मूत्रसे घृणा नहीं करनी चाहिये।"

— विनोबा

(विनोबा प्रवचन, ४–४–'५९)

आरोग्यका अमूल्य साधन

[स्वमूत्र]

तृतीय खंड

सर्वानुभवकी कसौटी पर

मूत्रका मूल सिद्धान्त

पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश, ये पांच महाभूत हैं, जिनसे यह सृष्टि बनी हुअी है। मानव-देह भी अिन्हीं पांच तत्त्वोंसे बनी हुअी है। अीश्वरने प्रत्येक मनुष्यको अेक जैसी देह दी है और प्रत्येक स्वस्थ देहमें समुचित परिमाणमें ये पांच तत्त्व होते हैं। मनुष्यके अपने दोषसे जब अुस परिमाणमें कमी-बेशी होती है तब अुसका स्वास्थ्य बिगड़ता है। अुस बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको फिरसे ठीक करनेके लिये पांच तत्त्वोंके परिमाणकी कमी-बेशीको ठीक कर लेना चाहिये। यह कार्य करनेकी शक्ति केवल स्वमूत्रमें है। पृथ्वीको जितना समुद्रका आधार है अुतना ही आधार मानव-देहको स्वमूत्रका है। पृथ्वीके निर्माण तथा जीवनमें समुद्रका जो स्थान है, मानव-देहमें वही स्थान स्वमूत्रका है। और जैसे सभी महाभूतोंको आत्मसात् करनेकी शक्ति जलमें है वैसे शरीरमें रहे हुअे सभी तत्त्वोंको आत्मसात् करनेकी शक्ति अुसके मूत्रमें है।

— रावजीभाअी म० पटेल

१

हृदय के रोग

१. हृदयका दम

(अपने पर मूत्रप्रयोग)

मूत्रचिकित्साका पता मुझे अपनी बीमारीके दौरानमें लगा था। मैंने अुसकी पुस्तक पढ़ी और मनन किया। परन्तु मुझे यह महसूस हुआ कि केवल पढ़ना या लिखना या अुपदेश देना कुछ महत्त्व नहीं रखता है। आत्मा अमर है और सर्वत्र व्याप्त है, अैसा हम पढ़ें, अुसकी अमरता और व्यापकताके विषयमें लेख लिखें या प्रवचन करें। परन्तु जब तक अुसकी अमरता अेवं व्यापकताका स्वयं अनुभव न करें तब तक अुसकी कोरी जानकारी किस काम की? अिसलिये मुझे मूत्रोपचारके स्वानुभवकी ज़रूरत महसूस हुअी। जब तक तटस्थ भावसे किसी भी सत्यका स्वानुभव न हो जाय तब तक अुसका प्रचार करना व्यर्थ-सा है, अैसा समझकर मैंने मूत्रप्रयोग शुरू किया, जिसका विवरण नीचे देता हूं।

मैं सन् १९५४ की गरमीमें आरामके लिये आबू गया था। वहां मुझ पर हृदयरोगका पहला आक्रमण हुआ। हृदय निर्बल हो जानेसे वह यथेष्ट गतिसे काम नहीं कर सकता; जिससे श्वासकी नलियोंमें पानी भर जाता है और हांफते हुअे अिंजनकी भांति अुसकी गति तेज़ हो जाती है और अंतमें अुसका ज़ोर कम हो जाता है। प्रकृतिने मनुष्यके शरीरमें हृदयकी रचना अैसी की है कि अुसे तो चौबीस घंटे ही काम करना पड़ता है, चाहे मनुष्य स्वयं आराम ही क्यों न करता हो। हृदयकी गति रुक जाय तो जीवन ही समाप्त हो जाय। शरीरके दूसरे अंगोंमें से चाहे कोअी अंग जन्मसे रोगी हो, परन्तु

हृदय तो प्रायः नीरोग ही होता है। मनुष्यकी अनेक बुरी आदतोंसे, संयमके अभावसे या खानेपीनेके अविवेकसे पेटके जो रोग हो जाते हैं अुनका असर हृदय पर होता है, जिससे अुसकी शक्ति क्षीण होती है। मेरा अैसा मानना है कि अैसे किसी दोषके कारण मैं तीव्र अम्ल-पित्त (हाअिपर अॅसिडिटी) के रोगका शिकार हुआ और जिसका असर हृदय पर हुआ। अम्लपित्तकी व्याधि तो मैंने दूर कर दी, परन्तु हृदयकी निर्बलता बनी रही।

सन् १९५८ में फ़रवरीके मासमें अिस हृदयरोगका आक्रमण अितना अधिक तीव्र हुआ कि डाक्टरों और स्वजनोंने तो मेरी आशा ही छोड़ दी थी। परन्तु "जिसको राखे साअियां मार सके न को" के न्यायसे मैं जीवित रहा। फिर भी दिलकी कमज़ोरीके कारण श्वास, कफ और खांसी तो चलती ही रही। डाक्टर अिसे हृदयका दम कहते हैं। अिसमें अधिक श्रम करने से, खानपानमें संयम न रखनेसे और भावावेशमें आ जानेसे अेकाअेक हृदयकी गति बढ़ जाती है और अेकदम बंद हो जाती है। अिसलिये डाक्टर मुझे चेतावनी देते थे कि अब मुझे किसी सार्वजनिक प्रवृत्तिमें भाग नहीं लेना चाहिये। मैं अुनकी सूचनाके अनुसार सावधानता रखता था; परन्तु कफ और खांसीने मेरा नाकमें दम कर दिया।

ता० ८ फ़रवरी, १९५८ के रोज़ मैंने अपने डाक्टर श्री जसुभाअी भट्टको फ़ोन किया और अपनी स्थिति जतायी।

मैं ता० ९ फ़रवरीके दिन सेठ लल्लुभाअी गोरधनदास अस्पतालमें गया। डाक्टरने मेरी जांच की। मेरे हृदय और फेफड़ोंका स्क्रीनिंग करके कहा, "दायीं ओरके फेफड़ेमें नमी है, जिससे खांसी और कफका ज़ोर है। स्थिति चिंताजनक नहीं है। अिसलिये आप नेप्थोलका अेक अिंजेक्शन ले लें ताकि शरीरमें से ६०–७० औंस पानी पेशाबके रास्ते निकल जाय तो फेफड़े साफ़ हो जायें और खांसी अेवं कफ न हो। हृदयकी स्थिति चिंताजनक नहीं है।" ता० १० फ़रवरीको मैंने नेप्थोलका अिंजेक्शन

लिया और अुसके बाद सचमुच चौवीस घंटेमें ८० औंस पानी पेशावके रास्तेसे निकल गया; परन्तु मेरी खांसी और कफमें कुछ अन्तर न आया।

अितनेमें अेक आकस्मिक घटना घटी। हरिजन आश्रम साबरमतीमें रहनेवाले श्री जूठाभाअी अमरशी शाह मुझे मिलने आये। बातचीतके दौरानमें अुन्होंने मूत्रप्रयोगकी बात की। गत फ़रवरीमें जब मैं अस्पतालमें बीमार पड़ा था तब मेरे अेक मित्रने मुझे पत्र लिखकर सूचित किया था कि यदि मैं मूत्रप्रयोग करूं तो मैं स्वस्थ हो जाअूं। परन्तु अुस वक़्त मैं लाचार था। मैं समुद्रके अैन बीचमें ग़ोते खा रहा था और मेरे स्वजन तथा डाक्टर अिसे स्वीकार करनेके लिये तैयार न थे, अतः मैं चुप रहा। अुसके दस महीने बाद फिर वही बात सामने आयी और मूत्रोपचारकी अंग्रेज़ी पुस्तक—'दी वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' श्री जूठा भाअीने मुझे दी और साथ ही मूत्रप्रयोगकी सफलता का स्वानुभव सुनाया। मैंने अुस पुस्तकको पढ़ना शुरू किया। ज्यों ज्यों पढ़ता गया त्यों त्यों मेरी दिलचस्पी बढ़ती गयी। मुझे अैसा लगा कि मानो मैं अुसमें अपने दिलकी बातें ही पढ़ रहा हूं। मूत्र संबंधी मेरी स्मृति ताज़ा हो आयी। गोमूत्रसे हमारे अनेक रोग मिटते हैं, अैसा आयुर्वेद कहता है और आधुनिक डाक्टर भी अिसे मानते हैं। हमारे योगी हठ योगके अभ्यासमें शरीरको नीरोग अेवं स्वस्थ रखनेके लिये मूत्रका अुपयोग करते थे। अैसी अनेक बातें याद आयीं और मनमें ठस गया कि सचमुच मूत्रमें अैसी क्षमता होनी चाहिये। परन्तु आज अुसका अुपयोग नहीं होता है और हम यह मान बैठे हैं कि अुसका अुपयोग हम नहीं कर सकते हैं। अितना ही नहीं किन्तु साफ़-सुथरे अेवं सभ्य समझे जानेवाले लोगोंमें तो वैसी बात करनेकी कोअी हिम्मत भी नहीं करता है। बात करनेवाले को यह डर है कि कहीं अुसे अघोरी या जंगली न समझ लिया जाय। अैसी स्थितिमें मैंने बात करनेकी तो ठान ली। परन्तु मैं अपने आपको अन्ध श्रद्धालु

कहलाना नहीं चाहता था। अिसलिये मुझे जो कुछ करना था वह शास्त्रीय ढंगसे करना था। अतः मैंने अेक डाक्टरको, जिनकी साफ़-दिलीमें मुझे विश्वास था, बुलाया और अुनसे मूत्रप्रयोगकी बात कही। अुनसे बात करनेके बाद मैंने मूत्रोपचार शुरू करनेका निर्णय किया।

मैंने मूत्र और पानी लेकर अुपवास करनेका प्रयोग शुरू नहीं किया। किसी अनुभवीके मार्गदर्शन बिना अेकदम अैसे प्रयोगका जोखिम अुठाना ठीक नहीं समझा। परंतु १८ फ़रवरी १९५८ से मैंने पांच सात दिनके पुराने मूत्रसे शरीर पर मालिश कराना शुरू कर दिया। मेरा चि० शशिकान्त बड़े चाव और अुत्साहके साथ रोज़ाना डेढ़ घंटा मालिश करता था। अुसकी प्रसन्नताको देखकर अैसा लगता था कि वह मानो चंदनके तेलसे मालिश न करता हो। भिन्न भिन्न अंगोंकी मालिशमें जो समय लगता था अुसका विवरण अिस प्रकार है :—

(१) पाओंके तलवोंके लिये १० मिनट, (२) दोनों टांगोंके लिये २० मिनट, (३) दोनों भुजाओंके लिये १२ मिनट, हाथके पंजोंमें अधिक समय लगता था, (४) छाती, पेट और पेड़ूके लिये १५ मिनट, (५) पीठ, कमर और दोनों वग़लोंके लिये १३ मिनिट, (६) सिर, गले और मुंहके लिये २० मिनट। अिस तरह कुल ९० मिनट मालिश चलती थी। अनुभवसे मुझे मालूम हुआ कि प्रेमसे की हुअी मालिश अुत्तम होती है। मालिशका कार्यक्रम सुबह ७.३० से ९ बजे तक चलता था। वासी मूत्रमें दुर्गंध तो अधिक होती है, परन्तु वह अधिक गुणकारी होता है। घृणा या दुर्गंध तो व्यक्तिगत घ्राणेन्द्रियका विषय है। कुछ व्यक्तियोंको अमुक गंध अच्छी लगती है और कुछ को अमुक गंध बुरी लगती है।

अिस मूत्रमालिशसे मेरे शरीर पर अिस प्रकार असर हुआ :—

(१) ता० २० फ़रवरीसे खुलकर पेशाब होने लगा, जिसके लिये मूत्रोपचारसे पहले डायमोक्सकी टिकिया लेनी पड़ती थी और अुसका असर दो ही दिन रहता था। अिंजेक्शन शरीरके कोशतंतुजाल

(टिश्यूज़) में से सारे पानीको खींचकर मूत्रके रूपमें बाहर निकाल देता था, जिससे कमज़ोरी आ जाती थी और अुन टिश्यूज़को ठीक होनेमें कुछ समय लग जाता था। अुसके बदले केवल पेशावकी मालिशसे पेशावके रास्तेसे अुतना ही पानी निकलने लगा कि जितना आरोग्यकी दृष्टिसे आवश्यक था।

(२) सात दिनमें अेक और परिवर्तन मालूम हुआ। पहले मेरी कमरमें अितना दर्द था कि सहारा लेकर धीरे-धीरे अुठकर बैठ सकता था। कमर पर दो चार मुक्के मारकर सीधा खड़ा हो सकता था और फिर धीरे धीरे क़दम अुठाकर चलता था। अब सहारे बिना अेक दम अुठकर चलने लगा।

(३) अुसी प्रकार पीठका दर्द भी जाता रहा। अर्थात् अब कमर या पीठ दबवाकर आराम लेनेकी ज़रूरत न रही।

(४) नवें दिन अेक और आश्चर्यकारी परिणाम मालूम हुआ। मेरी दोनों टांगोंके अूपरके अमुक-अमुक भागमें खुजली होती थी, चसक अुठती थी, धीरे-धीरे अंगारकी सी जलन होने लगती थी और अुतनी जगह की चमड़ी सुन्न हो जाती थी। मुझे डर था कि कहीं सारे शरीरका रुधिर-विकार वहां जमा होकर चंबल (अॅक्ज़ैमा) या अैसी व्याधिको पैदा न कर दे। वह सब खाज, चसक अंगारकी सी जलन मिट गयी और चमड़ीमें चमक आ गयी।

(५) बारह-चौदह दिनमें बड़ा चमत्कार हुआ। मेरी खांसी मिट गयी और कफ आना बन्द हो गया। मूत्र नियमित हो जानेसे फेफड़े अपने आप साफ़ रहने लगे। सारा दिन मुंह चिकने थूकवाला रहता था, गला भी कफ-मिश्रित थूकवाला रहता था, जिसके कारण बार-बार थूकना पड़ता, खांसी आती रहती, कफ निकालना पड़ता। यह सब तत्काल दूर हुआ और मुंह साफ़ अेवं सूखा रहने लगा। मेरे लिये तो यह परिवर्तन चमत्कार ही था। तकिये पर मज़ेसे छः आठ घंटे सोने लगा।

(६) अिसके अतिरिक्त मेरे शरीरकी चमड़ी पर जो चमक आयी, कोमलता आयी, और शरीरमें जो स्फूर्ति आयी, मुंह पर जो तेज दिखायी दिया, अुससे सभी दंग रह गये। डाक्टर भी चकित हुअे। अिस प्रकार मेरे हृदयरोगके जो जो सहायक रोग थे वह सब नष्ट हुअे। मुझे अपना शरीर हलका मालूम हुआ। मेरा हृदय और शरीर स्फूर्तिवाला लगा। अब मैं आगे बढ़नेके लिये अुत्साहित हुआ। परंतु केवल जोशमें आकर मनमाना क़दम अुठाना नहीं चाहता था। अिसलिये परामर्श करनेके लिये डाक्टर श्री जसुभाअी भट्टके पास जाना ठीक समझा ओर शारीरिक जांच करवानेके बाद अुनकी सलाहसे अगला क़दम अुठानेका फ़ैसला किया।

ता० ७ मार्चको मैं फिर अुसी अस्पतालमें डाक्टरसे मिला। मूत्रप्रयोग शुरू करनेके बाद, मैंने वह अंग्रेजी पुस्तक — 'दी वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' पढ़नेके लिये अुन्हें भेज दी थी और अुन्होंने अुसे पढ़ भी लिया था। अुन्होंने मेरे शरीरकी जांच की। जिसका विवरण यह था — (१) हृदय पहले कुछ बढ़ा हुआ था, वह कुछ सिकुड़ा हुआ मालूम दिया, (२) फेफड़े सूखे और साफ़ थे, (३) कफ या खांसी बिलकुल न थी। (४) हृदयकी धड़कन ८० थी। (५) नाड़ीकी धड़कन ७२ मालूम हुअी (६) खूनका दबाव १४० था। (७) टॅम्परेचर नॉर्मल था।

हृदय की धड़कन ८० थी, परन्तु वह अनियमित थी। यह हृदयरोगका सूचक था। और काम करते हुअे मेरे श्वासका चलना भी हृदयरोगका चिह्न था। अिस जांचसे डाक्टरको सन्तोष हुआ। अुन्होंने मुझे बताया कि शारीरिक स्थिति काफ़ी अच्छी है। हृदयकी कमज़ोरी तो अभी है। फिर भी निरंतर कफ और खांसीके कारण हृदयको जो तकलीफ़ होती थी वह अब नहीं होगी। अिसलिये हृदयको आराम मिलेगा और लाभ भी।

अैसा अभिप्राय सुनकर मैंने अपने दिलकी बात डाक्टर साहबको कह सुनायी। अपने प्रयोगका हाल सुनाकर अुनसे कहा कि क़रीब पंद्रह दिनकी मालिशका यह परिणाम आया है। अब मैं आगे बढ़ना चाहता हूं; हृदयरोगसे मुक्ति पानेके लिये मुझे मूत्र और पानीके साथ पांच अुपवास करने हैं। मुझे विश्वास है कि अैसे पांच अुपवास से हृदयका रोग नष्ट हो जायगा; परन्तु आपकी अनुमति बिना अभीष्ट अुपवास करना नहीं चाहता। आपकी अनुमतिसे अुपवास करूंगा तो मेरे प्रयोगकी सफलताका यश आपको मिलेगा। अिस बारेमें डाक्टर के साथ खूब चर्चा हुअी। आखिर अुन्होंने केवल दो अुपवास करनेकी सम्मति दी और वह भी अिस शर्त पर कि मुझे पहले दिनकी परिस्थि-तिका परिचय अुन्हें रातके नौ बजे कराना होगा और अुस परिस्थितिके संतोषजनक होने पर ही वे मुझे दूसरे दिनके अुपवासकी अनुमति देंगे। मैंने अुनकी शर्त मान ली।

मैंने अगले रोज़ सवेरे डाक्टर पुष्पेन्द्र भट्टकी जांचके बाद अुपवास शुरू किया। सात बजे पहली बारका पेशाब क़रीब तीन औंस हुआ, जिसे मैं पी गया। अुसके बाद जिस समय जितना पेशाब हुआ वह सब पी गया। रातको दस बजे फिर अुसी डाक्टरने मेरी जांच की और मेरा हाल डाक्टर जसुभाअी भट्टके पास भेज दिया। अुन्होंने दूसरे दिन भी अुपवास रखनेकी अिजाज़त दी। दूसरे दिन सुबह सात बजे पेशाबकी हाजत न हुअी, परन्तु प्यास लगी; अिसलिये पानी पीकर अुपवास शुरू किया। अुसके बाद जो पेशाब हुआ वह मैंने पी लिया और आवश्यकताके अनुसार पानी भी पिया। रातको डाक्टरने जांच की और विवरण डा० जसुभाअी भट्ट को भेज दिया। मैंने तीसरे अुपवासके लिये अनुमति मांगी। परन्तु अुन्होंने अिजाज़त नहीं दी और तीसरे दिन सुबह मूंगके पानीसे पारणा किया। तबसे मूत्रमालिश भी बंद कर दी। केवल सुबह अुठते ही जो तीन चार औंस पेशाब होता था अुसे चार दिन तक पीता रहा।

अुपवासके चार-पांच दिन बाद मैं फिर अस्पतालमें गया। दो दिनके अुपवासके असरको जाननेके लिये मैं और श्री जसुभाअी भट्ट अुत्सुक थे, अुनके कमरेमें मैं दाखिल ही हुआ था कि वे मुझे देखते ही बोल अुठे, "आपकी जांच करनेसे पहले ही मैं कह सकता हूं कि आपके प्रयोगसे आपके शरीरकी कान्ति वदल गयी है और त्वचा अैसी तेजस्वी हुअी है कि अुसे देखकर मैं तो आश्चर्य-मुग्ध हो गया हूं। मैं यह प्रमाणपत्र देनेके लिये तैयार हूं कि आपका प्रयोग सफल हुआ है।" मैंने कहा कि अभी तो प्रयोग पूरा नहीं हुआ है। मेरा हृदयरोग निर्मूल हो जाय तभी मैं अपने प्रयोगको सफल मानूंगा। आप पूरा प्रयोग करने देते तो काम बन जाता।

अुन्होंने फिर मेरी जांच की। कार्डियोग्राम लिया तो हृदयमें थोड़ा परिवर्तन मालूम हुआ। मैंने चार पांच दिनके लिये वाहर जानेकी अुनसे अिजाज़त मांगी और अुन्होंने खुशीसे अिजाज़त दे दी। गांव-जाने-आनेमें मुझे बिलकुल थकान महसूस नहीं हुअी।

मेरे प्रयोगका यह प्रथम दौर है। मैं अिसे पूरा प्रयोग नहीं मानता हूं? परन्तु अितना तो अवश्य कह सकता हूं कि जितना प्रयोग किया अुतना सफल सिद्ध हुआ। यह कोअी दवा नहीं है। यह तो प्रकृतिका चमत्कार है। अितना तो दृढता और निश्चयके साथ कहता हूं कि जो व्यक्ति यह प्रयोग करना चाहता हो अुसे शास्त्रीय ढंगसे करना चाहिये। क़ुदरतका सहारा लेना हो तो क़ुदरतके पवित्र नियमोंका पालन करना ही चाहिये। हमारा नित्यकर्म, हमारा आचरण, हमारा आहार, हमारी आदतें और हमारे संस्कार प्रकृतिके अनुकूल होने चाहिये। मुझे जो जल्दी फ़ायदा हुआ अुसका कारण मैं यह समझता कि मैंने अपने स्वास्थ्यके लिये हानिकर सभी वस्तुअें छोड़ दी थीं।

मेरे मर्यादित मूत्रप्रयोगको आज (१९५९ में) आठ मास हो चुके हैं, परंतु शुभ परिणाम ज्योंका त्यों क़ायम है अर्थात् अुसमें कुछ फ़र्क़ नहीं आया है। मेरी महत्त्वाकांक्षा तो हृदयरोगका अुन्मूलन करनेकी

है और अुसके लिये अेक मास तक पेशाव व पानीके साथ अुपवास करना चाहिये। परंतु मेरी आयु सत्तर बरससे भी अधिक है, गत चार-पांच वरसकी बीमारीसे शरीर क्षीण हो गया है, खूनका दवाव कम है, वज़नमें ६० पौंडकी कमी आ गयी है। अैसी स्थितिमें मेरे प्रयोगके प्रति सहानुभूति रखनेवाले डाक्टरोंकी सलाह यही है कि मेरे लिये चार पांच दिनसे अधिक अुपवास करना खतरा मोल लेना है; क्योंकि कमज़ोरीके कारण खूनका दवाव वहुत कम हो जाय तो भयंकर स्थिति खड़ी हो जाय। मुझे भी वैसा अनुभव हुआ है। अिसलिये स्वजन जोखिम अुठानेका घोर विरोध करते हैं। मुझे अुनका अनुरोध मानना ही पड़ा है।

तो भी आज मैं मूत्रपान करता हूं और आवश्यकताके अनुसार मूत्रसे मालिश भी करवा लेता हूं। जिससे मेरा दिल और गुरदे अितनी अच्छी तरहसे काम करते हैं कि वर्षाके पानी-सा निर्मल व स्वादहीन मूत्र खुलकर होता है। शरीरमें न तो किसी प्रकारकी बेचैनी है और न ही पीडा; अपितु शरीरमें स्फूर्ति और ताज़गी रहती है। टट्टी साफ़ आती है और क़ब्ज़ मालूम हो तो मूत्रमें पानी मिलाकर अॅनिमा लेता हूं, जिससे पेट विलकुल साफ़ हो जाता है। भूख नियमित लगती है। रात दिनमें कुल मिलाकर सात घंटे सोता हूं और लिखने-पढ़नेका काम अच्छी तरहसे करता हूं। आजकल दिनमें दो बार पेशाव पीता हूं — सुवह पांच छः औंस और अुतना ही शामको। बीच बीचमें कुछ दिन मालिश करवाता हूं। आहार सात्त्विक अेवं पौष्टिक लेता हूं। अेक दिन नमकीन खाना खाता हूं और दूसरे दिन अलूना। अैसी अभिलाषा है कि काम करते करते ही रामशरणमें जाअूं और 'जिस विध राखे राम अुस विध रहिये' को चरितार्थ करूं।

तथापि मैं अभी अैसा नहीं कह सकता हूं कि मेरा हृदयरोग नष्ट हो गया है। मैंने कभी वैसा दावा भी नहीं किया है। परन्तु मुझे श्रद्धा है कि अिस प्रयोगसे मेरा हृदयरोग मिट जायगा और

मेरा हृदय अितना शक्तिशाली हो जायगा कि वह स्वस्थ हृदयकी भांति काम दे सके। अिसके लिये खतरा अुठाकर मैंने दो बार जी-जानसे कोशिश की, पर सफल न हुआ ; अुलटे जान खतरेमें आ गयी। फिर स्वस्थ हुआ। मेरे मित्र डाक्टरोंने मुझे बे-अक़्ल, मूर्ख, मिथ्या प्रचारक आदि विशेषणोंसे विभूषित किया। मुझे जो सत्यका अनुभव हुआ अुसका विरोध चाहे बड़ेसे बड़ा डाक्टर या वैज्ञानिक करता रहे तो भी मेरा सत्य मिथ्या नहीं हो सकता और मैं अपनी सत्यनिष्ठा अेवं श्रद्धासे विचलित नहीं हो सकता हूं। मैं अैसा महसूस करता था कि सच्चे साधनके अुपयोगमें कुछ कमी हो सकती है, परन्तु साधनमें नहीं। अिसलिये मैं अपने शरीर पर प्रयोग करने लगा। मैंने अंतिम प्रयोग सन् १९५९ के आरंभमें किया। दिन और रातका पेशाब पीकर तीन दिनका अुपवास किया, जिसमें मेरे खूनका दबाव १३५ से घटकर १०८ तक आ गया। मैं बहुत कमज़ोर हो गया। हृदयकी गति अितनी मंद हो गयी कि जिगरमें सूजन आ गयी और वह चार अंगुल बढ़ गया। अुसका असर गुरदों पर भी हुआ। अुनने भी ठीक तरहसे काम न दिया। जिसका परिणाम यह आया कि पेशाव घटने लगा और कमरसे नीचेका भाग सूज गया। मैंने अपना प्रयोग बन्द किया। मृत्यु तो भगवानके हाथमें है। मौत तो नहीं आयी, पर तकलीफ़ ज़रूर अुठायी और पुराने डाक्टरी अुपचारसे पहले जैसी स्थितिमें आ गया। अब रोगीकी दशामें विस्तरे पर लेटे लेटे जिन्दगी की सांस लेता रहा। यह दशा मुझे असह्य लगी। अैसी दशामें चैन कहां? लाचारीसे ग़म खाना पड़ा।

मैं अपनी आखिरी बीमारी पर ग़ौर करता ही रहा। आखिर अेकदम मुझे अपनी भूलका पता चला। मेरा हृदय कमज़ोर है, अिसलिये अुपवास करके अुसे अधिक कमज़ोर नहीं बनाना चाहिये। मुझे अपनी शक्तिको बनाये रखना चाहिये। फिर तो मुझे याद भी आ गया कि कि स्व० श्री आर्मस्ट्रॉङ्गने भी हृदयरोगसे पीडित अेक व्यक्तिको दिन-

रातका पेशाब पिलाकर और अुसकी मूत्रमालिश करवाकर बारह सप्ताहमें अुसे रोगमुक्त कर दिया था; परन्तु अुसे अुपवास पर न रखकर अेक बार खाना दिया जाता था। हृदयरोगके लिये ही अुन्होंने अैसा अपवाद किया था। अुपर्युक्त बात याद आ जानेसे मेरी तसल्ली हो गयी और तदनुसार करनेका फ़ैसला किया। मैं हर रोज़ डिजॉक्सिन (डिजिटेलिस) की दो टिकिया लेकर अपने हृदयकी चालू स्थिति टिकाये रखता था। अब मैं धैर्यसे लंबा प्रयोग शुरू करने लगा। अुपवास करनेका विचार छोड़ दिया। आरंभमें दिनमें दो बार टिकिया लेता था — अेक सुबह और अेक शामको। अब सुबहकी टिकिया लेना बन्द करके नियमित मूत्रपान करने लगा और शामको टिकिया खाने लगा। लगातार दो मासके अनुभवसे पता चला कि मेरे हृदयकी स्थिति स्थिर रही अर्थात् अुसकी गति नियमित होती रही। अेक टिकियाका स्थान पेशाब ने लिया, फिर भी हृदयकी कार्यशक्तिमें कुछ अंतर नहीं आया। अिस तरह दो मासके अनुभवसे मैंने शामकी टिकिया भी छोड़ दी और पेशाब पीने लगा, जिसे अब चार मास हो गये हैं। फिर भी मेरा शरीर अच्छा रहा है। वैद्य या डाक्टरकी कोअी भी दवा नहीं लेता हूं, फिर भी मेरे हृदय की स्थिति ठीक चल रही है। डिजॉक्सिन हृदयको चालू स्थितिमें रखनेके लिये अेक प्रभावशाली दवा है, अैसा डाक्टर लोग मानते हैं। अुसे बिलकुल छोड़कर मैंने मूत्रपान किया, जिससे मेरा हृदय पहलेकी अपेक्षा अच्छा काम दे रहा है, अैसा मैं महसूस कर रहा हूं। अिस चौमासेमें तीन मास खूब वर्षा और सरदी रही, जिससे भले-चंगे व्यक्ति भी सरदीका शिकार हो गये, परन्तु मुझे सरदी ने छुआ तक नहीं। अितना ही नहीं कि मेरे हृदयकी शक्ति बनी रही, बल्कि पिछले तीन बरसोंकी अपेक्षा मेरेमें अधिक स्फूर्ति अेवं शक्ति है, अिसे केवल मैं ही महसूस नहीं करता हूं, किन्तु सभी महसूस करते हैं। फिर भी मैं यह नहीं कहता हूं कि मेरा प्रयोग पूरा हो गया है। अभी तक मेरे हृदयरोगका अुन्मूलन नहीं हुआ है।

परन्तु पिछले चार छः मासके अनुभवसे मेरा यह विश्वास बढ़ा है कि इस प्रयोगसे मेरा हृदयरोग नष्ट हो जायगा, फिर भी इतना तो दृढतापूर्वक कह सकता हूं कि मेरे रोगकी वर्तमान स्थिति मेरी प्रवृत्तिमें बाधा नहीं डालती है। धीरे धीरे मैं अपनी शारीरिक स्थितिकी रक्षा करते हुअे अपनी प्रवृत्तिको बढ़ाता जा रहा हूं।

अितनी स्पष्टता अिसी लिये की है कि जिसे हृदयरोग हो अर्थात् जिसका हृदय कमज़ोर हो अुसे मूत्रोपचारमें अुपवास नहीं करना चाहिये अर्थात् शारीरिक शक्तिको सुरक्षित रखकर यह प्रयोग करना चाहिये। दूसरी बात यह सिद्ध हुअी कि डिजिटेलिस या डिजॉक्सिनका काम मूत्रने भी अुतनी ही सफलता से किया। जिसके बारेमें डाक्टरोंकी यह मान्यता है कि यह दवा हृदयकी कमज़ोरीको बढ़ने नहीं देती। यह शुद्ध वनस्पति द्रव्य है और अिसका अुपयोग सर्वत्र होता है। मुझे भी यह अनुभव हुआ है कि हृदयरोगमें यह खूब आराम पहुँचाती है। अब मूत्रके विशेष प्रयोगसे कैसी सिद्धि प्राप्त होती है, अिसका पता तो भविष्यमें चलेगा।

२. हृदयकी कमज़ोरी

श्री प्राणलाल नथुभाअी मोदी बम्बअीमें रहते हैं। अुनकी आयु ३६ बरस की है। 'संसार' मासिक में मूत्रचिकित्साके बारेमें मेरे अनुभव वाला लेख पढ़कर अुन्होंने मुझे पत्र लिखा। जिसमें वे लिखते हैं :—

"आपका लेख पढ़कर मुझे बहुत आनन्द हुआ; क्योंकि मुझे आशा हुअी कि अब मेरे दुःखका अन्त आ जायगा। आपने रोगके जो चिह्न बतायें हैं वे लगभग सभी प्रकारसे मुझे लागू होते हैं और शुरूमें आपको डाक्टरने जो दवा बतायी थी वैसी दवा मुझे भी दी गयी थी। मुझ पर अिस रोगका पहला आक्रमण सन् १९५५ में हुआ था। अब दूसरे आक्रमणके कारण सवा महीनेंसे चारपाअी पर पड़ा

हूं। अिस वार तो अीश्वरने मुझे वचाया है; क्योंकि ता० २–६–'५८ को मैं सख्त वीमार हो गया था। डाक्टरके कथनके अनुसार रोगका नाम Mitral Heart Disease Rheumatic Aeteology Congestive Cardiac Failure है। दूसरे अेक डाक्टरने अिसका नाम Rheumatic Mitral Stenosis with Congestive Cardiac Failure कहा है, जवकि आपको हृदयका दम वताया है। आजकल अिस रोगके लिये मुझे Digoxin Diomox, T. C. F. Vitamin B Complex, Forte Capsules तथा Mersalyl, B. D. H. (पेशावके अिंजेक्शन), Uni B 12 E Folic, Uni B Complex के अिंजेक्शन लगाये जाते हैं। डाक्टरका कहना है कि हृदयके अन्दरका वाल्व संकुचित हो गया है। वचपनमें संधिवात हुआ होगा जिससे ऐसा हुआ है और फेफड़ोंमें पानी भरता है।

"मैं ज़रा भी तेज़ीसे चलता हूं या काम करता हूं तो सांस चढ़ जाती है। दायां पहलू भारी रहता है। कंधेमें टीस अुठती रहती है और दर्द रहता है। शरीर कमज़ोर और फीका हो गया है। अुमर ३६ वरस की है।

"यह सव अिसलिये लिखा है कि मुझे भी आप जैसा प्रयोग करना है। परन्तु अपने डाक्टरको आपका लेख पढ़वाया और सलाह पूछी तो अुन्होंने साफ़ अिनकार कर दिया। वे भी अिस रोगको असाध्य वताते हैं; अिसलिये मैं अिस वीमारीसे तंग आ गया हूं।

"अन्तमें अितना ही लिखना है कि आपके रोगके जो चिह्न थे वैसे ही चिह्न मेरे रोगके हैं। दवा भी मिलती-जुलती है। केवल रोगके नाममें ज़रा फ़र्क़ है। मेरे डाक्टर प्रयोग करनेका निषेध करते हैं। अिस लिये आपकी किसी प्रकारकी भी ज़िम्मेदारी विना मैं यह प्रयोग कर सकता हूं कि नहीं, अिस वारेमें आप मुझे लिखेंगे तो आपका वड़ा ऋणी हूंगा।"

अुनके पत्रके आधार पर मैंने अपने ज्ञानके अनुसार अुन्हें सारी बातें लिख दीं। अुन्होंने प्रयोगका श्रीगणेश कर दिया। बीचमें पत्र लिखकर अुन्होंने जो बातें मुझसे पूछीं। मुझे जो मालूम था अुन्हें वह लिख दिया। दिन-दिन अुन्हें फ़ायदा मालूम हुआ। पहले मूत्रमालिश शुरू की। फिर पेशाव पीने लगे। जिससे अुन्हें दस्त हुअे। पेशाव खुलकर आने लगा। अिसलिये अुपवास भी शुरू किये। आखिर अुन्होंने अगस्तमें अपना हाल अिस प्रकार मुझे लिख भेजा — "मुझे बहुत आराम हो गया है। शरीरमें स्फूर्ति आयी है और शक्ति बढ़ी है। रोज़ाना ऑफ़िस जाता हूं। सभी परिचित मुझे कहते हैं कि आपका शरीर खूब अच्छा हुआ है। फिर भी ऑफ़िस जाते हुअे ढाल या सीढी चढ़नी होती है। जब तेज़ीसे चढ़ता हूं तो थोड़ा थोड़ा हांफता हूं।" मैंने अुन्हें शिवाम्बु का नित्य सेवन करनेके लिये अनुरोधपूर्वक लिखा और विनती की कि आप हाल ही में बीमारीसे अुठे हैं और आपका हृदय भी अभी नीरोग हुआ है। अिसलिये अुसकी कड़ी कसौटी न करें। आपको हृदयरोगसे मुक्ति पानेके लिये मेरा हार्दिक अभिनंदन। परन्तु मैं अभी वृद्धावस्था के कारण आप जैसे अुपवास करके हृदय-रोगका अुन्मूलन नहीं कर सका हूं

अुपर्युक्त विवरण पढ़नेसे पाठक महाशय अूब जायेंगे, अैसी आशंका होने पर भी मैंने अुसे ज़रा विस्तार से दिया है। फिर भी श्री प्राणलाल मोदीकी बहुतसी बातोंको मैंने छोड़ दिया है। अिस चिकित्सामें जिन नियमोंका कड़ाअीसे पालन करना चाहिये, मेरी कड़ी सूचनाओंके होते हुअे भी अुनका पूरा पालन अभी तक किसीने नहीं किया है। साव-धानता अेवं निष्ठासे यह प्रयोग किया जाय तो थोड़े ही समयमें रोग सर्वथा नष्ट हो जाय, अैसी प्रतीति मुझे अनेकोंके अनुभवसे हुअी है। पिछली दो पीढ़ियोंसे हमें जैसे-तैसे ज़िन्दगी गुज़ारनेकी आदत पड़ गयी है और यही खराब आदत रोगकी परिचर्या करनेमें भी है। आजकी चिकित्सा-पद्धतिमें डाक्टर या वैद्य अपने रोगीको प्रजातंत्रके सिद्धान्तोंके

अनुसार पूरी-पूरी स्वतंत्रता अर्थात् स्वच्छन्द आचरण की आज़ादी दे देते हैं, जिससे हमारी संयमशक्ति घट गयी है। अिस चिकित्साका अुपयोग जिन जिन लोगोंने किया है, प्रायः अुन सबने मुझसे यही कहा कि आपके मना करने पर भी हम बीड़ी पीते रहे, शिखंड खाते रहे और मालिश या अुपवासमें भी अपनी सुविधासे आचरण करते रहे। फिर भी हमें पूरा लाभ हुआ है। जब मुझे अिस बातका पता चला तब मुझे अपनी ज़िम्मेदारीका खयाल आया। साथ ही मूल द्रव्य अर्थात् मूत्र और अुसकी अमोघ शक्ति भी समझ में आयी। तथा गीतामें कही हुअी श्रीकृष्ण भगवान्‌की बातका स्मरण हो आया—'थोड़ा धर्म अर्थात् कर्तव्य-पालन भी हमें बड़े भयसे बचाता है', तो फिर पूरे कर्तव्यपालनसे हमारा कल्याण क्यों न हो?

३. खूनका अधिक दबाव (हाअी ब्लड-प्रेशर)

सन् १९५८ के मअी मासके आखिरमें अहमदाबादके अेक प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री अनुभाअी शाह मेरे पास आये। मैं अुन्हें जानता था। अुन्होंने मुझसे अपने दुःखकी बात की। अुनकी पत्नी खूनके अधिक दबावसे पीडित थी। वे अुसकी पीडाका वर्णन करने लगे। अुसकी अुमर ४५ बरस की थी, परन्तु खून का दबाव २७० था। वह बिचारी भला कैसे जी सके? दिमाग़ चकराता रहे। सिरमें टीस अुठती रहे। छः महीनेसे ज़रा भी नींद नहीं ले सकी। सारी रात चीख़-पुकार और हाय-हाय करती रहे। खाया भी न जाय। मैंने अुनसे पूछा, "डाक्टरकी दवा तो की होगी न?" अुन्होंने आह खींचते हुअे कहा, "अरे, क्या बात करूं! अुसे मामूली सर्दी हुअी थी, जिसके कारण कभी बुखार भी आ जाता। डाक्टर ने अुस सर्दीको मिटानेके लिये खूब असर करनेवाले अिंजेक्शन दिये। स्पेक्टो-माअीसीनका कोर्स पूरा किया। दूसरे अिंजेक्शन भी लगाये; परन्तु सर्दी

मिटी नहीं। दिन-प्रतिदिन अुसका दुःख बढ़ता गया। क्या दुःख है, यही हमारीमें समझमें नहीं आया। अिसलिये अेक अच्छे डाक्टरके पास अुसे ले गये। अुन्होंने जांचकी और खूनका दबाव देखते ही दांतों तले अुंगली दबा ली। अुन्होंने अुस डाक्टरको डाँटते हुअे कहा कि आप सर्दीके लिये अिंजेक्शन तो लगाते रहे; परन्तु खूनके दबावको किसी दिन भी नहीं देखा! यह तो ग़ज़ब हो गया है! यह स्त्री कैसे ज़िन्दा है, यही समझमें नहीं आता। अुसके खूनका दबाव अब २७० है। अैसे खूनके दबाव वाला रोगी जी सके, यही अेक आश्चर्यकी बात है। खूनका दबाव कम हो तो समझमें आ सकता है। अब जुकाम और बुख़ार के अिलाज को छोड़कर ख़ूनके दबावको कम करनेकी चिकित्सा होने लगी।" अपनी बातको आगे बढ़ाते हुअे श्री अनुभाअीने दर्दभरे दिलसे वर्णन किया, "ख़ूनके दबावको कम करनेके लिये बेहद कोशिश की गयी। आज तक कमसेकम अेक हज़ार सूअियां अुसके शरीरमें भोंकी गयी होंगी; परन्तु पल्ले कुछ नहीं पड़ा। अिसलिये निष्णात डाक्टरोंने अैसा निश्चय किया कि ऑपरेशन करके शरीरके मध्य भागके ज्ञानतंतु निकाल दिये जायें तो भी खूनके दबाव के कम होनेकी आशा ४० प्रतिशत ही रखी जा सकती है और ६० प्रतिशतकी आशा वे नहीं दे सकते। आख़िर वह भी मंज़ूर किया। वाडीलाल अस्पतालमें ऑपरेशन हुआ। छः घंटे तक ऑपरेशन चला और अेक तरफ़के ज्ञानतंतु निकाल डाले। अुस ऑपरेशनका घाव पंद्रह दिनमें ठीक हुआ। फिर दूसरी तरफ़का ऑपरेशन करके अुस तरफ़के ज्ञानतंतु निकाले डाले। ऑपरेशनका ज़ख्म तो भर गया पर ख़ूनका दबाव २४० से कम नहीं हुआ और वह भी हर रोज ख़ूनके दबावको बढ़ने न देनेवाली गोलियां दी जायें तो २४० रहता, अन्यथा २६० हो जाता। फिर भी रोगीकी कोअी और पीडा कम नहीं हुअी। सिर दर्द, चक्कर आना, अनिद्रा, भोजनकी अरुचि, चीख-पुकार और हाय-हाय, सभी पीडाअें ज्योंकी त्यों बनी रहीं।"

अुन्होंने अपनी बात आगे चलायी, "अिस लिये आखिर मैं आपके पास आया हूं। आपका मूत्रचिकित्सा संबंधी लेख पढ़कर मुझे कुछ आशा बंधी कि आपका प्रयोग ही अेक अुपाय बाक़ी रहा है और मुझे श्रद्धा है कि मूत्रप्रयोगसे अुसके ख़ूनका दबाव कम हो जायगा। मैंने अुनसे कहा कि आप जानते हैं कि न तो मैं डाक्टर या वैद्य हूं और न ही मैं अुसका पेशा करता हूँ। परन्तु श्रद्धा अेवं निष्ठा के बल पर मैंने क़ुदरती साधनको आज़माया और मुझे अुससे काफ़ी आराम हुआ। आपकी श्रद्धा हो तो आप भी अुस प्रयोगको आज़मायें। परन्तु डाक्टरोंकी दवासे अुसका रोग मिटेगा, अैसी आशा तो आपने अब छोड़ दी है न?

अुन्होंने दृढ निश्चयके साथ कहा, "जी हां, केवल मैंने ही आशा नहीं छोड़ी, किन्तु डाक्टरोंने भी आशा छोड़ दी है। अुन्होंने कह दिया है कि केस आशाजनक नहीं है और अिलाज अुनके बसकी बात नहीं है। अिसलिये मैं आपके पास आया हूं।"

मैंने अुनसे पूछा, "अर्थात् आप अैसा कहना चाहते हैं कि आप अपनी पत्नीको मरी हुअी समझते हैं?" अुन्होंने निराशासे जवाब दिया, "मैं तो अुसे मरी हुअी ही समझता हूं; व्यर्थ दुःख पा रही है, अुसकी अति पीडाके कारण हमारे घरमें कोअी सो नहीं सकता और सभी दुःखी हो रहे हैं।"

अुनकी दृढता देखकर मैंने अुनसे कहा, "अच्छा तो, डाक्टर पुष्पेन्द्र भट्ट अिस प्रयोगमें दिलचस्पी रखते हैं, आप अुनसे मिलकर प्रयोगविधि जान लें। आपको अुन्हें कुछ फ़ीस नहीं देनी है। वे जो प्रयोगविधि समझायें अुसके अनुसार आप करें। यह खास याद रखें कि प्रयोगके दौरानमें किसी भी प्रकारकी दूसरी दवा अुसे न दी जाय।"

अुन्होंने फिर पूछा, "आप जिस ढंगसे मालिश करनेको कहते हैं अुस ढंगसे मालिश की जाय तो अुस दौरानमें अुसे डाक्टरकी गोलियां न दूं तो खून का दबाव बढ़ेगा तो नहीं न?"

मैंने जवाब दिया कि दो तीन दिन मालिश करनेके बाद गोलियां देना बन्द करें और परिणाम से मुझे सूचित करें।

मेरी सूचनाके अनुसार अुन्होंने अपने डाक्टरसे कहा कि वे डा० पुष्पेन्द्र भट्टके पास जाकर प्रयोगविधि पूछ आयें। वे अुनसे रूबरू तो मिले नहीं, पर फ़ोनसे अुन्हें पूछा और अनुभाअी से कहा कि डा० पुष्पेन्द्र भट्टने पाओंके तलवों पर दिनमें दो बार पेशाबसे मालिश करनेको कहा है। सच बात तो यह थी कि डा० पुष्पेन्द्र भट्टने दिनमें दो घंटे सारे शरीर पर मालिश करनेकी सूचना अुनको दी थी। परन्तु अुन्होंने ध्यानसे सुना न हो या चाहे कोअी अन्य कारण हो, अनुभाअी से यही कहा कि पाओंके तलवों पर ही मालिश की जाय। फिर भी मूल वस्तु में अैसी विलक्षण शक्ति है कि अुसने फ़ौरन् अपना चमत्कार दिखा दिया। केवल पाओंके तलवों पर ही तीन दिन मालिश करनेके बाद वे गोलियां बंद कर दीं, फिर भी अुस स्त्रीके खून का दबाव बढ़ा नहीं, जिसकी प्रतीति होते ही अनुभाअी खुश हुअे और मुझे फ़ोनपर बताया कि अुस डाक्टरकी सूचनाके अनुसार पाओंके तलवों पर तीन दिन मूत्रमालिश करनेके बाद वे गोलियां देनी बन्द कर दीं, तो भी खून का दबाव बढ़ा नहीं, किन्तु स्थिर रहा है। अिसलिये अब मेरी श्रद्धा बढ़ी है कि अिस अुपचारसे अुसका रोग मिटेगा ही। आप बार बार मेरा मार्गदर्शन करते रहें।

अुपर्युक्त शुभ समाचारसे मुझे आनन्द हुआ। आज कल जिधर देखो अुधर खूनके दबावकी शिकायत सुनायी पड़ती है; फिर भी खूनके बहुत ज्यादा दबाव की अैसी मिसाल तो मुश्किलसे मिलेगी। मुझे लगा कि अैसा गंभीर रोग यदि ठीक हो जाय तो मूत्रचिकित्साके प्रति जनताका ध्यान अवश्य आकर्षित हो। अिसलिये मैंने अिस प्रयोगके अेक अनुभवी युवक श्री रणजीतभाअी परीख, जो केवल योगकी दृष्टिसे यह प्रयोग पिछले पाँच बरसोंसे करने लगे थे, अुन्हें अुस रोगी स्त्री की देख-भालका काम सौंपा। अुस स्त्रीको पेशाब भी बहुत कम आता था।

अुपवासमें पेशावका परिमाण कम हो तो बीमारको अुसके पौष्टिक क्षार कम मिलनेसे कमज़ोरी बढ़ती है। यदि ज़्यादा पेशाब पीनेमें आये तो शरीरको अधिक पोषण मिले और जल्दी आराम हो। अिसलिये अनुभाअी खुद दूधपर रहकर अपना पेशाव अपनी पत्नीकी मालिशके लिये अुपयोगमें लाने लगे और अुसका पेशाव अुसे पिलाने लगे। यूं तो वह स्त्री कुछ खा नहीं सकती थी। दूध तक भी पेटमें टिकता न था। परन्तु सारे शरीर पर पहले दस दिन मूत्रमालिश करनेका परिणाम यह आया कि खूनका दवाव २४० से २२५ हुआ। छः मासकी सतत अनिद्राके बाद दो चार घंटे अुसे नींद आने लगी और दूध पचने लगा। दूसरे दस दिनमें शरीरमें किसी प्रकारकी पीडा न रही और खूनका दवाव २०० तक आ गया। अब तो वह खूब आराम महसूस करने लगी। वह बैठ सकती थी, तकिये के सहारे बैठी रह सकती थी। दस्त के द्वारा खूब मल निकलने लगा और रात अेवं दिनमें अच्छी नींद आने लगी। दु:खदर्दकी चीख-पुकार तो बन्द ही हो गयी। यह सब होते हुअे भी अेक चिंता रहने लगी। हाथपाओंकी सूजन पर कुछ असर न हुआ। वह ज़रा भी न अुतरी। अनुभाअीका अैसा कहना था कि विविध प्रकारके अिंजेक्शनोंका क्या-क्या असर न हुआ हो, यह किसे मालूम? आयुर्वेदके विशारदोंका अैसा भी मानना था कि बाहरी विषैले द्रव्योंके जमावके कारण कठोदर का रोग हो गया हो। दिल और गुरदे भी नियमित काम नहीं करते थे। अिसलिये खूनका दवाव तो कम होने लगा परन्तु हाथपाओं की सूजन नहीं अुतरी। फिर भी कोशिश तो जारी रही। छः हफ़्तोंमें खून का दवाव १५० हो गया। ४५ बरसकी आयुके हिसावसे यह अधिक तो नहीं है। अिसलिये अब सूजनकी पीडा ही मुख्य बन गयी। अुपवासकी अवधि तो बढ़ नहीं सकती थी। अिसलिये अुसे थोड़ा-थोड़ा मूंगका पानी और दूध दिया जाने लगा। मालिश तो चलती ही थी। परन्तु अुसे पानी बिलकुल पीना नहीं था; क्योंकि पानीको तो निकालना था। प्रयोग खूब लंबा हो गया

था, बीमार कहाँ तक सबर रखता ? जो व्यक्ति अुसकी देखभाल करते थे, अुन्होंने मुझसे कहा, "काका, यह तो ग़ज़ब हो रहा है ! गुपचुप पानी आदि खूब पिया जाता है और रोगी संयम रख सके, अैसा मालूम नहीं होता। मैंने अनुभाअीसे अिस वारेमें पूछा तो अुन्होंने भी कहा, "काका, क्या करें ? मैं तो दिनभर दफ़्तरमें रहता हूँ, घरमें क्या होता है, अिसकी मुझे खबर नहीं है। मैं वार-वार चेतावनी तो देता हूँ।"

मैंने महसूस किया कि अिस तरह तो काम नहीं हो सकता, प्रत्युत वदनामी होगी। मैंने रणजीतभाअीको सूचित किया कि परिचर्या छोड़ दी जाय। खूनका दवाव २४० से १५० पर आ गया, अिसलिये हमें अपना प्रयोग संपूर्ण सफल समझना चाहिये। अुसके वाद वह स्त्री किसी वैद्यसे सवा महीना अिलाज कराती रही और दुर्भाग्यसे मौतका शिकार हो गयी। यह प्रयोग मेरी दृष्टिसे तो सफल माना जा सकता। मेरा अैसा दावा नहीं है कि मूत्रमें मौतको रोकनेकी भी शक्ति है। निष्णात डाक्टरोंकी यह मान्यता थी कि केवल खूनका दवाव कम हो जाय अर्थात् १७०–१७५ तक आ जाय तो भी रोगी स्वस्थ हो जाय। और अिसीलिये वारह घंटे के ऑपरेशनसे ज्ञानतंतुओंको निकाल भी डाला, फिर भी खूनका दवाव कम न हुआ। जिसके कारण डाक्टरोंने भी आशा छोड़ दी थी। खूनका दवाव २४० से १५० तक आ गया और रोगीका सव दुःख मिट गया, इसे क्या मूत्रकी जैसी-तैसी शक्ति समझा जाय ? और अिसके अतिरिक्त वह शांति और आरामसे चल वसी। अिस प्रयोगको पूरा यश न दिलानेके लिये अथवा अुस रोगीकी मृत्युके अपयशसे अिस प्रयोगको वचानेके लिये अीश्वरने मुझे सुझाया कि अुस रोगीकी परिचर्या छुड़वा दी जाय, क्योंकि मेरा ममत्व प्रयोगमें न था, किन्तु रोगीके स्वस्थ होनेमें था। अिस केसको अच्छी तरह समझानेके लिये मैंने अितने विस्तारसे लिखा है। अैसे केसोंके आधार पर हमें मूत्रचिकित्साकी वैज्ञानिक

पद्धतिका निर्माण करना है। अैसे केस भविष्यमें मूत्रचिकित्साके किसी भी अुत्साही गवेषकका मार्गदर्शन कर सकते हैं।

४. खूनका कम दबाव (लो ब्लड-प्रॅशर)

नडियादके श्री देवदास पंड्या (नडियाद कलामंदिर वाले) के खूनका दवाव कम था, जिससे अुन्हें कमज़ोरी और बेचैनी महसूस होती थी। अुनके अेक रिश्तेदार वैद्य हैं जो पंड्याजीसे मूत्रप्रयोग करवाना चाहते थे। अिसलिये अुन्होंने हिकमतसे काम लिया। वे रोज़ाना जांचके बहाने पंड्याजीका पेशाव मंगवाते और गोमूत्रके नामसे वापस भेजकर पीनेके लिये सूचित कर देते। पंड्याजी अुसे गोमूत्र समझकर पी जाते थे। परिणामस्वरूप अुनके खूनका दवाव ११० से बढ़कर १२२ हो गया और कमज़ोरी अेवं बेचैनी भी दूर हो गयी।

अिस तरह खूनके दवावके बढ़नेका जब मुझे पता चला तब मैंने अुन्हें पत्र लिखा कि आपके वैद्यने आपका पेशाब लेकर बदले में अुतना ही गोमूत्र पिलाया और आपको आराम हुआ, अिसमें मुझे कुछ रहस्य मालूम होता है। आप ज़रा जाँच-पड़ताल करके मुझे सूचित करें। मैं तो समझता हूं कि आपको अपना मूत्र पीनेसे आराम हुआ है। आप वस्तुस्थितिका पता लगाकर पता देवें।

पंड्याजी ने यह अुत्तर लिखा—"आपका समझना बिलकुल ठीक है। मुझे अपना मूत्र पीनेको कहा होता तो मैं नहीं पीता। अिस-लिये गोमूत्र कहकर पिलाया। फिर तो मेरी घृणा भी दूर हो गयी। अब मैं अनेक प्रवृत्तियोंमें सहयोग देता हूं, पर थकता नहीं हूँ।"

२

क्षय-रोग

१–क. फेफड़ोंका क्षय

सन् १९६० के मार्च मासकी १२, १३ तारीखको हरिजन आश्रम अहमदाबादमें, आयुर्वेदिक अनुसंधान विभाग, जामनगर (सौराष्ट्र) के डायरेक्टर डाक्टर प्राणजीवनदास मेहता, अॅम० डी०, अॅम० अॅस० की अध्यक्षतामें मानवमूत्र-विचारविनिमय सभा हुअी थी, जिसमें कअी डाक्टर और वैद्य भी सम्मिलित हुअे थे। अुसमें लगभग चालीस व्यक्तियोंने मूत्रप्रयोगके बारेमें अपने विचार तथा अनुभव सुनाये थे। श्री रामभाअी हीमाभाअी पटेल, जो नवागाम (अहमदाबाद) के किसान हैं, अुन्होंने मूत्रप्रयोग द्वारा अपने फेफड़ोंके क्षयरोगसे मुक्ति पानेका हाल सुनाया था, जिसे सुनकर अध्यक्ष महोदय भी आश्चर्यचकित हो गये। अुन्हीं की सूचनासे रामभाअी हीमाभाअी पटेलने अपनी क्षयरोगमुक्ति का लिखित विवरण दो दिन बाद भेज दिया, जिसे मैं शब्दशः प्रस्तुत कर रहा हूं:—

"मैं पिछले चार बरससे फेफड़ोंके टी० बी० से पीडित था। पहले साल खांसी और बुखार शुरू हुअे। शरीरकी हड्डियां निकल आयीं। तीन चार मास तक डाक्टर की दवा लेनेसे आराम मालूम हुआ। अैसी स्थिति सात आठ महीने तक रही। फिर अुसी माघ मासमें खांसी और बुखार ने आ घेरा। फिर तीन चार महीने तक दूसरे डाक्टरकी दवा लेने से आराम मालूम होने लगा। डाक्टर ने भी कहा कि अब आपकी बीमारी क़रीब बारह आने मिट चुकी है। परन्तु चार ही दिनोंमें फिर वही बीमारी खड़ी हो गयी, फिर तो अुसी डाक्टरने सलाह दी कि अब तो आपको ऑपरेशन करवाकर पसलियां निकलवानी पड़ेंगी।

मुझे भी लगा कि अब ऑपरेशनके सिवा और कोअी अुपाय नहीं है। अिसलिये अुसकी व्यवस्थाका प्रयत्न करने लगा।

"परन्तु अीश्वरेच्छा कुछ और ही थी। ऑपरेशन की व्यवस्थाके सिलसिलेमें मुझे अपने अेक रिश्तेदारके घर पर जाना पड़ा। अुन्हें प्राकृतिक अुपचारमें पहले से ही बहुत श्रद्धा थी और रावजीकाकाके परिचयसे वे मूत्रचिकित्सा में भी श्रद्धा रखने लगे। अुन्होंने मुझे ऑपरेशनसे पहले मूत्रप्रयोग करनेके लिये प्रोत्साहित किया और मैंने यह प्रयोग शुरू कर दिया।

"चैत्र वद ७ के शुभदिन मैंने मूत्रकी मालिशका श्रीगणेश किया। अेक सप्ताह बाद मूत्र पीना भी शुरू किया। लगभग पन्द्रह दिन प्रयोग करनेके बाद बुजुर्ग रावजीकाकासे मिला और अपने प्रयोगका हाल सुनाया। अुन्होंने मेरा हाल खूब दिलचस्पीसे सुनकर कुछ सूचनाअें दीं और अिस बात पर खास ज़ोर देकर कहा कि प्रयोग पुस्तकमें बतायी हुअी विधिके अनुसार ही करना चाहिये ताकि प्रयोग व्यर्थ ही बदनाम न हो। मुझे अुनका कहना अुचित लगा और विधिपूर्वक मूत्रप्रयोग करनेका निश्चय किया। पूरे तीन मास प्रयोग करनेके बाद मेरी हालत बहुत सुधर गयी। आज प्रयोगको ग्यारह महीने हो रहे हैं, परन्तु अिस अर्सेमें न तो मुझे डाक्टरके पास जाना पड़ा और न ही कोअी दवाअी लेनी पड़ी। पहले की अपेक्षा आहार के परिमाणमें खासी वृद्धि हुअी है और वह पच जाता है। शौच नियमित होता है। खेतमें काम करते हुअे दो तीन बार मैं भीग गया था, फिर भी मेरे शरीर पर अुसका कोअी खास बुरा असर मालूम नहीं हुआ। किसी समय थोड़ी खांसी शुरू हो जाती है, पर वह अिसी प्रयोगसे तीन चार दिनमें मिट जाती है। चौमासेमें खेतीके कारण मूत्रमालिश छोड़ देनी पड़ी और बरसातमें कअी बार देर तक भीगते रहना पड़ा, तो भी केवल मूत्रप्रयोगके प्रतापसे मेरी तबीअत अच्छी रही है। पिछले ग्यारह महीनेसे प्रयोग चल रहा है। अिस दौरानमें मुझे दो बार सर्दी-खांसी हुअी और

दो चार दिनमें अपने आप ठीक हो गयी। न तो डाक्टर की दवा लेनी पड़ी और न ही बिस्तरे पर लेटे रहनेकी ज़रूरत पड़ी। यह प्रयोग मुझे खूब अुत्साह वढ़ानेवाला लगता है और निःसंदेह वहुत प्रभावशाली है। साथ ही साथ, जिन भाअियोंने मूत्रप्रयोगसे लाभ अुठाकर अुसकी रोग-निवारण अेवं आरोग्य-प्रदानकी क्षमता को लोकहितकी दृष्टिसे जनताके समक्ष प्रस्तुत किया, अुन्होंने और विशेषतः वयोवृद्ध रावजीकाकाने मूत्रोपचार की घृणित अेवं विस्मृत स्थिति को दूर करनेमें जो अमूल्य सहायता की है, अुसके लिये अुन सबको मनुष्यमात्र का धन्यवाद प्राप्त होगा। अुन सवको मेरा अभिनन्दन और वन्दन।"

१ – ख. फेफड़ोंका क्षय

डा० गुणनिधिभट्ट अहमदावाद के अेक होमियोपैथ हैं। अुनका दवाखाना गांधीमार्ग पर फ़र्नान्डीज़ ब्रिजके पास था। अुन्होंने असाध्य समझे जानेवाले क्षयके दो रोगियोंको मूत्रोपचारसे रोगमुक्त किया है। जिसका लिखित विवरण (पत्र रूपमें) अुन्होंने मुझे ता० १३–११–'५८ को हाथों हाथ दिया। विवरण पढ़नेसे मालूम होता है कि रोगियोंका अुपचार शास्त्रीय ढंगसे बड़ी सावधानताके साथ किया गया है। आशा है कि पाठक मित्रोंके लिये भी वह रसप्रद होगा।

"पहला केस—श्री घ० न० मेहता, अुमर २५ वरस, सांकड़ी शेरी, अहमदाबाद। वह कुंवारा युवक है। मैं जव अुसे देखने गया तब अुसने लगभग चारपाअी पकड़ रखी थी। क़रीब अेक दर्जन डाक्टर क्षयका रोगी समझकर अुस जवानका अिलाज कर चुके थे। और अुन्होंने अिस केसको असाध्य-सा समझ लिया था।

"अुस बीमारको खूनकी अुलटियां होती थीं। और कभी-कभी दस्त लगते थे। खांसीके साथ-साथ अुसे १०० से १०१ दर्जेका बुख़ार रहा करता था। किसी भी प्रकारका आहार अनुकूल न आता था

और खाया हुआ पचता भी न था। शरीर हड्डियोंका ढांचा बन गया था। थोड़ासा चलने-फिरनेसे ही सांस चढ़ जाती थी।

"अैसी स्थितिमें शुरूमें मैंने लगभग तीन-चार महीने होमियोपैथिक अिलाज किया, जिससे अुसे काफ़ी आराम हुआ। फिर दो महीने बाद रोगीने मुझे बुलाया। देखा तो मालूम हुआ कि बीमारी तो क़ायम ही है। मुझे लगा कि यद्यपि होमियोपैथिक अिलाजसे ठीक होनेमें अेक भी पैसा खर्च नहीं होगा, फिर भी अिसमें बहुत अधिक समय लग जायगा और रोगीकी गंभीर स्थितिको देखते हुअे किसी शीघ्र अेवं अचूक अुपायको अपनानेकी ज़रूरत मुझे महसूस हुअी। अिसलिये मैंने अुसे समझाकर सुबह अेक औंस अपना पेशाब पीनेको कहा। यह पेशाब सुबह क़रीब नौ बजे लिया जाय तो अुसकी गंध और स्वादसे कोअी विशेष कठिनाअी नहीं आयेगी। साथ ही अुसे यह सूचित किया गया कि सोनेसे पहले रोज़ाना रातको मूत्रमालिश कर लेना और सुबह अुठकर गरम पानीसे नहा लेना। अिस प्रकार अुपचार करनेसे पहले दिनसे ही दस्त, बुख़ार, पाचनशक्ति, ख़ूनकी क़ै तथा कमज़ोरीमें धीरे-धीरे किन्तु सतत अेक-सरीखा फ़ायदा होने लगा। पहले बहुत दस्त आनेसे रोगीका वज़न ८० पौंड तक घट गया था, जो दो महीनेके अुपचारसे १०० पौंड हो गया। जो रोगी पहले अितना अशक्त था कि घरमें भी बड़ी मुश्किलसे चल-फिर सकता था, वह अब तीन मासकी मूत्रचिकित्सासे अपने घरसे अेक मील दूर कामनाथ महादेव तक बिना रुके जा-आ सकता था। आकृति, स्फूर्ति, रूप, रंग, स्वभाव आदि सबमें ग़ज़बका परिवर्तन अेवं सुधार हुआ। अब कोअी भी अुसे देखकर सहसा यों नहीं कह सकता था कि वह खतरनाक बीमारी भोग चुका होगा। पहलेसे ही मैंने अुसे सुपच, सादा और पथ्य आहार लेनेकी अिजाज़त दे दी थी; क्योंकि अुस रोगीको अुपवास करानेमें मुझे बड़ा खतरा मालूम होता था।

"रोगीको केवल अेक-अेक औंस पेशाब ही दिनमें तीन वार पिलाया जाता था और पेशाबसे अच्छी तरह मालिश करनेका तो मेरा सदा आग्रह रहता ही था; क्योंकि मूत्रचिकित्सामें पीनेकी अपेक्षा अच्छी तरह विधिपूर्वक मालिश करना मुझे विशेष महत्त्वपूर्ण लगा है। मेरी मान्यताके अनुसार चमड़ी शरीरके सभी अवयवोंका ज़रूरतसे ज्यादा काम खुद संभाल लेती है। यह शरीरका कचरा निकालकर अुसकी सफ़ाअी करती है और अुसको पोषण देती है, अिस तरह यह दोहरा काम करती है। अिन दो कार्योंके सिवा यह दूसरे अनेक काम भी करती है; अिसलिये पेशाबकी मालिशसे अिसके सभी कामोंमें मदद मिलती है और मालिशसे शरीरके सभी अवयवोंके पोषणके साथ-साथ रक्षणका निर्धारित लाभ भी चमड़ीको मिलता है। मालिश चमड़ीके किसी भी रोगको दूर करके अुसे अत्यन्त तेजस्वी अेवं स्वस्थ वनाती है।"

२. हड्डीका क्षय

"दूसरा केस — कुमारी क० र० शाह, अुमर १७ बरस, माणेक चौक, अहमदाबाद। यह लड़की अितनी बीमार थी कि चारपाअीसे अुठ नहीं सकती थी और करवट वदल नहीं सकती थी। चायका अेक कप भी पीनेसे अिनकार करती थी। अिसकी बाअीं जांघ पर बड़े अमरूद-सा अेक फोड़ा पक गया था। दूसरे डाक्टरोंने अिस केसको मेरे पास भेज दिया था। मैंने होमियोपैथिक दवा देकर अुस फोड़ेको अेक ही दिनमें फोड़ डाला था, जिसमें से आध सेर मवाद निकला। अितनी ज्यादा पीव निकल जानेसे अनेक दिनोंकी पीडा अेवं अनिद्राका दुःख भोगनेवाली लड़की अुस दिन आरामसे सोयी। मैंने कुछ दिन तक होमियोपैथिक अिलाज किया; परन्तु रोगीको यथेष्ट आराम नहीं हुआ। बुखार, खांसी और कमज़ोरी आदिमें कोअी ख़ास फ़र्क़ नहीं आया और कितने ही दिनों तक पीव निकलती रही। अैसी हालत थी कि यह शायद ही

अेक हफ़्ता जी सके। अिलाजके लिये अब अेक भी पैसा खर्च कर सकनेकी अिसकी स्थिति भी न थी। अिसलिये मुझे मूत्रचिकित्साका आश्रय लेना पड़ा।

"दिनमें तीन बार रोगीको अपना पेशाब अेक-अेक औंस पिलाया जाता था। सादा, सुपच अेवं पथ्य आहार लेनेकी अिसे अिजाज़त दे रखी थी। फोड़े पर मालिश नहीं हो सकती थी, अिसलिये रोगीने कम्पाअुंडरसे फोड़े पर पेशाबकी पट्टी रखवानी शुरू कर दी। अिस अुपचारसे तीसरे दिन पीप बंद हो गयी। बीमार ने कुछ खानेकी रुचि प्रगट की। छठे दिन अिस लड़की ने दो बार खाना मांगना शुरू किया और अुठने-बैठने लगी। नवें दिन तो अिसने तीन बार खानेका आग्रह किया। घरके चबूतरे तक अिसने घूमना शुरू कर दिया। बारहवें दिन खाने की मांग और बढ़ी परन्तु नामंजूर करनी पड़ी। पन्द्रह दिन बाद पेशाब पिलाना बन्द किया। यह अितनी स्वस्थ हो गयी थी कि बाहर घूम-फिर सकती थी। अिस तरह पन्द्रह दिन में अुपर्युक्त सरल अुपचार से यह लड़की तन्दुरुस्त हो गयी। अिसने अपनी अुम्रके अनुसार खोये हुअे रूप, रंग, आकृति, भूख, प्यास, बुद्धि स्वभाव, वज़न, स्फूर्ति आदि फिरसे प्राप्त किये। आज छः महीने बाद यह लड़की चाहे जितना श्रम करती है, फिर भी कोअी बाधा नहीं आती।

"अिस केसको हड्डी के क्षय का केस समझता हूं। सभी लक्षण वैसे ही थे। अिस लड़कीकी मां को भी हड्डीका क्षय था। जांघकी हड्डी सड़ रही थी। दो हज़ार रुपये खर्च करने पर अेक बरस बाद वह अिस स्थितिमें आ सकी थी कि घूम-फिर सके। फिर भी वह आवश्यक श्रम नहीं कर सकती थी। यह अिलाज अुसने किसी अस्पतालमें कराया था।

"मैंने कष्टसाध्य अेवं गंभीर समझे जानेवाले दोनों केसोंका विवरण सरल ढंगसे प्रस्तुत किया है ताकि सामान्य जनता समझ सके।

मैंने अिन दोनों केसोंका अिलाज सन् १९५८ की गरमी और चौमासेके संधिकालमें किया था।

"मुझे निम्नलिखित प्रसंगोंमें मूत्रोपचारका आश्रय लेना पड़ता है। परन्तु अेक बात निश्चित है कि अभी तक किसी भी केसमें मुझे निष्फलता नहीं मिली है।

"जब कोअी बीमार नाजुक हालतमें हो, पाचनशक्ति ही नष्ट हो गयी हो, थोड़े दिन ही जीनेकी संभावना हो, शरीर हड्डियोंका ढांचा-सा हो गया हो, अिलाजके लिये अेक पाअी भी खर्च न कर सकता हो; फिर भी प्रभावशाली, अचूक, आशंकारहित अेवं जादू-सा असर दिखानेवाला अुपचार करना हो तब मैं अिस अुपचारका आश्रय लेता हूं और अीश्वरेच्छासे अिसमें निष्फलता तो मिलती ही नहीं है।

"अपना ज़हर यदि खुदको वापस दिया जाय तो विषसे विषका शमन होता है, अिस होमियोपैथिक सिद्धान्तके अनुसार मूत्र काम करता है। शरीरके अुपयोगमें न आये हुअे क़ीमती द्रव्य मूत्र द्वारा निकलते रहते हैं, जिससे शरीरको यथेष्ट पोषण नहीं मिल पाता और वह आसानीसे रोगका शिकार हो जाता है। अिसलिअे वे क़ीमती द्रव्य अुसी शरीरको वापस दिये जायें तो अुस शरीरको बहुत ही अच्छा पोषण मिलता है। जिसका परिणाम यह आता है कि प्रत्येक अवयव अपना काम नियमित अेवं व्यवस्थित करता रहता है और शरीरका स्वास्थ्य बना रहता है। अिस प्रकार पोषणका अभाव दूर करनेके बायोकैमिक सिद्धान्तके अनुसार काम होता रहनेसे मूत्रचिकित्सा बायोकैमिक और होमियोपैथिक दोनों सिद्धान्तोंके अनुसार काम करती हुअी कष्टसाध्य रोगोंको भी नष्ट करती है और असाध्य समझे जाने-वाले अनेक रोगोंको साध्य बना देती है। मुझे जो अनुभव हुआ है अुसीके आधार पर मेरी अैसी मान्यता है।

"रोगीको किसी अनुभवीकी देखरेखमें मूत्रोपचार करना चाहिये। जिससे रोगीकी रक्षा होती है और अयोग्य रूपसे तथा अनुभव-हीन लोगोंके

हाथोंसे होनेवाली हानि रुक जाती है, जिससे मूत्रचिकित्सा व्यर्थकी वदनामी अेवं निंदासे बच जाती है और वहुतसे लोग विना किसी खर्चके अपनी खोयी हुअी तंदुरुस्ती फिरसे प्राप्त कर सकते हैं।

"रोगीकी आर्थिक स्थिति, शक्ति, अशक्ति, ऋतु, खानपान, रहन-सहन, स्वभाव आदिको ध्यानमें रखते हुअे अच्छे अनुभवीकी देखरेखमें किसी भी असाध्य समझे जानेवाले रोगका अिस पद्धतिसे अुपचार किया जाय तो १०० में से ९५ रोगियोंके रोग अधिकसे अधिक दो तीन महीनेमें निःसंशय नष्ट हो जाते हैं, अैसा मेरा अनुभव है।

"कितनी ही प्राचीन पुस्तकोंमें स्वमूत्रके अुपयोगका विधान है। कितने ही अनुभवी योगी और साधक आयुर्वेदिक औषधके अनुपानके साथ अिस प्राणवान् जलका सेवन करते हैं और अुन्होंने अनेक गुना आश्चर्यकारी लाभ अुठाया है, यह ठोस सत्य है।"

३

सरदी-खांसी

१. अियोसिनोफीलिया

मैं चाहता था कि मुझे किसी आयुर्वेद-विशारद अेवं अनुभवी वैद्यके मूत्रोपचारके निजी प्रयोगका अधिकारपूर्वक लिखा हुआ विवरण प्राप्त हो जाय तो मैं अपने अिस पुरुषार्थको संपूर्ण समझूं। अिसलिअे मैंने सूरतके आयुर्वेदिक महाविद्यालयके आचार्य श्री बापालाल गरबड़दास वैद्यसे मूत्रचिकित्साके सम्वन्धमें अपने अनुभव लिख भेजनेकी विनति की। अुन्होंने समाज सेवकके नाते यह निर्णय किया कि मूत्रप्रयोगकी प्रथम कसौटी वे खुद ही वनें और जो परिणाम आये अुसे वे मुझे लिख भेजें। तदनुसार अुन्होंने अपने प्रयोगका विवरण ता० २०–११–'५८ को मुझे लिख भेजा, जिसे शब्दशः यहां प्रस्तुत करता हूं —

"अपने पर प्रयोग"

"आज तो अनेक लोगोंकी ज़बान पर 'अियोसिनोफीलिया' रोग का नाम चढ़ गया है। अिस रोगमें रक्तकण कम हो जाते हैं, श्वेत कण बढ़ जाते हैं। सर्दी, खांसी, अशक्ति, अजीर्ण आदि लक्षणोंसे अिसका पता चलता है। अनेक बार तो अैसा प्रतीत होता है कि मानो दमा न हो। खून की जांच करते ही अिस रोगका पता चल जाता है। और अिसके लिये सोमलके अिंजेक्शन या सोमल से बनी हुअी कोअी खानेकी दवा अक्सीर समझी जाती है। यह रोग मुझे हुआ था और अिसी रोगका थोड़ा-बहुत असर अभी तक मुझे तंग करता रहा है। देखते ही देखते नाकमें से पानी टपकना, अुसमें से कफ होना और गिरना, भूखका मर जाना, फीकापन आ जाना, यह सब अेकाअेक मेरे शरीर में दिखाअी देने लगते हैं। सर्दीके मौसिममें खास तौरसे अिसका भय रहता है। अिसलिये मुझे सूझा कि क्यों न मैं खुद ही मूत्रप्रयोग आज़मा देखूं। मैंने ता० १५ अक्तूबर १९५८ से यह प्रयोग शुरू किया और अिस विवरण को लिखते समय भी यह प्रयोग चालू ही है। अर्थात् अिस प्रयोगको आज अेक मास और पांच दिन होने आये हैं।

"प्रातःकाल शौचके समय जो पेशाब आता है, शुरूका थोड़ा छोड़कर बाक़ीका सारा पेशाब काचके अेक स्वच्छ गिलासमें ले लेता हूं और बाहर आकर हाथ-पैर, मुंह साफ़ करके क़रीब १२–१५ तोला पेशाब पी जाता हूं। जो थोड़ा बचता है अुसे मुंह पर मसलता हूं, क्योंकि मेरे मुखपर अमुक प्रकारकी कालिमा मुझे मालूम देती है। अिसके बाद दातुन आदि करता हूं। अिससे न तो किसी प्रकारकी डकार आती है और न ही अरुचि होती है। हमने गोमूत्रका तो दवाअियों में खूब अुपयोग किया है और अब भी अुपयोग करते हैं। गोमूत्र पीनेकी अपेक्षा मनुष्य-मूत्र पीना हज़ारगुना अच्छा है। गोमूत्रमें अमुक दुर्गन्ध होती है, ताज़ा गोमूत्र मुश्किलसे मिलता है, अनेक बार तो गड्ढेमें भरा हुआ ही हाथ लगता है। अैसे गोमूत्रकी

अपेक्षा सदा सर्वत्र सुलभ और स्वच्छ स्वमूत्र बहुत ही अच्छा है, जिसे पीनेमें तनिक भी ग्लानि अेवं अरुचि नहीं होती।

"यह प्रयोग अितना सफल हुआ कि तबसे आजतक मुझे कभी सर्दी नहीं हुअी, खांसी भी नहीं हुअी, दस्त साफ़ आता है और शरीरमें स्फूर्ति अेवं अुत्साह खूब रहता है। पहले भूख बिलकुल नहीं लगती थी वह अब कुछ ठीक लगती है। सर्दी का मौसिम मेरे लिये बहुत खराब रहता था, किन्तु अभी तक अच्छा रहा है। अितने समयके प्रयोगके बाद मुझे अपने शरीरमें अच्छी शक्ति प्रतीत होती है। सर्दी नहीं हुअी यह अेक बड़ेसे बड़ा फ़ायदा हुआ है।

"अिसलिये मैं तो सर्दी और कफके रोगीके लिये अिस प्रयोगको आज़मानेकी खास सिफ़ारिश करता हूं।

"मानवमूत्रके प्रति लोगोंके मनमें अेक प्रकारकी घृणा और भड़क पैदा हो गयी है। वे गोमूत्र पी लेंगे, पर स्वमूत्र नहीं पियेंगे। अिस घृणा-भड़कको निकालनेकी ज़रूरत है। सुश्रुतका यह कथन कि 'मानव-मूत्र विषघ्न अेवं रसायन है,' सचमुच यथार्थ है।

"आज गुजरातमें सर्दी और कफ खूब दिखायी देते हैं। धनवान् भले ही बहुमूल्य दवाअियों पर हज़ारों रुपये खर्च करें, परन्तु ग़रीब चाहें तो अिस अमूल्य औषधसे अपनी खांसी, सर्दी, दमा वातरोग आदि मिटा सकते हैं।

"मूल लेखकने तो लंघनके साथ यह प्रयोग बताया है। अजीर्ण मालूम हो, शरीर भारी लगता हो, भूख न लगती हो, तब अुपवास करना अच्छा है। अुपवास न किया जा सके तो आहार कम करके भी मूत्रपान करें। अिससे अवश्य बड़ा लाभ होगा। यथार्थ मूत्रप्रयोग तो दिनरात केवल मूत्र पीने में है। अिसलिये अत्यन्त जीर्ण अेवं असाध्य रोगों में तो अुपवासके साथ मूत्रप्रयोग करना आवश्यक है। बीमारी बहुत पुरानी न हो तो सवेरे अेक दो बार पेशाब पीकर और हल्का भोजन लेकर भी रोगी यह प्रयोग चालू रखेगा तो अुसे अवश्य लाभ

होगा। कैन्सर आदि रोगोंमें लंघन न करके, अल्प आहारके साथ वह प्रयोग किया जाय तो भी कुछ हर्ज नहीं है। अैसे भयंकर रोग पूर्ण-रूपसे न मिटें और कुछ आराम मिले तो भी यह कम फ़ायदा नहीं है।

"मुझे तो लगता है कि यह मूत्रप्रयोग सभी कर सकते हैं। अिससे किसी भी प्रकारकी हानि नहीं है, अितना विश्वास मैं दिलाता हूं। यह लिखनेवाला कोअी प्रचारक नहीं है, किन्तु अेक चिकित्सक अपनी पूरी ज़िम्मेदारी समझकर लिख रहा है।"

२. जन्मकी सर्दी-खांसी

मेरा पौत्र चि० प्रशान्त जब पैदा हुआ तब अुसका वज़न साढ़े चार पौंड था। बच्चेका औसत वज़न सात पौंड होता है। जन्मसे ही अुसे सर्दी और खांसी थी। अैसा कहा जा सकता है कि डाक्टर अंकलेश्वरियाने बहुत सावधानीसे अिंजेक्शन दे देकर अुसे ज़िन्दा रखा। अुसके बाद तीन बरस तक शीत, ग्रीष्म और वर्षा, अिन तीन ऋतुओंमें अुसकी सर्दी और खांसी चलती ही रही। दो चार हफ़्तेमें अुसे दवा और अिंजेक्शन देने पड़ते, सेंक करना पड़ता और गरम कपड़ोंमें लपेटकर रखना पड़ता। दवा और अिंजेक्शनके बजाय मूत्र पीनेसे आराम होगा ही अैसा विश्वास होने पर भी वह मूत्र पीता ही न था। "यह 'भू' कहीं पिया जाता है", अैसा कहकर मुंह फेर लेता। मैंने यह सलाह दी कि अुसकी अिच्छाके विरुद्ध अुसे मूत्र न पिलाया जाय; परन्तु मैंने अुसकी माताको यह सूचना तो दे दी कि अुसके शरीर पर मूत्रसे मालिश की जाय। अुसकी माताने नियमित मालिश शुरू कर दी। जिसका परिणाम यह आया कि पिछले चार छह माससे न तो वर्षा ऋतुमें — खूब वर्षा होने पर भी, और न ही चालू शीत ऋतुमें वह सर्दी, खांसी या बुखारका शिकार नहीं हुआ। अुसका शरीर भी अच्छा हुआ है। मैंने अुसे कहा, "देख, तेरे शरीर

पर अिंदुमती भू मसलती है, जिससे तुझे सर्दी और खांसी नहीं होती है। यदि तू भू पिये तो तुझे कोअी रोग न हो।" तब अुसने कहा, "अपने साथियोंसे कहता हूं कि भू पीनेसे चाहे जैसा रोग ठीक हो जाता है, अैसा मेरे दादाजी कहते हैं।"

मैं हंसा और पूछा, "तब तू खुद क्यों नहीं पीता?"

अुसने हंसते हंसते जवाब दिया, "यह तो दूसरेसे कहा जा सकता है, पर खुद कहीं पिया जा सकता है?"

मैंने कहा, "हां, जो बात दूसरेसे कही जाय अुसे पहले खुद तो करना ही चाहिये न? देख, मैं खुद पीता हूं और फिर तुझसे कहता हूं। देख, मेरे हाथके गिलास में क्या है?" अुसने देखा और कहा, "यह तो भू है।" "देख, अिसे मैं पी जाता हूं, अिसमें कुछ बुराअी नहीं है। जो दवा तुझे पिलायी जाती है, अुसकी अपेक्षा अिसका स्वाद अच्छा है और गंध भी अच्छी है।" अैसा कहकर अुसके देखते-देख़ते मैंने क़रीब चार औंस पेशाब पी डाला। वह तुरन्त गया। अपनी मांसे लुटिया ली, अुसमें पेशाब किया और अुसमें से अेक घूंट पी गया। अुसकी झिझक दूर हुअी। मैं मानता हूं कि अब अुसने अपने स्वास्थ्यका साधन पा लिया।

अुसके बाद अेक दो मित्रोंने मुझसे कहा कि मूत्र-मालिश लक़वे वाले बालक पर अच्छा असर करती है। बालकका लक़वा मिट जाता है। अुन्होंने अपनी जानकारी बतायी; परन्तु जहां तक अिस बारेमें मुझे पूरी तसल्ली न हो जाय तब तक मैं अुसे प्रकट करना नहीं चाहता।

४

बुख़ार

१. विषम ज्वर

अहमदाबाद में अेक स्त्रीको मामूली सरदी हुअी थी, जिससे कभी-कभी बुख़ार भी आ जाता था। फ़ॅमिली डाक्टर (जो परिवारके स्वास्थ्य और स्वच्छताकी परीक्षा समय-समय पर करता रहता है।) विषम ज्वरको दवानेवाले अिंजेक्शन अुसे लगाता ही रहा। जिसका परिणाम यह आया कि अुस बेचारी स्त्रीको लेने के देने पड़ गये अर्थात् अुसकी सरदी तो मिटी नहीं और ख़ूनका दवाव वढ़ने लगा। यह क्रम छः मास तक चला। आख़िर थककर अुसे दूसरे डाक्टरको दिखाया गया, जिसकी जांच से पता चला कि ४०–४५ वरसकी अुस स्त्रीके ख़ूनका दबाव २८० था। ग़ज़ब है न! यह कैसे हुआ? वादमें कारण मालूम हुआ। अुन्हीं बुख़ार को दवानेवाले अिंजेक्शनोंकी यह लीला थी! अिस तरह आजकी डाक्टरी चिकित्सा कअी वार राअीका पहाड़ वना देती है। बुख़ार के केसोंमें तो अैसा अनेक वार होता है।

२–क. अिन्फ़्लूअेंज़ा

आजकल अिन्फ़्लूअेंज़ाका अुपद्रव वहुत होता है। अिसके फैलने से जनताकी प्राणशक्ति नष्ट हो जाती है और वह अत्यन्त दुःखी होती है। अिससे रोगी की शक्ति मर जाती है और कअी महीनों तक अिसका बुरा असर वना रहता है। मूत्रप्रयोग अिस रोग पर जादू-सा असर करता है। अिस विषय की कुछ आवश्यक जानकारी भारतसेवक समाजकी ओरसे अहमदाबादके दैनिक समाचारपत्रोंको जन-

हितकी दृष्टिसे प्रकाशित करनेके लिये भेजी थी, परन्तु किसीने अुसे प्रकाशित नहीं किया। अुसके बाद मेहसाना ज़िलेके डाक्टर मनुभाअी पटेलने अपना अनुभव-सिद्ध विवरण भारत सेवक समाजके कार्यालयको भेजा। अुसकी टाअिप कॉपियां करवाकर सभी स्थानीय दैनिक पत्रोंको भेजा गया, पर किसीने अुसे प्रकाशित नहीं किया।

विज्ञापनके लिये चलनेवाले दैनिक-पत्रोंके रुख़को मैं समझ नहीं सका। यह बात आम जनताके सामने रखनी चाहिये, क्योंकि अिसमें जनताका स्थायी हित है। यह बात सदा जनताके समक्ष रहे, अिस हेतुसे डा० मनुभाअीका अनुभवपूर्ण विवरण मैं नीचे दे रहा हूं :—

"अिस वर्ष फ़्लूका रोग फैल गया था, जिसका वर्णन करनेकी यहां ज़रूरत नहीं है, क्योंकि गत कितने ही वर्षोंसे हम अिस रोगके हाअू से लगभग अभ्यस्त हो गये हैं। पहले पहल जब यह बीमारी हिन्दुस्तान में फूट निकली थी तब बीमार की अपेक्षा डाक्टर अधिक घबराते थे। जबकि आज अैसी स्थिति है कि सिर्फ़ बीमार ही घबराते हैं और डाक्टर अपने डाक्टरी ढंगसे शान्तिपूर्वक अिस बीमारीका अिलाज करते रहते हैं।

"व्यवसायसे मैं अेक अॅलोपैथिक डाक्टर हूं, फिर भी अपने व्यवसायी मित्रोंके विरुद्ध अिस तरह खुले आम कहा हुआ कटु सत्य अनेक लोगोंको अखरेगा; परन्तु सत्य का ख़ून करके मुझे अिसे छिपाना ठीक नहीं लगा।

"डाक्टर लोग अिस रोगको बिना समझे ही केवल बाह्य चिह्नोंको देखकर अिलाज करते हैं। रोगके चिह्न ये हैं :—

"शुरूमें सिर दर्द, अुसके बाद बुख़ार और अेकाध दिन बाद जुकाम वग़ैरह शुरू हो जाते हैं। फिर सारे शरीरमें पीडा होनेसे रोगी बिलकुल अशक्त हो जाता है।

"अॅलोपैथीके अर्वाचीन पंडितोंने डाक्टरों को अिस रोगका अेक पेटेंन्ट अिलाज बताया है, जो अिस प्रकार है :—

"स्ट्रेप्टो पेनिसिलिनके अिंजेक्शन, अे० पी० सी० टिकियाअें और सल्फ़ाग्रुपकी दवाअें। यह सच है कि अिस अुपचारसे रोग दब जाता है, परन्तु अिससे हृदय और गुरदों पर अितना ख़राब असर होता है कि अनेक रोगी अनिद्रा जैसे रोगका शिकार हो जाते हैं।

"अॅलोपैथिक अुपचारके दोषों पर प्रकाश डालनेके लिये अनेक प्रकरण लिखनेकी ज़रूरत है, परन्तु यह सब यहां अशक्य है। अिस समय तो मैं यही बताअूंगा कि अिस रोगके प्रतिकारमें मूत्रचिकित्सा कितना हिस्सा अदा करती है।

"मेरे पास फ्लूसे पीड़ित अनेक रोगी अिलाजके लिये आते हैं। जो मूत्रचिकित्सा करना नहीं चाहते वे मुझसे नाराज़ होकर दूसरे डाक्टरोंके पास चले जाते हैं। जबकि अनेक रोगी अैसे भी हैं कि जिन्होंने मेरा अिलाज करनेकी तैयारी बतायी है। मेरा अपना अनुभव यह है कि अॅलोपैथिक अुपचारकी अपेक्षा मूत्रचिकित्सा अधिक गुणकारी और जल्दी असर करनेवाली है।

"सन् १९३१ में जब मैं अफ्रीकामें था तब युगांडाके जंगलमें रहनेवाले वतनियोंमें यह रोग फैल गया था। तब अुनके अुपचारको जानने और समझनेके लिये मैं जंगलोंमें फिरता था। वहां मैंने आश्चर्यके साथ देखा कि कुछ प्रोटेस्टेन्ट पादरी मूत्रप्रयोग द्वारा अुन्हें फ्लूसे मुक्ति दिलाते थे और संपूर्ण स्वस्थ बनाते थे। तबसे मूत्रचिकित्साके प्रति मेरे दिलमें थोड़ीसी श्रद्धा पैदा हुअी। और अुन हमदर्द पादरियोंके प्रेमको मैं कैसे भूल सकता हूं कि जिन्होंने मूत्रोपचारके बारेमें मुझे दो पुस्तकें दीं ताकि मैं यह समझ सकूं कि मूत्रचिकित्सा कितनी वैज्ञानिक है। सन् १९४२ में मिलिटरी सर्विसके दौरानमें मेरी रेंकके बहुतसे यूरोपीय अफ़सर भी अनेक रोगोंके लिये अिस मूत्रचिकित्साकी पद्धतिको अपनाते थे।

"फ्लूके पूर्वोक्त चिह्नोंका पता चले कि तुरन्त अुपवास शुरू कर देना चाहिये। यह और अच्छा होगा कि अुपवाससे पहले गुनगुने पानीमें

पेशाब मिलाकर अॅनिमा लेकर आंतें साफ़ कर ली जायें। अुपवासके रोज़ मूत्रप्रयोग शुरू न करें। दूसरे दिन सुबहसे ही यह प्रयोग शुरू करें और दिनभरका सारा पेशाब पी जायें। रातके पेशाबको जमा रखें और अगले रोज़ अुससे सारे शरीरकी धीरे-धीरे मालिश करें। फिर अेकाध घंटे बाद गुनगुने पानीसे स्नान कर लें। अिस प्रकारके अेकदम सरल प्रयोगसे फ़्लू जैसे संक्रामक रोगको केवल तीन चार दिनोंमें पूरी तरह मिटाया जा सकता है।"

२ – ख. अिन्फ़्लूअेंज़ा

श्री रणजीतभाअी बलदेवभाअी परीख अेक सेवाभावी व्यक्ति हैं। मूत्रप्रयोगसे ख़ुद लाभ अुठाकर वे दूसरोंको लाभ अुठानेके लिये प्रेरणा देते रहते हैं और अुनका सक्रिय मार्गदर्शन भी करते हैं। गत वर्ष (१९५८) अिन्फ़्लूअेन्ज़ाकी बीमारी फैल गयी थी। तब वे ख़ुद तो फ़्लूसे बचे रहे, क्योंकि मूत्रका नियमित अुपयोग करते थे। परन्तु अुनका अेक भतीजा दिलीपकुमार फ़्लूका बुरी तरह शिकार हो गया। ख़बर मिलते ही वे अुसके पास पहुंच गये और ज़रूरी जांच करनेके बाद अुसे मूत्रपानकी सलाह दी गयी। पेशाब पीनेके आध घंटे बाद ही रोगीको ज़ोरकी क़ै हुअी जिसमें पीला और काला-सा पदार्थ निकल जानेसे छाती और पेट हलके हो गये और फ़्लूकी बीमारी भाग गयी। दूसरी बार रोगीको पेशाब पीनेकी ज़रूरत न रही।

अिस तरह रणजीतभाअीने अनेक रोगियोंको चुपचाप अच्छा किया है।

५

दमा

१. बारह बरसी दमा

मैंने स्वानुभव तो किया पर अितना काफ़ी न था। मेरी अुत्कट अभिलाषा तो यह है कि प्रत्येक परिवार मेरे अनुभवसे लाभ अुठाये। हर घरमें बूढ़ी दादियां और माताअें अपने छोटे-बड़े बालकोंके स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये अिसी अमूल्य साधनका अुपयोग करने लग जायें। अीश्वरने सभी शरीरोंको अेक ही जैसे तत्त्वोंसे बनाया है और अुनके स्वास्थ्यके लिये प्रकृतिने अुनमें अेक ही द्रव्यकी रचना की है। तो फिर वह द्रव्य सभी शरीरोंके सभी दोषोंको दूर करनेके लिये शक्तिशाली क्यों न हो? अिसलिये मेरे दिलने यह महसूस किया कि मूत्रप्रयोगका मेरे जैसा अनुभव सभीको होना चाहिये। परन्तु प्रकृतिकी भिन्नतासे या विकारकी गंभीरतामें कमी-बेशी होनेसे, मूत्रप्रयोगकी विधिमें, अुसकी अवधिमें और अुससे होनेवाली क्रिया-प्रतिक्रियामें अन्तर हो सकता है; किन्तु परिणाम तो अेक ही होगा। फिर भी अेक बात विचारणीय है कि किसी अेक व्यक्तिने अेक सत्य वस्तुका स्वानुभव किया और अुसी सत्य वस्तुका वैसा सर्वानुभव न भी हो; तो फिर यह कहना ठीक नहीं कि सत्य वस्तुका सर्वानुभव न होनेसे सत्य वस्तु ही मिथ्या है। सत्यका स्वानूभव महात्मा गांधी जैसे सन्त पुरुषोंको होता है, आत्माकी अमरताका अनूभव श्री रामकृष्ण परमहंस जैसे परमज्ञानीको होता है, वैसा अनुभव संसारमें थोड़े ही मनुष्य कर पाते हैं। अैसा अनुभव सबको नहीं होता है; क्योंकि सबमें वैसी आध्यात्मिक शक्ति नहीं होती है, जिससे अैसे अनुभव सर्वानुभव नहीं बन पाते। अिस प्रकार मनुष्योंकी श्रद्धा और आध्यात्मिकताकी कमीके कारण सत्य

और आत्मकी अमरताका अनुभव न हो तो सत्य या आत्माकी अमरतामें कोअी कमी मानना अज्ञानता है और अैसा माननेवालेकी बुद्धि भ्रान्त है। संसारमें कितने ही कार्य अैसे होते हैं कि जो श्रद्धासे ही सिद्ध हो सकते हैं। तो भी मैं यह मान लेता हूं कि विज्ञानकी सहायतासे वे कार्य शायद जल्दी सिद्ध हो जायें।

मैं श्रद्धाके बल पर ही मूत्रको शारीरिक स्वास्थ्यका अेक संपूर्ण साधन मानता हूं। श्रद्धाकी ठोस बुनियाद पर ही मेरी मूत्र विषयक विचारधाराका और अुसके प्रयोगका महल खड़ा है। अंग्रेज़ लेखक स्व० जॉन आर्मस्ट्रॉङ्गकी अपनी धर्मपुस्तकके प्रति जो श्रद्धा थी अुसीका आश्रय लेकर अुन्होंने मूत्रप्रयोग किया और अुसी श्रद्धाके बल पर हज़ारों रोगियोंको स्वस्थ बनाया तथा मूत्रप्रयोगकी क्षमता के दृष्टांत प्रस्तुत किये। दूध और दही दोनोंमें पाओं रखनेवाले, अर्ध श्रद्धालु, धैर्यहीन अेवं असंयमी मनुष्योंके लिये यह प्रयोग नहीं है। अैसे व्यक्तियोंसे मेरा बारंबार निवेदन है कि वे अैसा प्रयोग करनेकी धृष्टता न करें। पाठकोंसे मेरी विनय है कि वे अिस भ्रान्त विचारको अपने दिलसे सदाके लिये निकाल दें कि जिसका सर्वानुभव हुआ हो वही सच्चा है।

अपना प्रयोग करनेके बाद मैं यह सोचने लगा कि दूसरा प्रयोग किस पर किया जाय। आप मरे बिना स्वर्ग नहीं मिलता। यह ठीक न था कि घरके रोगीको छोड़कर मैं बाहरके रोगीकी खोज करता। अीशकृपासे मुझे अैसा अवसर मिल ही गया और दूसरे प्रयोगके लिये अपनी पुत्रवधूको पसंद किया। वह पिछले बारह वर्षोंसे दमेसे पीडित थी। चौमासा आता और बादल मंडराने लगते तो अुसकी दुर्दशा हो जाती। बरसात और सरदीमें अुसकी पीडा हमसे देखी न जाती। घरके सभी व्यक्ति पारी-पारीसे अुसकी तीमारदारी करते। जब सांस फूलती और छाती बोलने लगती तो पीडाकी हद आ जाती। अनेक दवाअें कीं। सोमलके बीसियों अिंजेक्शन लगवाये, अन्य अिन्जेक्शन भी लगवाये गये, विविध गोलियां खिलायीं और नामालूम दवाकी कितनी शीशियां खाली

की गयीं। डेढ़ वर्ष तक होमियोपैथिक अिलाज भी किया। आयुर्वेद भी आज़माया। परन्तु अुसकी व्याधि नष्ट न हुअी।

गत मअी महीनेमें वह बम्बअी गयी। नमीवाली हवाके कारण कड़ी गरमीमें भी दमेके चिह्न दिखायी दिये। ता० ७ जून १९५८ के रोज़ वह वापस अहमदाबाद आयी। अुस वक़्त अहमदाबादमें १११–११२ दरजेकी गरमी थी। वैसी गरमीके दिनोंमें यहां अुसे दमेका असह्य दौरा हुआ। ता० ९ जूनकी दोपहरमें अुसे खूब बेचैनी रही। मुझे सूझ आया और चि० शशिकान्तको बुलाकर अुससे अुसकी छाती पर मूत्रमालिश करवायी। आध घंटेकी मालिशसे बेचैनी दूर हो गयी। मैंने तुरन्त निश्चय किया कि १० जूनसे वह प्रयोग शुरू कर दे। घरमें मेरा प्रयोग चला था और वह भी मेरी परिचर्यामें वारंवार अुपस्थित रहती थी, अिसलिये अुसके दिलसे मूत्रकी घृणा जाती रही थी। १० जूनसे अुसका प्रयोग शुरू हुआ। यहां अेक बातकी स्पष्टता कर देना चाहता हूं। मूत्रमालिशमें किरायेका टट्टू ज़्यादा कारगर साबित नहीं होता। अुसमें प्रायः जड़ता होती है। चाहे वह ख़ुद गंदगीमें रहता हो तो भी वह पेशाबसे मालिश करनेके लिये तैयार नहीं होता। अगर वह किसी तरहसे तैयार हो भी जाय तो अुसमें स्वजनकी भांति प्रेम और अुत्साह नहीं रहते। बात यह है कि जैसे मालिश करनेवाले की शक्तिका संचार मालिश करानेवालेके शरीरमें होता है वैसे अुसके प्रेम अेवं अुत्साहका संचार रोगीके दिलमें होता है, जिससे परिणाम अद्‌भुत आता है। अेक व्यक्तिने मुझसे पूछा कि अुसकी पत्नी यह प्रयोग करना चाहती है, परन्तु अुसकी मालिश करनेवाली कोअी स्त्री नहीं मिलती है। मैंने अुससे कहा, अीश्वरने अुसे आप जैसा पति दिया है न? आपके हाथ-पाओंका वात रोग तो मिट गया है। आप ही मालिश करें न? आप जैसी स्नेहभरी अुसकी मालिश दूसरा कौन करेगा? और वह मालिश करने लगा। अुसका असर हुअे बिना रह सकता है क्या? अिसी आशयसे मैंने चि० शशिकान्तसे कहा कि वह

अपने व्यवसायमें से समय मिकाल कर भी अपनी पत्नीकी परिचर्यामें रहे और अुसने मेरी वात सहर्ष मान ली।

श्रीमती कुमुदवहनको मूत्रसे घृणा न थी। अिसलिये अुसने १० जूनसे हर रोज़ सुवह अेक बार मूत्रपान शुरू किया और १४ जूनसे अुपवासका श्रीगणेश कर दिया। मैं यह नहीं जानता था कि कितने अुपवास करने पड़ेंगे। परन्तु मुझे विश्वास था कि क़ुदरत अुसकी अवधि भी वता देगी। पेशाब और पानीके अुपवासमें गुरदे ठीक काम करते हों और पेशाव यथेष्ट परिमाणमें आता हो तो अुपवासीको किसी खास कमज़ोरीका अनुभव नहीं होता, क्योंकि पेशावमें पौष्टिक तत्त्व होते हैं। फिर भी अुसकी शक्तिको वनाये रखनेके लिये शुरूके दो दिन सुवह-शाम मैंने अुसे आठ-आठ औंस खजूरका पानी दिया। परन्तु अिस वातको खास तौरसे याद रखें कि मधुमेहके रोगीको अिस प्रयोगके दौरानमें खजूरका पानी न दिया जाय। ता० १६ और १७ दो दिन रोज़ाना अुसे सात आठ दस्त हुअे और पेट, पेड़ू अेवं आंतोंमें रहा हुआ कफ-मिश्रित मल निकल गया। ता० १७ को दस्त अपने आप वंद हो गये। ता० १८ की सुवहसे अुलटियां होने लगीं। अुनमें कफ और चिकना पदार्थ निकला। थूकदानियां भरी जाने लगीं। ज्यों ज्यों अुलटियां हों त्यों त्यों चैन पड़ने लगा। ता० १९ की शामको उलटियां भी अपने आप वंद हो गयीं। अिस तरह दो दिनकी अुलटियोंसे छाती, फेफड़ों और वग़लोंका कफ साफ़ हो गया। अव क्या होगा, अिसका क्या पता? ता० २० की सुवह छींकें शुरू हो गयीं। मैंने अुसे पूछा, "छींकें क्यों आती हैं। क्या ज़ुकाम हुआ है?" अुसने वताया, "ये ज़ुकामकी छींकें नहीं हैं, ज़ुकामकी छींकें होतीं तो नाक से पानी निकलता, ये तो ख़ाली छींकें ही हैं।" अुनका परिणाम तुरन्त ही मालूम हुआ। गलेके अूपरी भागमें जो ताज़ा या पुराना कफ रहा होगा वह अलग होकर गलेके रास्तेसे निकलने लगा। दिन भर छींकें आती रहीं, शामको वे भी अपने आप वंद हो गयीं। ता० २१ की दोपहरको कुमुदने कहा, "पिताजी, मुझे

लगता है कि अब मेरा शरीर ठीक हो गया है और दमेकी जड़ कट गयी है। आप कहें तो कल सुबह अुपवास छोड़ूं। अुपवासके अनन्तर भी मैं दीर्घ काल तक रोज़ाना सुबह मूत्रपान करूंगी। और सप्ताहमें अेक दिन अुपवास रखूंगी ताकि रोगकी आशंका न रहे।" मैंने अनुमति दे दी। ता० २२ जूनकी सुबह अुसने आठ दिनके अुपवासको छोड़ा। सुबह खजूरका पानी, दोपहरमें चीकू और अनारका रस तथा पपीता और शामको मूंगका पानी लिया। अिस तरह दो दिन और अुसने फल और तरल आहार लिया। २६ जूनसे वह सादा अेवं पथ्य आहार लेने लगी।

अिस तरह अुसका दमा मिट गया। अुसका वज़न १४० पौंडसे १२० पौंड हो गया, जिससे अुसके शरीरमें स्फूर्ति बढ़ी। अुसकी चमड़ी मुलायम और चमकीली हुअी। प्रयोगके बाद तो अहमदाबादमें खूब वारिश हुअी, बादल गरजे और बिजली कड़की और अेक हफ़्ते तक हवामें नमी रही। अैसे वायुमंडलमें भी वह मोटरमें डाकोरकी यात्रा कर आयी। सैर तो रोज़ाना करती है। अुपवासके बाद दो चौमासे और दो जाड़े बीत गये। फिर भी अुस पर दमेका आक्रमण नहीं हुआ। अब तो वह निर्भय हो गयी है। फिर भी बीमारीका मुक़ाबला करनेके लिये वह अपने शस्त्रसे सुसज्जित रहती है।

क़ुदरतमें बेहद शक्ति है। दुनियाभरकी फ़ार्मेसियोंकी दवाअें अुसके आगे पानी भरती हैं। विश्वभरके डाक्टर अुसके भेदको समझ नहीं सकते। पिछले दस-बारह वर्षमें सैकड़ों रुपये खर्च हुअे और हज़ारों रुपये खर्च हो जाते, फिर भी कोअी अुसकी तकलीफ़को कम न कर सकता। पेशाबने अुसे दस दिनमें दूर कर दिया। यह है क़ुदरतका प्रताप! अुसके सहयोगसे संसार सुखी एवं गुलज़ार बनता है। अुसका विरोध करनेसे विश्व दुःखी अेवं स्मशान बनता है। आजकी डाक्टरी चिकित्सा संसारको दिन-प्रतिदिन मरुस्थल बना रही है। अीश्वर अुससे हमें बचाये!

२. बम्बअिया दमा

मूल गुजराती पुस्तक — 'मानव-मूत्र' के पहले दो संस्करणोंमें मूत्रप्रयोगसे दमेकी बीमारीके मिट जानेका विवरण दिया जा चुका है। अिसलिये बम्बअिया दमेके बारेमें अलग लिखनेकी जरूरत न थी। परन्तु बम्बअीमें रहनेवाले मेरे अेक मित्र डाक्टरको जब यह मालूम हुआ कि मूत्रप्रयोगसे मेरी पुत्र-वधूका दमा मिट गया है, तब अुन्होंने सहज भावसे कहा, "अिसमें कौनसा आश्चर्य? बम्बअीवासीका दमा मिटे तो मैं मानूं।" अुनकी बात सच्ची है। बम्बअीवासी दमेके रोगियोंका दमा असाध्य हो गया है। वहांकी नमीदार हवासे दमेकी बीमारी होती है, बढ़ती है और मौत तक पीछा नहीं छोड़ती है।

मित्र डाक्टरने दमेके अेक रोगीकी दुर्दशा देखी थी, अनेक दवाअें खाने पर अुसका दमा मिटा नहीं था। अिसलिये अुनका अुपर्युक्त कथन स्वाभाविक था। अिस बारेमें मुझे तो कुछ प्रयत्न करना नहीं था, किया भी नहीं। मैं तो अिस विषयमें अुदासीन ही रहा हूं। जो अनायास सामने आ जाता है, अुसे स्वीकार कर लेता हूं और कुछ पानेके लिये प्रयत्नशील नहीं होता हूं। अिसलिये मैं तो निश्चिंत था। अितनेमें बम्बअीसे अचानक अेक अुत्साहजनक पत्र मुझे प्राप्त हुआ, जिसका मुझे स्वप्न तक भी न आया था। जिसे ज्योंका त्यों यहां प्रस्तुत करता हूं, ताकि अिसकी स्वाभाविकता बनी रहे। अिसकी कुछ बातें अनावश्यक मालूम हों तो पाठक मुझे क्षमा करें।

मधुकर गोपाल दाते,
अिन्दुबाग नं० २, सनमिल लेन,
लोअर परेल, मुंबअी १३,
१३-१२-'५९

"मान्यवर श्री रावजीभाअी पटेल,

"मैंने आपकी प्रकाशित पुस्तक — 'मानव-मूत्र' पढ़ी। अुसमें बतायी हुअी विधिके अनुसार अपने दमेके रोगसे मुक्ति पानेके लिये

मैंने आठ दिनका अुपवास करके नया जीवन प्राप्त किया। आपकी जानकारीके लिये अुसका विवरण लिखते हुअे मुझे वेहद आनंद हो रहा है।

"मेरा नाम मधुकर गोपाल दाते। हाल मुक़ाम बम्बअी। जन्म तथा अध्ययन सौराष्ट्रमें — भलगाम, अमरेली। अिस समय मेरी अुम्र ४५ वर्षकी है। बचपनसे ही मुझे कसरतका खूब शौक़ था, जिससे मेरा शारीरिक गठन वहुत मज़बूत हो गया था। और जब मैं पच्चीस वर्षका नौजवान था तब भी दोपहरमें शायद अेकाध घंटा सोता था, तो मुझे खांसी आती और कफके साथ थोड़ा खून भी निकल आता। मैंने अुसकी कुछ भी परवाह नहीं की। परंतु बचपनसे ही मेरी कफ प्रकृति थी, यह मुझे याद था। फिर वढ़ते-बढ़ते खांसी खूब बढ़ गयी और अनेक देशी विदेशी अिलाज किये, किन्तु खांसी मिटी नहीं और अुसका रूपांतर दमेमें हो गया। पिछले पांच सात वरसोंमें दमेने मेरा नाकमें दम कर दिया। लगभग दो हज़ार रूपये खर्च किये होंगे। फिर भी वह जानेका नाम नहीं लेता। मेरे डाक्टरने भी मेरे लिये अनेक अुपचार किये, लेकिन 'मर्ज़ बढ़ता गया ज्यूं-ज्यूं दवा की।' आखिरमें मुझे वताया गया कि किसी भी देशने दमा मिटानेकी दवा अभी तक खोजी नहीं है, दमेको दवानेकी ही दवाअें मिलती हैं। तब मैं बहुत ही हताश हो गया।

"फिर तो मैं बहुत ही परहेज़ रखने लगा। परन्तु दमा तो भूतकी भांति चाहे जब अेकदम आकर मुझे तंग करने लगा। फिर तो मुझे रह रहकर यही खयाल आने लगा कि मेरे जैसा अभागा और पापी अिस दुनियामें दूसरा कोअी नहीं है। और मैं सदाके लिये हताश हो गया।

"अिस दौरानमें मेरे प्रिय मित्र और पड़ौसी श्री खेतशी मालशी सावलाने आपकी लिखी पुस्तक मेरे हाथमें दी, और अुसे पढ़ डालनेके लिये कहा। मैंने अुसे दो वार पढ़ डाला और मुझे विश्वास हो

गया। रोज़ाना सुवह मैं अपना पेशाब अेक वार पी जाता। अेक मास तक पीता रहा। परन्तु अिससे मुझे ज़रा भी फ़ायदा नहीं हुआ। मैं कुछ निराश हुआ। फिर तो मैंने निश्चय किया कि आठ दिनके अुपवासका प्रयोग पूरा करूं; क्योंकि अुसमें लिखा था कि अुपवासमें दस्त, अुलटी, छींक आदिकी प्रतिक्रिया होती है, जिससे मुझे प्रयोग करनेके लिये प्रोत्साहन मिला। मैंने १८–११–'५९ से अुपवास शुरू किया। दिन रातका सारा पेशाव पीता था। जो पुराना पेशाव रख छोड़ा था, अुसे गरम करके मेरी पत्नी दिनमें दो वार मेरे सारे शरीरकी मालिश कर देती और अेक मालिशमें डेढ़ घंटा लगता। अिस तरह दो चार दिन वीत गये परन्तु दस्तका नाम नहीं। मैं फिर कुछ घवराया। आखिर पांचवें दिन मैंने कड़वे नीमके अुवले हुअे पत्तोंके पानीका अॅनिमा लिया। परन्तु पेटसे केवल वही पानी निकला। फिर भी प्रयोग तो चलता ही रहा। सोचा कि अुलटियां तो होंगी ही। परन्तु आठ दिनमें न तो दस्त आये और न अुलटियां या छींकें आयीं! नवें दिन अर्थात् २६ नवम्वरको मैंने अुपवास छोड़ा। अुपवास करनेसे पहले मेरा वज़न १३५ पौंड था और अुपवासके वाद ११६ पौंड हुआ।

"मैं अुसी दिन अपने सदाके डाक्टरसे मिला। अुन्होंने मेरे सारे शरीरकी जांच की और कहा, 'आपके शरीरमें ज़रा भी कफ नहीं है।' मैंने अुनसे कहा कि ज़रूरत हो तो फेफड़ोंका फ़ोटो लिवा लूं। परंतु अुन्होंने मना करते हुअे अहा, 'फ़ोटोकी कुछ ज़रूरत नहीं है।' दस वरससे वे मेरा अिलाज कर रहे थे और मेरे लिये अुन्होंने खूब मेहनत की थी। वे खुश हुअे। मैंने अुनसे अिस प्रयोगकी वात कही, जिसे जानकर वे खुश हुअे और कहा, 'दो चार मासमें यदि आपको फिरसे दमा विलकुल न हो तो अिस प्रयोगको करनेके लिये दूसरोंको भी कहेंगे।'

"मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि अब मुझे कफ या दमा होगा ही नहीं, परन्तु दस्त, अुलटी, छींक आदिकी प्रतिक्रिया हुअे विना ही मेरा

दमा मिटा है, अिसलिये शंका होती है। प्रार्थना है कि आप मेरी शंकाका निवारण ज़रूर करें।

"और मैंने खूब कसरत करके अपने शरीरको अच्छा वनाया था; परन्तु दमे ने अुसे वहुत ही क्षीण कर डाला है। किन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब मैं नियमित प्राणायाम, आसन आदि करके फिरसे अपने शरीरको मज़बूत बना सकूंगा। मुझे दमेके रोगसे मुक्ति दिलानेमें आप भी कारण हैं, अिसलिये मैं आपका अत्यंत आभार मानता हूं। परम कृपालु परमेश्वरकी वात तो क्या करूं? जिसने यह अमूल्य वस्तु शरीरकी प्रत्येक व्याधिके लिये प्राणिमात्रको सदाके लिये दे रखी है। अैसी तो प्रभुकी लाखों करामात हैं। मैं प्रतिदिन परमकृपालु परमेश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि अुनमेंसे अेकाधका ज्ञान तो हमें हो और चाहता हूं कि जिस प्रकारसे अुसने मेरा रोग मिटाया है अुसी प्रकार वह मेरे तन अेवं मनको अैसा तैयार करे कि मैं सदा ग़रीबोंकी सेवा करता ही रहूं और अुसका सारा यश अुसीको अर्पण करूं। वह मुझे अैसी बुद्धि दे कि न मैं अुस सेवाका अभिमान करूं और न ही अुसे करनेमें सुस्त बनूं? सचमुच ओश्वरने यह अेक दिव्य वस्तु दी है, जिससे विश्वासपूर्वक अुपचार करनेके लिये मैं अनेक लोगोंको समझाता हूं। अुनमें से कुछ को तो अभी घृणा आती है और कुछ अंध श्रद्धासे अुसका अुपयोग करनेसे झिझकते हैं। ओश्वर अुन्हें सद्‌बुद्धि दे। ओश्वर मेरी ज़िंदगी ग़रीब मनुष्योंकी परिचर्या अेवं सेवामें लगाये, अैसी मेरी रोज़की और सबसे पहली मांग है। और यही मेरी बड़ीसे बड़ी अभिलाषा है। मुझे आशा है कि ओश्वर मेरी अभिलाषा पूर्ण करेगा।

"अुपवासके दौरानमें मुझसे मिलनेके लिये जो मित्र आते थे वे मेरे अुपवासके सिलसिलेमें अपनी आंखोंसे देखी हुओीं और अनेक वर्ष पहले अपने कानोंसे सुनी हुओीं वातें मुझसे कहते थे, जिनमें से कुछ वातें आपकी जानकारीके लिये लिखता हूं।

(१) "श्री जाधव मास्टर मेरे सहपाठी हैं और मेरी ही अुम्रके हैं। वे जब आठ दस बरसके थे तब की अेक बात अुन्होंने कही। अेक बहुत ही मज़बूत शरीरवाले साधु हमारे गांवमें रहते थे। वैसे शरीरवाले आजकल बहुत ही कम हैं। अुनके शरीरकी स्वस्थताके बारेमें अुन्हें तीव्र अुत्कंठा हुअी। आखिर पूछे बिना न रह सके। तब मालूम हुआ कि अुनका आरोग्य नियमित मूत्रपानका परिणाम है।

(२) "हमारे पडोसमें अेक जैन साधु आये थे। अुनका अुपवास सदा चलता ही रहता। अुनकी आकर्षक कांति और स्वस्थताके बारेमें पूछने पर मालूम हुआ कि वे अुपवासमें अपना ही मूत्र पीते थे।

(३) "अुत्तर प्रदेशके अेक भैयासे मेरा परिचय है। जब मैंने अुससे अपने मूत्रप्रयोगके चमत्कारका ज़िक्र किया तब अुसने मुझे बताया कि नागे साधु अपना ही मूत्र पीकर अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करते हैं। अिसलिये मेरे प्रयोगसे अुसे कुछ आश्चर्य न हुआ।

(४) "अपने मित्र बावकरसे अेक गुंडेकी बात मालूम हुअी। पच्चीस बरस पहलेकी यह बात है। अुस समय मारपीटमें चाक़ूका अुपयोग नहीं होता था; किन्तु लाठी या लकड़ीका ही अुपयोग किया जाता था। अुसका शरीर भी गठीला और मज़बूत था। आठ दस आदमियोंका सामना वह अकेला ही करता था। मार खाता और मारता। परन्तु आश्चर्यकी बात तो यह कि अुसके शरीर पर मारका कुछ भी असर मालूम न होता था। अुसे पूछने पर मालूम हुआ कि अपने मूत्रका अुपयोग अिसका अकसीर अिलाज है। मूत्रपानके अनंतर अेक सप्ताहमें वह पहले जैसा स्वस्थ हो जाता था।

"यह सब बातें सिर्फ़ आपकी जानकारीके लिये लिखी हैं।

"मेरी अेक और विनती है कि अेक बरसके बाद लगभग पंद्रह दिनका अुपवास करना चाहता हूं। अिसलिये आप अपना अमूल्य अनुभव लिख कर मेरा मार्गदर्शन करनेकी कृपा करें। अन्तमें फिर अेकबार आपका अन्तःकरणसे आभार मानता हूं।"

३. दसबरसी दमा

मोगरी ज़िला खेड़ाके निवासी श्री चतुरभाअीने श्रद्धा अेवं अुत्साहके साथ अपने घरके चार रोगियोंको प्राकृतिक अेवं सरल मूत्रोपचारसे रोगमुक्त कर दिया। जिसका विवरण यथास्थान दिया गया है। यह समाचार आणंद और आसपासके गांवोंमें भी फैल गया। अैसा मालूम होता है कि फिर कअी गांवोंमें यह मूत्रप्रयोग शुरू हो गया। करमसदके डाक्टर श्री प्रभुदास पटेल मेरे अेक रिश्तेदार हैं। अुनके मिलने पर मुझे पता चला कि अुनके मार्गदर्शनसे साठ वरसके अेक गृहस्थने मूत्रप्रयोग द्वारा दस वरसके पुराने दमेसे छुटकारा पा लिया।

४. ख़ास सूचना

दमेके अनेक प्रयोग हुअे हैं। अुनमें अेक नया अनुभव यह हुआ है कि प्रयोगके अुपवासोंके अंतमें रोगीकी जठराग्नि मंद हो जाती है। अुसे धीरे-धीरे तेज़ करना चाहिये। परंतु अनेक दिनोंका अुपवासी रोगी खानेके लिये आतुर हो अुठता है और फलका रस या मूंगका पानी अधिक परिमाणमें ले लेता है। वह पूरा हज़म नहीं होता है। अिसलिये अुसका तथा अैसे अन्य आहारका कफ बनता है, जिससे खांसी और सांस शुरू हो जाती है। रोगी अुसके कारणको तो समझता नहीं है और प्रयोगको निष्फल मान लेता है। अतः पहले दिन तो अेक चम्मच निंबूका रस, दो चम्मच शहद और तीन औंस गरम पानी, अिन तीनोंको मिलाकर चमचेसे पीना चाहिये। चार घंटेके बाद दो औंस मूंगके पानीमें दो चम्मच अद्रकका रस और थोड़ा नमक मिलाकर लेना चाहिये। फिर चार घंटेके बाद पांच तोला मीठे संतरेका रस लिया जाय। अिस तरह धीरे-धीरे आहार बढ़ाना चाहिये। कड़ी भूख लगने पर ही लेना चाहिये। और हर रोज़ सुवह दो औंस पेशाव तो पीते रहना चाहिये। अैसा करनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होगी और किसी प्रकारकी बेचैनी नहीं होगी।

६

कैंसर

१. छोटी जीभका कैंसर

जिस समय मूत्रचिकित्सका मुझे बिल्कुल पता न था अुस समय अर्थात् सन् १९५४ की अेक घटना है। श्री छन्नालाल तुलसीदास पटेल अहमदाबादके निवासी हैं। अुनकी अुम्र ५१ वर्षकी है। वे अभी 'चिमन लाल मंगलदास अॅन्ड कम्पनी' (लाल दरवाजा)में मुनीमके रूपमें काम करते हैं। अुनके मुंहके अंदर छोटी जीभ पर कैंसर हो गया था। अुसी कम्पनी में काम करनेवाले युवक श्री बाबूभाअी सोनी चिकित्सा-शास्त्रमें खूब दिलचस्पी रखते थे। अुन्होंने भिन्न-भिन्न प्रयोगोंका ज्ञान प्राप्त करते हुअे स्व० आर्मस्ट्रॉंगकी 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' नामक पुस्तक लेकर पढ़ी, जिससे मुत्रोपचारके प्रति अुनके दिलमें श्रद्धा पैदा हुअी। अिसलिये अपने साथ काम करनेवाले छन्नालाल पटेलको मूत्रोपचार आज़-मानेके लिये समझाया। अुन्होंने अुनकी बात समझकर मूत्रप्रयोग शुरू कर दिया, जिससे वे रोगमुक्त हो गये। तीन साल बाद जब मैंने मूत्रचिकित्साके बारेमें अपने अनुभव लिखे, तब अुन्हें पढ़कर बाबूभाअी सोनी छन्नालाल पटेलको लेकर मेरे पास आये। अुन्होंने अत्यन्त श्रद्धा और हिम्मतके साथ मूत्रप्रयोगके बारेमें अपना अनुभव बताया। फिर अुन्होंने ता० १७–१०–'५८ को अपने प्रयोगका विवरण मुझे लिख भेजा, जिसे शब्दशः मैं नीचे दे रहा हूं :—

"सन् १९५४ में मुझे अपनी छोटी जीभ पर अेक छाला दिखायी दिया। जब मैं भोजन करता तब वहां जलन होती और पानी पीते समय भी जलन होती। मैं अेक विशेषज्ञ डाक्टरके पास गया और उनकी सूचनाके अनुसार दवा ली। परन्तु मुझे कोअी खास फ़र्क़ मालूम

नहीं हुआ। मैं कभी कभी भिन्न-भिन्न डाक्टरोंकी सलाह लेता, परंतु रोग क्या है, अिसे कोअी भी न बताता। अुसके बाद श्री बाबूभाअी ओच्छवलाल सोनीने मूत्रका महत्त्व बतानेवाली अेक अंग्रेजी पुस्तक मुझे भेजी और मूत्रपानके लिये समझाया, पहले तो घृणाके कारण मैं पेशाब पीनेके लिये तैयार न हुआ। परन्तु वे मुझे लगातार समझाते रहे। आखिर तीन महीनेकी कड़ी कोशिशके बाद मैंने पेशाब पीना मंजूर किया। मूत्रपानसे मेरी जलन कुछ कम हुअी और मुझमें कुछ शक्ति भी आयी। फिर शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ होनेके लिये मैंने डाक्टर हरिभक्तिकी सलाह ली। अुन्होंने मुझे ऑपरेशन करानेके लिये सूचित किया और कहा कि ज़ख्म ठीक करनेके लिये किरणें भी लेनी होंगी। काफ़ी समयसे मैं बीमारीसे तंग आ गया था। अिसलिये मैंने ऑपरेशन कराया और डाक्टरने मेरे ऑपरेशनवाले भागकी जांचके लिये मुझे सिविल अस्पतालमें भेजा। जिस दिन ऑपरेशन हुआ था अुसी दिन बाबूभाअी सोनी मुझसे मिले और मूत्रपानके लिये अनुरोध किया। ऑपरेशनके कारण तीन चार दिन तक कुछ विशेष आहार तो करना नहीं था, अिसलिये मुझे सहज ही अुपवासका लाभ मिल गया। अुपवासके दौरानमें मैं अधिकसे अधिक मूत्र पीने लगा। जिसका परिणाम यह आया कि तीन ही दिनमें ऑपरेशनका घाव भर गया। मैं डाक्टरको अपनी स्थिति बारबार बताता रहता था। जादूकी तरह केवल तीन दिनमें मेरा ज़ख्म ठीक हो गया और दर्द भी न रहा, अिसे जानकर डाक्टर भी आश्चर्यमुग्ध हो गये। सेठ श्री मदनमोहन मंगलदास जी मुझे बहुत प्यार करते थे। अुन्होंने मेरा हाल पूछा। मैंने अुन्हें बताया कि सिविल अस्पतालकी रिपोर्ट के आधार पर डाक्टर मुझे कैंसरका रोगी समझते हैं। सेठ साहबने मुझे शीघ्र ही बम्बअीके टाटा अस्पतालमें जानेके लिये सूचित किया। मैं तो जानता था कि यह सब प्रताप पेशाबका है। अिसलिये मैंने ज्यादासे ज्यादा पेशाब पीना चालू रखा। फिर भी डाक्टरकी अिच्छाको मान्य रख कर मैं टाटा अस्पतालमें गया और डाक्टरी रिपोर्टके अनुसार मेरे

ऑपरेशनवाले भाग पर रेडियम लगाया गया। वास्तवमें मुझे किसी और अुपचारकी ज़रूरत न थी; क्योंकि मेरा ज़ख्म ठीक हो चुका था और किसी प्रकारकी पीडा भी न थी। टाटा अस्पताल वालोंने फिर मुझे एक महीने वाद आनेको कहा। मैं पेशाव पीता रहा था, जिससे मेरा वज़न १३ पौंड वढ़ गया था। जव दुवारा मैं टाटा अस्पतालमें गया, तो वहां वाले यह प्रगति देखकर दंग रह गये। अुन्होंने मुझे कोअी भी दवा या रेडियम न देकर दो महीने वाद वापस आनेको कहा। अिसी दौरानमें मेरा वज़न कुल २३ पौंड वढ़ गया था। मैं भोजन अच्छी तरहसे करता था और शरीरमें अपूर्व शक्ति आ गयी थी। आज अिस वातको ढाअी-तीन साल हो गये हैं, परन्तु मेरा वज़न जितना वढ़ा था अुतना ही अव भी है। अिस समय मेरी अुम्र ५१ वरसकी है, फिर भी मैं ४१ वरसकी अुम्रवाले जितना शक्तिशाली हूं। अिसके लिये मैं श्री वावूभाअी ओछवलाल सोनीका आभारी हूं। अगर अुन्होंने वह पुस्तक देकर मुझे मूत्रका महत्त्व न समझाया होता तो न जाने मैं अिस समय किस दुनियामें होता ?"

मैं अुपर्युक्त केसके वारेमें अविकारपूर्वक कुछ नहीं कह सकता हूं। परन्तु रोगीने जिस श्रद्धा अेवं दृढताके साथ मुझसे वात की, अुसका मुझ पर अच्छा असर हुआ। फिर भी मैं अुस असरको अिस केसमें प्रमाणभूत माननेका दावा करना नहीं चाहता हूं। परन्तु मैं अितना अवश्य जानता हूं कि वर्तमान अंग्रेज़ी चिकित्सा की दुनियामें कैंसरके लिये नश्तर और रेडियम यही दो प्रभावशाली सावन माने गये हैं। यद्यपि अंग्रेज़ी चिकित्साकी दुनियामें कैंसरका रोग असाध्य माना जाता है तथापि यह रोग ऑपरेशन और रेडियम अिन दोनोंसे ही मिट सकता है, अैसा माना-मनाया जाता है। अिन दोनों साधनोंसे पूर्ण अुपचार किये विना यह मिट ही नहीं सकता, अैसा स्वीकृत सिद्धान्त है। यह केस कैंसरका था, अैसी सिविल अस्पतालकी रिपोर्ट है। रोगी छन्नालाल पटेल अपने मूत्रप्रयोगमें श्रद्धा रखते हैं और यह भी कहते हैं कि अुनका रोग

पेशावके प्रतापसे मिटा है। चूंकि अुन्होंने ऑपरेशन करवाया, अिसलिये डाक्टर को भी अैसा कहनेका मौक़ा मिल जाता है कि यदि ऑपरेशन न करवाया होता है तो रोग नहीं मिटता। यद्यपि कैंसरकी बीमारी का अितिहास तो निराशापूर्ण है। ऑपरेशन अेवं किरणोपचार से भी शायद ही कैंसरका कोअी रोगी सर्वथा रोगमुक्त होता हो। तात्पर्य कि छन्नालाल पटेलने मूत्रोपचारमें श्रद्धा रखते हुअे भी ऑपरेशन करवाकर प्रचलित डाक्टरी चिकित्सापद्धतिको यह मौक़ा दिया है कि वह अुनके मूत्रोपचारकी बात को अमान्य कर दे, अन्यथा केस तो बिलकुल साफ़ है।

२–क. गलेका कैंसर

कैंसरका जो केस मैंने अिस प्रकरणके शुरूमें दिया है अुससे मुझे संतोष नहीं था। अुसके मूत्रोपचारमें कुछ कमी होनेके कारण प्रचलित चिकित्सा-पद्धतिको अुसका यश मिल सकता है। फिर भी मुझे कोअी शंका न थी, अिस लिये मैंने अुसका अुल्लेख किया। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस कैंसरको डाक्टरोंने प्रमाणित किया हो और जो डाक्टरी अुपचारसे अेकदम अछूता रहा हो, वह मूत्रोपचारसे शीघ्र ही ठीक हो सकता है। परन्तु अिस वैज्ञानिक युगमें लोग वैज्ञानिक अुपचारके नामसे वैज्ञानिक वहमोंसे और अुसकी चका-चौंधसे प्रभावित हो जाते हैं। टाटा अस्पतालमें आज तक कैंसरके हज़ारों बीमारोंको बिजली के करेंट दिये होंगे और डाक्टरों ने कैंसरके हज़ारों रोगियोंकी गांठोंका ऑपरेशन किया होगा किन्तु अभी तक अेक भी केस अैसा नहीं होगा कि जो सदाके लिये ठीक हो गया हो। बिजलीके करेंटसे गांठको गला देनेंके बाद दूसरी जगह वैसी गांठ निकलती ही है और ऑपरेशनके बाद भी कैंसरकी गांठ दूसरी जगह निकल आती है। अितना ही नहीं, अपितु पहले की पीडा की अपेक्षा कअीगुनी अधिक पीडाके साथ निकलती है। अिसलिये रोगके अुपचारकी पीडा मूलरोगकी पीडासे बहुत अधिक भयंकर होती है।

फिर भी रोगी, रोग हुआ कि तुरन्त डाक्टरोंके पास दौड़ जाते हैं। डाक्टर भी अुन्हें वही अुपचार वताते हैं कि जो निष्फल सिद्ध हो चुका है। रोगी अुसी अुपचारका आश्रय लेते हैं, पैसे खर्च करते हैं, अुनकी पीडा वढ़ती है और वे मृत्यकी ओर धकेले जाते हैं।

मैं खुद डाक्टरी व्यवसायका अभ्यासी अेवं अनुभवी नहीं हूं, अिसलिये मुझे अधिकारपूर्ण कहनेका हक़ नहीं है। परन्तु जो वात विज्ञानकी चारदीवारी से निकल कर जनसमूहके खुले मैदानमें आयी और अनुभवकी कसौटी पर जैसी परखी गयी, अुसे वैसी वतानेमें क्या किसी अुपाधि या अधिकारकी ज़रूरत है? अव तो सव जानते हैं कि कैंसर अेक असाध्य रोग है। कैंसरके हज़ारों रोगियोंकी चिकित्सा करनेवाले व्रेडफ़ोर्ड के स्व० डाक्टर रावाग्लिआटी ने तो शुद्ध हृदयसे यह स्वीकार किया है — "कैंसर और ज़हरी गांठोंके रोगमें शस्त्रक्रिया करनेके वाद शायद ही कोअी रोगी वचा होगा।" और तवसे सभीको अैसा ही अनुभव होता रहा है। कैंसरका रोगी जव किरणोपचार लेने जाता है तव भी अुसे यही कहा जाता है कि महीने दो महीने वाद किरण लेनेके लिये फिर आना और जहां तक जी सको जीना। कैंसरके रोगीकी जांच करनेके वाद डाक्टर शायद अैसा अुद्गार निकालेगा या अुसका मुरझाया हुआ चेहरा यह वतायेगा कि 'किरण लेना और रामका नाम लेना।' अैसा रोगी मूत्रप्रयोगसे अवश्य ठीक हो सकता है, अैसी श्रद्धा मेरे दिलमें तो थी ही; परन्तु जहां तक वह श्रद्धा चरितार्थ न हो वहां तक वह पंगु समझी जाती है। मेरे पास कैंसरके दो अैसे रोगी आये थे, जिनका रोग वहुत ही जड़ जमा चुका था। अुनका मुंह खुलता नहीं था, मुंहसे खाया नहीं जाता था और गला रुक जाता था। अुन्होंने हर छमाही वम्वअी जाकर किरणोपचार किया था। ऑपरेशन भी कराया था। परन्तु पहले की अपेक्षा पीडा अधिक वढ़ गयी थी। अुन दोनोंमें से अेकने मुत्रप्रयोग शुरू किया। अुसे प्रयोग से फ़ायदा होने लगा। पहले की अपेक्षा मुंह अव अधिक खुलने लग गया। अिसलिये

अुसने जोशमें आकर अुपवास शुरू कर दिये। परन्तु आसपासका वातावरण बहुत प्रतिकूल था। पड़ोसियोंने अुसे और अुसकी पत्नीको ताने मार मार कर अुपवास बन्द करवाये और मूत्रप्रयोग भी छुड़वा दिया। अिस बारेमें अुस रोगीके छोटे भाअी ने मुझे लिखा कि मूत्रप्रयोगसे रोग काफ़ी ठीक हो रहा था, पर लोगोंने यह प्रयोग छुड़वा दिया। बादमें क्या हुआ, अिसका मुझे पता नहीं।

यह अुदाहरण मैंने अिसलिये दिया है कि रोगीकी दशामें भी हम दृढ निश्चयके साथ काम नहीं करते। यद्यपि मुझे आघात पहुंचा है कि अिस केसके अपूर्ण रह जानेसे अेक अच्छी मिसाल हाथ से जाती रही। फिर भी मैं आशा लगा कर बैठा था कि भगवान् अिस रोगसे पीडित व्यक्तिको भी मुझे सौंपेगा। अितनेमें तो बम्बअीसे कैंसरके रोगियों के दो तीन पत्र आ गये। अुन्होंने मेरा मार्गदर्शन मांगा। मैं जो कुछ जानता था वह अुन्हें लिख भेजा। अुन्होंने अुसके अनुसार प्रयोग करना शुरू किया। वे मेरी पुस्तक पढ़ते और अगर किसी बातसे अुन्हें सन्तोष न होता तो मुझे लिखकर पूछते। अिस प्रकार पत्रव्यवहार चलता रहा। अिसी दौरानमें बम्बअीमें लोअर पेरलमें सनमिलरोड़ पर व्यापार करने वाले शाह भीमशी गोपालका ता० ३०–११–'५९ का पत्र आया। अुसका अुपयोगी अंश अिस प्रकार है:—

"आपसे निवेदन है कि संवत् २०१४ के वैशाखमें मुझे गलेका कैंसर हो गया था। तब मुझे गले पर अेक गांठ मालूम होनेसे मैं अेक पड़ोसी डाक्टरके पास गया। अुन के साथ मेरा घर जैसा सम्बन्ध है। अिसलिये किसी प्रकारका लालच न रखते हुअे वे दूसरे ही दिन मुझे टाटा अस्पतालमें ले गये। जांचके बाद वहां मेरे गलेकी दायीं ओर २० लाअिटका करेंट अेक ही तरफ़ देनेसे वह गांठ गल गयी। क़रीब सवा बरस बाद ही मुझे पहली गांठकी जगहके पास ही दूसरी गांठ दिखायी दी। वह भी ९ लाअिट का करेंट देनेसे मिट गयी। अभी अेक ही मास होने आया है कि कानके पास सुपारीसे बड़ी अेक तीसरी गांठ फिर

हुअी है। अिससे कभी-कभी सिरमें टीस अुठती है और वेचैनी होती है। अब तो आपकी पुस्तक 'मानव-मूत्र' मिल जानेसे अपने पेशावका दिनमें तीन चार वार पान करता हूं और रोज़ शामको हलके हाथसे शरीर पर पेशावकी मालिश कराता हूं। आहारमें प्रतिदिन सुबह-शाम दो रोटी और मूंगका पानी लेता हूं। मेरा दिल वहुत घवराता है। आज तक गलेमें कुछ भी तकलीफ़ नहीं हुअी थी। और अब सिरमें टीस अुठती है तथा वेचैनी होती है। मुझे आहारमें क्या लेना चाहिये? पेशाव के साथ कितने अुपवास करने चाहिये? और भी जो कुछ सूचित करना चाहें, अवश्य करें।"

अुपर्युक्त पत्रके अुत्तरमें मैंने ता० ३-१२-'५९ को अुन्हें ज़रूरी हिदायतें लिख भेजीं और पेशाव पीनेके साथ-साथ अन्य अुपचार भी सुझाये। कानमें गर्म पेशाव की बूंदें डाली जायें। कैन्सरकी गांठ पर पेशावकी पट्टी रखकर सेंक किया जाय। दिनमें दो तीन वार अितने ज़ोर से पेशावके कुल्ले किये जायें कि पेशाव मांसपेशियोंके छिद्रोंमें दाखिल हो जाय। अिसी प्रकार आहारके विषयमें भी सूचनाअें दीं।

यह प्रयोग अुन्होंने ता० १०-११-'५९ को शुरू किया और ता० १७-१२-'५९ को तथा अुसके वाद अुनका विस्तृत पत्र आया। अुसमें वे लिखते हैं:—

"मेरी जो कैन्सरकी गांठ थी वह गल गयी है। पेशाव के प्रयोगसे वहुत ही फ़ायदा हुआ है। अब मुझे किसी भी प्रकार की पीडा नहीं है।"

* * *

"प्रयोगके आरम्भ से ही मैंने मूत्रपान अेवं मूत्रमालिश की है। अुस समय मेरा वज़न १८८ पौंड था और अब १५६ पौंड है। पहले मेरा शरीर वहुत वेडौल था। गैस के कारण तोंद लटकती थी, वह अब ठीक हो गयी है। शरीरमें सुस्ती रहती थी, वह भी अिस प्रयोगसे दूर हो गयी है। अब शरीर अेकदम प्रफुल्लित और स्वस्थ रहता है तथा

ज़रा भी थकान नहीं लगती। मेरे शरीरमें जो चरवी बढ़ गयी थी, वह अिस प्रयोगसे कम हो गयी है और शरीर सुडौल हो गया है। मैं दिनमें दो बार मूत्रपान जीवनपर्यन्त करना चाहता हूं। मुझे विश्वास हो गया है कि अैसा करनेसे मेरे स्वास्थ्यकी पूर्ण रक्षा होगी। मेरी पत्नी की आंख दुखती थी, जिसमें पेशाब की बूंदें डालनेसे आराम हो गया। अिसलिये अिस प्रयोगपर मुझे पूरा विश्वास हो गया है और मैं जीवनभर अिसका प्रचार करूंगा।"

किसीके दिलमें यह प्रश्न अुठ सकता है कि मैंने अितने विस्तार से क्यों लिखा? मैंने अितना विवरण अिसलिये दिया है कि भीमजीभाई जैसे साधारण शिक्षित हज़ारों भाअी-बहन समझ सकें और अुसमें से अपने लिये अुपयोगी मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। अिसके अतिरिक्त कैंसरका यह केस मेरे अपने अनुभवमें पहला ही है। अलग-अलग प्रकारके दो चार केसोंका मूत्रोपचार भिन्न-भिन्न पद्धतिसे चल रहा है। जिस कैंसर पर करेंट न लगा हो वह शीघ्र ही मिट जाता है। जिसपर करेंट लगाया गया हो अुसके मिटनेमें काफ़ी वक़्त लग जाता है। जिस पर शस्त्रक्रिया हुअी हो अुसके सुधरनेकी आशा कम रहती है।

अेक भाअीने मुझसे पूछा कि करेंट लगानेसे कैंसरकी गांठ गल जाती है; परन्तु फिरसे दूसरी जगह अधिक पीडाके साथ गांठ निकल आती है। अिसी प्रकार मूत्रप्रयोगसे मिटी हुअी गांठ फिरसे नहीं अुभरेगी, अिसका क्या भरोसा? अैसी शंका करना अनुचित है। क्योंकि करेंट से तो रोग निर्मूल नहीं होता, अपितु दब जाता है। मूत्रप्रयोग कैंसरके कारण-भूत विषैले तत्त्वोंको पहले नष्ट करता है और बादमें कैंसरकी गांठको गला डालता है। अिसलिये फिरसे वैसी गांठ अुभरनेका प्रश्न ही नहीं रहता। फिर सावधानताकी दृष्टिसे रोज़ाना अेकबार मूत्रपान किया जाय ताकि विषैला तत्त्व शरीरमें दाखिल न हो सके। नियमित मूत्रपानके कवच को धारण करके स्वास्थ्यकी चिन्तासे मुक्ति मिल सकती है।

२–ख. गलेका कैंसर

यह केस भी मेरे अनुभवसे पहले का है। श्री चिमनलाल गिरधरलाल की फ़र्म में काम करनेवाले श्री बाबूभाओी सोनी लगभग चार बरससे अिस मूत्रचिकित्सासे परिचित हैं और अुन्होंने मूत्रप्रयोग करवाये भी हैं। अुनके करवाये हुअे प्रयोगोंमें से दो-अेक प्रयोग यहां अुल्लेखनीय हैं। छोटी जीभके कैंसरके लिये अुन्होंने श्री छन्नालाल पटेलसे यह प्रयोग कराया था, जिसका विवरण पहले दिया जा चुका है। अुनका प्रयोग किसी हद तक शंकास्पद है। अिसलिये बाबूभाओी सोनी द्वारा ही कराये गये कैंसर संबंधी दूसरे प्रयोगकी अच्छी तरह जांच-पड़ताल करनेके बाद अुसे यहां प्रस्तुत कर रहा हूं।

श्री छन्नालाल पटेलका कैंसर मिट जानेके बाद श्री जूठाभाओी शाहने श्री बाबूभाओी सोनीको बताया कि अमुक स्थानमें अेक जैन साधु कैंसरसे पीडित हैं। अुन्होंने बम्बअीकी टाटा अिन्स्टिटयूटमें किरणें भी ली हैं, पर रोग मिटा नहीं। फिर बाबूभाओी सोनी अुनके पास गये। अुस समय अुनकी अुम्र क़रीब ४५ बरसकी थी। अुनके गलेमें कैंसर की गांठ थी। बम्बअी जाकर अुन्होंने गांठ पर किरणोपचार किया था। वह गांठ वहांसे हटकर गलेके दूसरी तरफ़ दिखायी दी। खांसी बहुत थी। जो डाक्टर अुनका अिलाज कर रहे थे वे कहते थे कि कैंसर के कारण खांसी है। अिसलिये कैंसरके मिटने पर खांसी मिट सकती है। डाक्टरने अुन्हें टाटा अस्पतालमें ले जानेकी सलाह दी। वे बम्बअी जानेकी तैयारीमें थे कि अेक रोज़ पहले बाबूभाओी सोनी अुनसे मिले और मूत्रोपचारकी बात की। अिसके अलावा अुन्होंने 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' नामक पुस्तक भी अुनको पढ़नेके लिये दी। अतः अुन्होंने बम्बअी जाना बन्द रखा। पुस्तक पढ़नेके दूसरे दिनसे ही अुन्होंने

अपना दिनभरका सारा पेशाब पीना शुरू किया और अुपवास करने लगे। साधुजीको अिस रोगके कारण नींद नहीं आती थी। मूत्रपानसे अुनका शरीर कोमल हुआ। तीन दिनमें खांसी मिट गयी। फिर तो अिस प्रयोगके प्रति अुनके दिलमें श्रद्धा पैदा हुअी। अुन्होंने मूत्रपान चालू रखा। प्रयोगके दौरानमें बाबूभाअी सोनी कभी कभी अुनके पास जाया करते थे और अुनके शरीरमें होनेवाले आश्चर्यजनक परि-वर्तन भी देखते थे। अब तो अुन्हें टट्टी साफ़ आने लगी और नींद भी अच्छी आने लगी। अुपवासके दौरानमें मूत्रपानके कारण अुनकी शक्ति बनी रही। बाबूभाअी सोनीको मूत्रमालिशका महत्त्व मालूम न था। यदि अुन्हें अिसका पता होता और साधुजी से मूत्रमालिश भी करवायी होती, तो साधुजीको पन्द्रह अुपवासके बजाय कम अुपवास करने पड़ते। अिस प्रयोगसे अुन्हें संपूर्ण आराम हो गया। अिस प्रयोगके क़रीब तीन महीने बाद बाबूभाअी सोनी साधुजीसे मिले, तब साधुजीने अुनसे कहा — "अब मुझे किसी प्रकारका रोग नहीं है।" आज भी वे साधु महाराज गुजरातमें विचरते हैं।

श्री बाबूभाअी सोनी ने अपने बालकके लिये भी अिस प्रयोगसे लाभ अुठाया है। वह हमेशा बीमार रहता था, पेशाबकी मालिश करनेसे अब अुसकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो गयी है और मस्ती करके अपना खाना हज़म कर लेता है।

अपने विवरणके अन्तमें बाबूभाअी सोनी लिखते हैं — "बहुतसे व्यक्ति यह प्रयोग करते हैं और अुसके बहुत अच्छे अच्छे परिणाम आये हैं। कितने ही व्यक्ति शरमके मारे अिसे प्रगट नहीं करते, किन्तु अुनके शरीरमें होनेवाले परिवर्तनोंको देखते हुअे मुझे तो लगता है कि वे अवश्य ही घर पर मूत्रका प्रयोग करते हैं, परन्तु प्रकट करनेसे हिचकते हैं। मेरा मानना है कि यदि मनुष्य अिस प्रयोगको अपना लें तो अिस दुनियामें कोअी भी रोग असाध्य नहीं रहेगा।"

३. पेटका कैंसर

कैन्सरका प्रकारण छपने जा रहा था कि कैन्सरसे छुटकारा पाने वाले अेक रोगीका विवरण मुझे प्राप्त हो गया। यह पहला रोगी है कि जिसका मूत्रोपचार मेरी देख-रेखमें हुआ है। मुझे अिस बातसे खुशी है कि अिस रोगीके अुपचारमें यथेष्ट सावधानता रखी गयी है।

श्री मफ़तलाल चन्दुलाल शाह पालनपुर म्युनिसिपलिटीके सदस्य हैं। अुनका तीन बरसका छोटा बालक सुभाष कैंसरका शिकार हो गया। आख़िर मूत्रोपचारको अपनाकर अुन्होंने अपने प्रिय पुत्रको मौतके मुंहसे बचा लिया। जिसका विवरण वे ता० २२–४–'६१ के पत्रमें अिस प्रकार लिखते हैं:—

"मेरा छोटा लड़का सुभाष गत वर्ष बीमार हो गया। अुसके पेटमें गांठ थी और अंडकोशमें पीप पड़ गयी थी। पीपको ऑपरेशनसे निकलवाना पड़ा था। ऑपरेशनका ज़ख्म भरता न था, अिसलिये डाक्टरकी सलाहसे मैं अुसे बम्बअी ले गया और कुछ अनुभवी डाक्टरोंको दिखाया और अन्तमें परेल पर स्थित टाटा मेमोरियल कि जहां कैन्सरका अुपचार होता है वहां दिखाया। टाटा मेमोरियलके डाक्टर बोरजीने अुसकी जांच की और अ‍ॅक्सरे लेकर बताया कि अुसके पेटमें कैन्सरकी गांठ है और सूचित किया कि पेट अेवं अंडकोश पर गहरी किरणें (डीप अ‍ॅक्सरेज़) लेनी पड़ेंगी। जिससे मैं और मेरे साथी चिन्तातुर अेवं व्याकुल हुअे और डाक्टर बालिगा, डाक्टर भणसाली तथा अन्य अनेक डाक्टरोंकी सलाह ली, परन्तु किसीने कोअी आशा न दिलायी। फिर तो तीन बरसके बच्चेको क़ुदरत पर छोड़ दिया।

"मैंने समाचारपत्रोंमें मानवमूत्रके बारेमें पढ़ा था। अुसका प्रयोग करनेका निश्चय किया। वहांके पोपटलाल झवेरीकी सलाहसे और मानव-मूत्र' पुस्तकके अनुसार अुसे दो दिन ही अुपवास पर रखा, क्योंकि वह तीन बरसका बालक था। अुपवासके दौरानमें अुसे केवल अुबाला हुआ पानी और अुसीका मूत्र पिलाया गया और सुबह-शाम अपने पेशाबसे

अुसके सारे शरीर पर मालिश की जाने लगी। शामकी मालिशका असर रातभर होने देते और सुवह गरम पानीसे साबुन विना अुसे नहलाया जाता। चार दिन बाद अुसके शरीर पर — सिर पर भी फोड़े निकल आये और अुनमें से पीप निकलने लगी। फोड़ों पर मूत्र-पट्टियां रखी जाती थीं। आखिर सात दिन बाद अुन्हीं पट्टियोंसे फोड़ोंके ज़ख़म ठीक हो गये। अुसे खानेके लिये बहुत ही हलका भोजन दिया जाता था। रोज़ाना मूत्रपान अेवं मूत्रमालिश चलती थी, जिससे अंडकोशका ज़ख़्म कम होता गया। अिसलिये आरामकी आशा बंधी और अुसे अपनी मांके साथ दक्षिणमें अपने मामाके यहां भेज दिया। अेक मास तक यह प्रयोग चला और वह पूर्ण स्वस्थ हो गया, ज़ख़म भर गया और गांठका तो निशान तक न रहा। फिर अुसे अमरावातीके डाक्टरोंको दिखाया, जिन्होंने कहा — 'अुसे कोअी रोग नहीं है।' प्रयोग तो चलता ही रहा। आठ दिन बाद अपने डाक्टरको साथ लेकर अुसे नागपुरके जनरल हॉस्पिटलमें दिखाया। वहां अुसके खून और पेशाबकी जांच करवायी। अुसकी जांघमें से ऑपरेशन करके टेस्ट करनेके लिये हड्डी निकाली और फिर अुन्होंने फ़ैसला दिया कि अब कैन्सर नहीं है। फिर अुसे किसी आरोग्यप्रद स्थानमें कुछ समय रखकर वापस पालनपुर लाया गया। अब वह स्वस्थ अेवं नीरोग है और बालमंदिरमें पढ़ता है। स्वमूत्रके प्रयोगसे मेरा छोटा लड़का मौतके मुंहसे बाल बाल बच गया। अिसके लिये आपका जितना भी आभार मानूं अुतना थोड़ा है। रूबरू मिलकर आपको बार-बार तकलीफ़ दी है, जिसके लिये भी मैं आपका कृतज्ञ हूं। अुसके बाद मैंने यहां दो तीन व्यक्तियोंसे यह बात की, अुन्हें भी आश्चर्य हुआ।

"यह अमूल्य पुस्तक — 'मानव-मूत्र' लिखकर आपने जनताकी अमूल्य सेवाकी है और अब भी कर रहे हैं, यह जानकर मुझे अत्यंत हर्ष हुआ है। यह अभिलाषा है कि अीश्वर आपके परिश्रमको अधिक सफल करे।"

४. अुपचार संबंधी आवश्यक सूचनाअें

कैंसरके रोगीके शरीरकी प्रकृति, अुसकी पेशाब पचानेकी शक्ति आदि देखकर ही अुपचारका सुझाव दिया जाना चाहिये। दूसरे रोगोंमें मूत्रप्रयोग धीरे-धीरे शुरू किया जा सकता है; परन्तु कैंसरके रोगमें अुसे तत्काल शुरू करना चाहिये। क्योंकि यह रोग बहुत तीव्र गतिसे बढ़ता है। अिसके अलावा कैंसरके रोगीके कानमें पीडा होती है, कान पक जाते हैं और सिरमें तीव्र अेवं असह्य टीस अुठती है। प्रयोगके दौरानमें भी रोगी अुस तीव्र पीडासे क्षणिक छुटकारा पानेके लिये ज़हरीली गोली या अन्य कोअी विषैली वस्तु लेनेंके लिये ललचाता है, जिससे वह तीव्र पीडा तो थोड़ी देरके लिये दब जाती है, किन्तु प्रयोग निष्फल हो जाता हैं। अिसलिये अति दृढता अेवं धीरताके साथ अुस पीडाको सह लेना चाहिये। परन्तु जिन ज़हरी दवाओंके खानेसे दर्द केवल थोड़ी देरके लिये शान्त हो जाता है और फिर अुत्तरोत्तर बढ़ता रहता है, अुन दवाओंका अुपयोग करके अधिक दुःखको न्यौता देनेका दुःसाहस न किया जाय और अिस प्रयोगको निष्फल बनानेकी धृष्टता न की जाय। कैंसरका रोगी मूत्रपान और मूत्रमालिशके अतिरिक्त निम्नलिखित अुपचार भी करे :—

(१) कानमें पिचकारी द्वारा धीरेसे गर्म पेशाव डालकर अुसे साफ़ करना और फिर अुसी पेशावकी बूंदें डालकर रुअीका फाहा दबा देना। अिस तरह दिनमें दो वार करना।

(२) पेशावसे भीगी हुअी कपड़ेकी पट्टियां अपने सिर पर (सिरके बाल वारीक कटा लेना) लगातार रखते रहना।

(३) ताज़े पेशावके कुल्ले दिनमें तीन बार करना। पेशावको मुंहमें खूब हिलाकर कुल्ले करना चाहिये।

(४) जीभ पर कैंसर हो तो पेशाबसे तर की हुअी बत्तीसे वार-वार जीभ घिसते रहना।

(५) जहां गांठ और सूजन हो वहां पर पेशाव की पट्टियां रखकर गर्म पेशाबसे सेंक करते रहना।

(६) अुपवासके दिनोंमें दिनरात का सारा पेशाव पी जाना। कुछ भी आहार, फल या फलका रस भी न लेना। अैसे अुपवासमें रोगी को अुसकी प्रकृतिके अनुसार दस्त लगें या अुलटियां हों तो घवरानेकी ज़रूरत नहीं है। शरीरमें जो विकार अर्थात् कैंसर की सामग्री होगी वह निकलने लगेगी। दस्त या क़ै में जो कुछ निकले अुसे ध्यानसे देखें और नोट कर लें; परन्तु घवरायें नहीं। विकार निकल जायगा तो दस्त या अुलटियां अपने आप कम होने लग जायेंगी। जिस दिन दस्त या क़ै बिल्कुल न हो अुस दिन समझ लें कि शरीरमें जमा हुआ हानिकारक पदार्थ अव निकल गया है। फिर दूसरे दिन अुपवास छोड़ें और अुस दिन मूत्रपान बन्द रखें। अुपवास छोड़नेके दिन लगभग आध पाव गर्म पानीमें अेक चमचा निंबूका रस और दो चमचे शहद मिलाकर अुसे चमचे से पियें। फिर धीरे-धीरे जितने अुपवास किये हों, अुतने दिन तक फलका रस, मूंगका झोल, दूध और पानी मिला कर तुलसीका काढ़ा आदि पेय लेते रहें। जैसे जैसे मंद जठराग्नि प्रदीप्त होती जाय वैसे वैसे आहारका परिमाण बढ़ाते जायें और धीरे-धीरे असली खुराक पर आयें। ठूंस ठूंस कर खानेकी ढिठाअी न करें। चाहे जैसी हलकी चीज़ भी मात्रासे अधिक खायी जाय तो वह हज़म नहीं होती और दस्त आने लगते हैं। अिसलिये खूव सावधान रहें और खानेके लिये अधीर वनकर सारी मेहनत पर पानी न फेर दें।

अुपवास छोड़नेके बाद जव तक पूर्ण स्वस्थ न हो जायें, तव तक दिनमें अेक दो बार तीन-तीन औंस पेशाव पीते रहें, मालिश करते रहें, परहेज़ पालते रहें और अन्य आवश्यक अुपचार करते रहें। कैंसर के रोगीको नमक बिल्कुल छोड़ देना चाहिये।

७

गलेकी गांठें

छोटी या बड़ी अुम्रमें बहुतसे व्यक्तियोंके गलेमें गांठें निकल आती हैं। ये गांठें कभी क्षयकी होती हैं, कभी कैंसरकी और कभी साधारण होती हैं। अिनसे गलेमें सूजन आ जानेसे खानेमें कठिनाअी होती है। अिनसे मुंह और आंखें भी सूज जाती हैं। अैसी गांठोंके साथ यदि सूअियों या नश्तरोंसे छेड़-छाड़ की जाती है और तत्काल किसी सरल अुपायसे अिन्हें नहीं मिटाया जाता है तो ये कैंसरका रूप धारण कर लेती हैं, अैसा अनेकोंका अनुभव है।

श्री जूठाभाअी अमरशी शाह हरिजन आश्रम साबरमतीमें रहते हैं। अुनके लड़केका नाम भरत है और अुसकी अुम्र १४ बरसकी है। अुसके गलेमें दोनों तरफ़ दो गांठें निकल आयीं, और मुंह पर सूजन आ जानेसे पानी पीनेमें भी तकलीफ़ होती थी। अिसलिये चिन्तातुर जूठाभाअी अपने अेक परिचित डाक्टरके पास अुसे ले गये। डाक्टरने जांच करके सलाह दी कि अुसे तत्काल गुलाबबाअी अस्पतालमें ले जाकर डा० सुमन शाह को दिखाया जाय। अुन्होंने अपनी दवा अिसलिये नहीं दी कि कहीं गांठें पक जायें और गलेके अंदर ही फूट जायें तो बच्चेकी जान पर आ बने। अिसलिये अुन्होंने डा० सुमन शाह की सूचनाके अनुसार अुपचार करना ठीक समझा। अपने डाक्टरकी बात सुनकर जूठाभाअी और अधिक चिन्तातुर हुअे और फ़ौरन् अपने लड़केको अस्पतालमें ले गये। अुस समय डा० सुमन शाह वहां से चले गये थे। पूछ-ताछ करने पर मालूम हुआ कि वे दो चार रोज़के बाद आयेंगे। अस्पतालके दूसरे व्यक्तियोंने जूठाभाअीसे कहा कि अपने लड़केको दोपहरके समय किसी दूसरे डाक्टरको दिखा दें। वे किसी दूसरे डाक्टरको दिखाना नहीं चाहते थे। अिसलिये वे लड़केको लेकर डा० सुमन शाहके

निजी दवाखानेमें पहुंचे। दोपहरके बारह बज चुके थे। अिसलिये वहांसे भी डाक्टर साहब अपने घरके लिये निकल चुके थे। आखिर बाप-बेटा थककर वापस अपने घर आये।

जूठाभाअीके पास स्व० आर्मस्ट्रॉङ्गकी पुस्तक—"वॉटर ऑफ़ लाअिफ़" थी। अुसे निकालकर वे ध्यानपूर्वक पढ़ने लगे। पुस्तकमें अत्यन्त विश्वास के साथ यह बात लिखी थी कि गले की अैसी गांठें मूत्रप्रयोग से शीघ्र ही गल कर साफ़ हो जाती हैं। फिर अुन्होंने अपने लड़के से मूत्रप्रयोग का ज़िक्र किया और अुसे समझानेका प्रयत्न किया। हर रोज़ दवाखानेमें जाना होगा। रोज़ पांचसात रुपयेके अिजेक्शन लेने होंगे। और ज़्यादा खर्च अुठाना होगा। अिन सब झंझटोंसे बचने के लिये मूत्रप्रयोग करना ही अच्छा है। और डाक्टर ने कहीं ऑप-रेशनकी सलाह दे दी तो अुसमें जानका खतरा है। बापकी बात बेटे की समझमें आ गयी और वह प्रयोग के लिये तैयार हो गया। भरतभाअी अपने पेशावको अेक ही घूंटसे मुंह बनाकर पी गया। परन्तु मानी हुअी घृणाके कारण तुरन्त अुलटी हो गयी, जिससे कुछ पेशाव बाहर निकल गया। फिर भी अुस दिन अुसे कुछ पीडा नहीं हुअी और पिता मूत्रपानके लिये बार-बार समझाते रहे। दूसरे दिन अुसने ज़्यादा पेशाव पिया। अुसे क़ै न हुअी और दर्दसे काफ़ी आराम मिला। अब तो अुसे विश्वास हो गया कि वह ठीक हो जायगा। तीसरे दिन तो वह छः से आठ औंस पेशाव आंखें बन्द करके गटगट पी गया। तीन ही दिनमें अुसका दर्द तो दूर हो गया। पांच छः दिन और प्रयोग चला और छठे दिन गले की दोनों गांठें घुल गयीं।

श्री जूठाभाअीका कहना हैं कि अिस घटनासे मूत्रोपचारमें अुन दोनों की श्रद्धा पक्की हो गयी है।

८

पेटके रोग

१. अम्लपित्त — पेटका दर्द और ज़खम

श्री जी० वी० केलकर अेक महाराष्ट्री सद्‌गृहस्थ हैं। वे अहमदाबादके नवरंगपुरा प्रदेशकी श्रीमाली सोसायटीमें रहते हैं। अुन्होंने मूत्रप्रयोगके बारेमें अपना अनुभव मुझे मअी १९५८ में लिख भेजा था जिसका आवश्यक अंश नीचे लिख रहा हूं:—

"मेरे पेटमें खूब दर्द होता था। मेरे हाथ कांपते थे। अेक मित्रने मुझे मूत्रप्रयोगकी सलाह दी। अिसलिये मैंने अपनी हथेलियों पर पेशावसे मालिश करनेका निश्चय किया। दो तीन दिनकी मालिशसे हथेलियोंका कंपन बन्द हो गया। जिससे मेरे दिलमें अिस प्रयोगको जारी रखनेकी श्रद्धा और हिम्मत पैदा हुअी। आज मैं कहता हूं कि अुस समय मैं तीव्र अम्लपित्त (हाअीपर ऐसिडिटी) से पीडित था और मेरे मेदे में ज़खम हो गये थे। पच्चीस बरस तक सभी प्रकारकी दवा कर चुका था, परन्तु कुछ आराम नहीं हुआ था। मैं पेशाबके कुल्ले करने लगा और शरीर पर मूत्रमालिश शुरू कर दी। अेक हफ़्तेमें तो मेरे शरीरमें काफ़ी शक्ति आ गयी, जिससे प्रेरित हो कर मैंने मूत्रपानका निश्चय किया। दिनभरमें तीन चार बारमें अेक पूरा गिलास पी डालता था। अेक ही सप्ताहमें मुझे अितना आराम हो गया कि जिसे शब्दोंमें नहीं बता सकता हूं। मैं अेक मास तक मूत्रपान करता रहा और अब तीव्र अम्लपित्तसे मुक्त हुआ हूं। मेदे के ज़खम भी ठीक हो गये हैं। अब मुझे अच्छी भूख लगती है।

"मैं अपने अनुभवसे यह मानने लगा हूं कि जो व्यक्ति जीवनकी अंतिम घड़ी तक स्वस्थ रहना चाहता है अुसके लिये मूत्र अमृतकी

अपेक्षा जरा भी कम नहीं है। मूत्र हमें अुत्तम आरोग्य प्रदान करता है और असाधारण छूतके रोगोंसे हमारी रक्षा करता है। आन्तरिक श्रद्धा अेवं विश्वासके अतिरिक्त अिसका और कुछ भी मूल्य नहीं लगता। अतः ग़रीब जनताके लिये यह अत्यन्त कल्याणकारी औषध है। अिसके परिणाम शीघ्र अेवं स्थायी होते हैं।

"अब मेरी आयु ६७ बरसकी है। फिर भी मुझमें अितनी शक्ति है कि मैं अपना स्वाभाविक काम कर सकता हूं। यह सब प्रताप मूत्रप्रयोगका ही है।"

२. पेटका दर्द

श्री चतुरभाअी भाअीलालभाअी आणंदके पासके मोगरी गांवमें रहते हैं। अुनकी पत्नीका शरीर ज्यादा मोटा था और अुसके पेटमें दर्द रहता था। अपनी लड़कीके कानकी पीडा बिल्कुल मिट जानेसे मूत्रोपचारमें अुनकी श्रद्धा दृढ हो चुकी थी। अिसलिये अपनी पत्नीके पेट-दर्दके लिये अुन्होंने अुसी अुपचारका आलंबन लिया और मूत्रमालिशसे मूत्रप्रयोगका श्रीगणेश किया। अेक हफ़्तेकी मालिश से ही अुनकी पत्नी की हालत सुधरने लगी। कुछ आराम मालूम होने लगा और शरीरमें कान्ति अेवं स्फूर्ति दिखायी देने लगी। मूत्रके साथ कुछ दिनका अुपवास भी करवाया गया। लगभग अेक मासके प्रयोगसे अुनकी पत्नीका पेट-दर्द मिट गया, शरीर अच्छा हुआ और स्फूर्ति अेवं शक्ति आयी।

३. क़ब्ज़

अहमदाबादके कालुपुर विभागकी खजूरीकी पोलमें श्री प्रवीण चन्द्र परीख रहते हैं। अुन्हें क़ब्ज़ रहता था, अुनके शरीरमें चरबी बहुत बढ़ गयी थी, हृदयमें घबराहट रहा करती थी और स्मरणशक्ति भी कम हो गयी थी। अिस लिये वे अपनी ज़िंदगी से भी अूब गये थे। वे अरविंद मिलकी अेक दुकानमें नौकर थे। वे श्री रणजीतभाअीके

पास कअी बार जाया करते थे। जो अुन्हें मूत्रोपचार आज़मानेकी वार-बार सलाह दिया करते थे। आखिर अुनके दिलमें कुछ श्रद्धा पैदा हुअी और वे गुपचुप मूत्र पीने लगे। चार दिनके बाद रणजीतभाअीके पास अपने मूत्रपानकी बात की और साथ ही यह शिकायत की कि अुन्हें खूब गरमी महसूस होती है। अुन्हें समझाया गया कि गरमीसे घबरानेकी ज़रूरत नहीं है, यह तो अपने आप शान्त हो जायगी। गरमीके कारण कुछ खाज भी होती थी। वे धीरजसे दिनमें तीन बार —सुबह, दोपहर और शाम अपना पेशाब पीते रहे। गरमी तो थोड़े दिनोंमें ही शान्त हो गयी। ढाअी महीनेके प्रयोगसे अुनका क़ब्ज़ दूर हो गया, शरीर हलका हुआ, दिलकी बेचैनी दूर हुअी और दिमाग़ की भ्रान्ति मिट गयी। अब वे रुचिपूर्वक आहार करने लगे। अुन्होंने ढाअी महीने तक नमक बिलकुल छोड़ दिया था और ख़ास तौरसे वे खाखरा, दूध, करेले तथा परवलका साग खाते थे।

४. पुराना क़ब्ज़

अहमदाबादमें ढालकी पोलमें श्री गमनलाल कालिदास परीख रहते हैं। अुन्हें बहुत बरसोंसे क़ब्ज़की शिकायत थी। वे कलकत्तामें रहा करते थे। वहांसे आनेके बाद अुनके सारे शरीरमें खाज होने लगी। अुन्होंने अिक्कीस दिन तक डाक्टरोंके यहां चक्कर लगाये और अनेक अिंजेक्शन लिये। परन्तु तकलीफ़ दूर न हुअी, अतः निराशा ने अुन्हें घेर लिया। अेक दिन रात ही रातमें अुनके सारे शरीर पर सूजन आ गयी और मुंह तो रावण जैसा भारी-भरकम हो गया। वे रणजीतभाअीको पहिचानते थे। अुन्हें बुलवाया और अपने दुःखकी बात कही। रणजीतभाअीने अुन्हें डाक्टरी अिलाज तुरन्त बन्द कर देनेकी सलाह दी, जिसे अुन्होंने मंजूर किया। फिर अुन्हींके परामर्श से वे मूत्रप्रयोग करनेके लिये तैयार हो गये। किन्तु अेक बड़ी कठिनाअी

यह थी कि अुन्हें दिनमें अेक वार प्रातःकाल ही पेशाव आता था। अिसलिये मालिशके लिये अुनके लड़केके पेशाबको जमा रखनेके लिये सूचित किया गया। दूसरे ही दिनसे वे अपना पेशाव तो पीने लगे और लड़केके पेशाबसे मालिश करवाने लगे। सबसे पहले पैरके तलवों पर मालिशकी गयी, फिर क्रमशः सिर, मुंह, छाती और पीठ पर की गयी। अिस तरह सारे शरीर पर मालिश करते-करते जब पेड़ू पर मालिश की जाने लगी, तो तुरन्त ही टट्टीकी हाजत हुअी। पहले तो अुन्हें अैसी आदत थी कि चायके तीन प्यांले पेटमें डालते और चार बीड़ियां फूंकते, तब कहीं जाकर बड़ी कठिनाअीसे बकरीकी लेंडी जैसी टट्टी आती थी। परन्तु आज तो मालिशके दौरानमें ही अुन्हें टट्टी के लिये अुठना पड़ा। जैसे अरहरकी वोरी का मुंह खुलते ही तेज़ीसे अरहर निकलने लगती है, वैसे ही अुनके मलाशयसे मल निकल गया। दोपहर और शामको भी खूब खुलकर टट्टी हुअी। दूसरे दिन जब रणजीतभाअी मालिश करने आये तव मालूम हुआ कि अुनके शरीरमें ७५ प्रतिशत सुधार हो गया है। दो दिनकी मूत्रमालिश अेवं मूत्रपान से अुनके शरीरमें अितनी शक्ति तथा स्फूर्ति आयी कि वे अपनी सुसराल यानी धोलका भी चले गये। वहां भी अुन्होंने तीन दिन प्रयोग चालू रखा और वे संपूर्ण स्वस्थ हो गये।

५. स्थायी क़ब्ज़

श्री केशवभाअी मकनभाअी मास्टर सूरत ज़िलेके हजीरा गांवकी पाठशालाके शिक्षक हैं। अुन्होंने अपने दादाके अुपदेशसे अपने तीन बच्चों के आरोग्यके लिये मूत्रप्रयोग किया था, जिसका विवरण 'बालकका आरोग्य' नामक प्रकरणमें दिया है। फिर अुन्हें मेरी पुस्तक पढ़नेका मौक़ा मिला, जिससे अुनकी मूत्रसंबंधी श्रद्धा और पक्की हो गयी। अुन्होंने अपने स्थायी क़ब्जक़ो दूर करनेके लिये जो मूत्रप्रयोग किया अुसका विवरण अुन्होंने अिस प्रकार लिख भेजा है:—

"सर्व प्रथम अीश्वरका ध्यान करके सात्त्विक पेयसे सात्त्विक बुद्धिकी याचना की।

"ता० १०–४–'५९ — दोपहरको दो तोला पेशाब पानीके साथ पिया, शामको क़रीब ढाअी तोला पिया।

"ता० ११–४–'५९ — कलकी तरह सुबह, दोपहर और शाम, यों तीन बार दस तोला पेशाब पानीके साथ पिया। दोपहरको मलकी अेक गांठ निकली। शामको अेक नरम टट्टी हुअी।

"ता० १२–४–'५९ — सुबह, दोपहर और शामको कुल पन्द्रह तोला पेशाब ही पिया, जुलाब की तरह दस्त हुआ। मल निकल गया अन्तमें पस जैसी कुछ बूंदें निकलीं।

"ता० १३–४–'५९ — सुबह, दोपहर और शाम कुल लगभग सात तोला पेशाब पिया। दो दस्त हुअे।

"ता० १४–४–'५९ — तीन बार में बारह तोला पेशाब पिया। परिणामतः कड़ी भूख लगी।

"ता० १५–४–'५९ केवल सुबह अेक बार ही पेशाब पिया। भूख खूब लगी थी। पेट भी रूअी जैसा नरम हो गया था।

"अुपर्युक्त अुपचारसे मेरा स्थायी क़ब्ज़ दूर हो गया। मेरे दादा पेशाबके बारेमें कहा करते थे कि पेशाब तो हळपतियोंका डाक्टर है। अुन्हें चाहे जितनी चोट लगी हो तो भी वे काम करते रहते हैं; क्योंकि वे तुरन्त मूत्र पी जाते हैं। वे बुजुर्ग तो डाक्टर के साथ पेशाब की तुलना करते हुअे कहते थे कि जैसे अेक कुशल डाक्टर रोगीके रोगको परख लेता है, वैसे पेशाब भी रोगीके शरीरमें से रोग को खोज निकालता है। अिसी लिये अिसका अुपयोग करनेसे शरीरका रोगी भाग अपने आप अच्छा हो जाता है।

"स्थायी बद्धकोष्ठता (क़ब्ज़) के कारण मेरी आंतों पर खराब असर हुआ और अनेक बार वे सूज भी जाती थीं। जिसके लिये मैंने ता० ५–११–'५९ से पन्द्रह दिनका मूत्रप्रयोग किया और वह व्याधि भी अब मुझे बिलकुल मालूम नहीं होती।

६. मंदाग्नि, गैस और क़ब्ज़

असलाली-निवासी श्री लालजीभाअी हीराभाअी पटेल अभी अहमदाबादमें रहते हैं। अुनकी अुम्र ४३ सालकी है। समाचार-पत्रोंमें मूत्रचिकित्साके मेरे स्वानुभवकी बातें पढ़कर अुन्होंने अपनी सूझ-बूझ के अनुसार अपना दुःख दूर करनेका निश्चय किया। मूत्रप्रयोगसे स्वस्थ होनेके दो महीने बाद मेरे अेक परिचित व्यक्तिके साथ वे मुझसे मिलने आये और मूत्रप्रयोगसे अुन्हें जो आराम हुआ था अुसका हाल सुनाया। बादमें तो अपने रोगको निर्मूल करनेके लिये अुन्होंने जिस तरहसे मूत्रचिकित्साका प्रयोग किया था, अुसका विवरण मुझे लिख भेजा। अुन्हें पांच वर्षसे आंतोंकी तथा पाचन शक्ति मंद होनेकी शिकायत थी। प्रतिवर्ष अुन्हें डाक्टरकी दवाअी लेनी पड़ती थी और अेक दो महीने दवा लेनेके बाद कहीं आराम होता, किन्तु फिर कुछ दिनोंके बाद वही दर्द अुठ जाया करता था। आख़िर वे आर्थिक और शारीरिक दृष्टिसे ख़ूब तंग आ गये और अन्तमें गत दीपावली पर अुन्होंने डाक्टरी दवा लेनी बन्द कर दी। किन्तु गर्मीमें वे फिर बीमार पड़े। अुस समय मेरे प्रयोगवाला लेख अुनके पढ़नेमें आया। अुन्होंने मेरी सलाह या सूचना लिये बगैर अपने आप मूत्रप्रयोग शुरू किया और ठीक डेढ़ महीने बाद वे पूर्ण स्वस्थ हो गये।

वे ता० १५–१०–'५८ के विवरणमें विशेषरूपसे लिखते हैं—

"मुझे दमेकी जो साधारण पीडा थी वह अिस प्रयोगसे मिट गयी है। अिस मूत्रप्रयोगमें केवल श्रद्धा और आत्मसंयमकी आवश्यकता है। मुझे अपने अनुभवसे तो यही लगा है कि वयोवृद्ध रावजीकाकाने अपने लेखमें शास्त्रीय दृष्टिसे जो सलाह-सूचनाअें दी हैं अुनका पूरी तरहसे पालन किया होता तो मुझे अितने लम्बे समय तक यह प्रयोग न करना पड़ता।

"अपने मनकी कमजोरीके कारण मैं वीड़ी और चीनी नहीं छोड़ सका। अगर अिन दोनों वस्तुओंको मैं छोड़ देता तो मुझे अवश्य ही शीघ्र फ़ायदा हो जाता, अैसा मुझे प्रतीत होता है। मैंने प्रयोगका श्रीगणेश अिस प्रकार किया था :—

"शुरूमें आठ दिन तक सवेरेसे शाम तकका सारा पेशाव मैं पी जाता था, फिर धीरे धीरे दिनमें चार वार पेशाव पीता था और आख़िरी दस दिनोंमें तो प्रातःकाल अेक वार ही पीता था। अिससे पेटमें जो गैसका दर्द तथा क़ब्ज़ रहता था अुसमें वहुत फ़ायदा मालूम हुआ। साथ ही मैं अेक महीने तक रोज़ रातका पेशाव रख लिया करता था और दूसरे दिन सुवह अेवं रातको अुसी पेशावसे आध घंटे तक सारे शरीरकी मालिश करता था। मुझे जितना पीनेसे फ़ायदा हुआ था अुतना ही मालिश करनेसे फ़ायदा हुआ। मालिशसे मेरे शरीरकी चमड़ीके रंगमें फ़र्क मालूम हुआ और पैरके तलवोंमें पहले जो ख़ूव पसीना होता था वह अव विलकुल वन्द हो गया तथा पैरके तलवों की चमड़ी भी कोमल और अच्छी हो गयी। मुंह पर गर्मीकी जो फुंसियां थीं वे भी मिट गयीं।

"अिसके अलावा कमरमें जो पीडा होती थी वह भी मिट गयी। आज मैं ख़ूव अच्छी तरहसे काम कर सकता हूं और अव मैं प्रतिदिन १४ घंटे काम करता हूं। अपनी वीमारीके समय मैं निराश और सुस्त होकर वैठा रहता था, आज मेरे शरीरमें किसी प्रकारकी निर्वलता नहीं है और पूरी स्फूर्तिसे काम करता हूं।"

श्री लालजीभाअीने अपने विवरणमें परहेज़ न पालनेका भी ज़िक्र किया है, जिससे अुनके हृदयकी निर्मलता अेवं सरलताका दर्शन होता है। मूत्रचिकित्साके प्रयोगमें आवश्यक सावधानता और परहेज़ रखनेमें अुन्होंने जो लापरवाही की है अुसे मैं अेक मिसाल समझता हूं। क्योंकि सव लोग प्रायः अैसी लापरवाही करते हैं। फिर भी अपने आप किये हुअे प्रयोगसे अुन्हें लाभ तो हुआ ही है। अुनका कहना

अेकदम यथार्थ है कि अगर अुन्होंने बद-परहेज़ी न की होती तो अुनका रोग डेढ़ महीनेके बजाय दस बारह दिनमें ही मिट गया होता। अिससे यह फलित होता है कि जिन्हें स्वयं अनुभव हुआ हो वे मूत्रकी अमोघ शक्तिको समझ सकते हैं। परन्तु दुनिया भरके डाक्टरी महाविद्यालयोंमें पारंगत डाक्टर अिसे कैसे समझ सकते हैं? और ये पारंगत लोग गंवार समझे जानेवाले आदमीके अनुभवको मूर्खता समझें तो अुस गंवार मनुष्यके दिलमें अुन पारंगतोंके प्रति जो भाव पैदा होगा अुसमें अुसका क्या दोष?

यह वर्णन पूरा करते-करते अेक जानने योग्य बात और बता दूं। श्री लालजीभाअी प्रयोग करनेके बाद स्वस्थ होने पर मुझसे मिलने आये और अपने अनुभव मुझे बताने लगे। तब मैंने अुन्हें स्वाभाविक प्रश्न पूछा, "क्या आपको पेशाब पीते समय घृणा न आयी?" मेरा प्रश्न सुनकर अुन्होंने अपने बचपनकी आपबीती मुझे कह सुनायी। अुन्होंने कहा, "जब मैं क़रीब दस वर्षका था तब मेरे शरीर पर ददोरे जैसे बड़े बड़े छाले अुठ आये। मुझे बहुत पीडा होती थी। मेरे गांवके अेक वृद्ध वैद्यने मेरे पिताको दवाअी बतायी कि अगर मुझे तीन चार दिन गधेका मूत्र पिलाया जाय तो छाले मिट जायेंगे। गधेका मूत्र है, अैसा अगर मुझे मालूम पड़ जाय तो मैं नहीं पीअूंगा, अैसा मेरे पिताजीको विश्वास था। अिसलिये अेक दिन सवेरे वे कपड़े पहनकर तैयार हुअे और मुझे कहने लगे, 'मैं अहमदाबाद जा रहा हूं, दोपहरको वापस आअूंगा। अमुक-अमुक व्यक्तिसे मिलना है और किसी डाक्टरसे मिलकर तेरी बीमारीका हाल सुनाकर दवा भी लेता आअूंगा।' यों कहकर वे घरसे बाहर निकले और सीधे कुम्हारोंकी बस्तीमें गये। अेक कुम्हारसे अुन्होंने कहा, 'मैं थोड़ी देरमें आता हूं, अिस अरसेमें अिस शीशीमें गधेका मूत्र भरकर रखना।' फिर वहांसे खेतमें गये और दोपहरके लगभग बारह बजे शीशी लेकर आये और कहने लगे, 'अमुक भाअी तो नहीं मिले। फ़लां भाअीने वादा

किया है। आखिर डाक्टरके पास जाकर यह पीनेकी दवा लेता आया हूं। रोज़-रोज़ अहमदावाद न जाना पड़े अिस खयालसे अेक साथ चार रोज़ की दवा लेता आया हूं।' यों कहकर चायके प्यालेमें दवा डालकर मुझे दी। मैं मुंह विगाड़ कर पी गया। क़रीव चार दिन मैंने वही दवा पी और मेरे छाले मिट गये। मैं पूर्ण स्वस्थ हो गया। वादमें मुझे मालूम हुआ कि मैंने जो दवा पी थी वह डाक्टरकी दवा नहीं थी, लेकिन गधेका मूत्र था। अव वताअिये, मैंने अनजाने गधेका पेशाव भी पिया है, तो जान वूझकर अपना पेशाव पीनेमें भला घृणा कैसी? मैंने तो अिसकी अपेक्षा भी अधिक वदवूदार और वेस्वाद अनेक दवाअियां पी हैं।"

७. मंदाग्नि, गैस आदि

श्री वावूभाअी सोनी स्वयं कपडवंजके निवासी हैं। अुन्होंने अपने अेक मित्रको मूत्रचिकित्सा संवंधी अंग्रेज़ी पुस्तक पढ़नेके लिये भेजी। अुसे पढ़कर अुन्होंने खुद प्रयोग करनेका निश्चय किया। अुनकी अुम्र ४८ वरस की थी। अुनके पेटमें गैस की वड़ी तकलीफ़ थी। मन्दाग्निके अतिरिक्त अुन्हें और भी कअी शिकायतें थीं। वे सदा पेशावकी मालिश करते हैं, सुवह अेक वार अपना पेशाव पीते हैं और संपूर्ण स्वस्थताका आनन्द लेते हैं। अुनके पुत्र की अुम्र ३० वरस की है। जिसके शरीरमें चरवी वढ़ गयी थी और जिसे मन्दाग्नि अेवं गैसकी भी शिकायत रहती थी। वह निरंतर मूत्र-पान करता है। जिससे अुसको वहुत फ़ायदा है। वह कहता है कि जव भी शरीरमें कुछ वेचैनी-सी लगती है, तव अेक गिलास पेशाव पीनेसे वह तुरन्त दूर हो जाती है।

मा—१२

८. गैस और क़ब्ज़

अहमदाबादके रायपुर विभागमें शामलाकी पोलमें रहनेवाले श्री जयंतीलाल चिमनलाल शाहने अपनी रोगमुक्तिका विवरण ता० २४–९–'५९ को मुझे लिख भेजा था, जिसे यहां देता हूं :—

"आपकी लिखी पुस्तक 'मानव-मूत्र' मैंने अहमदाबाद म्युनिसिपल कार्पोरेशनके स्टोर सुपरिन्टेंडेंट श्री अंबालाल के० पटेलसे लेकर पढ़ी। अुसमें भिन्न-भिन्न असाध्य रोगों पर किये गये सफल मूत्रप्रयोगोंके विवरण पढ़कर मैंने खुद प्रयोग करनेका विचार किया।

"मुझे वहुत समयसे पेटमें वायु और क़ब्ज़का रोग था, जिसके कारण पेटमें वायीं ओर कभी कभी पीड़ा भी होती थी, शरीरमें वेचैनी रहती थी और जुकाम आदिकी तकलीफ़ भी हो जाती थी। मैंने सवसे पहले प्रातः अेक गिलास मूत्र पीना शुरू किया। पहले दिन स्वभावतः थोड़ीसी घृणा हुअी, परन्तु दूसरे दिनसे मूत्रका परिमाण और समय वढ़ाया। दिनभरमें दो तीन वार अेक अेक गिलास यानी १२ से १४ औंस पेशाव पीने लगा। दूसरे दिन ही शामको दो तीन दस्त हुअे और पेटमें से वहुतसा मल वायुके साथ निकल गया। यही क्रम पांच दिन तक चलता रहा। और फिर सुवह नियमित शौच होने लगा। केवल सात दिनके मूत्रप्रयोगसे मेरे पेटकी गैस, क़ब्ज़ियत और पीडा विलकुल मिट गयी।"

९. जलोदर

श्री जयन्ती लाल चि० शाह अपने विवरणमें आगे लिखते हैं —

"अनेक वर्ष पहले आपके अिस मूत्रप्रयोगको, पालनपुर स्टेटके राजवैद्यने मेरे चचेरे भाअी श्री चन्दुलाल त्रिकमलाल शाह पर जलोदर रोगके लिये आज़माया था। राजवैद्यने अुन्हें मूत्रके साथ अिक्कीस दिन का अुपवास कराया था, दिनभरका सारा पेशाव वे पी जाते थे और

अुनके पेट पर पेशावसे भीगी हुअी पट्टियां रखवाई थीं। शुरूमें दो तीन दिन तक तो अुन्होंने बड़ी मुश्किलसे पेशाब पिया था। तीसरे ही दिन अुन्हें क़ै और दस्त खूब आने लगे, जिनमें केवल पित्त और पानी आंतों तथा जठरमें से खिंच कर निकलने लगा। अिक्कीस दिनमें अुनका पेट बिलकुल हलका और नरम हो गया। अुपवास छोड़नेंके बाद दिनभरमें अुन्हें मट्ठेके पानीके साथ पांच छः रूखे खाखरे दिये जाते थे और लगभग पन्द्रह महीने अिसी आहार पर रखा गया, जिससे वे संपूर्ण स्वस्थ अेवं सशक्त हो गये।

"मैं अपने अनुभवसे यह दृढतासे कहता हूं कि समझदार और नासमझ दोनों वर्गोंमें यह मूत्रप्रयोग प्रचलित हो जाय तो मानव-जीवनका कल्याण हो जाय। मैं यथाशक्ति अिसका प्रचार भी करता हूं।"

अुपर्युक्त घटना कुछ बरस पहले की है। अिस प्रकारका अुपचार करनेवाले राजवैद्य पालनपुरमें रहते थे। वे अभी ज़िंदा नहीं हैं। अिस घटनाका अुल्लेख तो अिसलिये किया है कि रोगीके लिये जब दूसरा अुपचार कारगर न हुआ तब राजवैद्यने यह अुपचार सुझाया, जिसे रोगीने स्वीकार किया और पूरा आराम पाया।

अनेक वैद्य, साधु-संत या गांवके बूढ़े अिस अमूल्य साधनको जानते थे और अब भी जानते हैं। जो हिम्मतके साथ अिसका योग्य अुपयोग करते हैं वे जीवनभर अिससे बहुत लाभ अुठाते हैं।

९

आंत के रोग

१. अुपान्त्रशोथ (ॲपेंडिसाअिटिस)

डाक्टर मगनलाल सलारिया अहमदाबादके अेक प्रामाणिक डाक्टर अेवं वैद्य हैं, और मुख्यतः आयुर्वेदिक पद्धतिसे ऑपरेशन करते हैं। अुनका औषधालय सरसपुरके चौराहे पर है, जिसमें रोगियोंको रखनेकी भी व्यवस्था है। अुन्हें मूत्रचिकित्सामें बहुत श्रद्धा है। अिस समय अुनकी आयु ६५ सालसे भी अधिक है। वे स्वस्थ हैं, फिर भी मूत्रको अपने लिये अेक निर्दोष द्रव्य मानते हैं। रोगसे दूषित वातावरणमें मूत्र शारीरिक स्वास्थ्यकी रक्षाके लिये अेक फ़ौलादी बकतर है, अिस तथ्यकी जांच करनेके लिये अुन्होंने चार मास तक अपना पेशाव पिया और दिनमें अेक बार पथ्य आहार किया। तीन मासमें ही अुनके शरीरमें अधिक स्फूर्ति आ गयी और शरीर लाल-सुर्ख़ हो गया। बुढ़ापेके कारण मुंह पर जो झुर्रियां पड़ गयी थीं वे मिट गयीं और वज़न भी १४ पौंड बढ़ गया। फिर तो वे नियमित मूत्रपान करने लग गये। आज केवल मूत्रपान करते हुअे अुन्हें अेक बरससे भी अधिक हो गया है। वे पेशाबसे भरी हुअी बड़ी शीशी अपने साथ रखते हैं, ज्योंही प्यास लगती है, अुसे पी जाते हैं और पानी प्रायः नहीं पीते हैं। अुनका पेशाब गंधरहित अेवं नलके पानी जैसा होता है। अितने अरसेमें केवल अेक बार यह प्रतिक्रिया हुअी थी कि अेक दिन अेक ही बारमें लगभग चार पौंड पेशाब आया, जिससे अुन्हें कमज़ोरी महसूस होने लगी। तब दो दिन मूत्रपान बन्द रखनेसे वह कमज़ोरी दूर हो गयी। अिससे अुन्हें किसी भी प्रकारकी आकुलता नहीं है, अपितु अुनमें अति स्फूर्ति अेवं शक्ति है। अितनी बड़ी अवस्थामें भी १२–१५ घंटे काम करते हुँ, पर थकते नहीं है। अुनके पास जो रोगी आते हैं, अुन्हें मूत्रोपचारके

लिये प्रेरित करते हैं और यथासंभव अुसी अुपचारसे ठीक करते हैं। साथ ही मूत्रोपचारका खूब प्रचार भी करते हैं।

डाक्टर सलारियाने आंत वढ़नेके रोग (अॅपेंडिसाअिटिस) को मूत्रोपचारसे ठीक किया है, जिकसा विवरण अिस प्रकार है :—

"श्री रमणलाल त्रिवेदी ३० वरसके अेक जवान हैं। अनेक वर्षोंसे अुन्हें क़ब्ज़ था और वे पहले संग्रहणीसे पीडित रह चके थे। अनके पेटके दायें भागके कोनेमें तीव्र वेदना होने लगी और बुख़ार भी हो गया। किसी डाक्टरने निदान किया कि अुन्हें अॅपेन्डिसाअिटिस है, अिसलिये ऑपरेशन कराना पड़ेगा। फिर सर्जनके तौर पर डा० सलारियाको बुलाया गया। अुन्होंने रोगीको अपने दवाख़ानेमें दाख़िल होनेकी सलाह दी और कहा कि यदि ज़रूरत होगी तो ऑपरेशन भी किया जायगा। वह रोगी ५ अक्तूबर सन् १९५८ को अुनके चिकित्सालयमें दाख़िल हुआ। अुन्होंने ऑपरेशन तो नहीं किया, किंतु अुसे समझाकर मूत्रप्रयोग शुरू करवा दिया। अुसे दिनमें तीन बार — सुबह, दोपहर और शाम अपना पेशाव पिलाया गया और अुसीके दो पिंट अर्थात् ढ़ाअी पौंड पेशावका अॅनिमा दिया गया, जिससे खूब मल निकल गया। दूसरे और तीसरे दिन भी यही अुपचार किया गया। जिसका परिणाम यह आया कि पेट और आंतोंमें जमा हुआ पुराना सूखा मल वाहर निकल गया और रोगी नीरोग हो गया।"

डा० सलारियाने अुपर्युक्त विवरण मूझे नूतन वर्षके अभिनन्दनके साथ दिया, जो मेरे लिये नये बरसका शुभ शकुन था।

बड़ी आंतकी सूजन और सड़न (कोलाअिटिस)

अपथ्य आहारसे अनेक लोग छोटी या बड़ी आंतकी बीमारीका शिकार हो जाते हैं। श्री योगेन्द्र परीख बी० अॅससी० (खेती) को अैसी बीमारी हुअी थी, जो अुनके लिये बहुत दुःखदायक सिद्ध हुअी। वे खादी ग्रामोद्योग अन्वेषण समिति, हरिजन आश्रम, अहमदाबादमें

काम करते हैं। अुन्होंने अपनी बीमारीसे मुक्ति पानेके लिये जो जो अिलाज किया था अुसे नोट कर रखा था। जब ॲलोपैथी और होमियो-पैथीसे अुनका रोग न मिटा, तब अुन्होंने बम्बअीके अपने परिचित डाक्टर अदल बहराम ॲम० डी० की सलाहसे मूत्रोपचारको अपनाया और पूरा आराम पाया।

१२, १३ मार्च, १९६० को हरिजन आश्रममें 'मूत्रचिकित्सा-विचार-विनिमय सभा' हुअी थी, जिसमें अुन्होंने भी अपनी रोगमुक्तिका विस्तृत अेवं व्यवस्थित विवरण पढ़कर सुनाया था। अुसे बहुत अुपयोगी तथा मार्गदर्शक समझकर ज्योंका त्यों नीचे दे रहा हूं। अुन्होंने जिन जिन डाक्टरोंसे अपना अिलाज करवाया है अुनमें से आवश्यक नाम ही मैंने दिये हैं।

"अहमदाबादकी अप्रैल महीनेकी गरमीके कारण मेरा शरीर कुछ अस्वस्थ रहता था। अप्रैलकी पहली तारीखको मुझे फ़्लू हुआ। स्वस्थ होनेके बाद मअी महीनेके पहले सप्ताहमें अिकतरा मलेरिया शुरू हुआ। अेकाध हफ़्ता यह बुखार रहा। अिस दौरानमें सख्त गरमीके कारण दस्तोंकी संख्या बढ़कर पांच तक जा पहुंची। दीर्घायु कपास (पॅरेनियल कॉटन)के मौसिमका काम पूरा हो गया था और पृथक्करण (analysis)का मेरा काम चालू था, जिसमें १२ से १४ घंटेका समय सहज ही लग जाता था। दस्तोंकी संख्या बढ़नेके साथ-साथ वायु और पेटदर्दकी शिकायत हो गयी तथा टट्टीमें खून आने लगा।

"अब डाक्टरको दिखानेकी ज़रूरत खड़ी हुअी। और मैं अपने मित्र डाक्टरसे मिला। अुन्होंने मुझे गेहूं, तेल और मिर्च छोड़ देनेकी सलाह दी और दवा लिख दी। वह दवा लगभग पन्द्रह दिन चली। परन्तु कुछ भी आराम न हुआ। अिसलिये फिर डाक्टरके पास गया। दवामें थोड़ा परिवर्तन किया गया। अिमेटीनके अिंजेक्शन लगवाने शुरू किये, परंतु तबीअत अुत्तरोत्तर अितनी बिगड़ती गयी कि १९ जून सन् १९५९ को मुझे सिविल हॉस्पिटलमें दाखिल होना पड़ा। वहांके तीन

अनुभवी डाक्टरोंके मार्गदर्शनमें अिमेटीनके अिंजेक्शन चालू रहे। अिलाजके लिये खून, टट्टी और पेशाब तीनोंकी जांच की गयी। अॅमेबिक डिसेंट्रीकी आशंका थी, पर रिपोर्टसे वह सच न निकली। टट्टीमें खून आता था, किन्तु रिपोर्टसे कुछ पता न चलता था। अिसलिये डाक्टरोंने कोलाअिटिसके कारणोंकी भिन्न-भिन्न शक्यताओंका पता लगानेके लिये दो तीन बार टट्टीकी जांच की। पेटमें कीड़े हों तो अुन्हें निकालनेके लिये क्रिस्टॉअिड्ज़की गोलियां दी गयीं। अिससे दस्तोंकी संख्या बढ़ गयी, परन्तु निकला कुछ भी नहीं। कोलाअिटिसका कारण जाननेके लिये सिग्मोअिडोस्कोपिक अॅग्ज़ामिनेशन किया गया। पहले दिन प्राथमिक जांचसे मालूम हुआ कि खूनी बवासीर (ब्लीडिंग पाअिल्स) है। दूसरे दिन दूसरे डाक्टरने सर्जिकल केसकी दृष्टिसे फिर सिग्मोअिडोस्कोपसे मेरी जांच की। अुन्होंने बताया कि मुझे 'अल्सरेटिव कोलाअिटिस' है। बड़ी आंतकी थोड़ी भीतरी चमड़ी और खून लेकर जांचके लिये भेजा गया। परन्तु अल्सरेटिव कोलाअिटिसका कारण समझमें न आया। अब मेरा केस सर्जिकल तो न रहा, फिर भी अुस डाक्टरने अपने मित्र डाक्टरके कहनेसे मुझे अपनी देखरेखमें रखा। बीचमें तीन चार दिन मैं अस्पताल छोड़कर वापस प्राअिवेट वार्डमें दाखिल हुआ। अिस दौरानमें टट्टीमें खूब खून आने लगा और मेरा वज़न १२० पौंड से घटकर १०० पौंड तक पहुंच गया। शरीरमें खूनकी कमी आ जानेसे डाक्टरकी सलाहसे दो बार मैंने नया खून लिया, जिसका अच्छा असर हुआ अर्थात् खून आना बंद हो गया। परंतु दो तीन दिन बाद दूसरी बार खून लेनेसे फिर रोग अुभर आया। अिस अिलाजके दौरानमें अे० सी० टी० अॅच०, स्ट्रेप्टोमेन्टीन, स्ट्रेप्टो-पेनिसिलिन, बायस्टेपन फ़ोर्टके अिंजेक्शन तथा सल्फ़ाग्वानीडीन और स्पास्मीडोनकी गोलियां चालू थीं। मेरी दशा कुछ सुधरी। अिसलिये मैंने डाक्टर नायरकी सलाह ली। अुन्होंने विटामिन बी० के अिंजेक्शन और अनुकूल आहार लेनेकी सूचना दी। मैंने अन्तमें अुनसे पूछा, 'अितने सब अुपचार करा

लेने पर भी किसीको मेरे रोगका कारण समझमें नहीं आया। रिपोर्टसे भी कुछ पता नहीं चलता। आपका क्या खयाल है?' अुन्होंने अुत्तर दिया, 'मानसिक चिंता भी अल्सरेटिव कोलाअिटिसका कारण हो सकती है। अिसलिये आप मनके भारको कम करके प्रसन्न होकर रहेंगे तो अिस रोगसे शीघ्र मुक्त हो जायेंगे।' अस्पतालसे छुट्टी लेनेसे पहले डा० अॅन० सी० शाहने कहा, 'हमने रोगको रोका है। यह फिरसे अुभरेगा, परन्तु हम अिसे मिटा नहीं सकते।'

"मेरा सारा कुटुंब वम्बई था। तवीअत कुछ अच्छी थी, अिसलिये मैं वम्बअी गया। रोगका कारण जानने अेवं मनको सन्तुष्ट करनेके लिये मैंने डाक्टर पटेलसे फिर जांच करवायी। परन्तु अुससे शारीरिक वेदनाके सिवाय मुझे और किसी वातका पता न चला। आखिर भगवानका नाम लेकर अिस आशयकी चिट्ठियां डाली गयीं कि मुझे अॅलोपैथिक अिलाज कराना चाहिये या होमियोपैथिक। मैंने स्वयं अेक चिट्ठी अुठायी। अुत्तर होमियोपैथिक अिलाजका आया और शीघ्र ही मैंने अुस पर अमल किया।

"मैंने अपने कुटुंवके वरसों पुराने डाक्टर अदल वहरामको फ़ोन करके अपना निश्चय वताया और अुन्होंने अपनी दवाअी देनी शुरू कर दी। अुन्होंने मुझे ग्रेफ़ाअिटिस, मर्कसोल, नक्सवोमिका, मर्ककोरोसिव, कार्वोवेज आदिकी गोलियां दीं। वम्वअी आकर अिस अुपचारको शुरू करनेसे पहले मेरा वज़न घटकर ९४ पौंड तक आ चुका था। अर्थात् ढ़ाअी महीनेमें मेरा वज़न ३३ पौंड घट गया था। टट्टी खूब चिकनी थी। पहलेकी तरह खून आने लग गया था। वायु, पेटदर्द आदि भी चालू थे। वहुत समयसे मैं दही लेता था, जिससे अूव गया था। खानेकी रुचि भी जाती रही थी और जो कुछ खाता था वह अुल्टी होकर निकल जाता था।

"होमियोपैथिक अिलाज शुरू करनेके समय यह स्थिति थी। मेरा केस क्रॉनिक था। डा० अदल वहरामने शुरूमें मुझे फटे हुअे

दूधके पानी और बिल्वके पानी पर रखा। धीरे धीरे मूंगका पानी और सेव लेने लगा। लगभग दो हफ़्तेमें कांजी, खिचड़ी और कढ़ी लेने लग गया। होमियोपैथिक दवासे मैं ठीक होने लगा। अेक मासमें मेरी हालत अितनी तेज़ीसे सुधरने लगी कि डाक्टर आख़िरी अुभारकी आशंका करने लगे और वह सच निकली। चौमासेकी ऋतुमें सर्दीके कारण बुख़ार आने लगा और फिरसे ख़ून भी गिरने लगा। दो हफ़्तेमें फिर ठीक हो गया और अहमदाबाद आनेसे पहले डा० अदल बहरामसे फिर मिला।

"जब मैं बम्बअीमें था तब 'मानव-मूत्र' नामक पुस्तक मेरे हाथमें आयी। अपने रोगकी विशेष जानकारीके लिये मैं आयुर्वेदकी पुस्तकें तो पढ़ता ही रहता था। अिसलिये सहज भावसे मैं अिसको पढ़ने लगा, अुत्सुकता बढ़ती गयी और अेक ही बैठकमें पूरी पुस्तक पढ़ गया। बम्बअी छोड़नेसे पहले मैंने अपनी बात-चीतके दौरानमें डा० अदल बहरामसे 'मानव-मूत्र' तथा 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' का ज़िक्र किया। अुन्होंने कहा, 'मैं अिस अुपचारके अनुयायियोंसे मिला हूं। आपको भी मैं यही अुपचार करनेकी सलाह देता हूं; क्योंकि होमियोपैथीकी अपेक्षा आपके लिये यह अुपचार ज़्यादा अच्छा रहेगा।' मैंने तुरन्त पूछा, 'तो फिर आज तक आपने मुझे क्यों नहीं सूचित किया।' अुन्होंने अुत्तर दिया, 'आपके घरमें सभी अिससे घृणा करते होंगे और शायद आप भी अिसके लिये तैयार न हों, यह सोचकर मैं चुप रहा।' फिर मैंने पूछा, 'क्या सारा पेशाब पीना अनिवार्य है?' 'नहीं, दिनमें तीन बार अेक-अेक गिलास पीना। शुरूमें आधा पानी मिलाकर पीना, फिर धीरे-धीरे पानीका परिमाण कम करते जाना,' अैसा अुन्होंने बताया। मैंने पूछा, 'आहार कैसा लेना चाहिये?' अुन्होंने कहा, 'सादा और हलका।'

"डाक्टरने मुझसे कहा कि वे ख़ुद अिस प्रयोगको करते थे और अनुकूलताके अनुसार दूसरे रोगियोंसे करवाते थे। अुन्होंने २२ बरस तक अॅलोपैथीकी प्रैक्टिस की। अुसके बाद डायबिटीज़ (मधुमेह) के अनुसंधानके

लिये वे लंदन गये। अुस दौरानमें अुन्होंने होमियोपैथीका अध्ययन अेवं अनुसंधान भी शुरू कर दिया और डिग्री प्राप्त की। फ्रांस गये, अनुसंधान जारी रखा, नयी डिग्री प्राप्त की और अन्तमें स्वदेश लौटकर अॅलोपैथीको तिलाञ्जलि दे दी। होमियोपैथीकी प्रैक्टिस शुरू की। अब वे बम्बअीके होमियोपैथिक कालेजके प्रिंसिपल हैं।

"अहमदाबाद आने पर चौमासेकी ख़राब ऋतु चल रही थी। अुसमें रोग फिर अेक बार अुभर आया और टट्टीमें ख़ून आने लगा। वज़न घटने लगा। मैंने डा० अदल बहरामको बम्बअी फ़ोन किया। मूत्रप्रयोगके लिये अुनकी अनुमति लेकर अुसे शुरू कर दिया। मूत्र-प्रयोगकी पुस्तक मेरी पत्नी नीलमने पढ़ी थी। अुनकी हिम्मत और धैर्यसे मैंने तीन दिनका अुपवास किया। डाक्टरकी सूचनाके अनुसार मैंने दिनमें तीन बार मूत्रपान किया और तीनों ही दिन पुस्तकमें बतायी हुअी विधिके अनुसार सारे शरीरकी मूत्रमालिश करवायी। मूत्रपानके दूसरे दिन पेशाबका रंग बदल गया। अब पेशाब पानी जैसा साफ़ हो गया, पर स्वादमें ज़रा खारा था।

"तीन दिनके अुपवासमें दस्तोंकी संख्या बढ़ते-बढ़ते ७–८ तक पहुंच गयी, ख़ून अधिक आने लगा। परन्तु सप्ताहभरमें वह धीरे धीरे कम हो गया। दूसरे सप्ताहमें दस्तोंकी संख्या अपने आप ठीक हो गयी और तीसरे सप्ताहमें तो मैं चलने-फिरने लग गया। आज मैं बिलकुल ठीक हूं। मैंने तला हुआ और मिर्चमसालेवाला भोजन छोड़ दिया है। अब यदि मैं आगामी ग्रीष्म ऋतु सुखपूर्वक बिता दूं तो यह कहा जा सकता है कि मूत्रप्रयोग शत-प्रतिशत सफल हुआ। यद्यपि आज ९५ प्रतिशत सफलता तो मिल चुकी है। फिर भी वैज्ञानिक दृष्टिसे अिसकी अंतिम अेवं निश्चयात्मक कसौटीके परिणामकी प्रतीक्षा करना आवश्यक है।

"आर्थिक दृष्टिसे विचार करें तो अॅलोपैथिक अिलाजमें मेरे ६०० रुपये ख़र्च हुअे हैं, होमियोपैथिक अुपचारमें ३ रुपये ख़र्च हुअे हैं और मूत्रोपचारसे अेक पाअीका भी ख़र्च किये बिना मैं स्वस्थ हो गया

हूं। ग़रीबोंके लिये कल्पवृक्ष-रूप अिस अुपचारका वैज्ञानिक अन्वेषण हो, अैसा मूत्रप्रयोगके अनुभवियोंमें से भला कौन नहीं चाहेगा?"

१०

गुरदे के रोग

१. गुरदेकी सूजन (नॅफ्राअिटिस)

श्री अंबालाल के पटेल, बी० अॅससी०, अॅल० अॅल० बी० अहमदाबाद म्युनिसिपलिटीके स्टोर सुपरिंटेंडेंट हैं। अुन्होंने सन् १९५८ में मूत्रप्रयोग द्वारा अपने अेक असाध्य समझे जानेवाले रोग अर्थात् रीढ़के अकड़ाव (स्पोंडेलाअिटिस) से मुक्ति पायी थी, जिसका विवरण संधिवातके प्रकरणमें दिया जानेवाला है। तभी से वे अिस प्रयोगके समर्थक अेवं प्रचारक हुअे हैं। अुन्होंने अिसी प्रयोगसे अपनी छोटी लड़कीको नॅफ्राअिटिस अर्थात् गुरदेकी सूजनसे मुक्ति दिलायी है, जिसका विवरण अिस प्रकार है:—

लड़कीका नाम नारायणी है, जिसकी अुमर ७–८ साल की है। अिस छोटी अवस्थामें वह नॅफ्राअिटिसका शिकार हो गयी। जिससे अुसके पेशावमें खून और पस आने लगी, शरीर कमज़ोर होने लगा, गलेमें पीडा हो जाती थी और बुख़ार भी आ जाता था। दिन-ब्रदिन कमज़ोरी बढ़ती जाती थी। अेक डाक्टरकी सलाह से अेक बरस पहले गलेके टॉन्सिल्स (कौवे) कटवा डाले थे। फिर भी गलेकी तकलीफ़ और पीडा तो बनी रही। अिस रोगको असाध्य माना जाता है और खास कर स्त्रियोंके लिये तो यह रोग भयंकर समझा जाता है। अिसलिये अिसके अुपचारमें और आहार-विहारमें बहुत सावधानता रखनी पड़ती है। साथ ही प्रतिदिन अिस बातकी जांच करना ज़रूरी है कि पेशाबमें अॅलबूमन, पस, खून आदि कितने निकलते हैं। दवाके अतिरिक्त रोगीकी परिचर्या पर भी खूब ध्यान देना पड़ता

है। अिसलिये रोगीके साथ-साथ परिचर्या करनेवाला भी खूब तंग आ जाता है और अिलाज भी बहुत खर्चीला होता है। श्री अंबालाल पटेल ता० २३–९–'५९ के अपने विवरणमें लिखते हैं:—

"मैंने अपनी लड़की चि० नारायणीको मणिनगरके लल्लुभाओी गोरधनदास अस्पतालमें अेक सप्ताह तक रखा था। अुसके बाद घरमें दस दिन तक वही अिलाज चलता रहा। अुस समय तो रोग तुरंत शान्त हो गया, किन्तु दो तीन सप्ताह बाद अुसी रोगका प्रबल आक्रमण हुआ, और पेशाबमें सिर्फ़ खून ही आने लगा। अब मैं निराश हो गया। मेरे दामाद बम्बअीमें रहते हैं। वे अेडिनबर्गके अेम० आर० सी० पी० हुअे हैं। अुनकी सूचना थी कि प्रतिदिन दस गोलियों और पेनसिलिनके अिंजेक्शनों का कोर्स शुरू कर दिया जाय, जो छः मास तक चले। परन्तु अुस अुपचार पर मेरा विश्वास नहीं जमा। छः महीने तक अिस भयंकर रोगके लिये रुकना मुझे पसन्द नहीं था। मैं तो पहले से ही अुससे मूत्रप्रयोग करवाना चाहता था। परन्तु मेरी पत्नी अिसका विरोध करती थी। मैंने अपनी पत्नीसे कहा कि मुझे यह प्रयोग क्यों करने दिया? मेरी अपेक्षा क्या लड़की अधिक प्यारी है? भला वे क्या अुत्तर देतीं? पर मैंने अुन्हें समझाया और वे मान गयीं। चि० नारायणी भी मान गयी। अुसके पेशाबमें तो पस और खून था, जिसे पीते हुअे वह कांप रही थी, फिर भी अुसे पिलाया। कंपकंपीके साथ दुःखकी मारी वह पी गयी। पेशाब अेक ही औंस था, पर अुसका जादू-सा असर हुआ। थोड़े समय बाद जो पेशाब आया वह बहुत ज्यादा था, किन्तु गाढ़ा न था, अुसे भी अुसने पी डाला। फिर तो जो पेशाब आता वह पानी-सा स्वच्छ होता। अुसे भी विश्वास हो गया कि कुछ अच्छा असर हुआ है। अिसलिये दिनमें दो तीन बार वह दो औंस पेशाब पीने लगी। यों लगातार लगभग पंद्रह दिन पेशाब पीनेसे अुसका रोग नष्ट हो गया। अितना ही नहीं, महीनों बाद यह विवरण लिख रहा हूं, अिस दौरानमें फिर कभी रोग दिखायी नहीं

दिया, मुंह या सिरकी किसी तकलीफ़ने अुसे नहीं सताया और वह चलने-फिरने अेवं दौड़ने लगी गयी है।

"अिसके अतिरिक्त फ़्लू, मलेरिया जैसे बुखारमें भी अपने दूसरे बच्चोंको दो तीन वार अुन्हींका दो तीन औंस पेशाव पिला कर रोग-मुक्त किया है।

"विशेषत: मेरे संपर्कमें जो आते हैं, अुन्हें मूत्रप्रयोगकी सलाह देता हूं। वहुतसे लोगोंने अिस प्रयोगसे गुहांजनी, आंख आना, आंखकी लाली, कान पकना, मुंहासे, फोड़े-फुंसी, हृदयकी धड़कनका वढ़ जाना, जुकाम जैसे रोगोंको मिटाया है। डाक्टर जोशी मेरे अेक मित्र हैं। अुन्होंने टी० वी०के दो ग़रीव रोगियोंको, जो अपने अिलाजके वहुत ज्यादा खर्चसे तंग आ गये थे, मूत्रप्रयोग समझाया, जिसे करके वे रोगमुक्त हो गये। वे रोगी टी० वी० के क्लिनिकमें अिलाज करवा कर थक चुके थे। मूत्रप्रयोगने अुन्हें विना ख़र्चके ही स्वस्थ अेवं चलता-फिरता वना दिया। मुझे स्वयं यह प्रयोग किये हुअे डेढ़ वरस हो गया और मेरा कितने ही वरसोंका असाध्य समझा जानेवाला रोग मिट गया। केवल रोग ही नहीं मिटा, अपितु नयी कोमल चमड़ी आ गयी, पट्ठे, जोड़ आदि मज़वूत हो जानेसे स्फूर्ति अेवं शक्ति आयी। मेरा शरीर पहलेसे वहुत अच्छा हो गया है। अव भी सप्ताहमें अेक दो वार प्रसंगवश मूत्रपान करता ही रहता हूं। सर्दीकी छींकें आते ही तुरंत मूत्र पीनेसे जादूकी तरह सर्दी मिट जाती हैं। सचमुच मनुष्यके लिये स्वमूत्र अमृत समान है, अैसी मेरी प्रतीति है। यह कोअी अंध श्रद्धा की वात नहीं है, किन्तु प्रयोगसे निश्चित किया हुआ सत्य सिद्धान्त है।"

२. पेशावका रुक जाना

डाक्टर मगनलाल सलारियाके पास अेक विचित्र केस आया। रोगीका नाम नाथा केसराजी है। वह पावैया जातिका है। अुसकी अुमर ३५ वरसकी थी। अुसने २१ वरसकी अुमरमें अपनी जननेन्द्रियका

छेदन करवा लिया था। अुस का पेशाब रुक गया। पेशाबकी नलीमें अितनी सूजन आ गयी कि अुसे सिविल अस्पतालमें दाखिल होना पड़ा। वहां पेशाब करानेके लिये अुसकी मूत्रेन्द्रियमें सलाअी डाली गयी, किन्तु पेशाब नहीं हुआ और सलाअीसे पीडा असह्य हो गयी। डाक्टरी अिलाजने अुसकी नाकमें दम कर दिया। आखिर किसी परिचित व्यक्तिने अुसे डा० सलारियाके पास भेजा। ता० ५–१२–'५९ को वह अुनके दवाखानेमें दाखिल हुआ। पेशाबका जो रास्ता बन्द हो गया था अुसके नीचे ऑपरेशनसे दूसरा रास्ता बनाया जाय तो रोगीको आराम मिल सकता था। जांच के बाद डाक्टरको मालूम हुआ कि सूजनसे पेशाबकी नली बंद हो गयी है। फिर भी ऑपरेशनसे पहले अुन्होंने मूत्रप्रयोग आज़मा लेनेका विचार किया। मूत्रप्रयोगमें तो रोगीको अुसीका मूत्र पिलाना होता है। परन्तु अुस रोगीको तो पेशाबकी अेक बूंद भी न आती थी। अैसी स्थितिमें किसी स्वस्थ व्यक्तिका मूत्र पिलाना पड़ता है। अिसलिये मजबूर होकर डाक्टरने अपना मूत्र अुसे पिलानेका विचार किया।

डाक्टर सलारियाने अुक्त रोगीको रातके ११ बजे तक तीन बार अपना पेशाब पिलाया। रातको लगभग ढाअी बजे बीमारकी खाटके पास जाकर अुन्होंने आश्चर्यकारी दृश्य देखा। वह रोगी खर्राटे ले रहा था। और अुसका बिस्तर पेशाबसे तर हो गया था। पेशाब होता ही रहा, परन्तु रोगीको अुसका बिलकुल भान न था। वह जागा तो अुसे काफ़ी आराम महसूस हुआ। फिर तो अुसे अपना ही पेशाब पिलाया जाने लगा, जिससे अुसके शरीरमें भरा हुआ सारा पेशाब निकल गया। यह है पेशाबकी आश्चर्यजनक शक्ति!!!

आर्मस्ट्रॉंगने अपनी पुस्तकमें अेक बहनका ज़िक्र किया है, जो गुरदेके रोगसे पीडित थी और जिसे बड़ी मुश्किलसे खून अेवं पससे मिला हुआ गाढ़ा पेशाब आता था। अुसी पेशाबको पीनेसे अेक घंटेमें अुस बहनको दो सौ औंस पेशाब हुआ था। अिसी प्रकरणके आरंभमें नॅफ़्राअि-

टिससे पीड़ित लड़की नारायणीका हाल लिखा जा चुका है। अुसे पस और खूनसे मिश्रित अेक औंस मूत्र पिलानेसे खुलकर पेशाव आने लगा था और शीघ्र ही वह पानी-सा स्वच्छ हो गया था। स्वमूत्रमें यह अलौकिक शक्ति है।

नाथा केसराजी दो तीन दिनमें ही ठीक हो गया और डा० सलारियासे विदा लेकर खुशी खुशी अपने घर चला गया।

३. मूत्रपीडा और अन्य अनेक रोग

श्री डाह्यालाल मकनजी झवेरी मोरवी (सौराष्ट्र) के निवासी हैं। वे वम्बअीमें जौहरीका व्यवसाय करते हैं। अुनकी आयु ८१ बरसकी है। अति वृद्ध होनेसे नासिक रोड पर कुवेर भवनमें आरामके लिये रहते हैं। अुन्होंने मूत्रप्रयोगसे अपूर्व लाभ अुठाया है। अुन्होंने अपनी रोग-मुक्तिके वारेमें अुत्साहपूर्वक जो पत्र मुझे लिखा है वह काफ़ी लंबा है। फिर भी वैसे वीमारोंके हितकी दृष्टिसे मैं अुसे नीचे दे रहा हूं। 'मानव-मूत्र' को पढ़कर जैसे अुन्होंने फ़ायदा अुठाया है वैसे दूसरे लोग भी अुठायें, अिस विचारसे 'मानव-मूत्र' पुस्तकके प्रचारके लिये अुन्होंने अेक हज़ार रुपये भारत सेवक समाजके कार्यालयमें भेज भी दिये हैं। अुनकी तो यह भी अिच्छा है कि अपनी जन्म-भूमि मोरवी में किसी कुशल वैद्यको रखा जाय, जो मूत्रप्रयोग द्वारा रोगियोंको नीरोग अेवं स्वस्थ बनाये। प्रभु अुनकी अिच्छा पूर्ण करे।

अुनका ता० २–४–'६० का पत्र अिस प्रकार है:—

"परोपकारी श्रीमान् रावजीभाअी म० पटेल,

"मुझे भी लगता है कि मूत्रप्रयोगसे मुझे जो लाभ हुआ है वह आपकी सेवामें लिख भेजूं ताकि अन्य अनेक रोगी भी लाभ अुठा सकें। यद्यपि मैं अपना नाम प्रकट करना नहीं चाहता था, परन्तु आपके अुचित अनुरोधके कारण मुझे अपना पूरा नाम-पता देनेमें कोअी आपत्ति नहीं है। मेरे रोगका विवरण अिस प्रकार है:—

"चार बरस पहले मुझे पेशाबकी बहुत तकलीफ़ थी। सर्जनोंकी राय से मैंने प्रोस्टेट ग्लैन्ड (मूत्राशयके मुहँ पर गांठ) का ऑपरेशन कराया। क़रीब अेक महीना अस्पतालमें रहकर मैं घर आया। परन्तु पेशाब रुक-रुक कर आने लगा, पीडा होती थी और जलन भी। सर्जनसे जब यह बात की, तब अुन्होंने कहा, 'गांठ काट डालनेके बाद ज़ख़म भर जानेसे नस सिकुड़ गयी है। अिस लिये नली डालकर अुसे ज़रा चौड़ा करना होगा। डाक्टरने वैसा किया। परन्तु मुझे असह्य पीड़ा हुअी और अुस समय मैं बेहोश भी हो गया। अुसके बाद अेक महीने तक मैं चारपाअीसे लगा रहा। ख़ूब ख़र्च भी किया, फिर भी पीडा ज्यों की त्यों बनी रही। सर्जनने फिर नली डालनेकी सलाह दी। पहले की असह्य पीडाके कारण मैं फिरसे वैसी हिम्मत न कर सका और चालू पीडाको सह लेनेमें ही सन्तोष माना। यह स्थिति चार बरस तक रही। अिस दौरानमें जब पेड़ूमें थोड़ासा पेशाब अिकट्ठा हो जाता तो तुरंत मुझे पेशाबके लिये अुठना पड़ता। अिसलिये रातको रोज़ तीन-चार बार पेशाबके लिये अुठता और ठंड लगने पर तो पांच-छः बार अुठना पड़ता। जिससे नींद ख़राब होती। अिस तरह रातको बार-बार अुठनेसे ठंडी हवा सहन करनी पड़ती, जिससे सरदी हो जाती। फिर कफ निकलता और दोनों बग़लोंमें बेहद दर्द होता। करवट लेकर सोया भी न जाता। अिस तरह महीने दो महीनेमें हवा लगती कि पीडा खड़ी हो जाती।

"कन्सल्टेंट (राय देनेवाले) डाक्टरोंको दिखायें तो वे पेशाब, ख़ून, टट्टी और कफकी रिपोर्ट मांगते हैं, अेवं अुन्हें अॅक्सरेके फ़ोटो भी बताने पड़ते हैं।

"मैंने मन मारकर यह सब किया। १६ अॅक्सरेके फ़ोटो बतलाये। तब डाक्टरने कहा कि बग़लोंमें सर्दीके पॅचिज़ हैं, जिनमें कफ भर गया है, अिसलिये दर्द होता है। जिसके लिये २१ दिन तक दवा लेनेकी सूचना दी और कअी अिंजेक्शन दिये। अिन प्रयोगोंसे सारे

शरीरमें अैसी खुजली अुठी कि चंवलवाले रोगीकी तरह खुजलाते-खुजलाते सारा शरीर खरोंचोंसे भर गया और कहीं कहीं खून भी निकल आया। रात दिन चैनसे वैठ नहीं सकता था। कंधों और छातीमें दर्द होता था। डाक्टरने हृदयकी जांच करानेको कहा। गरम दवाअियोंके कारण पेशाब भी बूंद बूंद आता और असह्य पीडा होती। मैं गरम पानीके टबमें बैठता तब कहीं थोड़ा आराम पाता।

"डाक्टरने गुरदेमें पथरीकी संभावना बतायी। नहीं तो अैसी पीड़ा न होती। अिसलिये अुसका अिलाज भी चला।

"मेरे भतीजेको हॉर्ट अॅटैक हुआ था और ब्लड-प्रॅशर भी था। अुसने आपकी लिखी हुअी पुस्तक मंगाकर पढ़ी थी और तदनुसार मूत्रप्रयोग भी किया था। वह सुबह शाम मेरी तबीअतका हाल पूछने आया करता था। अुसने अेक दिन ज़िक्र किया कि आपकी पुस्तकके अनुसार मूत्रोपचार करनेसे अुसे कुछ लाभ हुआ है। अिसलिये मैंने वह पुस्तक मंगायी। अस्वस्थ होते हुअे भी मैंने सारी पुस्तक पढ़ डाली। तीसरे दिन मैंने अपने ४० बरसके फॅमिली डाक्टरको बुलाया और अुनसे यथाविधि मूत्रप्रयोग करनेकी सलाह मांगी। वही डाक्टर मेरे भतीजेका भी अिलाज करते थे। मेरे भतीजेको मूत्रप्रयोगसे जो लाभ हुआ था अुसे वे जानते थे। अिसलिये अुन्होंने मुझसे कहा, 'मेरी दवाअी बंद करें और यह प्रयोग कर देखें। मैंने मूत्रप्रयोग शुरू कर दिया।

"मैं रोज़ाना तीन बार पेशाब पीने लगा और मैंने दूसरी सब दवाअियां बंद कर दीं। मुझे सुबह क़ब्ज़ रहता था, अब मूत्रपानसे टट्टी साफ़ आने लगी और पेशाब भी ठीक होने लगा। साथ ही पुराने पेशाबसे मैं मालिश भी करने लगा और बादमें गर्म पानीसे स्नान कर लेता था। अिस तरह अेक महीने तक यह प्रयोग चला, जिससे निम्नलिखित लाभ हुअे :—

१. बवासीरकी तकलीफ़ बहुत समयसे थी वह मिट गयी।

२. क़ब्ज़ रहता था, वह खूब कम हो गया। शुरूमें काले रंगकी टट्टी आती थी, अब ठीक आती है।

३. पहले भूख नहीं लगती थी, अब लगती है और रुचिसे खाता हूं।

४. पीठ पर सूखी चंवल जैसा अेक दाग़ था, मूत्र मालिशसे वह साफ़ हो गया।

५. पीठमें दर्द बिलकुल नहीं होता है।

६. छातीमें पीडा बिलकुल नहीं है।

७. पेशाब खुलकर आता है, परंतु नली तंग होनेसे थोड़ी जलन होती है।

८. पहले रातमें तीन से छः बार अुठना पड़ता था, अब अेक या दो बार अुठना पड़ता है।

९. पहले पेड़ूमें थोड़ा पेशाब भर जाता कि पेशाबकी हाजत हो जाती। किन्तु अब वैसी बात नहीं है। पेशाब काफ़ी जमा हो जाने पर ही हाजत होती है।

१०. गुरदेमें बारीक रेत या पथरी होनेकी डाक्टरको जो आशंका थी वह अब नहीं रही; क्योंकि गुरदेमें किसी प्रकारका दर्द नहीं है।

११. डेढ़ मासमें सर्दी नहीं हुअी, बुखार नहीं आया और छातीमें दर्द नहीं हुआ है।

१२. पहले बायें कानके पास अेक अुभरी हुअी जगह थी। वहांसे जो पीडा अुठती वह सिरके बायें भागमें पहुंच जाती और आधी रात तक बहुत पीडा होती। १५ दिनों से वह मिट गयी है।

१३. दाहिने हाथ पर सफ़ेद कोढ़के दो छोटे-छोटे दाग़ थे, जिनकी दवा करनेसे डाक्टर ने अिनकार कर दिया था, वे दाग भी काफ़ी साफ़ हो गये हैं।

१४. शरीरमें जो खाज होती थी वह मूत्रमालिश शुरू करनेसे ही बन्द हो गयी थी।

१५. जिस चीज़के खानेसे मुझे तुरन्त सर्दी या गरमी हो जाती थी, वह भी अब अपना बुरा असर किये बिना हज़म हो जाती है। जैसे कि डेढ़ बरससे बवासीरके कारण दूध या दहीके साथ बाजरेकी रोटी खाना छोड़ रखा था, अब अुसे और गुड़ खाना शुरू किया है, फिर भी बवासीर मालूम नहीं होती।

"अिस प्रकार मुझे अनेक लाभ हुअे हैं। अिसमें ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं है। खोटका बेटा अपने बापकी गोदमें पेशाब कर देता है तो अुसकी बहन कहती है, 'लो, अिसने बापको पवित्र कर दिया,' यह कहावत यहां चरितार्थ होती है। पेशाबकी मालिश करते वक़्त अुस पर प्रीति पैदा होती है, क्योंकि अुससे फ़ायदा मालूम होता है।"

४. मूत्रकी महापीडा

मैंने बार बार अिस बातकी स्पष्टता की है कि मैं अपने हृदय-रोगसे मुक्त नहीं हुआ हूं, परन्तु जैसे-तैसे मूत्रोपचार द्वारा अपने शरीरकी रक्षा कर रहा हूं। खूनका दबाव कम होनेसे कअी दिनका अुपवास करना मेरे लिये ख़तरेकी बात है। मैंने यह चेतावनी बार-बार दी है कि जिसके खूनका दबाव कम हो अुसे मूत्रोपचारमें लंबा अुपवास करके अपनी कमज़ोरीको बढ़ाना नहीं चाहिये। मैं भी अिसी नियमका पालन करता आया हूं। मैं अपने शरीर पर प्रयोग तो कर सकता हूं, पर अुसे ख़तरेमें नहीं डाल सकता हूं। अिस लिये मेरे अुपचारमें जब कभी कोअी ख़तरा खड़ा होता तब जो साधन कारगर सिद्ध हुआ है अुसीका सहारा लेता और ख़तरेको दूर करता। जब तक हम स्वमूत्रके अुपचारकी पद्धतिको व्यवस्थित अेवं निश्चित नहीं कर पाते तब तक हमें गंभीर रोगोंके अुपचारके लिये अैसी वृत्ति रखनी होगी। मूलद्रव्यमें हमारी श्रद्धा होने पर भी हमें अैसा अिसलिये करना पड़ता है कि हमें अुसके शास्त्रीय अुपयोगका ज्ञान नहीं है। हमें अिस अज्ञा-

नता के दोषको दूर करना ही चाहिये। अिसी आशयसे हमने मूत्र-चिकित्सा अनुसंधान केन्द्र खोला है। अनेकोंके अनुभवके बाद मूत्रोपचार की शास्त्रीय पद्धति मिल जाने पर हमारी कठिनाअी दूर हो जायगी।

अुपर्युक्त कठिनाअीके कारण मैंने तीन बार जी-जानसे कोशिश की, पर तीनों बार क़ुदरतकी किसी प्रतिकूलताके कारण या अपनी प्रकृतिके कारण निष्फल रहा। अिसलिये मैंने अुपवास करके प्रयोग करनेका विचार छोड़ दिया और लंबे समयका अुपचार शुरू किया। अुस दौरानमें भी गत वर्ष (१९६०) सितम्बरके महीनेमें सरदीसे मुझे खांसी हुअी और पूरा पेशाब नहीं हुआ, जिससे पाओंपर सूजन आयी और बढ़ी। अुसे दूर करनेके लिये डाक्टरकी मदद लेनी पड़ी। परन्तु लेनेके देने पड़े अर्थात् ज़रूरतसे ज्यादा दस ग्यारह पौंड पानी निकल गया। सामान्यतः मेरा वज़न १०० पौंड रहता था, अुसके बदले ८९ पौंड हो गया और कमज़ोरी बढ़ गयी। परिणामतः २१ सितम्बरके रोज़ लक़वेका हमला हुआ, अुसे फ़ौरन् मिटानेके लिये डाक्टरने अिंजेक्शन दिया। परन्तु अुसकी प्रतिक्रिया यह हुअी कि पेशाब बंद हो गया। यों 'लेने गयी थी पूत और खो बैठी खसम' की बात बन गयी। तीस घंटे तक पेशाबकी अेक बूंद भी न आयी और दर्द बेहद! अिसलिये पड़ोसी डाक्टरको बुलाकर पेशाब निकलवाया, पर अितनेसे काम पूरा नहीं हुआ। फिर भी पेशाब रुक गया। चौबीस घंटे बीत गये। असह्य पीड़ा होने लगी। डाक्टरको बुलाया। वे अपना साधन लेकर आये, परन्तु साधनका अुपयोग करनेसे पहले अुन्होंने कहा :—

"अिस तरह बार बार पेशाब निकालनेमें खतरा है। विजातीय साधन अंदर जानेसे मूत्रनलीमें सूजन आनेका पूरा भय है और सूजन आ जाय तो ऑपरेशन करके पेशाबके लिये दूसरा द्वार खोलना पड़े।"

मैंने कहा — "मूत्रनलीमें सूजन न आये, अिसके लिये आप किसी अैसे जन्तुनाशक द्रव्यका अुपयोग करें कि जो शरीरके भीतरी भागके लिये हानिकर न हो।"

"अुन्होंने कहा — "अैसा कोअी जन्तुनाशक द्रव्य नहीं है कि जिसका अुपयोग शरीरके भीतरी भागमें हो सके।"

मैंने कहा — "मूत्र जंतुनाशक द्रव्य है और वह शरीरके अंदरका तत्त्व है, अिसलिये निर्दोष है। आप अपना साधन पेशाबमें डुबोकर अंदर डालें ताकि सूजन आनेका भय न रहे।"

डाक्टरने मेरी बात मानकर वैसा किया। पेशाब १९ औंस हुआ, जो गाढ़ा, गदला और लाल सिन्दूर जैसा था। चैन पड़ा। थोड़े समयमें पेशाबकी हाजत हुअी, ज़ोर हुआ और बूंद-बूंद निकलने लगा। खूब जलन होने लगी। फिर भी बूंद-बूंद निकलनेसे कुछ चिन्ता कम हुअी। अिस बारेमें डाक्टर साहबसे पूछा कि पेशाब बहुत जलनके साथ बूंद-बूंद होता है। अिसलिये रातको नींद भी नहीं आती, क्या किया जाय?

अुन्होंने सलाह दी — "अमुक चार टिकियाअें मंगवाकर खा लें।"

मैंने शंका की — "परन्तु फिर अुसकी क्या प्रतिक्रिया होगी?"

अुन्होंने कहा — "वे कुछ नुक़सान नहीं करेंगी। परन्तु यदि आप वे टिकियाअें नहीं लेंगे और पेशाबकी पीडा चलने देंगे, तो प्रोस्टेट ग्लैंडके सूजनेसे ऑपरेशन करानेकी ज़रूरत खड़ी हो जायगी, जो अिस अुम्रमें आपके लिये खतरनाक है।"

यह बात सुनकर मैं सोचने लगा। मुझे तुरन्त सूझ आया। "मैं कैसा दंभी! मेरे कहनेसे दूसरे यह प्रयोग करते हैं, जिसे सुनकर मैं खुश होता हूं। मैं खुद प्रयोग क्यों न करूं? अिसमें नुक्सानकी क्या बात है?" मैंने अपने स्वजनोंको समझाया। अेक घंटेकी कोशिश से बूंद-बूंद करके आधी छटांक पेशाब अिकट्ठा हुआ। जो लाल शिगरफ़ जैसा, गाढ़ा और गदला था, अुसे मैं आंखें बंद करके पी गया। फिर दूसरे घंटेमें और आधी छटांक अिकट्ठा हुआ, अुसे भी पी गया। अेकाध घंटेके बाद पेशाब की धारा शुरू हुअी और अन्तमें बूंद-बूंद निकला। जलन तो होती ही थी। फिर तो जैसे-जैसे पेशाब पीता गया वैसे-वैसे पेशाबकी धारा बढ़ती गयी और जलन कम होने लगी। अिस तरह

आठ दिनमें ज़रा भी जलन बिना स्वच्छ मूत्रकी धारा निकलने लगी और मैं बड़े ख़तरेसे बच गया।

अिसमें शक नहीं कि मैं मूत्रोपचारकी अपनी आख़िरी कोशिशमें कमज़ोर साबित हुआ। मैं अिस अुपचारमें कुशल तो हूं नहीं, फिर भी मैंने जो सत्य समझा और अनुभव किया अुसने मुझे ख़तरेसे बचा दिया। अेक मास बाद मैं यह हाल लिख रहा हूं और ख़तरेसे परे हूं। अब स्वस्थ मनुष्यकी भांति मुझे स्वाभाविक पेशाब होता है।

५–क. मधुमेह

श्री चतुरभाअी भाअीलालभाअी खेड़ा ज़िलाके मोगरी गांवमें रहते हैं। मूत्रोपचारसे अुनकी लड़कीका पका हुआ कान बिलकुल ठीक हो गया था। (देखिये प्रकरण १४–१) अिसलिये मूत्रप्रयोगमें अुनकी बहुत श्रद्धा है। अुनके भाअी की पत्नी पांच सात बरससे मधुमेहसे पीडित थी। समझानेसे वह मूत्र-प्रयोगके लिये तैयार हो गयी। मूत्रमालिशसे प्रयोग शुरू किया गया। अेक सप्ताहकी मालिशसे वह कुछ आराम महसूस करने लगी और अुसके चेहरे पर कुछ कान्ति दिखायी देने लगी। फिर मूत्रके साथ कुछ दिनका अुपवास भी करवाया गया। लगभग अेक महीनेके प्रयोगसे अुसने मधुमेहकी व्याधिसे मुक्ति पा ली। अुसका शरीर अच्छा हो गया, हाथपाओंकी बेचैनी जाती रही, फीकापन दूर हुआ, चेहरे पर रौनक़ आयी और शरीरमें स्फूर्ति अेवं शक्ति आ गयी।

५–ख. मधुमेह

बम्बअीमें रहनेवाले ज्योतिर्विद् जयकिशनदास दयाराम पांचाल (२८, सूरज बिल्डिंग, अॅल्फ़िन्स्टन रोड, बम्बअी — १३) ने मधुमेहकी व्याधिसे छुटकारा पानेका विवरण ता० ६–६–'६० को मुझे लिख भेजा जिसके साथ डाक्टरी रिपोर्ट भी थी। अुसे पढ़कर मुझे बहुत सन्तोष

अेवं हर्ष हुआ; क्योंकि मैं अैसे लिखित विवरणके लिये बहुत समयसे अुत्सुक था। वह विवरण अिस प्रकार है:—

"पांच वरस पहले मुझे डायबिटीज़ (मधुमेह) का रोग हुआ था। अुसके लक्षण अैसे थे कि मूत्रेंद्रिय के मुंहकी चमड़ी ख़राब हो गयी थी अर्थात् चमड़ी फट गयी थी, जिसके कारण पेशाब करते वक़्त बहुत ही जलन होती थी और खाज भी खूब आती थी। मैं कैम्प कम्पनीका मरहम लगाता था। परन्तु दिन-ब-दिन कमरसे लेकर पाओं तकके जोड़ दर्द करने लगे। फिर दोनों प्रकारकी पीडाअें दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगीं। पेशाब बार-बार आता था। रातको तीन-चार बार अुठना पड़ता था। चार बरस तक यह सब पीडा सही। फिर मुझे डाक्टरके पास जाना पड़ा अेक मित्रकी सलाहसे मैं अेक प्रसिद्ध क्लिनिकमें ता० १–५–'५९ को गया। डा० माहीमतुलाने मेरे केसको अपने हाथमें लिया। जांच करनेसे मालूम हुआ कि मुझे मधुमेह हुआ है। मेरी आयु ४१ बरसकी है। डाक्टरने कहा कि प्रायः अिसी अुम्रमें यह रोग होता है। मेरे पेशाबमें ४ प्रतिशत खांड थी। मुझे रेस्ट्रीजोनकी बीस गोलियां दी गयीं और तीन दिन अुबली भाजी तथा पतली छाछ लेनेको कहा। चौथे दिन वहां गया तो खांड बिल्कुल दिखायी न दी। अिसलिये अुन्होंने अल्प आहारके साथ थोड़ा भात खानेकी अनुमति भी दे दी। वे बीस गोलियां पूरी हो गयीं। मैं हर तीसरे रोज़ जांच करानेके लिये जाता था, परन्तु ख़ांड मालूम नहीं होती थी। तब डाक्टरको कुछ शंका हुअी और मुझसे कहा कि दो दिन कोअी मीठी चीज़ थोड़ी-थोड़ी खाकर फिर जांच करवाना। वैसा करके मैं गया। तब ३ प्रतिशत खांड मालूम हुअी। अब तो डाक्टर को विश्वास हो गया कि मुझे मधुमेह है। अुसके बाद और २५ गोलियां खायीं; परन्तु आराम नहीं हुआ। दो चार डाक्टरोंने आपसमें सलाह करके मुझसे कहा कि अब गोलियां खाना बेकार है और दूसरे डाक्टरके पास जानेके लिये चिट्ठी लिख दी। फिर दूसरे डाक्टर से अपने खूनकी रिपोर्ट लेकर तीसरे डाक्टरके पास गया। अुन्होंने

बेनेडाअिट टैबलेट्स दीं। अुसका कोर्स तीन मास का था। मेरा वज़न १६७ पौंड था। अिसलिये कम खाकर और दवा लेकर मुझे अपना वज़न भी कम करना था। खांड कम हुअी और वज़न भी कुछ कम हुआ। परन्तु यदि किसी दिन चावल की कोअी चीज़ खा लेता तो तुरन्त खांड मालूम हो जाती। अिस तरह मैंने डाक्टरी अुपचारका सच्चा हाल लिख दिया है।

"अब मैं मूत्रचिकित्साका विवरण लिखता हूं।

"मूत्रप्रयोग शुरू करनेसे तीन महीने पहले मैंने दवाअी बंद कर दी थी। आप की सूचना के अनुसार मूत्र-प्रयोग शुरू करनेके लिये पांच छः दिनका पेशाब अिकट्ठा किया और ता० ७–३–'६० से मालिश शुरू कर दी। फिर आठ दिनके बाद ता० १४–३–'६० से मूत्रपानका श्रीगणेश किया। पहले दिन तो दिनभर का सारा पेशाब पीकर अुपवास किया। परन्तु अुसी दिन सिरमें बहुत दर्द हुआ, अिस लिये शामको थोड़े कोदों खाने पड़े। फिर आठ दिन तक रोज़ाना क़रीब चार गिलास पेशाब पीता रहा। आठवें दिन खांडका परिमाण कम हो गया। अिसलिये मुझे खांड खानी पड़ी और मैं रोज़के तीन गिलास पेशाब पीने लगा। फिर तो रोज़ खांड कम हो जाय और मुझे खांड खानी पड़े। अिसलिये मैंने आठ दिन प्रयोग बंद रखा और आपको पत्र लिखा। फिर आपकी सलाह से हर रोज़ क़रीब चार औंस पीने लगा और आहारमें परिवर्तन किया। सुबह कोदों और शामको ज्वारकी रोटी खाता था। फिर छुट्टी के दिन थोड़ा भात खाने लगा। अिस तरह प्रयोग करके पेशाबकी जांच भी करवाता रहा; पर खांड मालूम नहीं हुअी। अितनेमें तो विवाहके दिन आ गये। मैंने मिष्टान्न, चावल, आलू आदि दो-दो चार-चार दिनके अन्तर से खाये हृ, परन्तु पेशाब में खांड नहीं आयी। फिर शादीमें शरीक होनेके लिये मैं अपने वतनमें गया और ता० १६ से २२ तक वहां ठहरा। वहां दिनमें दो-दो बार श्रीखंड-पूरी, चावल और आलूका शाक खाता रहा। वापस बम्बअी

आकर पेशाबकी जांच करवायी, परन्तु खांड नहीं निकली। आठ दिनमें छः पौंड वज़न बढ़ गया। अब सुबहके भोजन में भाजी और अेक गिलास छाछ लेता हूं तथा शामको थोड़ा कोदों खाता हूं। दिनमें तीन बार क़रीब चार औंस पेशाब पीता हुं। अब मैं रोज़ नियमित अेवं परिमित आहार लिया करूंगा; क्योंकि अपना वज़न कम करना चाहता हूं।

"मुझे अिस प्रयोगके दौरानमें दस्त या क़ै नहीं हुअी। परन्तु जब खांडका परिमाण कम हो जाता तब बेचैनी महसूस होती और सिर चकराने लग जाता। फिर खांडका अुपयोग करनेसे दोनों तकलीफ़ें दूर हो जाती थीं। मैं मूत्रपान और मूत्रमालिश जारी रखूंगा ही।

"अिस मानव-जलको हम मूत्र कहते हैं, परन्तु अिसे 'अमृतजल' का अुपनाम दिया जा सकता है। क्योंकि मेरे जैसे अनेक रोगियोंने अिसका अुपयोग 'अमृतजल' के रूपमें ही किया है। और जो अैसा समझता है वही अिसका प्रयोग कर सकता है।"

अुपर्युक्त विवरण कुछ लंबा होने पर भी मैंने दिया है; क्योंकि अुसमें केवल सावधानता ही नहीं है, किन्तु निष्ठा और हिम्मत भी है। कठिनाअी आनेपर न तो वे घबराये और न ही प्रयोग से विमुख हुअे। जो व्यक्ति यह नैसर्गिक अुपचार करे अुसे यह देखते रहना चाहिये कि शरीर पर प्रयोग का क्या असर हो रहा है और किसी भूलके कारण ख़राब असर मालूम हो तो तुरन्त सामान्य विवेकसे अपने अुपचारमें परिवर्तन करके लाभकारी पद्धति अपनानी चाहिये। अैसा करनेमें यह सुरक्षा है कि अैसे परिवर्तनसे कुछ हानि तो होती नहीं और हमें सच्चे रास्तेका पता चल जाता है। प्राकृतिक अुपचार भी मनुष्यकी शारीरिक प्रकृतिके अनुसार कमोबेश असर करते हैं। यह संभव है कि सभी शारीरिक प्रकृतियोंके लिये अेक ही परिचर्या अनुकूल न भी आये। अिसलिये सच बात तो यह है कि जो व्यक्ति अपने शरीर का वैद्य या डाक्टर ख़ुद होगा और अपने शरीर पर होनेवाले अच्छे-

बुरे असरको समझकर नैसर्गिक अुपचारोंका समन्वय करेगा अुसका स्वास्थ्य अुसीके हाथमें है।

और अिस रोगीको अुपवास करनेकी ज़रूरत न पड़ी। क्योंकि अुसके रोगने जड़ नहीं जमा ली थी। परन्तु जिनका मधुमेह जड़ जमा चुका हो अुन्हें अुपवास करने ही चाहिये और प्रयोग भी दीर्घकाल तक चालू रखना चाहिये, अैसा मेरा मानना है। अिसलिये कोअी रोगी अिसे पढ़कर यह न समझ बैठे कि अुसका रोग भी जल्दी मिट जाना चाहिये और न मिटे तो वह हिम्मत हार कर बैठ न जाय, किन्तु निष्ठा अेवं दृढताके साथ प्रयोग जारी रखे। अैसा करनेसे फ़ायदा ही है, ज़रा भी नुक़सान नहीं है।

५–ग. मधुमेह

बंबअी निवासी ज्योतिर्विद् श्री जयकिशनदास पांचालने मधुमेहसे किस तरह छुटकारा पा लिया, अिसका विवरण अूपर आ चुका है। तभीसे वे मूत्रचिकित्साके श्रद्धालु, समर्थक अेवं प्रचारक हो गये हैं। अुनका भाअी जिस मिलमें काम करता है अुसी मिलमें अेक महाराष्ट्री सज्जन भी काम करते हैं, जिनका नाम बालाराम सखाराम कवड़े है। उनकी अुम्र ५० बरसकी है और वे खार–बम्बअीमें रहते हैं। कितने ही बरसोंसे वे मधुमेहके रोगसे पीडित थे। वे जयकिशन दास पांचालसे मिले और मूत्रप्रयोगके बारेमें अुनसे मार्गदर्शन लेकर प्रयोग करने लगे। कुछ ही सप्ताह में अुन्होंने मधुमेहसे मुक्ति पा ली। अुन्होंने अपने सफल प्रयोगका विवरण अपनी मातृभाषामें लिखकर मेरे पास भेजा है, जिसका भावार्थ अिस प्रकार है:—

"पहलेसे ही यह बता देना चाहता हूं कि मैं मधुमेहका शिकार किस तरह हुआ। पहले मेरी दाढ़में दर्द होता था, जिसे मैंने दांत के डाक्टरसे निकलवा दिया। अुन्होंने पेनिसिलिनके अिंजेक्शन लेनेके

लिये सूचित किया ताकि दर्द कम हो जाय। मैंने वे अिंजेक्शन अपने बीमा डाक्टरसे लिये। कुछ समय बाद मेरे शरीर पर सूजन मालूम हुअी। फिर और अिंजेक्शन लिया, जिससे सूजन दूर हो गयी, परन्तु अुसकी प्रतिक्रिया हुअी। तीन महीने बाद पेशाब बढ़ने लगा। दिनमें सात बार और रातको तीन बार पेशाब आता। कमज़ोरी आने लगी और वज़न घटने लगा। प्यास खूब लगती। मुंह और गला सूख जाता। मैं अपने बीमा डाक्टरके पास गया। अुन्होंने पेशाब की जांच की। जांचके बाद अुन्होंने कहा कि मुझे मधुमेह है। ता० १२–५–'५९ को क्लिनिक लेबोरेटरीमें डा० पी० ॲन० ओझाने मेरे पेशाबकी जांच की और रिपोर्ट दी कि पेशाबमें ४.२० प्रतिशत खांड है। तबसे मैंने चावल, खांडकी चाय और मिठाअी बंद कर दी। कुछ दिन होमियोपैथी की दवा खायी, परन्तु अुससे कुछ भी फ़ायदा नहीं हुआ। अन्य घरेलू अुपाय भी खूब किये। वे भी निष्फल सिद्ध हुअे। ता० १–४–'६० से बीमारी बढ़ने लगी। शरीर पर छाले निकल आये। मूत्रेन्द्रियके मुंह पर खूब पीडा होने लगी, चमड़ी फट गयी और आगे-पीछे नहीं होती थी। अिसलिये मैंने अिन्स्युलीनके अिंजेक्शन लिये, जिसके बाद पेशाबमें खांड ३.५० प्रतिशत हो गयी।

"मैं हिन्दुस्तान मिलमें क्लर्क हूं। अिसी मिलमें ज्योतिर्विद जयकिशनदास पांचालके भाअी फ़ोल्डिंग मास्टर हैं। अुन्होंने मुझसे पूछा, 'क्या बात है कि दिन-ब-दिन आप सूखते जा रहे हैं?' मैंने अुन्हें अपने रोगका हाल सुना दिया। अुन्होंने कहा कि अुनके भाअीको भी यही रोग था, अुनसे मिलकर रोगके अुपचारका पता करें। फिर मैं जयकिशन दासजीसे मिला और अुन्होंने मूत्रोपचार बताया। तदनुसार मैंने मूत्र-प्रयोग करनेका निश्चय किया। ता० ११–७–'६० को मेरे पेशाबमें ३ प्रतिशत खांड थी। अुसी दिनसे मैंने मूत्रपान शुरू कर दिया। मैं दिनमें चार बार और रातको दो बार पीता था और रोज़ाना मूत्र-मालिश भी करने लगा। आहारमें बाजरे की रोटी और पत्तेवाली

भाजी लेने लगा। हर हफ़्ते जयकिशनदासजीसे मिलकर अुनकी सूचनाके अनुसार फेरफार करता रहा। प्रयोगके दौरानमें निम्नलिखित फेरफार हुआ :—

ता० ११–७–'६०	खांडका परिमाण	३.०० प्रतिशत
ता० १७–७–'६०	„	२.५० „
ता० ९–८–'६०	„	१.०० „
ता० २३–८–'६०	„	.२५ „
ता० ४–९–'६०	„	शून्य

"अिस प्रयोगसे शरीरके छाले मिट गये और चमड़ी अेकदम साफ़ हो गयी। ता० २५–९–'६० से भात खाने लगा। ता० १५–१०–'६० को चावल, आलू और मीठी चीज़ खाकर मैंनें पेशाव की जांच करवायी। फिर भी खांड़ मालूम न हुअी। अव मेरी तवीअत विलकुल अच्छी है। मैं अपने मार्गदर्शक श्री जयशिकशनदास पांचाल का ऋणी हूं।"

५–घ. मधुमेह और लक़वा

'मूत्रोपचार' गुजरातमें जगह-जगह चल रहा है। वहुत-सी जगहोंका तो पता भी नहीं है। अन्य प्रान्तों में भी अिस अुपचारका थोड़ा-वहुत प्रचार है। श्री सौभाग्यचंद्र गिरधरलाल पालीताणामें जैनसोसायटी — गिरिविहार में रहते हैं। अुनके साथ रहनेवाले श्री गुलावचन्द खुमचन्द शाह मधुमेह और लक़वेसे पीडित थे। मूत्रप्रयोगसे अुन्हें जो लाभ हुआ अुसका विवरण अुन्हींसे लिखवाकर सौभाग्यचन्द्र गिरधरलालने मेरे पास भेजा है, जिसे नीचे दे रहा हूं :—

"मुझे मधुमेहका रोग था और दायीं ओरका लक़वा था। आपकी 'मानव-मूत्र' पुस्तक पढ़कर अेक वरससे प्रयोग कर रहा हूं। जिससे वहुत ही फ़ायदा हुआ है। पुस्तकमें वताये हुअे महत्त्वपूर्ण

अुपवास को भी मैं कर लेता तो जल्दी आराम हो जाता। परन्तु मैं अुपवास नहीं कर सकता हूं। फिर भी धीरे-धीरे अच्छा फ़ायदा हुआ है। हर रोज़ सुबह दातुन करनेके बाद जो पेशाब आता है अुसे पी जाता हूं और दोपहरमें सारे शरीर पर पेशाब से मालिश करता हूं। घुटनेके जोड़का दर्द भी मिट गया है। कमरमें रोज़ जो पीडा होती थी वह भी मालिशसे मिट गयी है।

"बहुत समयसे मैं अिन्स्युलीनके अिंजेक्शन लेता था, अुन्हें अेक बरससे बन्द किया है।

"मेरा यह निजी अनुभव है कि मूत्रसे चमड़ीकी हर बीमारी मिट जाती है। मेरे शरीर पर कुछ भी होता है तो मैं तुरन्त अुसका अुपयोग करता हूं और फ़ायदा अुठाता हूं।

"मेरी अुमर ६५ बरसकी है। पहले मुझे चलनेमें खूब तकलीफ़ होती थी। अब तीन चार मील आसानीसे चल सकता हूं।

"पहले मैं दूरकी चीज़ साफ़ नहीं देख सकता था। आंखोंमें मूत्र डालनेसे दृष्टिमें कुछ सुधार हुआ, जिससे मूत्रकी अनोखी शक्तिका पता चला और श्रद्धा दृढ हुअी। अिसलिये मूत्रपान शुरू कर दिया, जिससे मुझे बहुत ही फ़ायदा हुआ। अिस तरह मानवमूत्र हर प्रकारसे लाभकारी है और आशीर्वाद-रूप है।"

अुपर्युक्त विवरण की अेक कमी यह है कि ज़रूरतसे अधिक संक्षिप्त है। अैसा लगता है कि गुलाबचंदने मूत्रोपचार भी व्यवस्थित रूपसे नहीं किया है। फिर भी अुन्हें लाभ हुआ है। अिसलिये कोअी वैसा रोगी अुसे पढ़कर अुन जैसा अव्यवस्थित अुपचार करनेकी धृष्टता न करे। अुनकी शारीरिक प्रकृति अच्छी होगी और खानपानमें वे संयमी होंगे। और पालीताणा पहाड़ पर रहनेके कारण अुन्हें अच्छी हवा अेवं क़ुदरती वायुमंडल का भी लाभ मिला होगा। अिन सब कारणोंसे वे अधूरे अुपचारसे भी अच्छा फ़ायदा अुठा सके होंगे। यह अुनकी विशेषता है कि वे धैर्यपूर्वक अेक बरस तक अुपचार करते रहे। मधुमेह

और लक़वेके रोगी अिन सब बातोंका विचार करके धीरजसे व्यवस्थित अुपचार करें। अैसा करनेसे अुनकी बीमारी ज़रूर मिट जायगी।

६. घोड़ीका मधुमेह

(अेक क़दम आगे)

मेरी तो दृढ मान्यता है कि प्रकृतिका नियम अेक और अटल है। अिसीलिये सिद्धान्त सम्बन्धी नियममें मैंने अपनी श्रद्धा व्यक्त की है कि जो सत्य मानवके लिये चरितार्थ होता है वही सत्य पशुके लिये भी चरितार्थ होता है। मानो अिस विस्मृत सत्य नियमकी हमें याद दिलानेके लिये अीश्वर ने अकस्मात् मेरे पास अेक विवरण भिजवा दिया। यह विवरण बम्बअीमें पशुचिकित्सा करनेवाले डाक्टर जी० अॅच० वेलि-न्करका है, जिसे अुन्होंने खुद अंग्रेज़ीमें लिखकर भेजा है। कोअी शौक़ीन सेठ मारवाड़से अेक तेज़ चलनेवाली घोड़ी ख़रीदकर बम्बअीमें ले आये। यहां आकर वह बीमार हो गयी और अुक्त पशुचिकित्सक के पास लायी गयी। अुन्होंने अुसे जिस प्रकारसे ठीक किया अुसके बारेमें वे अपने ता० १४–१–'६१ के अंग्रेज़ी विवरणमें अिस तरह लिखते हैं :—

"बम्बअीके मदनपुरा प्रदेशमें अेक सज्जन रहते हैं, जिनका नाम अॅस० अॅन० शिप्रा है। अुनकी हिन्दी नसलकी सलेटी रंगकी घोड़ी बीमार रहा करती थी। ख़रीदनेके बाद ही वह सूखने लगी गयी थी और बम्बअी पहुंचते पहुंचते काफ़ी दुबली-पतली हो गयी थी। अैसा मान लिया था कि दूरसे ट्रेनमें आनेके कारण कअी दिन तक अुसे पूरी ख़ुराक न मिलनेसे अुसकी यह हालत हो गयी होगी।

"अपने मालिकके घर आने पर अेक हफ़्ते बाद अुसकी लीदकी जांच करवायी गयी। प्राथमिक अुपचारके रूपमें अुसके शरीर पर बंद लगाये गये और अुसे अेरीशीलके पांच अिंजेक्शन दिये गये। अुसे अच्छी पौष्टिक ख़ुराक दी जाने लगी और डाक्टरी देख-रेखमें

रखा गया। पन्द्रह दिनकी अैसी परिचर्याके वाद भी घोड़ीकी हालतमें कोअी खास फ़र्क़ न आया। परन्तु वादमें मालूम हुआ कि अुसे खूब पेशाव होता था और थोड़े-थोड़े समयके वाद होता था। अुसकी कमर या गुरदेको छूनेसे अुसे पीडा होती हो, अैसा प्रतीत हुआ। कुछ दिन वाद अुसके पेशावमें खून मालूम हुआ, जिसके लिये हॅक्सामीन, सोडासल्फ़ेट और मॅक्सेल्फ़का मिक्सचर नाल द्वारा अुसे पिलाया गया। दो दिन वाद खून वन्द हुआ, परन्तु पेशावके परिमाणमें कुछ कमी न आयी।

"अितनेमें अपने पड़ोसी श्री जयकिशनदास पांचालसे मालूम हुआ कि मूत्रोपचारसे मनुष्योंका मधुमेह रोग मिट जाता है। फिर मेरे मनमें विचार आया—'शायद घोड़ीके पेशावमें खांड आती हो, ज़रा अुसकी जांच तो करूं। अव तकके अिलाजका कुछ भी असर न होनेका यह भी अेक कारण हो सकता है।'

"अुस घोड़ीके पेशावकी जांच करनेसे पता चला कि अुसमें २ प्रतिशत खांड जाती है। मैंने भी अुसे नाल द्वारा अुसीका पेशाव पिलानेका निर्णय किया। दिनभरका घोड़ीका पेशाव अिकट्ठा किया। अेक दिनका अिकट्ठा किया हुआ पेशाव मैं दूसरे दिन देता था। सारे दिनका कुल पेशाव लगभग चार पौंड होता था। अुसे पेशावकी सात नालें पिलायी गयीं। चौथी नाल पिलानेके वाद घोड़ीकी स्थितिमें कुछ सुधार मालूम हुआ और सातवीं नाल पिलानेके वाद घोड़ी अपना चारा भली भांति खाने लगी। अुसे अव पहलेकी अपेक्षा कम बार पेशाव होने लगा और साथ ही पेशावका परिमाण भी कम हो गया। पहले अुसके पेशावमें २ प्रतिशत खांड आती थी, अव .७५ प्रतिशत आती है।

"अितनेमें अुस घोड़ीका कोअी खरीदार आ पहुंचा। मालिकने अच्छी क़ीमत लेकर अुसे बेच दिया और वह घोड़ी बम्वअीसे वाहर चली गयी।"

अुपर्युक्त विवरणसे हमारी अिस बातका समर्थन होता है कि प्रकृतिने प्राणिमात्रको शारीरिक स्वास्थ्यके लिये निजी साधन दिया ही है। मानवके डाक्टर जैसे अपने रोगीके रोगका अिलाज करते हैं वैसे वह पशुचिकित्सक भी रोगी पशुके रोगका अिलाज करता था। परन्तु अनुमान पर आधारित चिकित्साके लिये तो प्रयोग ही करने पड़ें न? श्री वेलिन्करने भी वैसे प्रयोग किये। परन्तु कुछ परिणाम न आया। जब अुन्हें यह मालूम हुआ कि मधुमेहके रोगी मनुष्य अपने ही पेशावके अुपचारसे रोग-मुक्त हो गये हैं, तब अुन्हें घोड़ीके पेशाबकी जांचका ख़याल आया और जांच करने पर पता चला कि अुनका रोगी भी मधुमेहसे पीडित है। फिर अुसीके पेशावसे अुसका रोग मिटा। विवरणमें तो पूरा आराम होनेकी वात नहीं लिखी है। फिर भी मैंने लिखा है कि अुसका रोग मिट गया। क्योंकि प्रकृतिने मूक पशुओंको अैसी प्रेरणा दी है कि जब तक वे बीमार होते हैं तब तक वे अपना चारा नहीं खाते हैं अर्थात् बीमारी दूर होने पर ही खाते हैं। वे पड़े रहकर अपना पेशाब चाटते हैं। वह घोड़ी आज़ाद होती, सोओी रहती, अुपवास करती और अपना पेशाब चाटा करती। जिससे रोगके बढ़ने की नौबत ही न आती। हमने घोड़ीको बांधकर ग़ुलाम बनाया। वह अपनी सहज प्रेरणाके अनुसार कैसे काम करती? अुसके बदले अुसके मालिकको काम करना रहा। और मालिक की दौड़ तो अुसके डाक्टर तक ही है न? पशुका डाक्टर मनुष्यके डाक्टरकी भांति अपने पढ़े हुअे चिकित्सशास्त्रका ही अुपयोग करे न?

यों रोग, रोगी और डाक्टर की बात है। चाहे जो हो, परन्तु मूत्रचिकित्सा अेक क़दम आगे बढ़ती है। अर्थात् जैसे रोगी मनुष्यके रोगका नाशक अुसका मूत्र है वैसे रोगी पशुके रोगका नाशक अुसका अपना मूत्र है। जो प्राकृतिक सत्य नियम मनुष्यको लागू पड़ता है वही सत्य नियम पशुको भी लागू होता है।

११

संधिवात

१. रीढ़का अकड़ाव

श्री अंबालाल के० पटेल बी० अॅससी०, अॅल० अॅल० बी०, अहमदाबाद म्युनिसिपलिटीके स्टोर सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। अुनके पत्रमें से नीचेका अवतरण यहां दे रहा हूं :—

"मूत्रप्रयोगसे आपके स्वास्थ्य पर जो असर हुआ अुससे प्रोत्साहित होकर ता० १५–५–'५८ को बहुत सवेरे अीश्वर-प्रेरणासे मैंने अुसे खुद आज़मानेका श्रीगणेश किया।

मैं प्लुरिसी, संधिपीडा और रीढ़के अकड़ाव (स्पॉन्डेलाअिटिस) से पीड़ित था। सफ़ेद, ज़रा धूसर और अस्पंज जैसे छिद्रोंवाला कफ काफ़ी निकलता था। मैं कामसे फ़ुरसत पाता कि पीडाका दौर शुरू हो जाता। सन् १९५२ से अैसी स्थिति चलती थी। . . . पहले तो ता० १५–५–'५८ से ता० २१–५–'५८ तक सारे शरीरकी मूत्रमालिश करता रहा। ता० २२–५–'५८ से प्रातःकालका पहला पेशाब भी पीने लगा और ता० २७–५–'५८ तक पीता रहा। अिस दौरानमें मेरे शरीर पर गर्मीकी फुंसियां निकल आयीं। अुन्हें प्रयोगकी प्रतिक्रिया समझकर मैं घबराया नहीं। थोड़े ही समयमें वे मूत्रमालिशसे अपने आप शान्त हो गयीं। मूत्रमालिश अेवं मूत्रपानका असर तो अद्‌भुत हुआ है। मूत्र विष है, पीने योग्य नहीं है, अैसी जो रूढ मान्यता है वह बिलकुल झूटी है। यह तो स्वास्थ्य-प्राप्तिका अलौकिक, सुलभ, स्वयंभू और दिव्य साधन है, अैसी मुझे प्रतीति हुअी है। मुझे अुपवासके अन्तिम दिन और अगले दिनका अर्थात् ता० ३०, ३१ का पेशाब डिस्टिल्ड वॉटर जैसा स्वादहीन प्रतीत हुआ। जिस दिन मूत्रपान किया अुसी दिनसे कफ की पीडा तो जाती रही। जुकाम और पसलियोंका दर्द

मा—१४

दूर हो गया। शरीरमें ताज़गी देनेवाली गरमी अेवं शक्ति अितनी आयी कि मैं रातको बिना ओढ़े खुले शरीर सोने लगा। पहले तो मुझे शरीरकी गरमीकी रक्षाके लिये गरम कपड़े लपेटकर सोना पड़ता था। सर्दी, कफ और प्लुरिसी जैसा रोग दूर हो गया। जोड़ोंका दर्द और रीढ़का अकड़ाव भी बहुत ही कम हो गया। मेरी गरदनका अकड़ाव भी जाता रहा और वह अच्छी तरहसे मुड़ने लगी। चमड़ीकी शिथिलता दूर हुअी और वह कोमल अेवं रोगमुक्त हो गयी। संक्षेपमें, मूत्रप्रयोगका अपूर्व अेवं अद्‌भुत असर हुआ। मैं कभी-कभी मूत्रमालिश और मूत्रपान करता हूं, जिससे स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है। मुझे अिसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं लगती कि स्वमूत्र स्वास्थ्यके लिये अेक अमूल्य, स्वयंभू और अलौकिक संजीवनी है। सभी रोगपीडित व्यक्ति डाक्टर या वैद्यकी सलाह अेवं दवाका मोह छोड़कर यह प्रयोग आज़मायें और सत्यका अनुभव करें, अैसी मेरी हार्दिक अभिलाषा है।"

२. रीढ़की जकड़ और गांठ

मोगरी ज़िला खेड़ाके निवासी श्री चतुरभाअी भाअीलालभाअी की मूत्रप्रयोग संबंधी श्रद्धा अेवं अनुभवका अुल्लेख पहले आ चुका है। अुन्होंने अपनी पुत्रवधूके रोगको भी अिसी प्रयोगसे मिटाया, जिसका संक्षिप्त विवरण अिस प्रकार है:—

अुनकी पुत्रवधूकी रीढ़का चौथा और पांचवां मनका जकड़ जानेसे अुनपर सूजन आ गयी थी और रीढ़ पर गठीला जमाव हो गया था। दर्द अितना होता था कि वह अूंची नज़र रखकर चल नहीं सकती थी और तिरछा-टेढ़ा भी देख नहीं सकती थी। सतत पीडाके कारण अुसे नींद भी नहीं आती थी। अिस तरह अुसकी पीडा बेहद थी। अुसे बम्बअी ले जाकर डाक्टरकी सलाह से गहरी किरणें भी दिलायी गयी थीं, परन्तु आरामका नाम नहीं। वहांसे वापस आकर

आणंदके मिशन अस्पतालमें प्लास्टर ऑफ़ पेरिसकी पट्टी लगवाकर साढ़े-तीन महीने वह लेटी रही, पर कुछ फ़र्क नहीं हुआ। दिन-प्रतिदिन अुसकी पीडा असह्य होती गयी। आखिर अुसे मूत्रप्रयोगके लिये राज़ी किया गया। मूत्रमालिशसे प्रयोग शुरू हुआ। सात दिनकी मालिशसे अुसकी हालत कुछ सुधरने लगी। अुसकी स्थितिमें जो परिवर्तन होता अुसकी खबर वे मुझे देते और मेरी सलाहसे काम करते। पन्द्रह दिनकी मालिशसे रीढ़की गांठ गलने लगी। आवश्यकताके अनुसार अुसे कुछ दिन मूत्रके साथ अुपवास भी कराये गये। अेक मासके भीतर ही पुत्रवधू स्वस्थ होकर अपने पतिके साथ कलकत्ता चली गयी।

३. गठिया (गाअूट)

अहमदाबादमें न्यू ब्रह्मक्षत्रिय सोसायटीमें श्री पुरुषोत्तमभाअी सोमाभाअी पटेल (स्व० सरदार वल्लभभाअी पटेल का भतीजा) रहते हैं। पिछले दो चार बरसोंसे वे गठियेसे पीडित रहा करते थे। अुनके हाथ-पाओंकी अुंगलियां, कंधे, घुटने आदि अवयवोंके जोड़ जकड़ जाया करते थे और दर्द किया करते थे। दर्दके कारण वे अपने हाथसे वज़न नहीं अुठा सकते थे, अुन्हें चलने-फिरने में तकलीफ़ होती थी और बूट पहननेमें भी दिक़्क़त आती थी। अिस रोगका असर अुनके सारे शरीर पर भी होने लगा। शरीरकी कान्ति अेवं स्फूर्ति जाती रही थी। वे दवा तो लेते थे, पर आराम का नाम न था।

मेरी मूत्रचिकित्साकी बात का अुन्हें पता लगा और वे मेरे पास आये। मैंने अुन्हें सलाह दी कि पुराने मूत्रसे शरीर पर मालिश किया करें और धीरे-धीरे सुबह-शाम मूत्रपान भी करने लगें। अिसके अतिरिक्त कुछ आवश्यक सूचनाअें भी दीं।

अितनेमें अुन्होंने सपरिवार हरद्वार जानेका निश्चय किया और अेक महीना वहां गंगाजीके किनारे रहे। वहां रहकर अुन्होंने यह प्रयोग शुरू किया। पन्द्रह बीस दिन अुन्होंने मूत्रमालिश की। मूत्रमालिश भी वे

लगातार नहीं कर सके; क्योंकि जब वे दो-अेक दिनके लिये दर्शनीय स्थल देखने जाते तब मालिश वन्द रखनी पड़ती। यों कुल मिलाकर बीस दिनकी मालिशसे अुनके जोड़ोंका दर्द मिट गया। हरद्वारसे वापस आते ही अुन्होंने शीघ्र मुझे वधाअी के साथ खुशखवरी सुनायी कि अुन का गठिया निर्मूल हो गया है। फिर भी वे रोज़ दो वार मूत्रपान करते रहे, जिसका परिणाम भी सुन्दर आया। अुनके शरीरका फीकापन दूर हुआ और लाली आयी। शरीर और मनमें स्फूर्ति आयी। शौच नियमित हो गया और जठराग्नि भी अच्छी तरह काम करने लगी। अद वे निश्चिन्त हैं।

१२

चमड़ीके रोग

१. गरमीके छाले

श्री जूठाभाअी अमरशी शाह वरसोंसे हरिजन आश्रममें रहते हैं। अुनका खानपान और रहनसहन वहुत सादा है। अुनकी अुम्र ७७ वर्षसे भी अधिक है। वे अितने शक्तिशाली हैं कि आठ-दस मील आसानीसे चल सकते हैं। अुन्हें नये नये प्रयोग करनेका बड़ा शौक़ है। अुन्हींसे मुझे मूत्रप्रयोगकी प्रथम जानकारी और प्रेरणा मिली थी। वे मेरे परम हितैषी हैं।

सन् १९५८ में अुनके शरीर पर गर्मी फूट निकली थी। वे प्रयोगकी दृष्टिसे प्रतिदिन पेशावसे सारे शरीरकी मालिश करने लगे और रोज़ाना अेक दो वार पेशाव पीने लगे। अिस दौरानमें अुनके सारे शरीर पर चेचक जैसे, वड़े पीलुके समान छाले निकल आये और शरीर पर अुंगली रखनेकी जगह भी न रही, हाथ-पैरोंमें खूब दर्द होने लगा। अिसलिये अुन्होंने पेशाव और पानी के साथ तीन अुपवास करनेका निश्चय

किया। छालोंके कारण शरीर पर मालिश तो हो नहीं सकती थी। अिसलिये अुन्होंने पेशाब चुपड़नेका फ़ैसला किया। अुनके शरीरकी स्थिति अैसी थी कि दूसरा कोअी व्यक्ति अुन्हें देखता तो यही कहता कि अुन्हें छूतकी बीमारीके अस्पतालमें ले जाना चाहिये। किन्तु अुन्होंने किसी भी वैद्य या डाक्टरकी सलाह न लेकर संपूर्ण श्रद्धा के साथ मूत्रप्रयोगको चालू रखा।

अुपवासमें वे दिनभरका सारा पेशाब पी जाते थे और दो तीन दिनका पुराना पेशाव शरीर पर चुपड़ा करते थे। छठे दिन तो रोग का अुपद्रव खूव ही वढ़ गया और पैरों पर सूजन भी आ गयी। अुन्होंने देखा कि शरीरके छालों पर केवल पेशाब चुपड़नेका तो कोअी असर मालूम नहीं होता। अिसलिये अुन्होंने अपने अेक मित्रसे सारे शरीर पर पेशाबसे मालिश करवायी। जिससे पके हुअे सभी छाले फूट गये। मानो सारे शरीर पर पीप चुपड़ी हो, अैसा सफ़ेद लेप प्रतीत होने लगा। फिर तो अुन्होंने शीघ्र ही गुनगुने पानीसे स्नान करके शरीर साफ़ किया। अिससे अुन्हें काफ़ी आराम मिला। पांच छः दिनोंमें पुराने और नये सभी छालोंमें से पीप निकल जानेसे घाव भरने लगे और शरीर ठीक हो गया। दो दिन बाद तो वे सदा की भांति अपना दैनिक काम करने लग गये।

अपनी रोग-मुक्तिके ता० १०–१०–'५८ के विवरणमें श्री जूठा-भाअी लिखते हैं —

"मैंने अपनी ज़िन्दगीमें कभी अुपवास नहीं किये; क्योंकि भोजन किये बिना मैं यदि अेक दिन भी रहता था तो मेरे शरीरमें काफ़ी कमज़ोरी आ जाती थी। परन्तु मूत्रपानके साथ तीन दिनका अुपवास करनेसे मुझे ज़रा भी कमजोरी महसूस नहीं हुअी और मैं थोड़ा-थोड़ा चल-फिर भी सकता था। अिसलिये मुझे यह श्रद्धा हो गयी है कि चमड़ीके रोगोंमें यह मूत्रप्रयोग रामबाण अेवं सरल अुपाय है। सभी लोगोंसे मेरा यही निवेदन है कि वे अिस

अक्सीर और सेंत-मेंतके अिलाजसे चमड़ीकी बीमारियोंसे छुटकारा पायें और दूसरी खर्चीली दवाअियों तथा परेशानीसे बचें।

"अगर मैं डाक्टरी दवाअियोंके पीछे पड़ा होता तो सैंकड़ों रुपये खर्च हो जाते। सारा कुटुम्व मेरी परिचर्यासे परेशान हो जाता। अिस बीमारीमें तो मैंने अपनें सगे-सम्वन्धियों और लड़कियों तक को भी जानबूझकर खबर नहीं दी; क्योंकि मैं अुन्हें परेशानीसे बचाना चाहता था। अिस प्रकार मैंने अपना चमड़ीका भयंकर रोग शान्ति से मिटाया।"

अुपर्युक्त विवरण का मैं स्वयं साक्षी हूं। अेक दिन मैं आश्रमकी ओर घूमने गया था। वहां मुझे अुनकी बीमारीका पता चला। मैं अुन्हें देखने गया। अुनकी भयंकर दशा देखकर मैं क्षुब्ध हो गया और मुझे चिन्ता हुअी कि अिसका परिणाम क्या आयेगा! परन्तु पांच सात दिन बाद जब मैंने जूठाभाअी को देखा, तो मुझे अुनका शरीर देखकर आश्चर्य हुआ। शरीरके किसी भी भाग पर रोगकी निशानी तक न थी और चमड़ी तेजस्वी अेवं कोमल मालूम हुअी। ७७ बरसकी अुम्रमें अैसी बीमारीसे अुठनेके बाद भी, गंजी चांदवाले, सिर पर केवल कपड़ेका अेक टुकड़ा डालकर कड़ाकेकी धूपमें पांच-मील पैदल चल करके जूठाभाअी शाह स्वयं जब मेरे घर पर आ पहुंचे तब अुनकी हिम्मत देखकर मैं चकित अेवं मुग्ध हो गया और मानव-मूत्रकी अपूर्व शक्तिकी अेक और प्रतीतिसे गद्गद हो अुठा।

२. छाले

श्री केशवभाअी मकनभाअी मास्तरने मूत्रप्रयोग द्वारा अपने स्थायी क़ब्ज़से छुटकारा पा लिया, जिस का विवरण 'पेटके रोग' नामक प्रकरणमें दिया जा चुका है। अुन्होंने कुछ बरस पहले अपने चर्मरोगको मिटानेके लिये भी मूत्रका अुपयोग किया था, जिस के बारेमें वे लिखते हैं:—

"सन १९४८ में मुझे जुलाहेसे शिक्षक बननेका विचार आया और अध्ययनके लिये अत्यन्त परिश्रम करना पड़ा। आहार-विहार में गड़बड़ हो जानेसे मेरे शरीर पर छाले ही छाले निकल आये, जिनकी पीडाके कारण न तो आरामसे बैठा जाता और न ही सोया जाता। अुस समय प्रतिदिन तीन तोला मिट्टी पेशावमें भिगोकर मैं चुपड़ा करता था। अिस तरह बीस दिन तक मैंने यह प्रयोग किया और मेरा शरीर स्वस्थ हो गया।

"ज़हरीली मक्खी, मच्छर या जन्तुके डंक पर पेशाव घिसनेसे आराम हो जाता है। पेशाव घिसनेसे और पेशावकी पट्टी रखनेसे बिच्छूका जहर भी अुतर जाता है।"

३. दाद और जुड़पित्ती

श्री शामलभाअी खेड़ा ज़िलेके ग्रामरक्षक दलके व्यवस्थापक हैं। अुनका शरीर ॲलर्जिक (संवेदनशील अेवं विकारशील) था। रक्तविकारके कारण अुनके शरीर पर दाद हो गयी थी और दादका अुभार नाक पर विशेष था। अुन्हें मधुमेहका रोग भी था। अपनी शारीरिक स्थितिका पूरा विचार किये विना मनमाने ढंगसे अुन्होंने मूत्रप्रयोग शुरू कर दिया और किसी प्रकारका परहेज़ भी न रखा। प्रयोगके दौरानमें वे चायमें सेकेरीन भी लेते रहे। दो-तीन दिनमें ही अुनके सारे शरीर पर जुड़पित्ती हो गयी। और कुछ फुंसियां भी निकल आयीं। मुझे बोरसद (खेड़ा) से फ़ौरन् खबर दी। मैंने तुरंत अुन्हें सूचित किया कि धीरज रखें और किसी प्रकारकी दवा या अिंजेक्शन न लें; परन्तु मूत्रमालिश ज़रा ज़ोरसे करें ताकि फुंसियां फूट जायें। वैसा करनेसे दो ही दिनमें अुनकी सभी तकलीफ़ें दूर हो गयीं।

मूत्र क़ुदरती रसायन है। सेकेरीन तो रसायनिक बनावट है। विजातीय तत्त्वोंका मेल कैसे बैठे? आख़िर परिणाम अच्छा आया।

पर शामलभाओीने दुःख अुठाया। अिससे फलित होता है कि मूत्रप्रयोग करनेवालेको कितना सावधान रहना चाहिये।

४. गीली चंबल (अॅक्ज़ैमा)

पाटणके निवासी श्री रसिकलालभाओी बम्बओीमें चायके दलाल हैं। अुनकी पत्नीके दोनों हाथोंकी अुंगलियों पर गीली चंबल हो गयी थी। कितने ही महीनों तक अुसकी दवा की गयी, पर वह मिटी नहीं। वह ज्यों ज्यों अिंजेक्शन लेती या दवा लगाती त्यों त्यों बढ़ती जाती थी। अधिक कठिनाओी तो यह थी कि अुसमें से रात-दिन पानी निकलता रहता था, जिसे देखते ही घृणा आती थी और कोओी भी काम हाथसे नहीं होता था। हाथों पर दिनरात पट्टी बांधी रखनी पड़ती थी। अुस मौक़े पर चि० शशिकान्तका अपने व्यवसायके लिये बम्बओी जाना हुआ। जब वह श्री रसिकलाल सेठके घर पर पहुंचा और अुनकी पत्नीकी वैसी स्थिति देखकर अुसने तुरंत ही अुपाय बताया कि दिनमें दो बार सुबह शाम पुराने पेशाबसे अेक-अेक घंटे तक हाथ धोये जायें, पंद्रह बीस दिनमें यह रोग मिट जायगा। अिस दौरानमें रसिकलालभाओीका विवाहके अवसर पर सपरिवार पाटण जाना हुआ। वहीं अुनकी पत्नीने मूत्रप्रयोग शुरू किया। बारह पंद्रह दिनमें तो दोनों हाथोंकी अुंगलियां साफ़ हो गयीं और अुन पर किसी प्रकारका दाग़ तक न रहा। पाटणसे बम्बओी वापस लौटते समय वे सपरिवार अहमदाबाद अुतरे। अुनकी पत्नीने स्टेशन जानेसे पहले मुझे अपने हाथ दिखाये और कृतज्ञता प्रगट करते हुअे विदा ली। श्री रसिकलाल भाओी मूत्रप्रयोगके स्वानुभववाले लेखकी क़रीब पंद्रह नकलें प्रचारके लिये बम्बओी ले गये।

५. सफ़ेद कोढ़

श्री रणजीतभाअी बलदेवभाअी परीख अेक सहृदय व्यक्ति हैं। अुनकी आयु लगभग ३२ वर्षकी है। पंद्रह वर्ष पहले अुनके शरीर पर सफ़ेद कोढ़ हो गया था। सिर, मुंह, पीठ, छाती, पेट, हाथ और पैर आदि सभी अवयवों पर अुसके छोटे-बड़े दाग़ थे। अिसी रोगके कारण अुनके सिरके बाल भी सफ़ेद हो गये थे। रणजीतभाअीको साधु-संन्यासियोंके सत्संगका बहुत शौक़ था। अुन्हें अेक बार योगकी साधना करनेवाले अेक साधु मिल गये। अुनके अधिक संपर्कमें आनेसे वे खुद भी योगके साधक बन गये। योगकी साधनाके दौरानमें अुन्होंने 'हठयोग-प्रदीपिका' पढ़ी। अुसमें अमरोली मुद्राके वर्णनमें 'शिवाम्बुकल्प' का उल्लेख आया है। आखिर काफ़ी तलाश करने पर अुन्हें दरभंगाकी तरफ़ रहनेवाले किसी महात्मासे 'शिवाम्बुकल्प' नामकी संस्कृत पुस्तक मिल गयी। अुसमें विविध प्रकारके मूत्रप्रयोगोंका अुल्लेख है। अुन्होंने कअी अेक प्रयोग खुद किये। अुन्होंने नासिका द्वारा मूत्रपान करके अपनी आंखोंको किस तरह ठीक किया, अिसका विवरण 'आंखके रोग' नामक प्रकरणमें दिया गया है। अुन्होंने अपने सफ़ेद कोढ़के लिये भी मूत्रप्रयोग किया, जिसका विवरण यहां दे रहा हूं।

यथाविधि मूत्रपान और मूत्रमालिश करनेसे अुनके कोढ़ पर असर होने लगा। पहला असर तो यह हुआ कि कोढ़का बढ़ना रुक गया। फिर धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न अवयवों पर जो कोढ़के दाग़ थे वे मिटने लगे। सिरके सफ़ेद दाग़ मिट गये और बाल काले हो गये। मुंह, गला, छाती, बग़ल, पेट और कमर, अिन अवयवों पर जो दाग़ थे वे भी साफ़ हो गये और चमड़ी स्वाभाविक रंग अर्थात् गेहूं रंगकी हो गयी।

कुछ समय बाद चौमासेमें जब वे मेरे पास आये तब अुनकी दाढ़ी और लंबे बालोंको देखकर शुरूमें तो मैंने समझा कि अरविंदाश्रमके कोअी युवक साधक हैं, क्योंकि दाढ़ी और लंबे बालोंके साथ मैंने अुन्हें पहली बार ही देखा था। फिर तो अुनकी काली दाढ़ी और

काले बालोंने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया और मूत्रप्रयोगकी अपूर्व-शक्तिके अेक और अनुभवको जानकर मेरा हृदय गद्गद हो अुठा।

अुनके हाथके अगले भाग पर और पांवोंके अंतिम भाग पर कोढ़के दाग़ अभी तक हैं सही, जिन्हें मिटानेके लिये अुन्होंने यथेष्ट प्रयत्न नहीं किया। परन्तु अुनका कहना है कि वे दाग़ अुन्हें कुछ तकलीफ़ नहीं देते अर्थात् गर्मीके दिनोंमें अुनसे किसी तरहकी जलन नहीं होती। फिर भी अुनका दृढ विश्वास है कि मूत्रप्रयोग अुन दाग़ोंको भी मिटा देगा। अुनके मूत्रप्रयोगकी पद्धति अनोखी थी। वे नहाधोकर भोजन करनेके बाद मूत्रमालिश करते थे और फिर काम पर जाते थे, परन्तु अुन्हें कोअी दुर्गंध मालूम नहीं होती थी।

अैसे स्वानुभवके बाद अुन्हें मूत्रकी सच्ची शक्तिका पता चला। फिर तो वे अपने परिवारमें भी अिसका अुपयोग करने लगे। अुनकी पत्नीको कोअी तकलीफ़ हो जाती तो वे मूत्रप्रयोगसे दूर कर देते। अिसी तरह बच्चोंकी बीमारीमें भी यह प्रयोग काम आता। धीरे-धीरे अड़ोसी-पड़ोसियोंकी छोटी-बड़ी बीमारियोंको मिटानेके लिये भी वे अिसका अुपयोग करने लगे। किसी छोटे-बड़ेके चोट लगी हो, किसीकी आंख दुखती हो या कान पका हो तो शीशीमें भरकर रखे हुअे पेशावको वे दवाके तौर पर देकर मिटाते। यह कोअी नहीं जानता था कि वह दवा क्या है। परन्तु सभी अितना जानते थे कि रणजीतभाअीके पास अैसी अच्छी दवा है कि अुससे फोड़े, फुंसी, ज़खम आदि फ़ौरन् मिट जाते हैं। अुन्होंने बड़े-बड़े रोग भी मूत्रप्रयोगसे मिटाये हैं, जिनका विवरण यथास्थान दिया गया है।

६. गलित कुष्ठ

कुशल मूत्रचिकित्सक स्व० आर्मस्ट्रॉङ्गने अपनी पुस्तकमें अिस बातका स्पष्ट अुल्लेख किया है कि प्रायः सभी गंभीर रोगोंसे पीडित रोगी अुनके पास आये और मूत्रप्रयोगसे वे रोगमुक्त हुअे। परन्तु गलित

कुष्ठ (लेप्रॉसी) के अेक भी रोगीका अुपचार करनेका अवसर अुन्हें नहीं मिला। क्योंकि अिंग्लैंडमें यह रोग शायद ही होता है। अुनकी यह वात पढ़नेके वाद मुझे विचार आया कि मूत्रमें गलित कुष्ठको मिटानेकी शक्ति भी होनी चाहिये। यह रोग अितना भयंकर अेवं संक्रामक है कि सगे संवंधी भी अिसके रोगियोंकी परिचर्या करनेसे कोसों दूर भागते हैं। अहमदावादमें अैसे रोगियोंका अेक अस्पताल है, जहां अीसाअी सेविकाअें अुनकी दिनरात सेवा-शुश्रूषा करती हैं। मुझे विचार आया कि अुन सेविकाओंसे मिल कर अिस मूत्रचिकित्साकी वात और खास कर अुनके पवित्र धर्मशास्त्रकी वात की जाय, तो थोड़े-वहुत गलित कुष्ठके रोगियोंको आराम मिले और वे अिस भयंकर पीडासे वचें। मेरे अेक मित्र अुस अस्पतालमें काम करनेवाली फ्रेंच सेविकाओंके संपर्कमें थे। मेरे अनुरोधसे वे वहां गये और अुनसे मिलकर वात की। तव मुख्य सेविकाने कहा, "जिस डाक्टरकी देख-रेखमें ये रोगी हैं, अुसकी अनुमति विना हम कुछ नहीं कर सकतीं।" वहांके अधिकारी डाक्टर चर्मरोगोंके विशेषज्ञ हैं और अहमदावादके अेक सद्गृहस्थ हैं। अुन्हें मेरी वात जंच जाय तभी कुछ काम हो सकता है। मुझे लगा कि अभी अैसा कुछ नहीं हो सकेगा। समय अपना काम खुद करेगा। यों समझकर मैंने वैसी कोशिश छोड़ दी।

परन्तु दूसरी तरहसे अीश्वरने मेरी अिच्छा पूरी की। डाक्टर पुष्पेन्द्र भट्टने गलित कुष्ठके अेक रोगीको मेरे पास भेजा। एक रविवारको वह रोगी अपनी पत्नीके साथ मेरे पास आया। अुसका नाम है कानजीभाअी मोहनलाल। अुम्र ३२ वरसकी। अहमदावादके निवासी। मिलमें वीविंग (वुनाअी) विभागमें वह काम करता था। अुसने मुझे अपनी वीमारीका हाल सुनाया। चमड़ीके रोगके अेक कुशल डाक्टरने अुसे गलित कुष्ठका रोगी समझकर वहुत समय तक अिलाज किया, पर रोग मिटा नहीं। अिसलिये मेरा स्वानुभववाला लेख पढ़कर डाक्टर पुष्पेन्द्र भट्टकी सूचनासे वह मेरी सलाह लेने आया। अुस समय

अुसके हाथों और अुंगलियों पर ज़ख्म थे, तथा अुंगलियोंमें झुनझुनी अेवं जलन रहा करती थी। वह अपना हाथ अूंचा नहीं कर सकता था। मैंने देखा कि अुसके हाथ की नसें अितनी खिंची हुअी थीं, मानो सिकुड़ गयी हों। मुझे मालूम हुआ कि अुसने काफ़ी अरसे तक अपने कुष्ठ रोगका अिलाज करवाया, किन्तु मिटा नहीं। आखिर मैंने अुससे पूछा, "तुम जो छपी हुअी पत्रिका लाये हो, अुसे अच्छी तरह पढ़ा है न?" अुसने जवाबमें कहा, "हां, पढ़ा है। अितना ही नहीं, किन्तु मैंने अेक हफ़्तेसे हाथ पर पेशाबकी मालिश भी शुरू कर दी है।" "तुम्हें अेक सप्ताहकी मालिशका कैसा असर मालूम होता है?" मैंने पूछा। अुसने स्पष्ट अुत्तर दिया, "पहलेकी अपेक्षा पीडा और झनझनाहटमें मुझे काफ़ी आराम मालूम होता है।" अुसके अुत्तरसे मैं गद्‌गद हो अुठा और हृदयमें प्रभुको नमन करके निश्चिन्त भावसे कहा, "तो फिर मालिश किया करो और कलसे सुबहका पेशाब पिया करो। दो तीन दिन बाद तुम्हें पेशाब और पानीके साथ अुपवास करने चाहिये।"

अुसकी पत्नीने पूछा, "कितने अुपवास करने पड़ेंगे?" मैंने जवाब दिया, "अभी कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता। मैं डाक्टर नहीं हूं। तुम्हारे जैसा ही अेक साधारण व्यक्ति हूं। परन्तु यह वस्तु अितनी शक्तिशाली है कि अिसका रोग मिटा देगी।" अित्यादि बातोंसे अुन दोनोंको आश्वासन दिया। पति पत्नी दोनोंने अपने घरकी राह ली। दूसरे रविवारको वह फिर दोनों मेरे पास आये। अुसने अपनी सुधरी हुअी हालतका ज़िक्र किया। मैंने अुसे प्रोत्साहित किया और अुपवास करनेकी सूचना दी। अुसके बाद अुसने तीन अुपवास किये। फिर बहुत लंबे अरसेके बाद अर्थात् दो तीन महीने बाद ता० ३०–११–'५८ को मेरे पास आया और प्रसन्नतासे कृतज्ञता प्रगट करते हुअे अपना सारा हाल सुनाकर अिस प्रकार लिखवाकर चला गया :—

"मेरा नाम कानजीभाअी मोहनलाल, अुम्र ३२ साल की। अहमदाबादका निवासी। मिलमें वीविंग खातेमें काम करता हूं। रूबरू

आकर लिखा रहा हूं कि मेरे दाहिने हाथमें चार वरससे खूब पीडा होती थी और चमड़ी पर लाल ददोरे अुठ आये थे। मैं रिलीफ़रोड पर रहनेवाले डाक्टर . . . . जो चर्मरोगके विशेषज्ञ हैं, अुनके पास गया। मेरा हाल देख-सुनकर अुन्होंने कहा कि तुम्हें गलित कुष्ठ हो गया है। अुनसे मैंने दस अिंजेक्शन लगवाये और अुनकी बतायी हुअी गोलियां भी खायीं, पर रोग मिटा नहीं; अुलटे पीडा बढ़ गयी। फिर मैं गुलाबबाअी अस्पतालमें 'स्किन स्पेशैलिस्ट' (चर्म-विशेषज्ञ) से मिला। अुनकी सूचनाके अनुसार चार अिंजेक्शन मैंने डा० पुष्पेन्द्र भट्टसे लगवाये, पर कुछ असर न हुआ। अुसके बाद डाक्टर पुष्पेन्द्र भट्टने मुझे रावजी काका द्वारा प्रकाशित मूत्रचिकित्सावाला लेख पढ़नेको दिया। मैंने अुसे पढ़ा और अधिक जानकारीके लिये अुनसे रूबरू मिला। अुनकी सूचनाके अनुसार घर जाकर मैंने प्रयोग शुरू किया। मैंने पेशाब और पानीके साथ तीन अुपवास किये और अेक मास तक मूत्रमालिश की। अिससे मेरे दायें हाथकी जलन अेवं पीडा मिट गयी और जो पहले मुड़ता न था वह अब मुड़ता है। जिस हाथसे पहले कुछ काम नहीं हो सकता था अुस हाथसे अब मैं अच्छी तरह काम कर सकता हूं। अभी मेरे हाथमें थोड़ीसी जड़ता है। कुल-जमा मूत्रप्रयोगसे मुझे बहुत लाभ हुआ है और हाथ-पैरके कोढ़के ज़ख्म मिट गये हैं। अुंगलियोंमें जो चरचराहट होती थी वह भी अब मिट गयी है।"

७. सोराअिसिस

सोराअिसिस अेक असाध्य रोग माना जाता है। निम्नलिखित विवरणमें बताये हुअे लक्षणोंसे मालूम होता है कि यह रोग कितना पीडाजनक अेवं भयंकर है। श्री पोपटलाल गोविंदजी लाखाणी पोरबंदर (सौराष्ट्र) के निवासी हैं। अुन्होंने बीस पच्चीस वर्ष बम्बअीमें सॉलिसिटरके नाते काम किया था। अब निवृत्त होकर वे पोरबंदरमें रहते हैं। वे पिछले पच्चीस वर्षसे सोराअिसिसके रोगसे पीडित थे।

आखिर मूत्रोपचारसे वे रोगमुक्त हुअे। अुन्होंने अपनी रोगमुक्तिका विवरण मुझे ता० ३०–७–'६० को लिख भेजा, जिसे संक्षेपमें यहां दे रहा हूं :—

"मुझे क़रीब पच्चीस बरस पहले सोराअिसिस का रोग हुआ था। यह रोग धीरे-धीरे शुरू होता है। जलने या डंकके छाले जैसा छाला शरीर पर अुठ आता है। अैसे छालेसे रोगका आरंभ होता है। अिस छालेकी विशेषता यह है कि अिसमें पानी नहीं होता। अिस छालेकी पपड़ी अुखड़ती और आती रहती है। अिस तरह अज्ञात रूपसे यह बढ़ता रहता है। अैसा कहा जाता है कि यह प्रायः हड्डीके जोड़ पर अधिक होता है। मुझे शुरूमें घुटनोंके नीचे दोनों टांगों पर छाले हुअे थे। चमड़ी सूखती हुअी मालूम होती थी और खाज अितनी होती थी कि खुजलाये विना रहा नहीं जाता था। मैंने अॅक्ज़ैमा (चंवल) की कल्पना की थी। परन्तु जैसे-जैसे यह रोग बढ़ता गया वैसे-वैसे चिन्ता होने लगी। खुजलानेसे चांदीके वारीक चूरे जैसा चूरा झड़ता मालूम होता था। खाजका रोकना बहुत मुश्किल लगता था। अुस वक़्त मैं बम्बअीकी हाअीकोर्टमें प्रैक्टिस करता था। वहांके चर्मरोगके विशेषज्ञ श्री रेवेलेको दिखाने पर पहली बार ही मैंने अपने रोगको सोराअिसिसके नामसे जाना। अिंजेक्शन, पीनेकी दवा और मरहमके लिये प्रिस्क्रिप्शन (नुसखा) मिला और यह पता लगा कि रोग असाध्य है। अिसको बढ़नेसे तो ज़रूर रोका जा सकता है, परन्तु तुरन्त मिटाया नहीं जा सकता। अुस नुसखेके अनुसार मैंने दवा की होगी और रोगका बढ़ना रुका होगा। धैर्य न रहनेसे अथवा रोगके अभ्यस्त हो जानेसे मैंने अुस नुसखेका अुपचार बन्द कर दिया होगा। फिर भी जैसे-जैसे रोग फैलता गया वैसे-वैसे भिन्न-भिन्न लोगोंकी सलाहके अनुसार अॅलो-पैथी, होमियोपैथी, आयुर्वेद आदिकी दवायें की होंगी। झाओवाके मंदिरके पासकी गलीमें रहनेवाले वैद्यराज गदेने मेरा आयुर्वेदिक अुपचार किया था, जिससे अच्छा आराम हुआ था; परन्तु वह आराम

देर तक टिका नहीं। रोग फिर शुरू हुआ, फिरसे वही फैलाव, वही खाज और वही व्याकुलता। पिछले कितने वर्षोंसे तो मैं दिनमें अनेक बार हाथ, पाओं, मुंह, सिर, पेट आदि सभी सोराअिसिस वाले अंगों पर नारियलका तेल चुपड़ता था, जिससे चमड़ी कुछ मुलायम हो जाती थी। यह तेल चुपड़नेका काम दिनमें तीन-चार बार करता था। वैसा करनेसे अूब जाता तो अुसका फल भुगतना पड़ता। हाथ के पंजेके पिछली तरफ़ अर्थात् अुलटे हाथकी अुंगलियोंकी हड्डियोंके जोड़ोंकी चमड़ी फट जाती, खून निकल आता अित्यादि। अितनी आकुलता होते हुअे भी रोगकी असाध्यताके विचारसे मुझे कुछ आश्वासन मिलता और मैं पीडाको भुला देता। अिसमें शक नहीं कि हाथ, पाओं, मुंह, आदि पर सोराअिसिस होने से शरीर बहुत भद्दा लगता था।

"पच्चीस वरसकी अिस बीमारीके दौरानमें मेरे लिये अनेक प्रसंग अुपस्थित हुअे होंगे। कल रात मैं अपने कुटुंबियोंके साथ अिस बातकी चर्चा कर रहा था कि सोराअिसिसने मुझे कितना परेशान किया और अिस रोगसे मुझे कितनी जल्दी और कितने चमत्कारी ढंगसे मुक्ति मिली। तब पूरे २५ बरसके सोराअिसिसका अितिहास स्मृतिपट पर चित्रित हो गया। मैंने अिस रोगसे बेहद कष्ट अुठाया है। चमड़ी अैसी हो गयी थी कि ज़मीन पर या दीवारके साथ शरीरका कोअी भाग लगते ही खून निकल आता और अुस जगह सोराअिसिस दीख पड़ता। मैं अपने करुणाजनक रोगकी कहानी शब्दोंमें नहीं कह सकता हूं।

"अिस तरह सोराअिसिससे पच्चीस बरस तक परेशान और बेचैन होने पर भी, यह असाध्य है, अिस विश्वासके कारण मैंने अिसका हृदयपूर्वक अुपचार करनेका अिरादा छोड़ दिया था।

"अितनेमें अेक आकस्मिक अवसर अुपस्थित हुआ। पोरबन्दरके डाक्टर श्री दत्ताणीके यहां आपकी पुस्तक देखनेमें आयी। वे कैंसरके अुपचारके विचारसे अिस पुस्तकका अध्ययन करते थे। मैंने अुनसे पढ़नेके

लिये पुस्तक ली और दो दिनमें अच्छी तरह पढ़कर अिस बारेमें अुनसे बातें कीं। अुनके कैंसरके रोगीके दिलमें श्रद्धा अेवं अुत्साह पैदा करनेके खयालसे मैंने मूत्रप्रयोग खुद आज़मानेका फ़ैसला किया। केवल अिसी आशयसे मैंने अिस प्रकार प्रयोग शुरू किया :—

"सन् १९६० के जून महीनेकी १२ तारीखसे मालिशके लिये मैं बोतलमें अपना पेशाब अिकट्ठा करने लगा। अेक अेक पौंडकी तीन बोतलें भर जाने पर मैंने मालिश शुरू कर दी। पुस्तककी सूचनाके अनुसार ता० १६ की रातको गुनगुने पेशाबसे सारे शरीर पर मालिश करवायी। ता० १७ की सुबह मेरा शरीर बहुत कोमल मालूम हुआ, जिससे मैं आश्चर्यमुग्ध हो गया। पपड़ी ग़ायब मालूम हुअी। आपकी बतायी हुअी विधिके अनुसार स्नान करनेपर शरीर खूब कोमल प्रतीत हुआ। पीनेकी तैयारी करनेके लिये आपकी सूचनाके अनुसार पहले दंतमंजनकी भांति पेशाब घिसने लगा और ता० १८ से 'शिवाम्बु' पीना शुरू किया। ता० १९ को मैंने अपना शरीर डा० दत्ताणीको बताया। वे तो मेरे से भी अधिक प्रसन्न हुअे। इस तरह मैंने प्रयोगकी सफलताका पूर्णरूपसे अनुभव किया।

"१६ जूनसे आज तक मालिश और शिवाम्बुपानका प्रयोग चालू रखा है। तलवोंसे सिर तक मैं मालिश कराता हूं। फिर अेक घंटा शारीरिक श्रम करता हूं और बादमें स्नान करता हूं। मेरी चमड़ी तुरन्त नीरोग मालूम होती है। पपड़ी दिखायी नहीं देती। मुझे याद नहीं कि १६ जूनके बाद कभी खाज आयी हो। मानता हूं कि सोरा-अिसिसने मुझसे विदा ले ली है। फिर भी मालिशसे होनेवाला आनंद और कोमलताको खोनेका मन नहीं होता। अैसा लगता है कि शिवाम्बुपानसे क़ब्ज़ वग़ैरह दूर हो गये हैं। शरीरमें अच्छी स्फूर्ति रहती है। भूख खूब लगती है। मन आनन्दित रहता है।

"मैं अपने प्रयोगका परिणाम अनेक लोगोंको बताता रहता हूं। बहुतोंने अिस प्रयोगको आज़माया है और लाभ अुठाया है। मेरे

प्रयोगने तो सगे संबंधियोंको सचमुच आश्चर्यचकित कर दिया है। मैं अीश्वरकी लीलाका असिसे अधिक अनुभव कब करूंगा? '**कर्तुमकर्तुमन्यथाकर्तुं समर्थः**', ऐसा ईश्वरके बारेमें कहा जाता है, जिसमें ज़रा भी अतिशयोक्ति नहीं हैं।

(श्री लाखाणीने यहां चार पांच रोगियोंके सफल मूत्रप्रयोगका वर्णन किया है। अुनमें से अेक पोरबन्दरके म्युनिसिपल हैल्थ ऑफ़िसर हैं, जिनके खूनका अधिक दवाव ठीक हो गया। और तलवोंकी खाज मिट गयी है।)

"मैं अपने अनुभवसे कहता हूं कि मूत्रोपचारसे शरीर और मन पर वहुत अच्छा और जल्दी असर होता है।"

१३

आंख के रोग

१. काला मोतिया और अन्य पीडाअें

श्री भीखाजी कालाजी अहमदाबादके जमालपुर प्रदेशमें कसाअीवाड़ेमें रहते हैं। वे ठेला चलानेकी कड़ी मज़दूरी करके अपनी रोज़ी कमाते हैं। अुनकी अुम्र ४१ वर्षकी है। अुनकी कनपटीमें टीस अुठती थी और सिरमें दर्द होता था। अुन्हें आंखोंसे धुंवला दिखायी देता था और शाम या रातको कुछ दीखता न था। आंखें खूब लाल रहतीं और अुनसे निरंतर पानी निकलता रहता। वे अिस रोगसे लगभग अेक वर्षसे पीडित थे। सख्त मेहनत-मज़दूरी करके पेट पालनेवाले बेचारे दवाअी पर कितना रुपया खर्च कर सकते थे? फिर भी अुन्होंने ५०० रुपये तो खर्च कर डाले थे। अुन्हें यह चिंता हुअी कि आंखें चली जायेंगी और अंधापन आ जायगा। अुन्होंने अहमदाबादके अेक प्रतिष्ठित नेत्र-विशेषज्ञको अपनी आंखें दिखायीं। डाक्टरने कहा कि आंखोंकी

पुतलीके पीछे ज़हरीला पानी भरा हुआ है, जिसे निकाल दिया जाय तो ठीक हो सकती हैं। वे अनजान बेचारे घबराये। आंखोंमें सूआ भोंक कर पानी निकलानेसे कहीं अंधता आ जाय तो अुनकी पत्नी और छेटे बाल-बच्चोंकी क्या दशा होगी, यह चिंता अुन्हें सताने लगी। अिस दौरानमें किसी कामके सिलसिलेमें म्युनिसिपल स्टोर सुपरिंटेंडेंट श्री अंबालाल पटेलसे अुनकी भेंट हो गयी। अंबालाल पटेल तो मूत्रप्रयोगका अच्छा अनुभव कर चुके थे। अिसलिये अुन्होंने भीखाजीको मूत्रप्रयोगकी सलाह दी। भीखाजीने रोज़ाना दो-तीन वार अपने पेशावसे आंखें धोना शुरू कर दिया। साथ ही प्रतिदिन वे अेक-दो बार तीन-चार औंस पेशाव पीने लगे। अेक सप्ताहमें तो अुन्हें अपनी आंखोंमें कुछ आराम मालूम होने लगा। अिसलिये अुन्होंने श्रद्धापूर्वक अुपचार चालू रखा। अेक मासके निरंतर अुपचारसे अुनका सिर दर्द, कनपटीकी चसक और नेत्रपीडा मिट गयी। आंखोंकी लाली जाती रही और अुनसे पानी निकलना भी बंद हो गया। आंखें अेकदम साफ़ हो गयीं और रतौंधीकी शिकायत दूर हो गयी।

भीखाजीने ता० ३-११-'५८ को अपनी रोग-मुक्तिका लिखित विवरण मुझे दिया था, जिसके अन्तमें वे लिखते हैं — "श्री पटेल साहव (स्टोर सुपरि० श्री अंबालाल पटेल) की सूचनाके अनुसार मूत्रप्रयोग करनेसे मेरी आंखोंमें अब किसी प्रकारकी पीडा नहीं है। मैं फिर अपनी आंखें डाक्टर साहवको दिखा आया हूं। वे भी कहते हैं, 'तुम्हारी आंखोंमें अब कोअी रोग नहीं है।' अपने ताज़े पेशावके प्रयोगसे मेरी आंखोंकी तकलीफ़ और सिरकी पीडा मिट गयी है। शरीरमें और कोअी व्याधि नहीं है, और अुसमें पहलेकी अपेक्षा स्फूर्ति अधिक लगती है। अब मैं अख़वार भी पढ़ सकता हूं, जिसे पहले नहीं पढ़ सकता था। अितना फ़ायदा हुआ है कि मैंने चश्मेका अुपयोग छोड़ दिया है। भगवानकी साक्षीमें जनकल्याणके लिये मैंने अुपर्युक्त विवरण खुद लिख दिया है और अपने हस्ताक्षर किये हैं।"

ठेलेवाले भीखाजी अपना विवरण देनेके लिये जब मेरे पास आये तब अुनसे मुझे बहुतसी बातें मालूम हुआीं। जिनमें से अेक बात यह भी थी कि पहले अुन्होंने जिस आंखके डाक्टरको अपनी आंखें दिखायी थीं, मूत्रोपचारसे अुनकी आंखोंकी बीमारी मिटते ही वे फिर अुसी डाक्टरके पास गये और आंखोंकी जांच करवाकर अुन्होंने मौखिक प्रमाणपत्र —'तुम्हारी आंखें बिलकुल ठीक हैं'— प्राप्त किया, जिसके लिये डाक्टर साहबने पांच रुपये फ़ीस ली। अुन्होंने पांच रुपये दिये, पर अुन्हें संतोष हुआ कि अुनकी आंखें बिलकुल अच्छी हो गयी हैं।

ग़रीब ठेलेवाले भीखाजी अीश्वरका गुण गाते हुअे और कृतज्ञता प्रगट करते हुअे विदा हुअे।

२–क. चश्मेसे मुक्ति

श्री रणजीतभाअी बलदेवभाअी परीखका विशेष परिचय 'चमड़ीके रोग' नामक प्रकरणमें आ चुका है। अुनकी आंखोंका तेज मंद हो जानेसे अुन्हें चश्मेका अुपयोग करना पड़ता था। अुनके चश्मेका नंबर माअिनस ढाअी था। अुन्होंने 'शिवाम्बुकल्प' के अनुसार नासिका द्वारा मूत्रपानका प्रयोग शुरू किया। अिस तरह पांच मासके प्रयोगसे अुनके चश्मेका नंबर ज़ाता रहा और अुनकी आंखें बहुत तेजस्वी हो गयीं। अुन्होंने नासिका द्वारा मूत्रपानका प्रयोग मुख्यतः योगसाधनाकी दृष्टिसे किया होगा, जिसका आनुषंगिक लाभ यह हुआ कि आंखें तेजस्वी हो जानेसे चश्मेसे मुक्ति पा ली।

अुनके नासिकापानके दौरानमें कुछ प्रतिक्रियाअें भी हुअी थीं। वे सुबहका पहला पेशाब लगभग छः औंस नाकसे पीते थे। दो-तीन दिन तक अुनका सिर भारी रहा था। अिसके अलावा गलेमें भी हलकीसी चुनचुनाहट होती रही थी। नासिकापान शुरू करनेके अेक मास बाद अेक नासिकासे कफ निकलने लगा था। आखिर धीरे-धीरे

सभी शिकायतें दूर होकर स्वस्थता आने लगी और प्रयोग लाभकारी सिद्ध हुआ।

मैं अपनी मान्यता और अनुभवके आधार पर अिस परिणाम पर पहुंचा हूं कि दिनमें तीन बार — सुबह, दोपहर और शाम पांच मिनट पेशावभरी आंख-प्यालियों (आअीवॉश) में पलक मारकर आंखें धोयी जायें तो डेढ़-दो महीनेमें आंखोंका तेज बढ़ जाता है और चश्मेका नंबर कम या दूर हो जाता है।

२—ख. चश्मेसे मुक्ति

श्री दासभाअीने अपने हाथीपांव नामक रोगके लिये मूत्रोपचार करके जो लाभ अुठाया है, अुसका विवरण 'हाथीपांव' प्रकरणमें दिया है। अुन्होंने ता० २१—७—'६० के पत्रमें यह भी लिखा है कि ७३ वर्षकी अुम्रमें रोज़ाना ताज़े पेशावसे अपनी आंखें धोकर चश्मेसे मुक्ति पा ली है।

३. नेत्रसुधार आदि

श्री पोपटलाल गो० लाखाणीने मूत्रोपचारसे २५ बरसके पुराने सोराअिसिससे छुटकारा पा लिया है, जिसका विवरण 'चमड़ीके रोग' नामक प्रकरणमें दिया जा चुका है। अुन्होंने अपनी रोग-मुक्तिका जो लिखित विवरण भेजा था, अुसके साथ अुनके बड़े भाअी कल्याणजी लाखाणीका अपना विवरण भी था, जिसमें अुन्होंने मूत्रप्रयोगसे होनवाले विविध लाभका अुल्लेख अिस प्रकार किया है:—

(१) पिछले ४५ बरससे वे चश्मेका अुपयोग करते आये हैं। अेक मिनट भी चश्मा अुतार देनसे सिरकी नसें खिंच जाती थीं। चार दिनके पुरान पेशावकी बूंदें रातको आंखमें डालते रहनसे अितना लाभ हुआ है कि वे घंटों तक बिना चश्मेके आनंदसे रह सकते हैं।

(२) अुनके हाथ कांपते थे और कोअी चीज़ पकड़ी नहीं जा सकती थी। मूत्रप्रयोगसे हाथोंका कंपन कम हुआ है। और प्याला-रकावी पकड़ी जा सकती है।

(३) अुन्हें हर पंद्रह वीस मिनटमें पेशावके लिये अुठना पड़ता था। अब दो ढाअी घंटे वाद पेशाव होता है।

(४) अुनके शरीरमें वेचैनी रहती थी, अब काफ़ी स्फूर्ति मालूम होती है। अभी अुनका प्रयोग चालू है।

१४

कान के रोग

१. कान बहना

मूत्रचिकित्साके बारेमें मेरा स्वानुभववाला लेख पढ़कर आणंदके पासके मोगरी गांवके श्री चतुरभाअी भाअीलालभाअी सन् १९५८ के मअी मासके दूसरे सप्ताहमें मेरे पास आये। आणंदके अेक व्यक्तिको हृदयरोग था। जिसे वे अपने साथ लाये थे ताकि वह मूत्रप्रयोग की विधिको अच्छी तरह समझ सके। मैंन अुसे सारी विधि समझा दी। अुनके साथ अुनकी सोलह वर्षकी लड़की भी थी। मैंने पूछा कि अिस लड़कीको क्यों लाये हैं? अुन्होंने कहा, "अिसका कान बहुत दिनोंसे पका है; खूब दर्द होता है और पीप निकलती है। कानके किसी विशेषज्ञको बतानेके लिये अिसे साथ लाया हूं।"

मैंने कहा, "कान बहने जैसे रोगके लिये अब कानके स्पेशैलिस्टको खोजना रहा! पहले तो लोग दौनेका रस डालकर कानका दर्द मिटाते थे। आप तो गांवमें रहते हैं। परंतु लड़कीके दिलमें अैसा होगा सही कि मेरे पिता तो लक्षाधिपति ठहरे, अिसलिये सौ डेढ़ सौ रुपये खर्च करनेमें ही अुनकी शान है।" श्री चतुरभाअी चौंक अुठे और मुझसे

पूछा "अैसा क्यों कहा?" मैंने हंसते-हंसते कहा, "अिसे घर ले जाकर अिसीके पेशाबकी बूंदें चार दिन कानमें डालें, जिससे दर्द मिट जायगा।" वह लड़की भी समझ गयी, मोगरी वापस लौटी। और चौथे दिन पत्र आया कि तीन दिन पेशावकी बूंदें डालनेसे कानकी पीडा मिट गयी है; परन्तु अभी थोड़ी-थोड़ी पीप निकलती है, अुसके लिये क्या किया जाय? मैंने सूचित किया कि पेशाबको थोड़ा गरम करके छोटी पिचकारीसे कान धो डालें और फिर अुसी गरम पेशाबकी बूंदें डालकर रूअीका फाहा रख दें। अुन्होंने वैसा किया। तुरंत चौथे दिन पत्र आया कि बच्चीके कानका दर्द बिलकुल मिट गया है।

अब तो श्री चतुरभाअीके दिलमें यह बस गया कि मूत्र तो दिव्य दवा है। फिर अुन्होंने अपनी पत्नीके पेट-दर्दको, अपने भाअीकी पत्नीके मधुमेहको और अपनी पुत्रवधूकी रीढ़की जकड़ तथा गांठको अिसी अमूल्य साधनसे मिटाया, जिसका विवरण अनुरूप प्रकरणोंमें दिया जा चुका है। फिर तो अुनका अुत्साह खूब बढ़ा। वे प्रायः आणंद आया जाया करते हैं, अिसलिये वहां अुनका बहुत परिचय है, जहां अुन्होंने प्रेमपूर्वक प्रचार करना शुरू कर दिया है। अितना ही नहीं, किन्तु खुला आमंत्रण भी दे रखा है कि जो मूत्रप्रयोग करना चाहे वह निःसंकोच अुनके पास रहकर प्रयोग करे और आराम हो जाने पर खुशीसे अपने घरकी राह ले।

२. कान बजना

विपुल चीनुभाअी शाह पुष्पकुंज सोसायटी, अहमदाबादमें रहता है, जिसकी अुम्र दस बरसकी है। कुछ समयसे अुसके कानोंमें दर्द रहता था और कान बजते थे अर्थात् अुनमें सांय-सांयकी आवाज़ हुआ करती थी। और अुसे सुनाअी भी कम पड़ता था। घरमें रखी हुअी अंग्रेज़ी दवा डालनेसे तकलीफ़ कुछ कम हो जाती और फिर

बढ़ जाती । साथमें रहनेवाले श्री हंसने मूत्रप्रयोगसे जो अनेक लाभ अुठाये हैं अुन्हें विपुल और अुसकी माता जानती थी। अुन्हींके अनुरोधसे अुसके कानोंमें ताज़े पेशाव की बूंदें सुवह-शाम डाली जाने लगीं, जिससे कानकी मैल बाहर निकलने लगी और दर्द कम होने लगा। चार-पांच दिन गुनगुने पेशावकी बूंदें भी डाली गयीं। अिस तरह क़रीब दो हफ़्तेके मूत्रोपचारसे कानकी सारी तकलीफ़ें दूर हो गयीं।

१५

सिर-दर्द

अहमदाबादकी ढालकी पोलमें अेक गृहस्थ रहते हैं। वे सुवह अुठते कि सिरदर्द होने लगता। अुन्हें यह तकलीफ़ सालोंसे थी। खूब बेचैनी रहती और कुछ काम नहीं हो पाता। अपने सिरदर्दको मिटानेके लिये वे अनेक प्रकारके टिंचर लिया करते थे। टिंचरोंके पानीसे अुन्हें नशा चढ़ जाता और नशेमें सिरका दर्द दब जाया करता अर्थात् दर्दका पता न लगता। श्री रणजीतभाओीको अुनकी तकलीफ़का पता चला कि वे अुनके पास पहुंच गये। रणजीतभाओीने पहले तो अुन्हें यह समझाया कि अैसी दवाओंसे शरीरको बहुत हानि पहुंचेगी और वह सदाके लिये रोगी हो ज़ायगा। फिर अुन्हें प्राकृतिक अेवं अुपयुक्त अुपाय सुझाया, जो अुन्हें जच गया। तदनुसार अुन्होंने मूत्रपान शुरू कर दिया। पहले ही दिन अुन्हें क़ै हुआी, जिससे सिरदर्द कुछ कम हो गया। यों लगातार तीन दिनके मूत्रपानसे अुनका बरसों पुराना सिरदर्द काफ़ूर हो गया।

१६

हाथीपांव

श्री तारकस गोविंदभाअी दुल्लभभाअी सूरतमें गोटा-किनारीके व्यापारी हैं, जिनकी कोठीमें श्री दासभाअी काम करते हैं। वे ता० २१–७–'६० के पत्रमें अिस प्रकार लिखते हैं :–

"लगभग पचास वर्षसे मेरी बायीं टांग हाथीपांवके रोगसे पीड़ित थी। अिस समय मेरी आयु ७२–७३ वरसकी है। अिस रोगके कारण पिछले चालीस बरससे मैं आधा मील भी नहीं चल सकता था। मैं चलता तो दूसरे दिन टांगें सूज जातीं और बुख़ार आ जाता। गत वर्ष 'मानवमूत्र' पुस्तक पढ़नेके बाद सं० २०१५ के फागुनसे मूत्रप्रयोग शुरू किया। चार पांच महीने बाद टांगकी पीडा आधी रह गयी और मैं मील डेढ़ मील चलने लग गया। फिर भी न तो टांगों पर सूजन आयी और न ही बुख़ार आया। धीरे-धीरे अब मैं दो-तीन मील चल सकता हूं और कोअी तकलीफ़ नहीं होती। मैं दिनमें अेक-दो बार मूत्रपान करता हूं और मालिश भी। आपकी सूचनाके अनुसार प्रयोग किया होता तो थोड़े समयमें ही अच्छा फ़ायदा हो जाता।"

श्री दासभाअीने भी पूरी सावधानीसे प्रयोग नहीं किया। परन्तु मैं जानता हूं कि वे खानपानमें बहुत संयमी हैं और सदा पथ्य आहार करते हैं। अिसलिये अुन्हें अधूरे प्रयोगसे भी अितना फ़ायदा हुआ है। मैं मानता हूं कि यदि वे व्यवस्थित प्रयोग करते तो जो फ़ायदा अेक बरसमें हुआ वह दो महीनेमें हो जाता।

१७

बवासीर

प्राय: सामान्य रोगोंसे भयंकर रोग हुआ करते हैं अर्थात् छोटे-छोटे रोग भयंकर अेवं अुग्र रूप धारण कर लेते हैं, जैसे सर्दीसे खांसी और खांसीसे क्षय हो जाता है। अिसलिये पहले से ही सावधानता रखनी चाहिये।

अहमदाबादसे 'गुजरात समाचार' दैनिक पत्र निकलता है। श्री कान्तिलाल शाह अुसके चीफ़ रिपोर्टर हैं। अुन्हें क़ब्ज़के कारण बवासीरकी बीमारी हो गयी थी, जिससे गुदाके कोमल भाग पर चीरे पड़ गये थे, अत: असह्य पीडा और जलन होती थी। अुन्हों ने मूत्रप्रयोगका आरम्भ मालिशसे किया। परन्तु अुनका शरीर अितना अॅलर्जिक (संवेदनशील अेवं विकारशील) था कि पाओं पर मालिश करनेसे मुंहपर जुड़पित्ती हो गयी। वे घबराये और मुझे फ़ोन किया। मैंने अुन्हें मालिश बन्द करनेके लिये सूचित किया और केवल दिनमें दो-तीन बार मूत्रपानकी सलाह दी। तदनुसार करनेसे अेक सप्ताहमें बवासीर की बीमारी दूर हो गयी। परन्तु जुड़पित्तीकी तकलीफ़ बनी रही। अुसे भी तो मिटाना था। अुसकी जड़ भी क़ब्ज़ थी। मेरी सलाहसे अुन्होंने मूत्रपान चालू रखा। जिसका परिणाम यह आया कि पेटका सब विकार दूर होनेसे और सदा पेट साफ़ रहनेसे जुड़पित्ती भी नामशेष हो गयी, अेवं अॅलर्जिक स्थिति जाती रही।

प्रसंगात् अेक बातकी ओर ध्यान दिलाता हूं कि खूनी बवासीर में मस्सों पर मूत्रकी पट्टी रखनेसे खून आना बन्द हो जाता है।

१८

गर्भाशयकी सूजन

अहमदाबादमें ढालकी पोलमें अेक स्त्री रहती है। शादीके बाद अुसके गर्भाशयमें सूजन रहा करती थी और अिसलिये दर्द अुठा करता था। अुसने डाक्टर-वैद्योंसे अपना अिलाज करवाया, पर कुछ भी आराम न हुआ। श्री रणजीतभाअीने पति द्वारा अुसे सूचित किया कि मूत्रपानसे अुसका दर्द मिट जायगा। परन्तु अुस समय पुरुषोत्तम मास चलता था। पवित्र मासमें अपवित्र मूत्र पीनेका काम भला हो सकता है? फिर भी समझाने पर वह मान गयी और अेक दिनका सारा पेशाब अुसने पी लिया। जिसने जादू-सा असर किया अर्थात् अेक ही दिनके मूत्रपानसे चिन्ताजनक रोग काफ़ूर हो गया। पहले वह मुश्किलसे थोड़ी दूर चल सकती थी और अब स्नानके लिये नदी पर जाने लगी।

१९

अंदरकी चोट

मलाड (बम्बअी) में नैसर्गिक अुपचारका अेक बड़ा ट्रस्ट है और अनेक वर्षोंसे अिस अुपचारका अेक अस्पताल भी चलाया जा रहा है। अुसमें ४०—४५ बरससे प्राकृतिक चिकित्साके निष्णात डाक्टर कृष्ण-वर्मा भक्तिभावसे काम करते हैं। मैंने 'मूत्रचिकित्सानो स्वानुभव' नामक लेख लिखा था, जिसकी आलोचना 'वैद्यकल्पतरु' नामक मासिक पत्रमें प्रकाशित हुअी थी। अुस आलोचनाके बारेमें अुन्होंने अेक लेख लिखा है, जिसमें मूत्रचिकित्साके कुछ सफल अुदाहरण दिये हैं। मैं वह लेख अुन्हींके शब्दोंमें मूत्रप्रयोगके सफल अनुभवोंके सिलसिलेमें यहां दे रहा हूं:—

मूत्रचिकित्सा — अनुभव

"गतवर्ष सन् १९५८ के जून महीनेके अंकमें मूत्रचिकित्सा पर श्रीरावजीभाअी मणिभाअी पटेलका लेख, अुसी वर्षके सितम्बर महीनेके अंकमें डा० मणिशंकर भट्टका अिस विषय पर लिखा हुआ विरोधात्मक लेख और अुसी वर्षके नवम्बरके अंकमें अिसी विषयपर श्री रमणलाल अेंजिनीयरका लेख मैंने पढ़ा।

"पहले लेखके लेखक श्री रावजीभाअी मणिभाअी पटेल कोअी व्यवसायी चिकित्सक नहीं हैं, वे तो अेक राष्ट्रसेवक हैं। अुन्होंने अपने स्वास्थ्यको ठीक करनेके लिये जो प्रयोग किया और जिसका शुभ परिणाम आया, अुस प्रयोगके बारेमें, आम जनताकी रुचि-अरुचिका विचार न करके, निःस्वार्थ भावसे अेवं लोकहितकी दृष्टिसे प्रस्तुत लेख प्रगट किया है।

"यह प्रयोग अुन्होंने न तो मनमाने ढंगसे किया है और न ही पुस्तकोंके आधार पर किया है; किन्तु विद्वान् चिकित्सकोंकी सलाह और सम्मतिसे किया है। प्रस्तुत लेख पढ़नेसे, अुनकी लिखी हुअी पुस्तकका पारायण करनेसे और मुझे लिखा हुआ अुनका पत्र पढ़नेसे, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि अुन्होंने यह प्रयोग न तो किसी प्रकारसे पैसा कमानेके आशयसे किया था और न ही अपनी वाह-वाही करानेकी भावनासे किया था। अुनका लेख पढ़कर जिन्होंने स्वयं प्रयोग किया और अुसका परिणाम अुन्हें बताया। अुन सबके विवरण अुहोंने अपनी पुस्तकमें दिये हैं।

"मैंने स्व० आर्मस्ट्रॉङ्गकी पुस्तक—'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' भी खरीद कर पढ़ी। अुसीके आधार पर मैंने अेक भाटिया युवति पर पूरी सावधानीके साथ मूत्रप्रयोग किया, जिसका परिणाम भी अच्छा आया। अिसमें अेक चिकित्सकके नाते अनुभवसे मुझे जो कुछ अच्छा लगा अुससे भी मैंने लाभ अुठाया। अुपर्युक्त केसका विवरण अिस प्रकार है:—

"अुस युवतीका कहना है कि वह नदीके किनारे पानी भरनेके लिये गयी थी। वहां अचानक पैर फिसल जानेसे वह गिर गयी, जिससे अंदरकी चोटके कारण अुसके मासिक धर्मकी क्रिया अनियमित हो गयी। साथ ही अुसकी पाचनक्रिया भी विगड़ी और मल-शुद्धिके अवयवोंने ठीक तरहसे काम देना बन्द कर दिया। क़ब्ज़ रहने लगा, जिसका परिणाम यह आया कि शरीरमें अपने आप विष अिकट्ठा हो जानसे रक्त अशुद्ध हो गया।

"समयानुसार पहले डाक्टरी अिलाज कराया गया, अुससे फ़ायदा न होने पर आयुर्वेदिक अुपचार आज़माया गया। वैद्योंकी दृष्टिसे अेलुवा अेक अैसी औषधि है कि जो दस्त साफ़ लाती है और मासिक धर्मको भी नियमित करती है। अुस अेलुवासे बनी हुअी दवाओंका भी सेवन कराया गया। पूरा परहेज़ न रखनेसे या अन्य किसी कारणसे दोनोंमें से अेक भी क्रिया नियमित न हुअी। अन्तमें अकोलाके अेक चिकित्सक, जो आयुर्वेदके साथ-साथ सूर्यरश्मि-चिकित्सा (क्रोमोपैथी) के भी जानकार हैं, अुनके हाथमें यह केस सौंपा गया। पूर्ण पथ्य और नियमित क्रियाके अभावमें अुस स्त्रीकी दशा अितनी अधिक विगड़ गयी कि वह कुछ घंटों या दिन की मेहमान मालूम होने लगी। अितनेमें अुस स्त्रीके बहुतसे संबंधियोंने 'नेचर क्योर हॉस्पिटल—मलाडमें अिस प्रकारकी चिकित्साका लाभ अुठाया था और अभीष्ट परिणाम भी आया था। अिसलिये अुन्होंने अुस स्त्रीको मुझसे अिलाज करानेकी बात सुझायी।

"अुसकी हालत देखनेसे मुझे लगा कि शायद मैं अुसे रोगमुक्त न कर सकूं, अिसलिये मैंने अिलाज करनेसे अिनकार कर दिया। परन्तु जिस वैद्यके हाथमें यह केस था अुसका कहना था कि यदि अुसे अस्पतालके क्रोमोपैथीके साधनों और अन्य सुविधाओंका लाभ अुठाने दिया जाय तो स्त्रीके जीवन-मरणके लिये वह ज़िम्मेदार है। वैद्य और अुस स्त्रीके पतिके साथ अिस बातका फ़ैसला कर लिया गया कि अिस केसमें यदि कुछ विपरीत परिणाम आये तो अुसके लिये मैं ज़िम्मेदार

नहीं दूंगा। अिसके अतिरिक्त अेक चिकित्सकके नाते मेरे लिये यह अुचित न था कि रोगीको यों अेकदम सहसा निराधार छोड़ दिया जाय। अिसलिये मैंने अपने नैतिक कर्तव्यको समझकर अुसे अपने अस्पतालमें तो दाखिल कर लिया।

"जिस वैद्यने अिस केसकी ज़िम्मेदारी ली थी वह मेरी अनुमति लेकर अपनी आवश्यक साधन-सामग्री लानेके लिये बंबअी गया ताकि वह यहां रहकर रोगीका अिलाज कर सके। परन्तु वह तो गया सो गया ही, वापस लौटा नहीं। अिसलिये रोगीके अुपचारका नैतिक अुत्तरदायित्व मुझे लेना पड़ा।

"जिस समय अुस स्त्रीको अस्पतालमें दाखिल किया गया अुस समय अुसकी स्थिति अिस प्रकार थी:— मासिक स्राव बन्द था, टट्टी भी शायद ही आती थी और पेशाब भी २४ घंटेमें ५–६ औंस ही आता थी। और वह भी घोड़ेके पेशाब जैसा गहरे चॉकलेटी रंगका तथा अत्यन्त दुर्गन्धवाला। अुस स्त्रीके खूनका पानी बन गया था। अुसके हाथ, पैर, छाती और पलकें तक सूज गयी थीं, जिससे आंखें बड़ी मुश्किलसे खुलती थीं।

"श्री आर्मस्ट्रॉंगकी पुस्तक—'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' के आधार पर, परन्तु कुछ परिवर्तनके साथ अुसका अुपचार शुरू किया गया। मूत्रचिकित्साके नियमानुसार अुसे अधिकसे अधिक पेशाब पिलाया जाता था और गरम पानी भी दिया जाता था। अुसकी मूत्रमालिशकी जाती थी और अुसे सूर्यस्नान भी कराया जाता था। थोड़े समयके बाद अुसे सादे पानीके बदले नारियलका पानी दिया जाने लगा। अैसे अुपचारसे धीरे-धीरे पेशाब बढ़कर ७० से ८० औंस तक होने लगा। (याद रहे कि अुपचारसे पहले ५–६ औंस ही पेशाब आता था।) शरीरकी सूजन कम होने लगी और दूसरी शिकायतें भी दूर होने लगीं। परन्तु खूनकी खराबी से छाती और दूसरे भागों पर जिस जगह गंदे खूनके जमावसे काले धब्बे पड़ गये थे, अुस जगह जोंक लगवाकर

गंदा खून निकलवा दिया गया। अिस प्रकार के अुपचारसे वह स्त्री ठीक हो गयी और साधारण व्यक्ति की तरह अपनी ज़िंदगी गुज़ारने लग गयी।

"अब सवाल यह खड़ा होता है कि जो वस्तु मुफ़्तमें मिलती है और हर घरमें सुलभ है, अुससे आम जनता फ़ायदा क्यों न अुठाये? यदि कोअी अिस का विरोध करना चाहता है तो अुसे पहले यह सिद्ध करना चाहिये कि अिसके अुपयोगसे अुसको अमुक हानि पहुंची है। अन्यथा यों ही खुले आम विरोध करना भला आमजनताके लिये हितकर हो सकता है? सन् १९५८ के जूनके अंकमें प्रकाशित श्री रावजी भाअीके लेखमें और 'मानव-मूत्र' नामक अुनकी पुस्तकमें प्रामाणिक माने जानेवाले मनुष्योंके जो दृष्टांत दिये हैं, अुनसे यह सिद्ध होता है कि मूत्रप्रयोगसे क्या-क्या फ़ायदे होते हैं।

"जब कि दूसरे लेखके लेखक डा० मणिशंकर भट्टने अिस प्रयोगको भविष्यमें हानिकारक तथा अरुचिपूर्ण अेवं अपवित्र बताकर वनस्पति अेवं खनिज पदार्थोंसे बनी हुअी दूसरी दवाअें सूचित की हैं। परन्तु अिन दोनों सज्जनोंके मूल आशयमें क्या अन्तर है, यह साफ़-साफ़ मालूम हो जाता है। श्री रावजीभाअीने ग़रीब जनताके हितके लिये सरल अेवं सुलभ अुपचार की बात अपने लेख और पुस्तक द्वारा प्रस्तुत की है; जिसपर अेक फूटी कौड़ी भी खर्च नहीं होती। जिसे पढ़कर और समझकर कोअी भी व्यक्ति विना किसी कठिनाअीके, विना किसी खर्चके, चाहे जिस जगह और चाहे जिस समय अुसे प्राप्त करके स्वतंत्रतासे यह अुपचार कर सकता है, अर्थात् पू० महात्मा गांधीकी दृष्टिके अनुसार वह स्वतंत्र हो सकता है। जब कि डा० मणिशंकर भट्टकी अुपचारपद्धति ख़र्चीली और व्यक्तिको पराधीन बनानेवाली होनेसे गरीबोंके लिये केवल निरुपयोगी ही नहीं है, किन्तु नीम हकीम या स्वार्थी चिकित्सक द्वारा किये जानेके कारण मत्रचिकित्साकी अपेक्षा कअीगुना खतरनाक भी है। यहां मुझे अेक और बात भी

लिख देना ज़रूरी मालूम होता है कि आजसे चालीस वर्ष पहले बम्बअीके अेक नामी डाक्टर, जो विलायतके अॅम० डी० थे और बहुत प्रसिद्ध हो गये थे, वे 'मूत्रचिकित्सा' का विरोध करते थे। परन्तु पहले जर्मन युद्धमें मूत्रप्रयोगसे सैंकड़ों सैनिकोंकी चिकित्सा की गयी और अुससे फ़ायदा नज़र आने लगा, जिससे यह अुपचार बहुत प्रसिद्ध होने लगा, तब हमारे यही चतुर अॅम० डी० डाक्टर, जो अेक दिन अिसका घोर विरोध करते थे, अिसकी तारीफ़ करने लगे।

"श्री रावजीभाअी और स्व० आर्मस्ट्रॉंगने मूत्रमालिशके साथ-साथ मूत्र और निर्मल जल पीकर अुपवास करनेका जो खर्च बिनाका अुपाय बताया है, वह भयंकर रोगोंके लिये है। परन्तु सर्दी, बुखार और दस्त जैसे अन्य साधारण रोगोंके लिये अुपवास बिना केवल मूत्रपान और मूत्रमालिश अेक रामबाण अिलाज है, जिसके प्रमाणके लिये अेक अुदाहरण देकर अिस लेखको पूरा करता हूं।

"मेरे साथी श्री विश्वामित्र वर्मा जो आज पच्चीस वर्षसे हिन्दीके अेक मासिक पत्रके संचालक और साहसी अन्वेषक हैं, अुन्होंने आर्मस्ट्रॉंगकी 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' नामक पुस्तक पढ़ी और मूत्रप्रयोगके परिणामको देखनेके ख़यालसे अनियमित रूपसे अपने पर मनमाना प्रयोग किया। केवल तीन सप्ताहमें अुसका परिणाम यह आया कि ४५ बरसका दबा हुआ पुराना कमल रोग, जिससे अुनकी आंखें हल्दी जैसी पीली रहती थीं, वह लगभग २५ से ४० प्रतिशत सुधर गया। यह प्रयोग अभी चल रहा है, जब पूरा हो जायगा तब आम जनताके हितके लिये अिसका परिणाम प्रगट करूंगा। यह दृष्टान्त मूत्रचिकित्साके लिये अेक अचूक अेवं प्रत्यक्ष प्रमाण है, क्योंकि अिस प्रयोगके दौरानमें यहां अन्य अनेक साधन होते हुअे भी, अुनका कुछ भी अुपयोग नहीं किया गया था।"

२०

बालकका आरोग्य

छोटे बालकोंको बीमारीसे बचानेके लिये अुन्हींका पेशाब पिलानेकी प्रथा आज भी गांवोंमें चल रही है। बच्चा हंफने या सर्दीसे पीडित हो तो घरकी बूढ़ी दादी बच्चेकी मां को यह हिदायत करती — "देख, यह बच्चा पेशाब कर रहा है, अिसे चुल्लूमें लेकर अुसे पिला दे।" मां वैसा करती और बालक नीरोग हो जाता। कितना सरल अेवं सुलभ अुपाय है! माता-पिता बालकको अिंजेक्शन दिलानेके लिये डाक्टरके पास दौड़ कर नहीं जाते थे। कच्छके गांवोंमें अब भी यह प्रथा चालू है, अैसा मुझे अेक ज़िम्मेदार मित्रने कहा था। परन्तु निश्चित अनुभव बिना अैसी बात पुस्तकमें लिखी नहीं जा सकती। दैवयोग से वैसा अेक विवरण अपने आप मेरे पास आ गया। सूरत ज़िलेके हजीरा गांवकी शालाके शिक्षक श्री केशवभाअी मकनभाअी मास्तरने अपने अनुभवका निम्नलिखित विवरण मेरे पास भेजा है:—

"मेरे तीन दादा साधारण वैद्यका काम जानते थे। वे देसी दवा बनाकर मुफ़्तमें लोगोंको देते थे। अुनकी दवा लेनेके लिये आसपासके गांवोंके लोग भी आते थे।

"मेरे दादा नन्हे बच्चेको गोदमें लेते और यदि वह पेशाब कर देता तो अुसे पेशाबकी चार-पांच बूंदें पिला देते और कहते कि जब तक बालक पानी पीने न लग जाय तब तक मां अुसे निरंतर पेशाब पिलाती रहे तो अुसे वैद्यके पास न ले जाना पड़े और जुलाब देनेकी भी ज़रूरत न रहे। क्योंकि पेशाब से आंतें साफ़ रहती हैं, जिससे बालक बीमार नहीं पड़ता।

"अपने दादाका अुपदेश ध्यानमें रखकर मैंने अपने तीन बच्चों पर मूत्रप्रयोग किया। वह अिस प्रकार है:—

"मेरी पहली बच्ची साढ़े छ: सालकी है, दूसरी बच्ची पौने चार सालकी है और तीसरा बच्चा डेढ़ बरसका है। मैं, मेरे पिता और मेरी पत्नी अिन तीनोंमें से जिस किसी की अुपस्थितिमें बालक पेशाब करता तो वह पशाब लेकर अुसे पिला देता और फिर दो तीन बूंदें पानी पिलाता। अैसा करनेसे ये बालक बड़े होने तक कभी बीमार नहीं हुअे और शरीरसे मज़बूत, सुडौल और पूरी अूंचाअीवाले हैं।

"प्राय: हम सबके देखनेमें आता है कि बहुतसे बालक जब पेशाब करते हैं तो वह सीधा अुनके मुंहमें ही गिरता है और वे अुसे निगल जाते हैं। यह स्वाभाविक है।"

२१

मानव-मूत्रकी संतुलन-शक्ति

दिन-प्रति-दिन मूत्रकी अद्भुत शक्तिका अनुभव हो रहा है। आये दिन मूत्रकी अैसी विविध अेवं अगम्य शक्तियोंका पता चल रहा है कि जिनका कभी स्वप्न तक भी न आया था।

पिछले कअी महीनोंमें कितने ही प्रयोग अैसे हुअे हैं कि जिनसे यह फलित होता है कि मूत्रमें हृदयकी गतिको टिकाये रखनेकी शक्ति है। भगवान् सुश्रुतने मानव-मूत्रको विषघ्न अेवं रसायन बताया है। सुश्रुतके कथनकी गहराअी में जाकर अेक मननशील चिकित्सक ने सोचा कि यदि मानव-मूत्र सांप के ज़हरका नाशक है तो अिसका यह अर्थ हुआ कि सांपका ज़हर मनुष्यके खूनके दबावको अेकदम कम कर देता है, जिससे हृदय अपनी शक्ति खो बैठता है और अुसकी गति बन्द हो जानेसे मनुष्य मौतका शिकार हो जाता है। अत: सांपके काटे हुअे मनुष्यको मूत्र पिलानेसे विष शान्त हो जाता है, खूनका दबाव बना रहता है, हृदय अपनी शक्ति नहीं खोता है और अपना

काम करता रहता है, जिससे वह मनुष्य मौतके मुंहसे बच जाता है। फलितार्थ यह कि किसी भी कारणसे जिस व्यक्तिके हृदय की शक्ति क्षीण हो रही हो या क्षीण होनेकी संभावना हो तो अुसे मूत्र पिलाने से हृदय की शक्ति बनी रहती है।

अुपर्युक्त मननशील चिकित्सकने सुश्रुतका गंभीर अध्ययन किया है और अहमदाबादमें चिकित्सा का ही व्यवसाय करते हैं। अुनका नाम मगनलाल सलारिया है (अुनका विशेष परिचय 'आंतके रोग' नामक प्रकरणमें आ चुका है।) वे आयुर्वेदिक पद्धतिसे ऑपरेशन करते हैं। मैं अुन्हें गत दो-तीन वर्षोंसे पहचानता हूं। अुनके ऑपरेशन करनेकी पद्धति आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिकी तुलनामें बहुत साधारण लगती है। अुनके चिकित्सालयमें न तो कोअी ऑपरेशन थियेटर है और न ही किसी प्रकारकी साधन-सामग्रीका ठाटबाट। शायद साधारण रोगी अुनसे ऑपरेशन करवाना ही न चाहे। परन्तु अुन्हें ऑपरेशनका लाअि-सेंस मिला हुआ है और वे वरसोंसे चीरफाड़ का काम करते हैं। अुन्होंने छोटे-बड़े सैंकड़ों ऑपरेशन किये होंगे। फिर भी यह अेक नग्न सत्य है कि अुनमेंसे अेक भी ऑपरेशन रोगीके लिये खतरनाक साबित नहीं हुआ। अुन्होंने अिस बातको भी सिद्ध कर दिखाया है कि मानव-मूत्र ऑपरेशनमें भी बहुत अुपयोगी है। अुन्होंने अेक रोगीके ऑपरेशनका हाल मुझे अिस प्रकार सुनाया :—

सामान्यतः ऑपरेशन करनेवाले डाक्टर रोगीके हृदयकी शक्तिको टिकाये रखनेके लिये ऑपरेशनसे पहले अॅट्रोपीन, अॅफ़ीड्रीन या लोब्रे-लीनके अिंजेक्शन लगाते हैं। डाक्टर सलारियाने सन् '५८ के मअी मासमें ४५ बरसकी अेक स्त्रीके अॅपेन्डिसाअिटिसका ऑपरेशन किया था। ऑपरेशन करनेसे अेक घंटा पहले अुसे अुपर्युक्त अिंजेक्शनके बदले अुसीका मूत्र पिला दिया गया और फिर ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशनसे अुसके हृदयकी गतिमें कोअी कमज़ोरी नहीं आयी और हृदयकी शक्ति बनी रही। ऑपरेशनकी सफलतासे डाक्टर सलारिया

खुश हुअे और अुन्होंने यह निर्णय किया कि अिंजेक्शनके बदले ऑपरेशनवाले रोगीको अुसीका मूत्र पिलाया जाय। फिर तो १५–२० छोटे-बड़े ऑपरेशनोंमें अुन्होंने वैसा ही किया। अुन ऑपरेशनोंमें गलेकी गांठों, कंठमाला, लायपोमा (कंधे पर अेक सेर की गांठ), दाहिनी छातीमें कैन्सर और भगंदरके ऑपरेशन भी शामिल हैं। अेक व्यक्तिकी दायीं जांघ और पेड़ूके बीच अेक बड़ा फोड़ा था, जिसके अंदरके सड़े हुअे भागको निकाल कर दूसरी चमड़ी लगायी गयी थी। अुपर्युक्त ऑपरेशनोंमें सभी रोगियोंको अिंजेक्शनके बदले अुन्हींका पेशाब पिलाया गया था, जिससे अुनके हृदयकी शक्ति सुरक्षित रही। अब तो डा० सलारियाने ऑपरेशनसे पहले अिंजेक्शन लगानेकी पद्धति बन्द कर दी है और मूत्र पिलानेका नियम बना लिया है।

अुपर्युक्त विवरणसे यह भी सिद्ध हुआ कि मानव-मूत्रमें खूनके कम या अधिक दबावको संतुलनमें लानेकी शक्ति है। अेक ४५ वर्ष की स्त्रीके खूनका दबाव २४० था, जो डेढ़ महीनेके मूत्रोपचारसे धीरे-धीरे १५० तक आ गया था। अिसका पूरा विवरण 'हृदयके रोग' नामक प्रकरणमें आ चुका है। नड़ियादके श्री देवदास पंड्याका केस अिससे अुलटा है। अुनके खूनका दबाव ११० था अर्थात् कम था और जो मूत्रपानसे बढ़कर १२२ तक पहुंच गया, अिसका भी पूरा विवरण अुसी प्रकरणमें लिखा गया है।

अुपर्युक्त विवेचनसे यह तो स्पष्ट अेवं निश्चित है कि मूत्रप्रयोग से रोगीके हृदयकी शक्ति बनी रहती है और अुसका रक्तचाप (ब्लडप्रेशर) संतुलित रहता है। अब अिस बातका निर्णय करना है कि अिस प्रयोगमें मूत्रपानका कितना असर होता है और मूत्र-मालिशका कितना? अैसे प्रयोगोंसे अिसका वैज्ञानिक दृष्टिसे निर्णय हो सकता है। परन्तु अेक बात तो निश्चित हो गयी कि मानवमूत्रका योग्य पद्धतिसे अुपयोग किया जाय तो वह अूंचे या नीचे रक्तचापको सन्तुलनमें ला देता है।

अब अिस बात पर दूसरी दृष्टिसे विचार किया ज़ाता है। मैंने अहमदाबादके अेक प्रसिद्ध डाक्टर, जो मेरे मित्र हैं, अुनसे अिस बातकी चर्चा की कि डा० सलारियाने रोगीके हृदयकी शक्तिको टिकाये रखने के लिये ऑपरेशन से पहले अिजेक्शनके बदले अुसीका मूत्र पिलाया और अुन्हें अुपर्युक्त विवरण भी कह सुनाया। परन्तु अुन्हें मेरी बात जची नहीं। अुन्होंने हृदय, गुरदे और जिगरकी रचना आदिके चित्र खींचकर मुझे समझाया कि ऑपरेशनके समय रोगी को किस तरह रखा जाता है और बताया कि हृदयकी शक्तिको बनाये रखनेके लिये ऑपरेशनके समय प्रत्येक रोगीको अिजेक्शन नहीं लगाया जाता है। परन्तु जिस रोगीका हृदय दुर्बल होता है अुसीको वैसा अिजेक्शन दिया जाता है। मूत्रमें अैसी शक्ति होती है, इसे न तो अुन्होंने पढ़ा है और न ही आज तक अिस बारेमें कोअी वैज्ञानिक निर्णय हुआ है। मूत्रमें यूरिया नामक क्षार होता है, जिसमें यह गुण है कि जिसे पेशाव न आता हो अुसे यूरिया द्रव्य देनेसे पेशाव आ जाता है। अिससे विशेष मूत्रमें कोअी गुण है, अैसा अुनके अध्ययन या अनुभव में नहीं आया। प्रत्युत वे तो अैसा मानते हैं कि मूत्र द्वारा शरीरका विकार—ज़हर निकलता है। अॅलोपैथीके अॅन्टिबायोटिक सिद्धान्तके अनुसार मनुष्यको स्वमूत्रसे फ़ायदा होता हो, अैसा वे नहीं मानते हैं। जब तक रोगियों पर वैज्ञानिक दृष्टिसे अिसका प्रयोग करने पर मेरी बात सिद्ध न हो जाय तब तक वह अुन्हें मान्य नहीं हो सकती।

मित्र डाक्टरकी बात अुनके अपने अनुभवके अनुसार तो ठीक ही है। जिस विषयका निजी ज्ञान या अनुभव न हो अुस विषयके बारेमें किसी भी ज़िम्मेदार व्यक्ति का अपना निश्चत अभिप्राय न देना ही अुचित है। साथ ही यह भी अुतना ही अुचित है कि जिसे जिस विषयका ज्ञान या अनुभव हो अुसे अुस विषयके प्रति दुराग्रहकी वृत्ति भी नहीं रखनी चाहिये। मूत्रमें ख़ूनके दबावको संतुलित करनेकी और हृदयकी शक्तिको सुरक्षित रखनेकी सामर्थ्य है, अिसके बारेमें

अुपर्युक्त अनुभवके अतिरिक्त मेरा अपना वर्तमान अनुभव है कि मुझे अपने मित्र डाक्टरोंकी सलाहसे अपने हृदयकी शक्तिको बनाये रखनेके लिये डिजॉक्सिन (डिजिटेलिस) की टिकिया नियमित रूपसे लेनी पड़ती थी; परन्तु अब मैंने डिजॉक्सिनकी टिकिया का स्थान मूत्रको दे दिया है। पिछली वर्षाऋतुमें सतत वर्षाके कारण हवा खूब नमीदार रही और वह सरसर चलती रही; परन्तु मुझे सरदी तक भी न हुअी। दिनमें दो बारका मूत्रपान मेरे शरीर को सरदी से बचानेके लिये बकतरका काम करता है, अिसलिये मैं निर्भय हो गया हूं।

अिन सब दृष्टान्तोंसे भी यदि किसीको मूत्रकी संतुलन-शक्ति पर विश्वास न आता हो तो मैं अुस पर अैसा विश्वास लादना नहीं चाहता। जिसे जिस पर विश्वास हो वह अुसके अनुसार आचरण करे, यही योग्य है।

२२

मानव-मूत्रकी विषघ्न शक्ति

मानव-मूत्र विषघ्न अेवं रसायन है, अैसा भगवान् सुश्रुतने लिखा है। मैंने यह बात बार-बार सुनी है कि संपेरे सांपको पकड़ते समय अपने मूत्रसे भरा हुआ गिलास तैयार ही रखते हैं ताकि सांपके काटने पर वे अुसे फ़ौरन् पी सकें कि जिससे ज़हर न चढ़े। 'शिवाम्बुकल्प' नामक संस्कृत पुस्तकमें अैसा अुल्लेख है कि छः महीने तक लगातार मूत्रपान अेवं मूत्रमालिश करनेवाले व्यक्ति पर सांपके ज़हर का कुछ भी असर नहीं होता। कअी जैन और अन्य साधुओंके मुंह से भी यह बात सुनी है। परन्तु लिखी-लिखायी और सुनी-सुनायी बात अिस वैज्ञानिक युगमें भला मानी-मनायी जा सकती है? और कभी-कभी विज्ञान की आड़ में सहज अनुभूत सत्य बात को भी ठुकरानेकी धृष्टता की जाती है। अिसलिये यह अत्यावश्यक है कि

लिखित, कथित अेवं श्रुत बातका शास्त्रीय अन्वेषण और परीक्षण कर लेनेके बाद अुसे सामान्य नियम या सिद्धान्तके रूपमें लोकहितकी दृष्टिसे जनताके समक्ष प्रस्तुत किया जाय। तभी वह वैज्ञानिक दृष्टिसे मान्य हो सकता है।

यह वसुन्धरा तो रत्नोंसे भरी है। जिसकी जैसी साधना होती है अुसे वैसे साधन मिल ही जाते हैं। जबसे लोकहितकी दृष्टिसे मैंने मूत्रोपचार का प्रचार शुरू किया है तबसे मुझे अनायास और अकस्मात् मदद मिलती ही रही है। मैं अुलटी-पुलटी अेवं अनिश्चित बात पर ध्यान नहीं देता। परन्तु वह कितनी शक्य और करने योग्य है, अिसकी प्रतीति हो जाने पर किसीके आये हुअे विवरण को स्वीकार करता हूं। मैं मानव-मूत्रकी विषनाशक शक्तिके प्रत्यक्ष अेवं निश्चित प्रमाण प्राप्त करनेकी चिन्ता में रहता था। अितनेमें तो कपड़वंज के पुराने विश्वासपात्र समाजसेवक श्री चन्द्रकान्त परीख, जो आजकल हरिजन आश्रम में महागुजरात खादीप्रचारक मंडलके चरखा-सरंजाम कार्यालयमें काम करते हैं, वे मेरे संपर्कमें आये। जब वे कपड़वंजमें रहते थे तब अुनका परिचय अेक संन्यासी से हो गया था, जिनका नाम विवेकानन्द सरस्वती है। स्वामीजीसे अुनका अितना प्रेम हो गया कि वे बार-बार सत्संगके लिये अुनके पास जाया करते थे। चन्द्रकान्त परीखको जीर्णज्वर रहा करता था और खांसी भी आती थी। बहुत प्रयत्न करने पर भी अुनका रोग मिटा नहीं। स्वामीजीके साथ रहनेवाले वैद्यराजने भी अुनका अुपचार किया, परन्तु कुछ भी आराम न हुआ। आखिर वे मूत्रपान और मूत्रमालिश करने लगे और अेक ही सप्ताहमें नीरोग हो गये। अुन्होंने अपने मूत्रप्रयोगकी बात स्वामी जी से कही। अुनकी बातका अभिनन्दन करते हुअे स्वामीजीने कहा, "यह तो अमृत है।" फिर तो अिस संबंधमें अुन्होंने अपने अनुभवकी अनेक बातें सुनायीं। अुनमें से अेक बात यह थी कि अेक स्त्रीने तीन तोला अफ़ीम घोलकर पी ली थी। अुसे पेशाब पिलानेसे

अफ़ीमका ज़हर अुतर गया था। चन्द्रकान्तजीने मेरे पास आकर अुक्त वात कह सुनायी और दूसरी अनेक वातें भी हुअीं। मैंने अुक्त वातकी सचाअीका पता लगानेके लिये स्वामीजीसे मिलनेका निश्चय किया।

मैं ता० ३०–९–'५९ वुधवारको हरिजन आश्रम गया और वहां से चन्द्रकान्तजीको साथ लेकर स्वामीजीके पास गया। स्वामीजीको देखते ही मुझे लगा कि अुनकी अुम्र ५५–५६ साल की होगी, परन्तु वादमें पता चला कि वे मेरे से ६ वरस वड़े थे अर्थात् ७८ वरस के थे। वहुतसी अिधर-अुधर की वातें हुअीं। फिर मैंने मानव-मूत्र के संवंधमें अुनके अनुभव पूछे और खास तौर से यह पूछा कि मूत्रकी विषनाशक शक्ति का अुन्हें कोअी प्रत्यक्ष अनुभव है? तव अुन्होंने कहा, "हमारे अुत्तरप्रदेशके वरेली ज़िलेमें तो किसीको सांप काट खाये तो अुसका ज़हर अुतारनेके लिये मानव-मूत्र पिलाया जाता है। अैसा कहा जाता है कि चंदन गोह अितना ज़हरीला प्राणी है कि अुसका ज़हर अुतरता ही नहीं। वह जिसे काटती है वह मर ही जाता है। परन्तु अुसका ज़हर भी मानव-मूत्र से अुतर जाता है। अैसी अनेक घटनाअें अुधर होती हैं।" मैंने अुन्हें पूछा, "अपको अैसा कोअी खास अनुभव यहां हुआ है? अेक स्त्री अफ़ीम खा गयी थी, उसका ज़हर आपने मूत्र पिलाकर अुतार दिया, क्या यह वात सच है?" अुन्होंने कुछ सकुचाते हुअे जवाव दिया, "यह वात ज़रा गंभीर है।" मैंने कहा, "अिसमें कोअी हर्ज नहीं। यह क़ानूनके खिलाफ़ और आत्म-घातका, यों दोहरा पुलिस केस है। फिर भी आप मुझे सच्ची वात वताअिये।" अुन्होंने गंभीरता से कहा, "वात यह है कि यहां अेक व्यक्ति गैरक़ानूनी अफ़ीम वेचता था। अुसकी पत्नीको यह पसन्द न था। वह रोज़ अपने पतिसे वैसा धंधा छोड़ देनेके लिये कहा करती थी, पर वह सुनी-अनसुनी कर देता था। आखिर खींचतान की भी हद होती है। अपने पतिकी अनुपस्थिति में ढूंढने पर तीन तोला

अफ़ीम अुस स्त्रीके हाथ लग गयी, जिसे वह पानीमें घोलकर पी गयी और आधे घंटे में बेहोश होकर गिर पड़ी। अितनेमें अुसका पति आया। अुसे संदेह हुआ। अफ़ीम न मिलनेसे अुसका संदेह निश्चय में बदल गया अर्थात् वह समझ गया कि सारीकी सारी अफ़ीम अुसी ने पी ली है। वह व्याकुल होकर मेरे पास दौड़ आया। मेरे सामने रो पड़ा और सारी बात मुझे कह सुनायी और आजीजी करने लगा, 'स्वामीजी, मुझे किसी तरह बचाअिये। यदि मेरी पत्नी मर गयी तो दोहरा मुजरिम बन जाअूंगा। अर्थात् अेक अफ़ीम बेचनेका गुनाह और दूसरा आत्महत्यामें निमित्त बननेका।' मुझे तुरन्त सूझ आया। शाम हो रही थी। मैंने अुसे कहा कि वह अड़ोसी-पड़ोसियोंके लड़कोंका पेशाब अुसको रातभर पिलाता रहे। अुसने लगभग पन्द्रह लड़कोंका पेशाब अपनी स्त्रीको रातभर पिलाया। प्रातःकाल वह स्त्री होशमें आयी और मृत्युके मुखसे बच गयी।" ज़िन्दा बची हुई अुस स्त्रीको मैंने देखना चाहा। स्वामीजीने अुसे बुलानेके लिये अेक आदमी को भेजा, पर वह अुस समय घरमें न थी। अुस स्त्रीका नाम मैंने नोट कर लिया। अिस बातको वहां बैठे हुअे तीन चार आदमी भी जानते थे। फिर स्वामीजीने अेक और बात भी सुनायी।

"अहमदाबाद म्युनिसिपलिटीकी ओरसे आवारा कुत्तोंको ज़हर देकर मार डालनेका काम चल रहा था। अुसमें मेरा कुत्ता भी फंस गया। ज़हर खिलाने वालोंको पता चल गया कि यह लाल कुत्ता स्वामीजीका है। अिसलिये अुन्होंने अुसके सामने ज़हरवाली मिठाअी नहीं डाली। परन्तु दुर्भाग्यसे दूसरे कुत्तेकी मिठाअीका शेष भाग छीना-झपटी से वह खा गया। फिर तो अुस पर भी ज़हरका असर हुआ। वह लड़खड़ाता हुआ मेरे पास आया। मैं समझ गया कि अुसने खानेमें कहीं ज़हर खा लिया है। अिसलिये मैंने अुसे अेक गिलास भर कर पेशाब पिला दिया। थोड़े ही समयमें अुसका ज़हर

अुतर गया। दूसरे दिन मैंने म्युनिसिपलिटीमें अर्ज़ी देकर अुसका लाअिसेंस लिया और अुसके गलेमें पट्टा बांध दिया।"

अुपर्युक्त बात पूरी हुअी कि वही पट्टेवाला लाल कुत्ता वहां आ खड़ा हुआ, जिसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुअी।

अिसके अलावा अुन्होंने मानव-मूत्रके सफल प्रयोगगोंके बारेमें और भी बहुतसी बातें सुनायीं। फिर मैंने अुनसे विदा ली। अुनके पास आयुर्वेदके पंडित और अुत्तरप्रदेशके निवासी अेक जवान वैद्य थे, जिन्होंने मुझे बताया कि अुन्होंने भी अुपर्युक्त घटनाअें अपनी आंखोंसे देखी हैं। तब मेरे मुंहसे सहसा यह अुद्‌गार निकल पड़ा—'मूत्र-चिकित्साको यदि अेक चिकित्सा माना जाय तो अुसे आयुर्वेदकी जननी कहा जा सकता है।'

२३

अुपसंहार

अिस पुस्तकके प्रकरणोंको जब मैंने लिखना शुरू किया तब मुझे मालूम न था कि अुपसंहारके लिये भी अुपयुक्त अेवं पर्याप्त सामग्री मिल जायगी। परन्तु अपेक्षित सामग्री मुझे मिल गयी, जिसके लिये मैं प्रभुका अुपकार मानता हूं। मुझे जो विवरण या बातें शंकास्पद लगीं अुन्हें मैंने अिस पुस्तकमें नहीं लिखा। मैंने जो कुछ भी लिखा है वह पूरी जांच-पड़तालके बाद ही लिखा है। फिर भी मनुष्यमात्र भूलका पात्र है। मुझसे कोअी भूल हो गयी हो तो अुसके लिये क्षमा चाहता हूं।

मेरी दृष्टिसे मूत्रोपचार चिकित्साशास्त्रका विषय नहीं है और चिकित्साशास्त्रकी दृष्टिसे यह पुस्तक लिखी भी नहीं गयी है। यद्यपि मूत्र शारीरिक स्वास्थ्य प्राप्त करनेके लिये संपूर्ण रसायन है। अर्थात् यह वृद्धावस्थाके सभी रोगोंका नाश करके वृद्धको युवक जैसी

कान्ति अेवं शक्ति प्रदान करता है और विषका नाशक भी है। तथापि मैं अिसे चिकित्साके साधनकी दृष्टिसे महत्त्व नहीं देता। यह तो शरीरका अेक सहज अंश है, जो केवल मनुष्य को ही नहीं, किन्तु प्राणिमात्रको, अपने शारीरिक स्वास्थ्यके लिये जन्मसे ही मिला हुआ है। अिसलिये मैं अिसे सहगोत्रीके रूपमें अपनाता हूं। अिसमें अैसी शक्ति है कि मैं औश्वरकी रची हुअी समस्त सृष्टिके साथ तादात्म्य-अभेद साध सकता हूं। अिसके साथ हमारा तादात्म्य सधा हुआ हो तो यह शरीर-स्वास्थ्यका संपूर्ण साधन बन सकता है। अर्थात् यदि अनुभव की कसौटी पर कसी हुअी शास्त्रीय पद्धतिसे अिसका अुपयोग किया ज़ाय तो वह निष्फल हो ही नहीं सकता। अिंग्लैण्ड में स्व० जॉन आर्मस्ट्रॉङ्गने वर्षोंके अनुभवके आधार पर अिसके अुपयोगकी पद्धति निश्चित की थी, जिसके अनुसार काम करनेसे अुन्हें किसी भी केस में निष्फलता नहीं मिली थी, कि जिससे मुख्य द्रव्य को दोषी समझा जाता। हमें भी यहां वैसी पद्धति (टॅकनिक) तैयार करनी होगी। अिसके लिये शरीरकी रचना और अुसके दोषोंके जानकारोंको गवेषक वृत्ति से काम करना पड़ेगा। परन्तु न तो अिस में अधिक समय लगेगा और न ही कोअी मुश्किल पेश आयेगी; क्योंकि अिसमें शरीरकी अस्वस्थताको दूर करके स्वस्थता प्राप्त करनेके लिये अन्य चिकित्सा-पद्धतियोंकी तरह हज़ारों द्रव्योंका प्रयोग तो करना नहीं है। केवल अेक ही द्रव्यके साथ तदाकार होनेकी बात है। अर्थात् अॅलोपैथी के किसी विशारदको अपने हज़ारों द्रव्यों और शरीरके रोगोंका अध्ययन करके अुनका मेल बिठानेमें वर्षों लग जायें, फिर भी कोअी निश्चय न हो सके। अथवा दो अॅलोपैथी-विशारद शायद अिस बातमें अेकमत न हो सकें कि अमुक द्रव्य ही अमुक रोग को निर्मूल करनेमें पूर्ण समर्थ है। परन्तु मूत्रोपचारके लिये अैसी कोअी बात नहीं है। अेक ही वस्तु सभी रोगोंके अुन्मूलनमें पूर्ण समर्थ है। केवल, जिस शरीरके लिये अुसका अुपयोग करना है अुसका निदान कर लेना होता है। वास्तव

में तो अुसके निदानकी भी आवश्यकता नहीं है। परन्तु अुस शरीरकी शक्ति, स्थानिक जलवायु, मूत्रका परिमाण, अुपयोगविधि, प्रयोगके दौरानमें, अुसके पहले तथा बादमें पथ्यापथ्य — अिन सब बातोंका स्पष्ट निश्चय होना चाहिये। अितना ही नहीं, किन्तु अिस प्रयोगके करनेवाले को आहार-विहारमें विवेकशील रहना चाहिये; क्योंकि मनुष्यके मानसिक रोग और ज्ञानतन्तुओंके दोष भी शरीरके दोष हैं। अिस साधनसे वे रोग अेवं दोष भी दूर किये जा सकते हैं। अैसी अमोघ शक्तिवाले अिस साधनका अुपयोग करनेमें बड़ी सावधानता रखनी चाहिये।

किन्तु बिना किसी प्रयत्नके अनायास मिले हुअे विवरणोंको देखते हुअे मुझे प्रतीत होता है कि हमारी जीवन-प्रणाली जैसे-तैसे करके भी ज़िन्दा रहनेकी है। हमारी आदत कुछ अैसी बन गयी है कि हम किसी कामको विधिपूर्वक अेवं नियमानुसार नहीं करते हैं। परन्तु यह आदत अिस प्रयोगमें नहीं चल सकेगी। वैसा करनेसे हम अिस सर्वोत्तम साधनको निष्फल बनाकर बदनाम कर डालेंगे। जो अिस प्रयोगमें संयम नहीं रख सकता, परहेज़ नहीं कर सकता, अपेक्षित धैर्य नहीं रख सकता और आचार-विचार अेवं आहार-विहारमें शुद्धता नहीं रख सकता, वह कृपा करके अिस प्राकृतिक साधनका अुपयोग न करे। मुझे अपना विवरण लिखकर भेजनेवाले कितने ही मित्रोंने नियम आदिके अुल्लंघनको स्वीकार करते हुए खेद भी प्रगट किया है, जिसका अुल्लेख अिस पुस्तकमें यथास्थान तो है ही। फिर भी दो-अेक का ज़िक यहां भी कर देता हूं — "आपने बीड़ीका व्यसन छोड़नेको कहा, किन्तु मैंने वह नहीं छोड़ा; आपने तला हुआ, गरिष्ठ और मसालेदार भोजन नहीं खाने की सूचना दी है, परन्तु मैंने शिखंड (मीठा पनीर) और पकौड़े खाये हैं। फिर भी मुझे फ़ायदा हुआ है।" अैसे भाअी-बहनोंसे मेरा निवेदन है कि परहेज़ न रखने पर भी आपको फ़ायदा हुआ है, यह कोअी बड़ी बात नहीं है;

भले फ़ायदा हुआ। परन्तु यदि फ़ायदा न हुआ होता और अपथ्य आहार या बुरे व्यसनसे नुक़्सान हुआ होता, तो अुसका परिणाम क्या आता, अुसे क्या आप जानते हैं? आप तब यह नहीं कहते कि हमारी ग़लती से यह नुक़्सान हुआ है, बल्कि खुले आम यही कहा जाता कि 'अमुक व्यक्ति मूत्रचिकित्सासे मौतके घाट अुतर गया,' जिसका अनुचित लाभ निहित स्वार्थवाले अुठाते। अिसलिये मुझे कठोर शब्दोंमें यह चेतावनी देनी पड़ी है कि कृपा करके बार-बार दी गयी सूचनाके अनुसार संयम रखकर ही अिस साधनका अुपयोग करें।

मैं चारों तरफ़ नज़र दौड़ाता हूं तो मुझे अैसा प्रतीत होता है कि दुनियाभरमें गुजरातियोंकी जीभ सबसे अधिक चटोरी है। अुनके चटोरपनकी कोअी हद नहीं है। अहमदावादके दैनिक पत्रोंमें नये-नये ज़ायक़ेदार खाद्य बनानेकी विधिके बारेमें पढ़कर मुझे तो व्याकुलता होती है। खट्टी, खारी, तीखी, कसैली, कड़वी आदि वस्तुओं और वात, पित्त और कफ पैदा करनेवाली परस्पर मारक वस्तुओंको मिलाकर खिचड़ी खाद्य तैयार किये जाते हैं कि जिनके असली ज़ायक़े और असर का कुछ पता ही नहीं चलता। अिस तरह अमृत तुल्य आहार को विष बनाकर खाया जाता है। जो स्त्रियां अैसे विविध खाद्य तैयार करती हैं वे अपने आपको होशियार समझती हैं। अैसे खाद्य तैयार करनेमें अुनके समयका अपव्यय होता है और खानेवालोंके स्वास्थ्य पर बुरा असर होता है। अिसलिये अुनसे मेरा निवेदन है कि वे चटोरपनके मोहको तिलांजलि दे दें और घरके बालकों तथा अन्य कुटुम्बियोंके स्वास्थ्यकी ज़िम्मेदारीको समझकर अैसे हानिकर खाद्य बनानेका बहिष्कार कर दें। प्रकृतिदत्त स्वाभाविक खाद्य वस्तुओंमें जो पोषक तत्त्व रहते हैं अुन्हें स्वादिष्ट बनानेके नाम पर नष्ट कर डालना प्रकृति अेवं मनुष्य जातिके प्रति घोर अपराध करना है। अिसलिये तो गांधीजीने, 'जिसने अिन्द्रियां जीतीं अुसने जगत् जीत लिया', अिस सूत्रकाके साथ यह सूत्र भी जोड़ दिया — 'जिसने

जीभ जीत ली अुसने सभी अिन्द्रियां जीत लीं।' चटपटी चीज़ें, मिर्च-मसालेदार तरकारियां, पकौड़े, खमण आदि खाद्योंने गुजराती युवक तथा युवतियोंके शरीर निर्वीर्य अेवं रोगग्रस्त बना दिये हैं। अिसके लिये हमें खूब सावधान रहना चाहिये।

अिस बारेमें और अधिक विवेचन न करके फिर यह निवेदन करना चाहता हूं कि मूत्रप्रयोग करनेवाला व्यक्ति अिस पुस्तकमें दी गयी सूचनाओं पर और अिसके बाद नये अनुभव के आधार पर जनहितकी दृष्टिसे प्रकाशित की जानेवाली सूचनाओं पर पूरा अ़मल करनेका निश्चय कर लेनेके बाद यह प्रयोग शुरू करेगा, तो अुसे अवश्य ही लाभ होगा। वैसा न करके जो लापरवाह रहेगा अुसे खुद को तो नुक़्सान होगा ही, साथ ही अिस लोककल्याणकारी सुन्दर प्रयोग को बदनाम करके अनेक लोगोंको हानि पहुंचायेगा, अर्थात् अनेक व्यक्तियों को अिस प्रयोगके लाभसे वंचित करेगा।

यह कार्य पीडित जनताकी सेवाका है। रोगसे पीडित व्यक्ति भले ही सोनेके पलंग पर सोया हो, परन्तु सोनेकी गरमी अुसको रोगकी पीडासे मुक्ति नहीं दिला सकती। अपितु कअी बार यह सोनेकी गरमी अधिक पीडा पहुंचाती है। अिसलिये रोगपीडित व्यक्ति चाहे धनिक हों या ग़रीब, रोगसे सबको अेकसा दुःख होता है। वे सब अपनी पीडासे पीडित होते हैं। अिसलिये अिस मूत्रचिकित्सासे सबको खूब आराम मिल सकता है। फिर भी धनवान् लोग अपने साधनोंके बल पर शायद प्रचलित चिकित्सापद्धतिसे अपने रोग मिटायें, किन्तु ग़रीब लोग अब अिस ख़र्चीली चिकित्सापद्धतिको निभा नहीं सकते; क्योंकि वे तो आर्थिक तंगी से तंग हो रहे हैं। ग़रीबोंकी सामर्थ्य कहां कि अिस अत्यन्त ख़र्चीली चिकित्साको अपना सकें। अिसलिये गरीबोंके लिये तो यह चिकित्सा आशीर्वाद समान है। मैं समझता हूं कि बहुतसे युवक ग़रीबों अेवं रोगपीडित जनताकी सेवा करनेके खयालसे डाक्टरी का अध्ययन शुरू करते हैं और अुसके लिये काफ़ी पैसा भी ख़र्च करते हैं।

परन्तु बादमें यह खर्च अुनके लिये अेक बोझ बन जाता है। अुस खर्च को पूरा करनेके लिये और अपने व्यवसायकी रूढिमें फंसकर वे अपनी प्रतिष्ठाकी रक्षा के लिये महत्त्वाकांक्षी बन जाते हैं। परिणाममें, दरिद्रनारायण की सेवा धरी रह जाती है। परन्तु अिस चिकित्सामें अैसी बात नहीं है। अिसमें तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने आपका डाक्टर बनना है। अेक अनपढ़ आदमी भी साधारण सावधानी रखकर अपने ही अमूल्य साधनसे अपने स्वास्थ्यकी रक्षा कर सकता है, अैसी यह कला है।

मैं शास्त्रोंको मानता हूं—श्रद्धापूर्वक मानता हूं। परन्तु शास्त्र कही जानेवाली पुस्तकोंमें जो कुछ लिखा है, वह सब शास्त्रीय है, अैसा मैं नहीं मानता। क्योंकि मूल शास्त्रोंमें कअी अैसी बातें मिला दी हैं कि जो प्रक्षेपक प्रतीत होती हैं। और अुन शास्त्रीय पुस्तकोंमें जिन बातों का अुल्लेख नहीं है अुनका अस्तित्व ही न था अेवं वे मिथ्या हैं, अैसा भी मैं नहीं मानता। क्योंकि शास्त्रकार स्वयं विद्वान्, ऋषिमुनि, विचारक अेवं अनुभवी चिकित्सक थे। अतः अुन्होंने जो कुछ लिखा है वह विचारणीय तो अवश्य होगा ही। परन्तु आखिर वे भी परिमित शक्तिवाले मनुष्य थे। अुन्हें सभी बातें मालूम थीं, अैसा तो नहीं कहा जा सकता। और अुन्होंने जो बात नहीं लिखी, वह जगत् में थी ही नहीं, यह मान्यता भी ठीक नहीं कही जा सकती। शास्त्र अर्थात् शक्तिशाली चिन्तकोंके स्वानुभवका व्यवस्थित संकलन। जो वस्तु आज तक के बने हुअे शास्त्रोंमें नहीं है अुस वस्तुको किसीने स्वानुभव करके जगत्के सामने प्रस्तुत किया और अुसे विशेष अनुभवकी कसौटी पर कसा, जिससे वह शास्त्रीय बन गयी। प्रश्नों का समाधान अिस प्रकार विशाल दृष्टिकोणसे किया जाय तो किसी भी ज्ञानकी प्रगति हो सकती है। हम अेक ही बातको पकड़ कर बैठ रहें और ढोल पीटते रहें कि हमारी बात अच्छी और दूसरोंकी बुरी, तो अेक दिन हमारी बात भी बुरी हो जायगी। अिस तरह ज्ञानकी कूपमंडूकता

ज्ञानको ही ले डूबती है। आयुर्वेदके अनुयायियों ने ही आयुर्वेदकी अैसी दयनीय दशा कर डाली है। व्यवसायकी होड़के कारण या ज्ञानके पाखंडके कारण या आन्तरिक द्वेषवृत्तिके कारण आयुर्वेदके भक्तोंने आयुर्वेदको अपना अेक अलग चौका बना लिया; और खुदको जो सूझा वही सत्य और दूसरेकी सूझ मिथ्या, अैसी संकीर्ण वृत्ति रखकर विशेष अनुसंधानके लिये तप नहीं किया। अैसी वृत्तिका परिणाम यह आता है कि असली बात मर जाती है और नक़ली बात फलती-फूलती है। कोअी आयुर्वेदालंकार हों, या आयुर्वेदाचार्य हों, सबसे मेरी विनति है कि आयुर्वेदके आविष्कर्ता ने जिस प्रकृतिकी अुपजमें से आयुर्वेद की रचना की, अुसी प्रकृतिके सर्वोत्तम अंगके अनुपम साधन पर आप सब विचार करें।

सूर्यनारायणकी शक्तिका भला कहीं वर्णन किया जाता है? अिसी प्रकार नरमूत्रका वर्णन करते हुअे केवल अितना ही कहा है कि वह विषघ्न अेवं रसायन है। बुद्धिशाली पुरुष अिससे अधिक भला और क्या कहें? दूसरे प्राणियोंके मूत्रका लाभ परिमित है। अिसलिये अुसका वर्णन तदनुसार किया गया है। वे नरमूत्रके अपरिमित गुणोंका वर्णन करने लगते तो अन्त ही न आता, अिसलिये अुन्होंने विषघ्न अेवं रसायन, अिन दो शब्दोंसे नरमूत्रके गुणोंका रहस्य समझा दिया। अीश्वरका वर्णन भी तो नेति नेति शब्दोंसे किया गया है। आयुर्वेदके अनुयायी मेरी बात पर अवश्य विचार करें; क्योंकि आयुर्वेदकी रचना यदि सृष्टिके प्राणिमात्रके सुखके लिये हुअी है, तो अुसीके अंगभूत अिस मूत्रके साधनसे तो दुनियाभरके अधिकसे अधिक दुःखितोंकी सेवा होनेवाली है। विचारशील व्यक्तियोंको अिससे अधिक और क्या कहा जाय?

मैं स्वानुभवके बाद अेक बातकी स्पष्टता कर देना चाहता हूं। कअी अनुभवी और विचारक वैद्य यह मानते हैं कि मानव-मूत्र अुष्ण, तीक्ष्ण, पित्तकर्ता, दाहक आदि गुणोंसे युक्त है। यह विधान

किसने और किस आधार पर किया ? आयुर्वेदमें आठ प्रकारके प्राणियोंके मूत्रके गुण-दोष बताये हैं। अुन्हें बतानेवाला मनुष्य ही है। किन्तु जिस क़िसी पशुने अपने मूत्रके गुणदोषका वर्णन स्वानुभवके आधार पर किया हो, अैसा अुल्लेख तो कहीं नहीं मिलता है। अुन प्राणियोंका मूत्र भगवान चरकके वर्णनके अनुसार मानव जातिके लिये गुणदोष-कारक होगा, परन्तु अुनका अपना मूत्र अुन्हींके लिये कितना और कैसा गुणदोष-कारक है, अिसे कौन जानता है ? अिसे तो वे प्राणी ही जानते हैं। और वे प्राणी अपने दुःखको मिटानेके लिये सहज अन्तःप्रेरणासे अपने मूत्रका अुपयोग करते हैं और व्याधिसे मुक्त हो जाते हैं। यही बात मानवमूत्र के संबंधमें है। आयुर्वेदके अनुसार शायद अेक मनुष्यका मूत्र दूसरे मनुष्यके लिये अुष्ण, तीक्ष्ण, दाहक, अेवं पित्तकारक होगा। परन्तु अिस मूत्रचिकित्सामें तो अेक मनुष्यका मूत्र दूसरे मनुष्यको स्वस्थ बनानेके लिये पिलाना भी वैज्ञानिक तो नहीं है, अैसा मैं मानता हूं। विशेष परिस्थितिको छोड़कर केवल बाह्य अुपचारमें अेक दूसरेके मूत्रका अुपयोग हो सकता है। अर्थात् स्वस्थ पुरुषका मूत्र पुरुषके लिये और स्वस्थ स्त्रीका मूत्र स्त्रीके लिये अुपयोगमें लाया जा सकता है। कितने ही मित्र छानबीन किये बिना केवल पुस्तक पढ़कर अुपर्युक्त बातें कह देते हैं। परन्तु अब मैं अपने अनुभव और मेरी अपेक्षा भी अधिक श्रद्धा अेवं धैर्यसे किये हुअे दूसरोंके अनुभवके आधार पर छाती ठोककर कह सकता हूं कि स्वमूत्र अपने लिये निर्दोष है और किसी तरह हानिकर नहीं है। विधिपूर्वक अुचित मात्रामें अुसका अुपयोग किया जाय तो किसी भी प्रकारके रोगके लिये वह अवश्य लाभकारी है। यह केवल शास्त्रकी बात नहीं है, पर अनुभवकी बात है। अिस पुस्तकमें जो यहांके और विदेशके रोगियोंके विवरण दिये हैं वे अपेक्षित प्रतीति की जीती-जागती मिसालें हैं। अभी तक यहां प्रायः अिस विषयमें पूरी सावधानीके साथ व्यवस्थित प्रयोग नहीं हुअे हैं। रोगियोंने अपनी सूझबूझके अनुसार जो अधूरे प्रयोग किये हैं अुनका परिणाम जब अितना आशास्पद है तो

फिर शास्त्रीय ढंगसे अिस प्रयोगके किये जाने पर कितना आश्चर्यजनक परिणाम आ सकता है, अिसकी झांकी पिछले प्रकरणोंसे हो जाती है। जैसे, श्री बापालाल वैद्यके स्वानुभव-सिद्ध विवरणसे कोअी अिनकार नहीं कर सकता। अुन्होंने अेक सच्चे चिकित्सकके नाते जो अनुभव किया अुसे लिखा है। अिसी तरह डाक्टर गुणनिधि भट्टने क्षयके दो रोगियोंकी रोग-मुक्तिका जो व्यवस्थित विवरण दिया है, अुससे भी कोअी अिनकार नहीं कर सकता। मेरी देख-रेखमें किये जानेवाले मूत्र-प्रयोग द्वारा मेरी पुत्रवधू श्रीमती कुमुदबहनने बारह बरसी दमेसे थोड़े ही दिनोंमें छुटकारा पा लिया, जिसका प्रतिक्रिया-सहित विस्तृत वर्णन मैंने किया है और जो निःशंक अेवं निःसंदेह है। तात्पर्य कि, सभी विवरण नग्न सत्य हैं अर्थात् अुन्हें लिखने या देनेमें पूरी सावधानी रखी गयी है और अुनमें किसी प्रकारकी अतिशयोक्ति नहीं है। अैसे अनुभवोंसे शास्त्रकी रचना होती है। आज तक यदि अैसे शास्त्रकी रचना न हुअी हो तो भारतके करोड़ों ग़रीब रोग-पीडित मनष्योंको रोगमुक्त करनेके लिय यदि हम शास्त्रका निर्माण, रचना या सर्जन करते हैं, तो अिसमें बुरा क्या है? अिसमें तो मानवजातिकी सेवा ही है। सेवकोंके लिये भारतमें सेवाका यह विशाल क्षेत्र खुला पड़ा है।

परन्तु यह कैसे हो, यह अेक प्रश्न है। कितने ही मित्र मुझे कह रहे हैं कि अिस प्रयोगको लोकप्रिय अेवं लोकभोग्य बनानेके लिये मूत्रचिकित्साके आरोग्य-भवनोंकी स्थापना होनी चाहिये, जहां अिसी चिकित्सासे रोगियोंका अुपचार किया जाय। परन्तु मैं अिस विचारसे सम्मत नहीं हूं, प्रत्युत अिसका विरोधी हूं। मैं तो यह मानता हूं कि मूत्रचिकित्सा घरेलू चिकित्सा हो जानी चाहिये। बालकोंकी माताओंको अिस चिकित्सामें कुशल होना चाहिये। जैसे पहले घर-घरमें दादी मांकी दवाअियोंकी पिटारी रहती थी। और अिसमें तो पिटारी रखनेकी भी ज़रूरत नहीं है। किसी वस्तुका संग्रह करनेकी भी आवश्यकता नहीं है। यों मूत्रचिकित्साको घर-घरकी चिकित्सा बनानेके लिये

अिसका सर्वव्यापी प्रचार होना चाहिये। अिस मूत्रचिकित्साका संदेश घर-घर पहुंचना चाहिये। यह ठीक है कि आज अिस प्रयोगकी कोअी व्यवस्थित पद्धति नहीं है। फिर भी लोगोंको चालू पद्धतिसे यह प्रयोग तो शुरू कर ही देना चाहिये। अिसमें कुछ हानि तो नहीं है, प्रत्युत लाभ यह है कि विविध अनुभवोंके आधार पर शास्त्रीय पद्धति तैयार हो जायगी। समाजके बुद्धिशाली लोग भले अपनी बुद्धिका स्वतन्त्रतासे अुपयोग करके कोअी योग्य पद्धति खड़ी करें, जिसमें कुछ नुक़सान नहीं है, किन्तु फ़ायदा ज़रूर है।

परन्तु अितनेसे काम नहीं चलेगा। हमें अिस विराट् कार्यको अनुभवकी अहरन पर रखकर प्रयोगके हथौड़ेसे पीटकर अिसकी जांच-पड़ताल करनी होगी और तब अिसे शास्त्रीय रूप भी देना होगा। अिसके प्रयोग पर कुछ पाबन्दियां भी लगानी होंगी। अिस चिकित्सासे लोगोंको लाभ ही हो और वह भी अच्छी तरह हो, अैसे अन्वेषण हमें करने होंगे। यद्यपि अेक बात तो निश्चित है कि मूत्र अपने शुद्ध रूपमें ही कल्याणकारी है और किसी वैज्ञानिक या प्राकृतिक द्रव्यके मिश्रणसे यह विशेष लाभकारी हो सकता है, अिस विषयमें मुझे शंका है। फिर भी कोअी व्यक्ति अिसके मूल गुणोंकी रक्षा करते हुअे अेवं अिसे दोषयुक्त न बनाते हुअे किन्हीं प्राकृतिक साधनोंसे अिसके गुणोंमें वृद्धि करनेका कोअी जादूभरा अुपाय करे तो मुझे अुसमें कोअी आपत्ति नहीं होगी। परंतु मेरी यह दृढ मान्यता है कि 'न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।'

अिस प्रकारकी मर्यादा रखते हुअे अिस चिकित्साको शास्त्रीय बनानेके लिये गुजरात और देशके मुख्य-मुख्य स्थानोंमें अनुसंधान केन्द्र स्थापित किये जायें, जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकारके रोगियोंको रखकर अिस चिकित्सा द्वारा अुन्हें रोगमुक्त अेवं स्वस्थ बनाया जाय। अिसके साथ ही अिस कार्यमें श्रद्धा और दिलचस्पी रखनेवाले वैद्य, डाक्टर, शरीर-शास्त्री और आहार-शास्त्री केवल सेवाभावसे मूत्रचिकित्साकी

शास्त्रीय पद्धतिके निर्माणके लिये अैसे अनुसंधान केन्द्रोंमें बैठकर निष्ठापूर्वक तप और सेवा करें। और वे विविध रोगोंके विषयमें, तत्संबंधी अपचारोंके बारेमें तथा अुन अुपचारोंके दौरानमें होनेवाली क्रिया-प्रतिक्रियाओंके संबंधमें व्यस्थित विवरण तैयार करें कि जिससे शास्त्रीय पद्धतिके संकलन अेवं निश्चयमें सहायता मिले। अिस बातको तो सभी स्वीकार करेंगे कि लाखों रुपये खर्च करके अस्पताल बनवानेकी अपेक्षा थोड़ेसे खर्चमें यह सरल कार्य हो सकता हो और निभाया जा सकता हो तो यह मानवजातिके लिये अधिक सुखदायी सिद्ध होगा।

अीश्वरने मुझे जो प्रकाशकी अेक किरण दी है वह मैंने लोककल्याणकी दृष्टिसे जनताके समक्ष प्रस्तुत कर दी है। बुद्धिशाली अेवं व्यवहारकुशल पाठकोंसे निवेदन है कि वे मेरी अिस बात पर अुदारतासे विचार करें और अपने अनुभवकी कसौटी पर यथार्थ सिद्ध होने पर निर्भयतासे अिसका प्रचार करें। यदि अिसमें कुछ कमी या दोष प्रतीत हो तो अुसे दूर करें। मेरा दिल तो यह कहता है कि थोड़े ही समयमें गुजरात तथा देशके छोटे-बड़े गांवों और शहरोंमें ग़रीब और मध्यम वर्ग अिस अमूल्य अेवं सरल प्राकृतिक चिकित्सासे पूरा-पूरा लाभ अुठायेंगे। गुजरात और देशके धनवानों अेवं बुद्धिमानोंके सहयोगसे अिस चिकित्साकी शास्त्रीय पद्धति निश्चित करनेके लिये अनेक आरोग्य-केन्द्र भी स्थापित होंगे, अैसी आशा रखना अनुचित तो नहीं है।

अन्तमें पुनरुक्ति दोष करके भी दो महत्त्वपूर्ण बातोंकी याद दिला देना चाहता हूं। पहली बात यह कि हमारी अज्ञानताके कारण, रोगीकी वृद्धावस्था अेवं अशक्तिके कारण या रोगीका शरीर अनेक रोगोंका निवासस्थान हो जानेके कारण, यदि किसी रोगीको अिस चिकित्सासे लाभ न हो पाये, तो यह माननेकी धृष्टता न की जाय कि मूत्रचिकित्सामें कोअी दोष अेवं त्रुटि है। किन्तु यही समझा जाय कि अुपर्युक्त कारणों से यथेष्ट लाभ नहीं हो पाया है। दूसरी बात यह कि अिस चिकित्साको अपना कर जिस किसीने आराम पाया है वह यह

न समझे कि अुसे आहारविहारमें असंयमी होनेका परवाना मिल गया है। अुसे पथ्यापथ्य अेवं आहार-विहारके नियम भली भांति पालने ही चाहिये।

अपने कटु सूचनके लिये पाठकवृन्दसे क्षमा चाहता हूं और अिस भावनासे अपने वक्तव्यको समाप्त करता हूं:—

सर्वे सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखमाप्नुयात्॥

आरोग्यका अमूल्य साधन

[स्वमूत्र]

चतुर्थ खंड

चिकित्सकोंकी दृष्टिमें

स्वमूत्रकी विशेषताअें

१. स्वमूत्र सहज, प्राकृतिक अेवं स्वाधीन साधन है।
२. स्वमूत्र जन्तुनाशक, विषनाशक और रसायन है।
३. स्वमूत्र रोगका नाशक और आरोग्यका रक्षक है।
४. स्वमूत्र पोषक, पाचक और अद्वितीय रेचक है।
५. स्वमूत्र आबालवृद्धके लिये सर्वथा कल्याणकारी है।
६. स्वमूत्र प्रत्येक प्राणीके शरीरका संतरी और वैद्य है।
७. स्वमूत्र अर्थ और गुणकी दृष्टिसे अमूल्य है।
८. स्वमूत्र धर्मसंगत, निर्दोष तथा हानिरहित है।
९. स्वमूत्र सादा और संयमी जीवनके लिये सहायक है।

१

मनुष्य-मूत्र

--श्री बापालाल ग० वैद्य*

मैंने श्री रावजीभाअीका लेख अिसी अंकमें अन्यत्र अुद्धृत किया है, क्योंकि वह निष्ठासे लिखा गया है। अुन्होंने अपने लेखमें जिस पुस्तकका अुल्लेख किया है, अुसे मैंने भी पढ़ा है। जॉन डबल्यु० आर्मस्ट्रॉङ्ग अुसके लेखक हैं। पुस्तकका नाम 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' है। पुस्तकमें लेखकने अपने अनुभूत केस दिये हैं, अिसलिये वह विशेष ध्यान देने योग्य है। अिस लेखकका तो यह दावा है कि मनुष्यका अपना मूत्र पीकर सभी रोग मिटाये जा सकते हैं। लेखकने कहा है कि कैंसर, गेन्ग्रीन, हृदय-रोग, पाण्डुरोग, व्रण, चमड़ीके अनेक रोग, गुदाकी सूजन, सोराअिसिस आदि अनेक भयंकर रोग भी केवल मूत्रसे मिटते हैं। लेखक खुद क्षयरोगसे पीडित थे। वे नौकरीके लिये अयोग्य समझे गये थे। प्रस्तुत पुस्तक अक्षुण्ण पथ पर नूतन प्रस्थान करती है, अिसलिये विशेष महत्त्व रखती है।

आयुर्वेदमें भेड़, बकरी, गाय, भैंस, हथिनी, अूंटनी, घोड़ी और गधी; अिन आठ प्रकारके प्राणियोंके मूत्रके गुणदोष बताये हैं। और चिकित्सामें अिन सबके मूत्रका न्यूनाधिक अुपयोग भी हुआ है। जलोदर रोगमें आठ प्रकारके मूत्रका बाह्य अेवं अभ्यन्तर (सेके पाने च) अुपयोग सूचित किया गया है। चरकमें अुदर रोगियोंके लिये कुछ भी खाये विना भैंसके मूत्र और दूध पर रहनेका विधान है। चरकमें गोमूत्रके साथ हरें (अभया) खानेका विधान है। शोथ रोगमें गोमूत्र पर रहनेका विधान है। प्रत्येक मूत्रके अलग अलग गुण बताये हैं और

---

* श्री ओ० ना० आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरतके आचार्य।

मूत्रके सामान्य गुण जानने योग्य हैं। यह देखते हुअे तो मालूम होता है कि अुस समय मूत्रकी अनोखी चिकित्सापद्धति ही प्रचलित होगी।

मूत्रके सामान्य गुण — मूत्र अुत्सादन (मालिश) में, आलेपनमें, आस्थापन बस्तियोंमें, विरेचनमें, स्वेदोंमें, अगदों (विषका प्रतिकार करनेवाली दवाओं) में, अुदर रोगोंमें, अफरा आदि रोगोंमें, बवासीरमें, गुल्म (वायुगोला) के रोगोंमें, कुष्ठ रोगोंमें, पुलटिस आदि सेंकोंमें परिषेकमें (धारा करनेमें) अुपयोगी है। मूत्रमात्र जठराग्निको प्रदीप्त करनेवाला है, विषघ्न (विषनाशक) है, कृमिघ्न (कृमिनाशक) है, पांडु रोगके रोगियोंके लिये श्रेष्ठ है, अुत्तम कल्याणकारी है (चरकमें पांडु रोगके लिये गोमूत्रका बहुत ही अुपयोग बताया गया है)। मूत्र-पान कफका शमन करता है, वायुका अनुलोमन करता है और पित्तको नीचेकी तरफ़ ले जाता है।

सुश्रुतने नरमूत्रको (मानुषं च विषापहम्) विषघ्न माना है।

अष्टांगसंग्रहकारने "तिक्तं पामाहरं मूत्रं मानुषं तु विषापहम्" अर्थात् मनुष्य मूत्रको स्वादमें कड़वा, सूखी खाज, खुजली आदिको मिटानेवाला और ज़हरको हरनेवाला बताया है।

भावमिश्रने कहा है कि नरमूत्र विषका नाशक है, अुसका पान रसायन है, खुजली या चंबलको मिटानेवाला है और क्षार अेवं लवणसे युक्त होनेके कारण तीक्ष्ण है।

योगरत्नाकरमें 'लघुमालिनीवसंत' के पाठमें बताया है कि खपरिया (केलेमीना) को अिक्कीस दिन तक 'नराम्बुमध्ये' अर्थात् मनुष्यके पेशावमें डालकर रखा जाय, फिर धूपमें रखकर पेशावको सुखाया जाय और फिर अुस खपरियामें समान मात्रामें काली मिर्च मिलानेसे लघुवसंतमालती बनती है। अिस तरह मनुष्यमूत्रके अुपयोगका अुल्लेख हमारा ध्यान खींचता है।

संक्षेपमें, आयुर्वेदने मूत्रका अुपयोग खूब ही किया है और नरमूत्रको 'विषघ्न' कहा है। यहां 'विष' शब्द सभी प्रकारके विषका द्योतक

है। अर्थात् आधुनिक 'वाअिरस' आदि और सड़नेसे पैदा होनेवाले विषों (टोक्सीनों) का भी अुसमें समावेश हो जाता है।

अैसा होते हुअे भी मूत्रचिकित्सा पर अेक भी स्वतंत्र ग्रन्थ अुपलब्ध नहीं है।

गुजराती भाषामें 'अखूट जीवनदोरी' नामकी अेक पुस्तक है, जो सूरतके युगान्तर कार्यालयसे सन् १९२३ में प्रकाशित हुअी थी और अभी नहीं मिलती है। अिसके लेखक श्री चंदुलाल लल्लुभाअी गोवर्धनदास हैं। अिस पुस्तकमें पेशाबसे रोग मिटानेके बारेमें अेक-दो पन्ने हैं, अैसा युगान्तर कार्यालयवाले श्री रतिलाल तन्नाने मुझसे कहा है। यह पुस्तक अभी तक मेरे पढ़नेमें नहीं आयी है। श्री तन्नाने मुझसे कहा था कि 'अखूट जीवनदोरी' के लेखक रोज़ नियमसे अपना पेशाब पीते थे। और यदि मैं भूलता नहीं तो गांडीव प्रेसवाले श्री नटवरलाल मालवीने भी अिस बातका समर्थन किया था। अुक्त लेखक काफ़ी बड़ी अुमरके होकर गुज़रे थे और मरते दम तक वे अपना पेशाब रोज़ाना पीते रहे। मुझे यह भी बताया गया है कि अुनकी दीर्घायुका कारण मूत्रपान था। श्री तन्नाका कहना है कि किसी पॉलिग्लॉट — नार्वे तरफ़के अनेक भाषाके जानकार अेक संन्यासीकी प्रेरणासे अुन्होंने यह पुस्तक लिखी थी।

'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' के लेखकने पेशाबका अुपयोग पीनेके लिये भी बताया है और अुस समय अुपवास करनेके लिये कहा है। और वे लिखते हैं कि मसेको पेशाबसे धोनेसे वह मिट जाता है। 'सिद्धभेषज-मणिमाला' के विद्वान् लेखककी निम्नलिखित आज़मायी हुअी बात पर भी विचार करें :—

'कहीं चोट लगी हो या ज़ख्म हो, अुस पर पेशाब करनेकी परिपाटी तो आज भी प्रचलित है। पेशाबसे ज़खमको धोनेसे वह जल्दी भर जाता है।'

मैं अपना अेक निजी अनुभव लिख देना अुचित समझता हूं। अेक बार मेरी घोड़ीकी छातीमें पेड़का अेक ठुंठ घुस गया था और

काफ़ी गहरा घाव हो गया था। अुस समय अेक अनुभवी सज्जनने मुझे यह प्रयोग बताया कि घरके सभी व्यक्तियोंका पेशाब अेक कुंडेमें अिकट्ठा कर लिया जाय। थोड़ी छानी हुअी राख अुस पेशाबमें मिला दी जाय, फिर लकड़ीके सिरे पर बंधे हुअे कपड़ेके टुकड़ेसे अुस पेशाबको घोड़ीके घाव पर बार-बार छांटा जाय। वैसा किया गया और थोड़े ही समयमें वह घाव बिलकुल ठीक हो गया। मैं समझता हूं कि पशुचिकित्सालयमें अुसी घावके भरनेमें चार महीने लग जाते।

बचपनमें कहीं चोट लग जाती तो हम अुस पर पेशाब कर देते थे। यह कहनेकी शायद ही ज़रूरत हो कि वह चोट कभी पकी हो। युरोपमें भी चोट पर पेशाब करनेकी पद्धति प्रचलित थी।

सूखी खाज या खुजली पर वैद्य गोमूत्र घिसवाते हैं। गोमूत्रमें थोड़ा नमक और हलदी मिलाकर घिसनेसे सूखी खाज या खुजली मिट जाती है। मानव-मूत्र भी खुजलीके लिये अुपयोगी है।

अेक सज्जनने मुझे बताया कि अेक व्यक्तिके मुंह पर बड़े बड़े छाले हो गये थे। वे डाक्टरोंकी दवाअियां और अिंजेक्शन लेते लेते थक गये थे, पर छाले नहीं मिटे। अुस सद्‌गृहस्थने अुनसे कहा कि कंडेकी राख मिलाकर छालों पर पेशाब चुपड़ा करें। ज़रा गंदा तो लगेगा पर तुरन्त मिट जायेंगे। और सचमुच अुसका जादू-सा असर हुआ। छाले अेकदम मिट गये। यह प्रयोग बतानेवाले महाशय अभी मौजूद हैं।

कान पकने पर कअी लोग कुत्तेका पेशाब कानमें डालते हैं। बकरीका पेशाब कानमें डालनेसे भी कानका बहना बंद हो जाता है। मनुष्यका मूत्र भी डाला जा सकता है।

कोढ़का भी मूत्र अक्सीर अिलाज है। ये हैं अंग्रेज़ लेखकके शब्द :—

"Indeed urine is the skin food par-excellence as also the remedy of every kind of skin disease."

(page 55)

अन्तमें वे लिखते हैं :—

"Urine is not a specific for any given disease, it is a specific for health." (page 124)

पेशाब पीनेका खयाल ही पेशाब पीनेसे रोकता है, परन्तु अेकाध बार पिया नहीं कि अरुचि भाग जाती है। अंग्रेज़ लेखक तो पेशाबको मॅजिक फ़्ल्यूअिड (चमत्कारी रस) मानते हैं।

('भिषग्भारती', जुलाअी, '५८)

२

शारीरिक स्वास्थ्यका अुत्तम साधन

—डा० मगनलाल ओ० सलारिया

प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम्।
स्वर्गापवर्गयोर्द्वारं त्रैलोक्यशरणं शिवम्॥

१. आयुर्वेद अेक अुपवेद है; क्योंकि अिसकी जननी भी वेद है। विश्वभरके सभी प्राणी अर्थात् जीवजंतुसे लेकर हाथी तक कैसे सुखी हों, किस तरह वे अेक-दूसरेके परस्पर सहायक हों, अुनके स्वास्थ्यकी रक्षा कैसे हो और रोगी रोगमुक्त कैसे हों; अिन सब बातोंका ज्ञान आयुर्वेदमें ही है।

आयुर्वेदका अवतरण—ब्रह्मासे दक्ष प्रजापतिने हेतु (कारण) सहित संपूर्ण आयुर्वेद सीखा। जिसमें हेतु-विपरीत चिकित्सा है। और दूसरे सूर्य नारायणने भी ब्रह्मासे व्याधि-विपरीत चिकित्सावाला आयुर्वेद सीखा। अिसीलिये हमारे यहां आरोग्यके लिये सूर्यसे प्रार्थना करनेकी बात प्रसिद्ध है—**आरोग्यं भास्करादिच्छेत्**। आगे चलकर अिन दोनों पद्धतियोंका समन्वय हो जाने पर आजकल हेतु-विपरीत, व्याधि-विपरीत और हेतु-व्याधि-विपरीत; अिन तीनों पद्धतियोंसे रोगीकी चिकित्सा की

जाती है। पशु, पक्षी, वृक्ष, सभीके लिये अलग अलग आयुर्वेद बने हुअे हैं। आयुर्वेदके आठ अंग बताये गये हैं और प्रत्येक अंग पर स्वतंत्र ग्रंथकी रचना की गयी है।

२. अुपर्युक्त मंगलाचरणमें शिवका नाम आया है। अिससे मालूम होता है कि सब प्रकारके सुख तथा ज्ञानके दाता केवल शिव ही हैं। भगवान् शिवने अिस विश्वके समस्त प्राणियोंके कल्याणके लिये अपनी पत्नी पार्वतीको संबोधित करते हुअे संवादके रूपमें जगत्को ज्ञान दिया है। अुनके शिष्य रावण, नागार्जुन आदि बहुतसे हैं, जिन्होंने भी अपनी अपनी देनसे आयुर्वेदको समृद्ध किया है और अुनका दावा है कि वे दुःसाध्य रोगकी भी सफल चिकित्सा करते थे।

देव और दानव दोनों अेक ही बापके बेटे थे, परन्तु देव विष्णुको मानते थे और दानव शिवको। वे दोनों किसी पारस्परिक वैमनस्यके कारण कभी-कभी लड़ा करते थे। देवोंके गुरु बृहस्पति थे और वैद्य अश्विनीकुमार थे। दानवोंके गुरु अेवं वैद्य शुक्राचार्य थे, जिनके पास मृतसंजीवनी विद्या थी, जिससे युद्धमें घायल हुअे सभी व्यक्ति पुनर्जीवन प्राप्त करते थे।

रुद्र द्वारा जब यज्ञका मस्तक काट लिया गया तब देवोंके कहनेसे अश्विनीकुमारोंने अुसको फिर से जोड़ दिया था। और शंकरने स्वयं अपने पुत्रका सिर काटकर पुनः स्वयं ही जोड़ दिया। अैसे अुदाहरण अेक-दूसरेके आयुर्वेदमें और पुराणोंमें बहुत हैं। अिससे मालूम होता है कि दोनों पक्षोंके पास आयुर्वेदका ज्ञान था। दोनों पक्षवाले आयुर्वेदका विकास करनेमें अेक दूसरेसे बाज़ी ले जानेकी कोशिशमें रहते थे और अिस छान-बीनमें संलग्न थे कि रोगको कमसे कम द्रव्यसे मिटाया जाय। महर्षि आत्रेयने चरकमें 'दीर्घञ्जीवतीयम्' नामक अध्यायमें रोगोंके अुपचारके लिये मुख्य काष्ठादिक औषधियों तथा मूत्रवर्गका अुपयोग किया है। जब कि भगवान् शंकर और अुनके अनुयायियोंने अपनी चिकित्सा-प्रणालीमें लोह, अुपलोह, विष, अुपविष, मूत्र, मोती, माणिक, प्रवाल

आदिका अुपयोग किया है। और अंतमें यह भी सिद्ध किया है कि केवल पारद (पारे) से ही समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

३. यूरोपमें अिस आशयसे अनेक प्रयोग और अन्वेषण हुअे हैं कि दवाकी मात्रा कम हो और वह आसानीसे ली जा सके। सबसे पहले डा० हनिमॅनने होमियोपैथिक पद्धतिका आविष्कार किया और दुनियाको बता दिया कि अॅलोपैथिक पद्धतिमें बड़े पैमाने पर सबसे अधिक मात्रामें जिस दवाका अुपयोग होता है और अुसका जो परिणाम आता है, अुसकी अपेक्षा अुसी दवाको होमियोपैथिक पद्धतिके अनुसार बिलकुल थोड़ी मात्रामें (अर्थात् अुनके मतानुसार खूब हायॅस्ट पोटॅन्सीमें) लिया जाय तो अेकदम विपरीत परिणाम आता है। अुदाहरणके तौर पर अफ़ीमसे दस्त बंद हो जाते हैं, किन्तु अिसी अफ़ीमको होमियोपैथिक पद्धति द्वारा लेनेसे क़ब्ज़ दूर हो जाता है। अुसके बाद अुन्हींके शिष्य सुश्लरने रोग मिटानेके लिये बारह दवाअियोंका ही अुपयोग किया है। अमेरिकामें डा० बर्जेसने अॅप्समपैथी अर्थात् विलायती नमकसे ही सभी साध्य-असाध्य रोग मिटाये हैं। अुन्होंने अिस चिकित्सा-पद्धतिमें केवल सात ही साल्ट्सका अुपयोग करके रोग मिटाये हैं। मैं जब सन् १९२१ में बम्बअीके नेशनल मेडिकल कालेजमें पढ़ता था तब मैंने अेक प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य वैद्यराजको केवल तीन ही औषधियोंसे रोग मिटाते हुअे देखा था। वे अपने दवाखानेमें सिर्फ़ तीन ही शीशियां अपनी मेज़ पर रखते थे, जिन पर वातघ्न, पित्तघ्न और कफघ्न ये तीन नाम लिखे हुअे थे। वे बीमारकी नाड़ी देखकर अुसे पीने और चुपड़नेके लिये तीनों दवाअियोंको न्यूनाधिक मात्रामें मिलाकर और पुड़ियां बनाकर देते थे। मैंने अुनसे तीनों दवाओंकी असलियतका पता लगानेकी खूब कोशिश की, परन्तु अन्त तक अुन्होंने अुसे छिपाये ही रखा। वैद्योंकी यह मनोदशा सचमुच अनुचित है। बादमें, गोंडल रसशालासे प्रकाशित 'रसमंगल' नामक ग्रंथ अभी मेरे देखनेमें आया। अुसके आरंभमें ही चिकित्साखंडमें वातघ्न, पित्तघ्न और कफघ्न रसोंके बारेमें मैंने पढ़ा,

तब मुझे संतोष हुआ। कहनेका आशय यह है कि आयुर्वेदमें भी तीन ही औषधियोंसे प्रत्येक रोग मिटता है। और आखिर अेक पारेसे ही सब रोग नष्ट होते हैं, अेसा अुल्लेख तो पहले आ ही चुका है।

तान्त्रिक ग्रंथोंसे पता चलता है कि अघोरी मल, मूत्र आदिका अुपयोग दवाके तौर पर करते थे। अिसी तरह जैन शास्त्रमें छोटी और बड़ी प्रतिमा धारण करनेवाले मुनियोंके लिये स्वमूत्रके अुपयोगका विधान है। भगवान् शंकरने पार्वतीके समक्ष रुद्रयामल तंत्रके अन्तर्गत शिवाम्बुकल्पमें केवल मूत्रकी ही महिमा गायी है और यह भी बताया है कि मूत्रपान करनेसे मनुष्यके सब रोग मिट जाते हैं और वह चिर-जीवी हो जाता है। आगे चलकर आयुर्वेद और रसतंत्रमें दूसरी दवाओंके साथ मूत्रप्रयोग करनेका अुल्लेख किया गया है। भगवान् आत्रेयने जिन आठ मूत्रोंका औषधिके रूपमें अुपयोग बताया है, वे आठ मूत्र अुन्हीं पशुओंके हैं कि जो घास-चारा खाकर जीते हैं। सुश्रुतने अिसके अतिरिक्त मानव-मूत्रका दवाके रूपमें अुपयोग बताया है। प्रश्न अुठता है कि भगवान् आत्रेयने मानव-मूत्रका अुपयोग क्यों नहीं बताया? क्योंकि पशुओंके मूत्रकी अपेक्षा मानव-मूत्र तो मनुष्योंके लिये अधिक अुपयोगी हो सकता है। आज हम प्रत्यक्ष देख सकते हैं कि पशुओंका मूत्र अुनके लिये हितकर होता है। भगवान् आत्रेय यह भी कहते हैं कि ये आठ प्रकारके पशुमूत्र मनुष्यके स्वास्थ्यके लिये भी अुपयोगी हैं। तो फिर अुन्होंने नरमूत्रके बारेमें अुल्लेख क्यों नहीं किया? अिसका सीधा-सादा जवाब यही हो सकता है कि जो वस्तु व्यापक है, प्रचलित है, अुसका अुल्लेख करनेकी अुन्हें कोअी ज़रूरत ही प्रतीत न हुअी हो। सूर्यनारायणके गुणदोष या अस्तित्वका वर्णन करनेकी भला कहीं आवश्य-कता होती है? अिसी प्रकार नरमूत्रके बारेमें अितना कहना ही पर्याप्त है कि वह विषघ्न अेवं रसायन है। वृद्ध वाग्भट्टने अपने अष्टांगसंग्रहमें आठ मूत्रोंके अतिरिक्त मृगके मूत्रका भी अुल्लेख किया है।

अिससे यह सिद्ध होता है कि जो प्राणी हमारी तरह शाकाहारी हो अुसीके मूत्रका दवाके तौर पर अुपयोग करना बताया है।

यदि किसी प्राणी — पशुपक्षी या मनुष्यके अंदर बननेवाली चीज़का अुपयोग अुसीका रोग मिटानेमें या शस्त्रक्रियामें किया जाता है तो अिस प्रक्रियाको अंग्रेज़ीमें 'ऑटोजीनस' कहते हैं। अिसी नियमके अनुसार आज भी ऑटोब्लड (अपना खून) दिया जाता है और अुसमें कुछ हानि नहीं है।

रोगके अुपचारमें जब अैसी वस्तुओंका अधिकतर अुपयोग किया जाता है कि जो सजातीय प्राणी या मनुष्यके लिये परस्पर अुपयोगी होती हैं, तब अिस प्रक्रियाको अंग्रेज़ीमें 'होमोजीनस' कहा जाता है।

तीसरी प्रक्रिया यह है कि हमारे जैसे खान-पानवाले विजातीय प्राणीकी वस्तु दवाके तौर पर अुपयोगमें ली जाती है, अिसे अंग्रेज़ीमें 'हेटेरॉजीनस' कहते हैं। महर्षि आत्रेयने इस तीसरी प्रक्रियाको अपनाकर अपनी चिकित्सापद्धतिमें आठ प्रकारके मूत्रोंका समावेश किया है। जब कि भगवान् शंकरने स्वयं शिवाम्बुकल्पका वर्णन करते हुअे मनुष्य-मूत्रका सबसे श्रेष्ठ गुण बताकर प्रथम प्रक्रियाको अपनाया है, जो बिलकुल निर्दोष है और प्रत्येक रोगमें अुसका अुपयोग करनेकी सूचना दी है। जैसे आत्रेय शासन (मत) में स्वस्थके लिये हरड़ और रोगीके लिये अुपवास बताया है वैसे भगवान् शंकरके मतमें स्वस्थ अेवं रोगी दोनोंके लिये मूत्रके अुपयोग पर ज़ोर दिया है, परन्तु दोनोंकी प्रयोग-विधिमें अन्तर है।

अुपर्युक्त विवरणसे पता चलेगा कि शुक्राचार्यके पास मृतसंजीवनी दवा अेक ही थी। अश्विनीकुमारोंके पास भी अैसी ही कोअी दवा होनी चाहिये कि जिससे वे देवोंमें प्रख्यात हुअे। भगवान् शंकरने अेक ही पारेकी दवासे और और शिवाम्बुसे प्रत्येक रोगको मिटाया, अैसे अुदाहरण मिलते हैं। युरोप और अमेरिकामें भी डा० हनिमॅन डा० सुश्लर, डा० बर्जेस और अन्तमें आर्मस्ट्रॉंग, क्रमशः अिन सबने अपनी

सारी ज़िन्दगी अिसी कोशिश और खोजमें गुज़ार दी कि यथासंभव अेक ही दवासे सभी रोग मिट जायें। डा० हनिमॅनने स्वाद विनाकी दवाओंसे काम लिया और डा० सुश्लरने केवल वारह दवाओंका ही अुपयोग किया। डा० वर्जेसने हर बीमारीको मिटनेके लिये सिर्फ़ सात सॉल्ट्सका ही अुपयोग किया। आर्मस्ट्रॉंगने वाअिविलके अेक वाक्यसे प्रेरित होकर मूत्रसे अपने क्षयरोगको मिटाया। फिर अिंग्लैंडमें और अन्यत्र विविध रोगोंसे पीडित सैंकड़ों व्यक्तियोंको नीरोग अेवं स्वस्थ बनाया और यह सिद्ध कर दिखाया कि मनुष्यका अपना मूत्र प्रत्येक रोगका रामवाण अुपाय है। अुन्होंने 'वॉटर ऑफ़ लाअिफ़' नामक पुस्तक लिखकर दुनिया पर अेक महान् अुपकार किया है।

अिस मूत्रचिकित्सामें न तो नाड़ी ही देखनी पड़ती है और न ही निदान करना पड़ता है। यह तो अितना सरल अेवं अद्‌भुत सुन्दर अुपाय है कि स्वस्थ व्यक्ति स्वमूत्र पिये और मूत्रमालिश करे तो स्वस्थ वना रहे और रोगी अपना पेशाब पिये और मालिश करे तो नीरोग हो जाय। केवल अितनी बात ध्यानमें रखी जाय कि जव तक रोगीका रोग दूर न हो तब तक वह मूत्र पीकर अुपवास पर रहे और रोगमुक्त हो जाने पर मूंगका झोल लेकर अुपवास छोड़े और फिर धीरे-धीरे सादा अेवं हलका दाल-भात, शाक आदिके भोजन पर आये। अपनी प्रकृतिके अनुकूल ही आहार लेना चाहिये। अिसके सेवनमें स्वस्थ मनुष्यको किसी प्रकारका परहेज़ रखनेकी कोअी ख़ास ज़रूरत नहीं है, परन्तु जो व्यक्ति वीमार हो अुसे अुपवास या अपनी प्रकृतिके अनुकूल थोड़ासा हलका भोजन लेकर अपना पेशाव पीना चाहिये और मूत्रमालिश करनी चाहिये।

मैंने सुश्रुतमें पढ़नेके वाद साहसके साथ यह प्रयोग शुरू किया है। सुश्रुतमें लिखा है—'मानुषं तु विषापहम्' अर्थत् मनुष्यमूत्र विषहर है। हम सहज ही समझ सकते हैं कि जिसे ज़हर चढ़ता है, अुसका हृदय निर्बल हो जाता है और वह वेहोश हो जाता है, अुसे मूत्र पिलानेसे

वह सशक्त होकर होशमें आ जाता है। अिसलिये मैंने अपने रोगियों पर ऑपरेशनके समय मूत्रका प्रयोग शुरू कर दिया है और लगभग सोलह बड़े ऑपरेशनोंमें मुझे सफलता मिल चुकी है। ऑपरेशनके दौरानमें किसी रोगीको सेलाअिन या प्लाज़्मा या ब्लड देना नहीं पड़ा है।

३

मूत्रचिकित्सा

—वैद्य करुणाशंकर रामशंकर त्रिवेदी

गुजरातके वयोवृद्ध अेवं प्रतिष्ठित कार्यकर्ता श्री रावजीभाअी पटेलको मूत्रचिकित्सासे लाभ हुआ है, अिसे 'जनसत्ता' (स्थानीय अेक दैनिक पत्र) के पाठक जानते ही होंगे और अुन्होंने अिस पर विचार भी किया होगा। मूत्रचिकित्साकी संपूर्ण विधि भी अुन्हीं वृद्ध-श्रेष्ठकी लेखनी द्वारा हमें प्राप्त हुअी है। कुछ वैद्य-डाक्टरोंने तो मूत्रोपचारका समर्थन किया है और कुछने अुसका विरोध किया है।

जैसे आर्य संस्कृति या धर्म अेक ही मनुष्यकी देन नहीं है वैसे आयुर्वेद भी अेक ही मनुष्यका रचा हुआ शास्त्र नहीं है। जैसे आर्य संस्कृति अनेक समुज्ज्वल संस्कृतियोंका महामंगल मिलन है वैसे ही आयुर्वेद विश्वमें प्रचलित आरोग्यकी सभी पद्धतियोंके मूलका महाद्योतक अेक महास्रोत है। जगत्में अेकदम नयी प्रतीत होनेवाली किसी भी पद्धतिके मूल अिसमें मिलेंगे ही। अिसी प्रकार मूत्रचिकित्साको चिकित्सक-गण भले ही आज नया आया हुआ अेक 'नाटक' मानें; परन्तु अिसका मूल आयुर्वेदमें है ही (देखिये भावप्रकाश, पूर्वखंड, मूत्रवर्ग)। चरक, सुश्रुत, वाग्भट या अन्य शास्त्रीय ग्रन्थ अिस मूत्रचिकित्साके विरोधी नहीं, किन्तु पुरस्कर्ता प्रतीत होते हैं। क्योंकि अुन ग्रंथोंमें जहां-तहां मूत्रचिकित्साके समर्थक सूत्र मिलते हैं और मूत्रवर्गमें तो व्यव-

स्थित रूपसे मिलते हैं। जब शास्त्रमें ही मूत्रचिकित्साकी गुणगाथा मिलती हो तो यह कहना कि मूत्रोपचार शास्त्रमान्य नहीं है, वदतो व्याघात ही है। तो फिर कौन माअीका लाल वैद्य अिसे शास्त्रबाह्य कहनेकी धृष्टता कर सकता है। हठाग्रहसे किसीको अपनी बात पर अड़े रहना हो तो मैं अुससे विवाद करना नहीं चाहता। मैं तो नम्रतासे अितना ही कहना चाहता हूं कि मूत्रचिकित्सा शास्त्रबाह्य विषय नहीं है। और मेरी यह प्रामाणिक मान्यता है कि मूत्रचिकित्सा आयुर्वेद-मान्य है। यदि यह अेक चिकित्सापद्धति हो तो प्रत्येक रोग पर अिसका कुछ न कुछ असर होना ही चाहिये। अथवा अिसके प्रचुर अुपयोग होने चाहिये और हठीले माने जानेवाले महारोगोंमें भी अिसका अुपयोग होना चाहिये। वस्तुतः भावप्रकाशके कर्ताने गोमूत्रके अुपयोग अिस ढंगसे प्रस्तुत किये हैं कि साधारणसे साधारण मनुष्य भी अुन्हें कर सकता है। गोमूत्रके लिये तो हिन्दू फ़ौरन् तैयार हो जायेंगे; परन्तु नरमूत्रके विषयमें अुनका सम्मत होना ज़रा मुश्किल तो है।

आम तौर पर दादियां आज भी घरमें छोटी वहुओंको कहा करती हैं—"बेटा, बच्चेका पेट अफर गया है, वह मूते तब अुसका मूत हाथमें लेकर ज़रा पिला देना।" सामान्यतः अैसा आदमी शायद ही मिल सकेगा कि जिसका जन्म गांवमें हुआ हो और जिसने बचपनमें अपना पेशाब न पिया हो। आज गांवोंमें बालकोंको मूत्र पिलानेकी प्रथा युगों पुरानी है। अर्थात् अिस तरह मूत्र पिलाया जाता है और वह नुक़सान नहीं करता, बल्कि फ़ायदा ही करता है, यह आंखों देखी बात है।

पेट दर्द—बालकको अुसीका ताज़ा पेशाब पिलानेसे पेटदर्द फ़ौरन् मिट जाता है।

कफका अुपद्रव—कफके अुपद्रव और पुराने बुखारमें बालकका मूत्र पिलाया जाता है।

कमलरोग—पीलियेमें भी वालकको अुसीका मूत्र पिलानेसे खूब फ़ायदा होता है।

वालककी कमज़ोरी—बालककी कमज़ोरीमें मूत्र पिलाना बहुत अच्छा अुपाय है। मेरे कुटुंबमें अिस प्रकार मूत्र पिलानेकी प्रथा है। अिससे वालककी तंदुरुस्ती बनी रहती है, अैसा अनुभवसे प्रतीत होता है।

कटी हुअी अुंगली पर मूत्र—गुजराती भाषामें कहावत है—'भाअी, अमुक व्यक्ति तो अैसा है कि कटी अुंगली पर भी नहीं मूतता।' अिस कहावतको अच्छी तरह समझनेकी ज़रूरत है। कहीं ठोकर या चोटसे घाव हो गया हो तो वह पेशाबसे जल्दी भर जाता है। मूत्र या मूत्रकी पट्टी लगानेसे सचमुच घाव पकता नहीं है, अैसा अनुभव तो गांवमें अनेक लोगोंने किया होगा।

कानका दर्द—अेकदम ताज़ा या थोड़ा गरम मूत्र डालनेसे कानका दर्द मिट जाता है, यह मेरा अनुभव है। मेरी अुम्र छोटी थी। मैं फ़ोर्थ (८वीं कक्षा) में पढ़ता था। अेक सुन्दर मंदिरके आंगनमें संगमरमर पर मैं, मेरा अेक भाअी और मित्र सो रहे थे। रातको अेक वहुत छोटा-सा कनखजूरा मेरे कानमें घुस गया। मैं वालक तो था ही, लगा छटपटाने, परन्तु मंदिरके द्वारपालने हमसे कहा, "रातको कुछ नहीं हो सकेगा, पेशाब करके कानमें डाल दो, सुबह जो कुछ होगा पता लग जायगा।" मेरे भाअीने मेरा ही पेशाब मेरे कानमें डाल दिया। सुबह यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कनखजूरेके दो-तीन टुकड़े मेरे कानके पास चिपके हुअे थे। मूत्रसे अैसा हुआ या फिर अपने-आप वाहर आ गया, अिसे भगवान् जाने। परन्तु अिसका श्रेय तो मैं आज तक ममतापूर्वक अपने मूत्रको ही देता आया हूं। और अिसके लिये मैं मंदिरके द्वारपालका आभारी हूं।

संक्षेपमें, अिन सब रोगों में मूत्र काम करता है, यह बात निश्चित है, अिसमें तनिक भी संशय नहीं है।

नरमूत्रके लिये आयुर्वेदका अभिप्राय

नरमूत्रं गरं हन्ति सेवितं तत्रसायनम्।
रक्तपामाहरं तीक्ष्णं सक्षारं लवणं स्मृतम्॥
(भावप्रकाश, पूर्वखंड, मूत्रवर्ग, श्लो० ७)

मनुष्यका मूत्र क्षारयुक्त, खारा और तीक्ष्ण है। वह ज़हरको मारता है, लाल खुजलीको मिटाता है। अुसका सेवन किया जाय तो रसायनका काम करता है। आजकल जिन दवाओंके रोज़ नये नये नाम व लेबल तथा विज्ञापन आते हैं, अुनके प्रलोभनमें न आकर सन्तुलित बुद्धिसे विचार करें तो आयुर्वेद जिस नरमूत्रके सेवनको रसायन कहता है अर्थात् जो वृद्धत्वको दूर करके यौवनको टिकाये रखता है, सात धातुओंकी समता करता है और अग्निको सम रखता है, अुस रसायन समान नरमूत्रकी चिकित्साकी अुपेक्षा कैसे हो सकती है? अुसमें ज़हर मिटानेका गुण माना जाता है। गांवमें सांप काटने पर बहुतसे लोगोंको नरमूत्र पिलाया जाता है। अिस तरह अनेक बचे हैं, अैसा सुननेमें आता है। परन्तु अिस वैज्ञानिक युगमें सुनी-सुनायी और लिखी-लिखायी बातसे मूत्रके विषनाशक गुणको सिद्ध मान लेना तो ठीक नहीं है। और साथ ही मूत्रकी विषनाशकताके शास्त्रीय अुल्लेखको अेकदम निराधार कहना तो आयुर्वेदके प्रति अन्याय करना होगा। अिसलिये जब तक अिस बारेमें व्यवस्थित अेवं सुनिश्चित प्रयोग अेवं अनुसंधान न हो जायें तब तक कोअी निश्चयात्मक विधान करना ठीक न होगा।

यह तो मूत्रचिकित्साके बारेमें अेक सरसरी अभिप्राय मात्र है। यदि समस्त रोगोंके लिये अिस चिकित्साका व्यवस्थित विवरण लिखने लगें तो अवश्य अेक पुस्तक तैयार हो जाय। यहां तो सामान्य रोगोंके लिये अिस चिकित्साका सरसरी विधान अिसलिये किया है कि जनता अिस विज्ञानके प्रति घृणा न बताये और अुपेक्षावृत्ति या अुदासीनवृत्ति न रखे। परन्तु प्रत्येक रोग पर मूत्रका कितना और कैसा असर होता है, अिसे शास्त्रीय ढंगसे अवश्य समझाया जा सकता है।

विषहरके रूपमें गोमूत्रका अुपयोग प्रत्येक धातुके शोधनमें है ही। परन्तु यह 'विषहर' शब्द बहुत ही विशाल अेवं व्यापक अर्थमें प्रयुक्त किया गया है। अर्थात् यह केवल सांप, बिच्छू या धातुके ही विषका नहीं अपितु शरीरमें अुत्पन्न होनेवाले प्रत्येक विषका भी निवारण करता है। अिस विषधारी युगमें अैसे विषहारी औषधका प्रचार अेवं प्रसार प्रेरणादायक और पवित्र कार्य है, अैसा मैं खुले आम निवेदन करके अिस कल्याणकारी प्रचारमें अपना हिस्सा प्रेमपूर्वक अदा करता हूं।

ता० १७-११-'५८ ('जनसत्ता' से साभार अुद्धृत)

४

चिकित्सामें पथ्यका महत्त्व

—श्री बापालाल ग० वैद्य

कोअी भी चिकित्सा चाहे कितनी लाभकारी हो, फिर भी यदि पथ्य-पालन नहीं होता तो वह यथेष्ट लाभ नहीं पहुंचाती। मूत्रचिकित्साकी अुपयोगिता सिद्ध हो चुकी है; फिर भी अुसके साथ पथ्य-पालन बहुत ही आवश्यक है। पथ्य अर्थात् आहार-विहार, दिनचर्या और ऋतुचर्याके अनुसार जीवन-क्रम। वात, पित्त और कफ ये तीन दोष ही सब रोगोंको अुत्पन्न करते हैं। अिन दोषोंके प्रकुपित होनेसे पहले अिनका संचय होता है। यदि अिस संचयकालमें दोषोंका निर्हरण कर डाला जाय तो रोगोंकी अुत्पत्ति रुक जाती है। कफका संचयकाल हेमन्त ऋतु है और प्रकोप-काल वसंत ऋतु है। कफका अुत्तम अिलाज वमन है। अिसलिये वसंत ऋतुके आगमनके साथ ही वमन करके कफका निर्हरण कर दिया जाय तो वसंतमें कफका रोग होता ही नहीं। वसंतमें कफका प्रकोप होता है, अिसलिये अिस ऋतुमें आहार रुक्ष, अुष्ण और तीक्ष्ण होना चाहिये। पित्तका प्रकोप शरद् ऋतुमें होता है, परन्तु अिसका

संचय वर्षा ऋतुमें होता है। पित्तके प्रकोपसे बचनेके लिये वर्षा ऋतुसे ही सावधानता रखनी होगी और शरद् ऋतुका आगमन होते ही विरेचन द्वारा पित्तका निर्हरण कर डालना चाहिये; क्योंकि पित्तके लिये विरेचन श्रेष्ठ अुपाय है। तथा पित्तकारक आहार न करना चाहिये अर्थात् आहार मधुर रसयुक्त, द्रव (तरल) और शीत होना चाहिये। तेलमें तली हुअी चीजें, तीखे अेवं चरपरे खाद्य पित्तको बढ़ाते हैं। वर्षा ऋतुमें वातका प्रकोप होता है। परन्तु अुसका संचय तो ग्रीष्म ऋतुमें होने लगता है। वातका सर्वश्रेष्ठ अुपचार बस्ति है। वर्षा ऋतुके आगमनके हाथ ही बस्ति ली जाय तो वात-प्रकोपकी संभावना नहीं रहती। मधुर, अम्ल, लवण रसयुक्त आहार वायुकारक नहीं होता। अिसलिये वर्षा ऋतुमें तीखे चरपरे खाद्य न खाकर मधुर रसवाले पदार्थ खाने चाहये। संक्षेपमें, आयुर्वेदके अनुसार आचरण किया जाय तो रोग पैदा ही न हों और कभी हो भी जायें तो अुनका बल नाममात्रका होता है।

ऋतु-संधिके समय संशोधन – कफ हो तो वमन (अुलटी) पित्त हो तो विरेचन (जुलाब) वात हो तो बस्ति (अँनिमा अेवं डूश) आवश्यक है। ऋतु के अनुसार खानपान, विहार, वस्त्र-परिधान आदिकी व्यवस्था करनेसे स्वास्थ्य अच्छा रहता है। आज अिस संशोधनको कोअी समझता ही नहीं है। आजकी चिकित्सा प्रायः शमन-चिकित्सा है। शमन-चिकित्सामें दोषोंका निर्हरण नहीं होता, किन्तु दोष मात्र दब जाते हैं। और ये दबाये हुअे दोष ही वारंवार रोगके रूपमें प्रगट होते हैं। अिसलिये आयुर्वेदमें बतायी हुअी दिनचर्या और ऋतुचर्याके अनुसार जीवन जीना सीखना चाहिये। पथ्यका अर्थ केवल आहार ही नहीं है, अिसमें विहार अेवं आचार का भी समावेश है। खट्टा-खारा रस पित्तप्रकोपक है और क्रोध भी पित्त-प्रकोपक है। रुक्ष, शीत और लघु आहार वातप्रकोपक है, अिसी तरह चिन्ता, शोक आदि भी वातप्रकोपक हैं। मधुरादि पदार्थ कफप्रकोपक हैं, तथा तमस, जडता और आलस्य भी कफवर्धक हैं। पित्त सत्त्वप्रधान है, वात रजप्रधान है और कफ तमप्रधान है। अतः आयुर्वेदके आचार्यों

ने आचार-रसायन सूचित किया है। संक्षेपमें, पथ्यमें दिनचर्या, ऋतुचर्या आहार, विहार सभी आ जाते हैं। अिन सबका आचरण रोगके विचारके समय विचारणीय है ही।

अकेले पथ्यसे ही रोग मिट सकते हैं। अेक कविने ठीक ही कहा है— पथ्य-पालन हो तो फिर औषधसेवनका क्या प्रयोजन? पथ्य-पालन न हो तो भी औषधसेवनका क्या प्रयोजन? क्योंकि अपथ्य-सेवन रोगको मिटा नहीं सकता।

मूत्रचिकित्सामें भी पथ्य — योग्य खानपान आदि आवश्यक है, यह क्या कहनेकी बात है? मूत्रचिकित्सा चाहे कितनी अुपयोगी हो, फिर भी पथ्य-पालन चाहती है। और अिस सीधीसादी बात पर ध्यान न दिया जाय तो यह चिकित्सा बदनाम होती है।

मूत्रचिकित्सा रक्तके रोगोंमें, कफ तथा वातके विकारोंमें अुपयोगी है। रक्तजन्य रोग हों तो रक्त और पित्त दोनोंकी चिकित्सा करनी चाहिये। अिसमें बार-बार जुलाब लेना, अुपवास करना और खट्टे-तीखे पदार्थ छोड़ने चाहिये। रक्तविकारोंकी मूत्रचिकित्साके दौरानमें वैसा न किया जाय तो अुस हद तक वह निष्फल सिद्ध होगी। सूखी खाज, खुजली, चम्बल, सोराअिसिस आदि चर्मरोगोंमें मूत्रचिकित्सा अुपयोगी है। अर्थात् मूत्रका अुपयोग लगाने या चुपड़नेमें तथा पीनेमें किया जाय। परन्तु अैसे रोगोंमें नमक छोड़ देना चाहिये। यथासंभव कुछ दिनका अुपवास भी कर लेना चाहिये। तीखे, खट्टे और खारे पदार्थ छोड़ देने चाहिये। कुछ समयके लिये फल और सूखे मेवों पर रहना चाहिये। अिसके बदले यदि मूत्रचिकित्साके दौरानमें तीखे चरपरे खाद्य और घी-तेल में तले हुअे पदार्थ खाये जायें, क़ब्ज़ रहे और अजीर्ण होने पर खाया जाय तो मूत्रचिकित्सा व्यर्थ ही सिद्ध होगी।

चरक संहितामें शोणितजा रोगाः (सूत्र०, अ० २४, श्लो० ११ से १७) में रक्तजन्य विकारोंकी अेक सूची दी गयी है। अुससे यह समझ

में आ जायगा कि खून खराब हो जानेसे कौन-कौनसे विकार होते हैं। वे विकार निम्नलिखित हैं :—

मुखपाक — मुंह बार-बार आना, मुंहमें छाले पड़ना, संग्रहणी, पुराना मरोड़; पेटके विकारोंमें अैसा होता है।

अक्षिरोग — आंखें खूब लाल रहना

पूतिघ्राणास्यगंधिता — नाक और मुंहसे दुर्गन्ध आना।

गुल्म — वायुका गोला।

अुपकुश — आजका पायरिया रोग, मसूड़ोंसे पीप और खून आना, मुंहसे खूब बदबू आना। यह पित्त और रक्तका विकार है।

विषर्प — रक्तवात, रक्तविकारसे फोड़े-फुन्सी, चकत्ते आदि निकलना।

रक्तपित्त — रक्त और पित्तके विकार। शरीरके किसी भी भागसे खून गिरना, रक्तार्श (खूनी बवासीर), नकसीर फूटना, कभी कभी रजःस्राव होना आदि रोगोंका समावेश अिसमें होता है।

विद्रधि — जिगर वग़ैरहमें फोड़े (अॅब्सैस) होना।

रक्तमेह — पेशाबमें खून आना।

प्रदर — स्त्रियोंकी जननेन्द्रियोंसे श्वेत पित्तस्राव।

वातशोणित — वात और रक्तके विकार। गाअूट (गठिया), लॅप्रॉसी (कोढ़) आदि रोगोंका समावेश अिसमें होता है।

वैवर्ण्य — शरीरका रंग बदल जाना। कोअी तो काजल-सा काला हो जाता है।

अग्निसाद — जठराग्निमन्दता, भूख न लगना।

पिपासा — प्यास लगना, प्याससे गला सूख जाना।

गुरुगात्रता — शरीर भारी-भारी लगना।

संताप — शरीरमें दाह रहना — शरीर गरम गरम रहना।

अति दौर्बल्य — शरीरमें किसी खास कारण बिना बहुत ही कमज़ोरी महसूस होना।

अरुचि — अन्नकी रुचि न होना।

शिरोवेदना — सिर दर्द होना, सिर भारी रहना, मस्तकके अन्य विकार।

अन्नपानविदाह — भोजनके बाद जलन प्रतीत होना, खट्टे-खट्टे डकार आना, छातीमें जलन होना आदि।

क्लम — श्रम किये विना ही खूब थकान महसूस होना।

क्रोधप्रचुरता — अति क्रोध करना (बहुतसे बीमार अैसी शिकायत किया करते हैं)

बुद्धिसंमोह — अक़्ल मारी जाना, आज बहुतसे लोग अैसी मानसिक व्यथाका अनुभव करते हैं, यह वास्तवमें रक्तका ही विकार है।

लवणास्यता — मुंहका स्वाद खारा रहना। कफ विदग्ध होनेसे खारा-खट्टा कफ निकलता है। वास्तवमें यह भी रक्तविकार है।

स्वेद — शरीरमें खूब पसीना आना। बदबूदार पसीना।

शरीरदौर्गन्ध्य — शरीरमें से अेक प्रकारकी दुर्गन्ध आना।

मद — मदिरापान जैसा नशा रहना।

कंप — कम्पन अर्थात् हाथ, गरदन आदिका हिलना।

स्वरक्षय — आवाज़ बैठ जाना।

तंद्रातियोग — आलस्य, अूंघ, सुस्ती अधिक रहना, जंभाअी पर जंभाअी आना; अिन सबका समावेश तंद्रामें होता है।

निद्रातियोग — अधिक नींद आना।

तमोदर्शन — आंखोंमें अंधेरा आना।

चर्मविकार — चकत्ते, चमड़ीका फटना, सूखी खाज, खुजली, चंवल आदि चमड़ीके विकार।

ये सब रक्तज विकार हैं। अिन सब रोगोंके लिये खून साफ़ करनेवाले खानपानकी व्यवस्था करनी चाहिये। रक्तविकारोंमें बार-बार जुलाब लेना और कभी-कभी अुपवास करना चाहिये। यदि ये विकार बहुत पुराने हों और अच्छे-अच्छे अुपायोंसे न मिटते हों तो फ़सद खुलवाना

चाहिये। अशुद्ध रक्त निकालते ही जादूकी तरह चर्मरोगोंमें परिवर्तन मालूम होने लगेगा। यह कहनेकी ज़रूरत नहीं है कि अिन विकारोंमें मूत्रचिकित्सासे, कुछ समयके अुपवाससे, फलाहार अेवं दुग्धोपचारसे अवश्य ही अच्छा फ़ायदा होता है। रक्तका विकार पित्तका विकार है। अुपर्युक्त सभी रक्तविकार न्यूनाधिक रूपसे पित्तविकार हैं ही। आयुर्वेदमें पित्तके चालीस रोग बताये गये हैं। अुन सबका समावेश अुपर्युक्त रक्तज विकारोंमें हो जाता है।

आयुर्वेदमें कफके बीस रोग बताये हैं। तंद्रा, अतिनिद्रा, गुरुगात्रता, मुखमाधुर्य (थूक मीठा मीठा लगना), प्रसेक (बारबार थूक आना, थूथू करते रहना), अुष्ण पदार्थोंकी अिच्छा, बहुमूत्रता, आलस्य, मन्दबुद्धित्व (क्योंकि कफ तमोजन्य है), पेट भरा हुआ लगना (तृप्ति) आदि कफ-जन्य विकार हैं। अिन सब रोगोंमें अुपवासके साथ मूत्रचिकित्सा अुपयोगी है। कफके विकारोंमें बार-बार वमन कराना, अुपवास कराना और घी, दूध, दही, तेल अेवं मिष्टान्न छुड़ाना हितकर है।

आयुर्वेदके अनुसार बहुतसे रोगोंका कारण वायु है। वायुको 'सकल तंत्रयंत्रधर' कहा है अर्थात् वायु शरीरके संपूर्ण तंत्र अेवं यंत्रको धारण करता है। आजकी डाक्टरी परिभाषामें अिसे 'नर्वस सिस्टम' कहा जा सकता है। नर्वस सिस्टमके विकार, मानसिक विकार, कायचिकित्सा के विकार, संज्ञावह स्रोतों और मनोवह स्रोतोंकी दुष्टि; अिन सब विकारों अेवं दोषोंका कारण वायु है। पित्त और कफके विकारोंमें भी वायु ही बलवान् होता है। तीन दोषोंमें वातज दोष प्रधान होते हैं। शरीरका खिचाव और मुड़ जाना, मलमूत्रका संग (रुक जाना), अंगोंकी निष्क्रियता, चमड़ीका मर जाना, कमर का जकड़ा जाना आदि रोग वायुके हैं। आयुर्वेदमें वातके अस्सी रोग बताये हैं और अिन सबका मुख्य अुपाय बस्ति ही माना है। यह कहनेकी ज़रूरत नहीं है कि मूत्र-चिकित्सा अिन रोगोंमें भी अुपयोगी है। दिवास्वप्न (दिनमें सोना), अतिशय काम करना, व्यवाय (स्त्री-समागम), रात्रिजागरण, चिंता,

शोक, वेगसंधारण (क़ुदरती हाजतको रोकना), आम, भोजनकी अरुचि, मर्मघात; अिन सबसे वातप्रकोप होता है। रुक्ष, शीत और लघु आहार वातप्रकोप करनेवाला है।

अिससे यह समझा जा सकता है कि वात, पित्त, कफ और रक्त के विकारोंमें पथ्य कितना आवश्यक है। कफमें अुपवास और वमन, पित्तमें अुपवास और विरेचन, वातमें बार-बार बस्ति और सामनिराम दोष देखकर अुपवास आदि करना आवश्यक है।

कफके विकारोंके लिये मूत्रचिकित्सा अत्यन्त अुपयोगी है। सदाकी सर्दी, दीर्घकालका दमा, हृदय के विकार, अरुचि, जठराग्निमन्दता; अिन सब कफके विकारोंमें मूत्रचिकित्साके साथ अुचित परिमाणमें लंघन, वमन, रुक्ष आहार आदि होने ही चाहिये। लंघनसे भड़कनेकी ज़रूरत नहीं है। जिस हद तक शरीरमें दोष संचित हुअे होंगे अुस हद तक शरीर लंघन सहन कर सकता है। अंगगुरुता, अरुचि, जठराग्निमान्द्य मलमूत्रसंग' आदि दूर होकर शरीर फूल जैसा हलका हो जाय, भूख खूब कड़ी लगे, टट्टी-पेशाव खुलकर आये, सूखी रोटीको देखकर मुंहमें पानी आ जाय; अैसा हो तब यह समझना कि आम पक गया है और दोष निराम हो गये हैं। निराम अवस्थामें हलका आहार लिया जाय। और अिस अवस्थामें सादी दवाअें भी जादू-सा असर करती हैं। आज जो वैज्ञानिक चिकित्सा कहलाती है अुसमें सामनिरामकी कल्पना ही नहीं है। परिणामतः दिया तले अंधेरा है। आयुर्वेदकी यह विशेषता है। अिस प्रकार सामनिराम दोषोंकी कल्पना को अेक बार भली भांति समझकर अुपवास (लंघन) किया जाय तो अुससे कुछ भी हानि नहीं होती। मूत्रचिकिसामें लंघनका महत्त्व अिसी कारण से है, जिसका मज़ाक़ अुड़ाना ठीक नहीं। आज रोगी अधिक खाकर अधिक दुःखी होते हैं। रोगमें लंघनके महत्त्वको आज भुला दिया गया है।

नेचरोपैथी मानो विदेशकी अुपज हो, अैसा हमारे यहां माना जाता है और अिसके रंग ढंग भी कुछ हद तक अैसे ही हैं। आयुर्वेदमें

नेचरोपैथी कूट कूट कर भरी है। हमारा यह दुर्भाग्य है कि आज आयुर्वेदके सरल सिद्धान्तोंको कोअी नहीं समझता। लंघनचिकित्सा एक समय हमारे यहां खूब फली-फूली थी। लंघनका अर्थ केवल अुपवास ही न था। चरक में कहा है :—

चतुष्प्रकारा संशुद्धिः पिपासा मारुतातपौ।
पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लंघनम्॥

[चरक सूत्र०, अ० २२, श्लो० १८]

चार प्रकारका संशोधन (वमन, विरेचन, निरूह वस्ति और रक्तमोक्षण), तृषाके वेगका अवरोध, वायुसेवन, आतपसेवन, पाचन द्रव्यों से अुपचार, अुपवास और व्यायाम; अिन सबका लंघनमें समावेश होता है।

लंघनकी दूसरी व्याख्या है शरीरमें लाघव (हलकापन) लानेवाला कोअी भी कर्म। पहले लंघन विचारपूर्वक कराया जाता था। आज तो लंघनका अर्थ केवल अुपवास ही किया जाता है। अुपवास कराने हों तो रोगीकी शारीरिक शक्तिका यथार्थ भान चिकित्सकको होना ही चाहिये।

प्राणाविरोधिना चैनं लंघनेन उपपादयेत्।
बलाधिष्ठानमारोग्यं यदर्थोऽयं क्रियाक्रमः॥

[चरक चिकित्सा०, अ० ३, श्लो० १४१]

अैसा लंघन कराना चाहिये कि जो प्राणका विरोधी न हो। लंघन कराते समय यह ध्यान रखना चाहिये कि रोगीका बल कम न हो जाय; क्योंकि आरोग्यका अधिष्ठान — आधार बल है। यदि बल ही क्षीण हो जाय तो लंघनका प्रयोजन ही क्या? आरोग्यके संरक्षणके लिये तो चिकित्साशास्त्रकी प्रवृत्ति है।

अुपवास आयुर्वेदमें अत्यन्त महत्त्वका साधन है। सभी रसज विकारोंमें अुपवास ही अेक अुत्तम अुपचार है। रसज रोग ये हैं :—

अश्रद्धा — अन्न अर्थात् भोजनके प्रति अरुचि। परन्तु खाने बैठें तो ज़रूर खाया जा सके।

अरुचि — अन्नके प्रति अरुचि, कौर लेनेकी अिच्छा ही न हो।

आस्यवैरस्य — मुंह फीका फीका रहना, स्वाद न लगना।

अरसज्ञता — भोजनके स्वादका ही पता न चलना।

ह्रल्लास — लार छूटना, थुकथूकी।

गौरव — शरीर भारी-भारी लगना।

तंद्रा — शरीरके भारी और अिंद्रियोंके शिथिल होनेकी दशा।

अंगमर्द — शरीर टूटना।

ज्वर — बुखार रहना।

तम — आंखोंके आगे अंधेरा छाना।

पाण्डुत्व — शरीरका फीका पड़ना।

स्रोतोरोध — हमारे शरीरमें जो असंख्य स्रोत हैं, वात, पित्त और कफसे अुनका रुक जाना। स्रोतोंकी दुष्टिका नाम ही दुःख है।

क्लैब्य — नपंसकता अर्थात् पुरुषत्वका अभाव।

साद — अंगसाद, जोड़जोड़ में दर्द होना।

कृशांगता — अंगोंका कृश होना।

अग्निनाश — जठराग्निनाश।

अकालवलिपलित — अकालमें बालोंका पकना।

ये सब रसज विकार हैं। आयुर्वेदके अनुसार अिन सब विकारोंमें लंघन ही अेक अकसीर अिलाज है। रोगी अिस सारी बातको अेक बार जान ले तो वह खुद ही लंघनके महत्त्वको समझ जाता है। आमके विकार, रसज विकार, रक्तके विकार, वायुके विकार और कफके विकार; अिन सब विकारोंमें योग्य अुपवास (लंघन) के साथ मूत्रचिकित्सा अवश्य फलदायी सिद्ध हो सकती है। पाठक अुपर्युक्त विवेचनसे यह बात भी समझ सकेंगे कि रोग किस प्रकारका है और अुसके लिये पथ्य-पालन क्या है।

तला हुआ, चरपरा और मिर्चमसालेदार भोजन, खांडसे वनी हुअी चीज़ें और निष्प्राण (विटामिनरहित) आहार तो सदाके लिये त्याज्य होना चाहिये। रोगके समय और खासकर अिलाजके दौरानमें रोगीको अपना समस्त व्यवहार वंद करके शान्तचित्त होकर शान्तिसे रहना चाहिये। वीमारी तो सचमुच दौड़ती हुअी ट्रेनको रोकनेके लिये लाल झंडीके समान है। वीमारी आराम करनेके लिये क़ुदरतकी चेतावनी है। अुस वक़्त दौड़धूप, नौकरी, अध्ययन आदि बन्द कर देना ही अुचित है और शान्त चित्तसे विस्तरे पर लेटे रहकर विगड़े हुअे अवयवोंको आराम देना आवश्यक है। आज तो लोगोंको मरनेकी भी फ़ुरसत नहीं है। मिलमें जानेवाले किसी मज़दूरसे कहें, "भले मानस, ज़रा आराम तो कर ले।" तो वह फ़ौरन् कह सुनाता है, "भाअी सा'व, आराम तो हमें महंगा पड़ जाय। अिंजेक्शन या जो कुछ भी देना हो दे दीजिये। घर पर रहनेकी तो बात ही न कीजिये।" अैसी स्थितिमें वीमारीके वारेमें कुछ सूचनाअें देना व्यर्थ तो है ही; किन्तु वहुतसे व्यक्ति अैसे होते हैं कि जो अपेक्षित पथ्य-पालनके लिये तैयार होते हैं और करते हैं, अुन्हींके लिये यह लेख है।

आजकल वीमारीमें मोसंवीका रस पिलानेका रिवाज चल पड़ा है। कफके रोगोंमें मधुर रस न लेना चाहिये। मधुर रस तो कफकारक है। अिसलिये दमा, सरदी, खांसी और अजीर्ण (वदहज़मी) आदि के रोगियोंके लिये यह रस अच्छा नहीं है। तदुपरान्त भारत जैसे ग़रीव देशमें मोसंवी जैसा महंगा फल खिलाना आवश्यक भी नहीं है। हम तो रोगीको, अिसके वदले लहसुन, अदरक, काली मिर्च, धनिया, ज़ीरा वग़ैरह डालकर मूंगका पानी और भाजीका सूप लेनेके लिये कहते हैं। कफके रोगियोंके लिये अदरक, लहसुन और काली मिर्च बहुत अुपयोगी है।

पित्तके रोगियोंके लिये कड़वा रस हितकर है। मेथीकी भाजी, करेले, सहिजनकी फलियां, दूध, मीठे फल आदिका आहार अुपयोगी है। मधुर, तिक्त और कटु रस हितावह हैं।

वातके रोगियोंके लिये खट्टा-खारा आहार हानिकर है। अिनके लिये मधुर रस अच्छा है। परन्तु अपनी जठराग्नि और भूखको देखकर खाना चाहिये। अिन्हें ठंडा और रूखा आहार नहीं करना चाहिये। क़ब्ज़वालोंके लिये काली द्राक्षा, हर्रे, सरना और अमलतास अच्छे हैं। पेट नरम हो तो काली द्राक्षासे टट्टी साफ़ आती है। पेट सख्त हो तो अेरंडका तेल, कड़ु और सरनाकी ज़रूरत रहती है। क़ब्ज़ बहुत हद तक मानसिक होता है। अिस लिये क़ब्ज़वालेको रोज़ाना रातको कोअी रेचक चीज़ ले लेनी चाहिये। अैसे रोगियोंके लिये यही अच्छा है कि वे अपने पास वस्ति रखें और कभी-कभी ले लिया करें। यह अनुभव है कि मूत्र-चिकित्सामें मूत्र क़ब्ज़को दूर करता है। फिर भी ज़रूरत मालूम हो तो जुलाब ले लेना चाहिये।

बीमारीकी हालतमें आहार कम और हलका होना चाहिये ताकि जल्दी हज़म हो जाय। अुस समय चाय, क़हवा (कॉफ़ी) आदि का सेवन नहीं करना चाहिये। तुलसी, पुदीना, हरी चाय, पिपरामूल और काली मिर्चका काढ़ा पीना ठीक है।

प्रत्येक रोगके लिये पथ्य लिखना तो अिस लेखकी मर्यादासे बाहर है। मूत्रचिकित्साके पाठक पथ्य संबंधी थोड़ा-सा ज्ञान प्राप्त कर लेंगे तो मैं अपने अिस प्रयत्नको सफल मानूंगा।

५

दवाका व्यामोह

— गांधीजी

गांधीजीने सन् १९०६ में दक्षिण अफ्रीकामें 'आरोग्य विषे सामान्य ज्ञान' नामकी पुस्तक लिखी थी। अुसकी प्रस्तावनामें अुन्होंने अुस समयके डाक्टरी पेशेका जो वर्णन किया है और अुसके बारेमें निष्णात डाक्टरोंके जो अभिप्राय दिये हैं, वह सब आधी सदी पहले जितना ठीक लगता था, आज अुससे कहीं ज्यादा ठीक लगता है। शारीरिक स्वास्थ्यकी रक्षा चाहनेवाले प्रत्येक व्यक्तिके लिये अुसे अत्यन्त अुपयोगी समझकर मैं यहां दे रहा हूं।

"हमारी आदत अैसी है कि ज़रा भी तकलीफ़ हुअी कि तुरन्त हम डाक्टर, वैद्य या हकीमके पास दौड़ जाते हैं। यदि हम अैसा नहीं करते तो अपने नाअी या पड़ोसीकी सलाहसे कोअी भी दवा ले लेते हैं। हम यह मान बैठे हैं कि दवा बिना तकलीफ़ दूर नहीं होती, यह सचमुच अेक बड़ा वहम है; और अिस वहमसे जितने मनुष्य दुःखी हुअे हैं और होते हैं अुतने दूसरों कारणोंसे नहीं होते और न होनेवाले हैं। अिसलिये यदि हम अितना समझ जायें कि तकलीफ़ क्या चीज़ है तो कुछ शान्ति रख सकते हैं। तकलीफ़का अर्थ है दुःख। रोगका अर्थ भी वही है। रोगका अुपाय करना तो ठीक है, परन्तु रोग मिटानेके लिये दवा लेना व्यर्थ है; अितना ही नहीं किन्तु अुस से अनेक बार हानि होती है। मेरे घरमें कचरा हो, अुसे मैं ढांक दूं, तो अुसका जैसा असर होता है वैसा असर दवाका होता है। मैं कचरा ढांकूं तो वही कचरा सड़ कर मेरे लिये हानिकर सिद्ध होगा। और ढकना सड़ जाय तो ढकना अेक और कचरा हो गया। अब तो मुझे पुराने और नये दोनों प्रकारके

कचरेको निकालना होगा। अैसी दशा दवा लेनेवालेकी होती है। परन्तु यदि मैं कचरा निकाल डालता हूं तो घर जैसा था वैसा फिर हो जाता है। रोग पैदा करके क़ुदरत हमें चेतावनी देती है कि हमारे शरीरमें कचरा है। और क़ुदरतने शरीरमें ही कचरा निकलनेके रास्ते रखे हैं। और जब रोग हो जाय तब हमें समझ लेना चाहिये कि हमारे शरीरमें कचरा था, जिसे क़ुदरतने निकालना शुरू कर दिया है। यदि कोअी व्यक्ति मेरे घरमें पड़े हुअे कचरेको निकालने आये तो मैं अुसका अुपकार मानूं। वह व्यक्ति जब तक कूड़ा-करकट निकाल नहीं लेता तब तक मुझे कुछ कठिनाअी तो होगी, फिर भी मैं चुप रहूंगा। अुसी तरह क़ुदरत मेरे शरीररूपी घरसे कचरा निकाल डाले तब तक मैं शान्ति रखूं तो मेरा शरीर अच्छा हो जाय और मैं नीरोग यानी दुःखरहित हो जाअूं। मुझे सरदी हुअी है तो मुझे तुरन्त कुछ दवा लेने या सूंठ खानेकी दौड़धूप नहीं करनी चाहिये। मैं जानता हूं कि मेरे शरीरके अमुक भागमें कूड़ा पड़ा था, जिसे निकालनेके लिये क़ुदरत आयी है। मुझे अुसे रास्ता देना चाहिये ताकि कमसे कम समयमें मेरे कचरेकी सफ़ाअी हो जाय। यदि मैं क़ुदरतका सामना करूं तो क़ुदरतको दोहरा काम करना पड़े अर्थात् कचरा निकालने और मेरे साथ लड़नेका काम। मैं क़ुदरतकी मदद कर सकता हूं। जैसे, जिस कारण से कूड़ा दाख़िल हुआ हो अुस कारणको दूर करूं कि जिससे और कूड़ा दाख़िल न हो; अर्थात् अुस दौरानमें खाना बन्द करूं कि जिससे कूड़ेका बढ़ना रुक जाय और खुली हवामें योग्य कसरत करूं तो मैं भी शरीरकी चमड़ी द्वारा कचरा निकालने लग जाअूं। शरीरको नीरोग रखनेका यह अेक सुनहरी नियम है, अैसा प्रत्येक व्यक्ति स्वयमेव सिद्ध कर सकता है। केवल हमें अपनी मनोदशाको स्थिर रखना चाहिये। जो व्यक्ति अीश्वर पर सच्ची श्रद्धा रखता है वह तो सदा अैसा ही करेगा। अैसी मनोदशा बनानेमें अितनी बात सहायक होगी — मैं वैद्य आदिसे दवा लूंगा तो मेरी बीमारी मिट ही जायगी, अैसा बीमा कोअी

वैद्य नहीं करेगा। वैद्य सभीको तो नीरोग नहीं कर देता। यदि अैसा होता तो मुझे ये प्रकरण लिखने न पड़ते और हम सब आरामसे ज़िन्दगी गुज़ारते रहते।

"अनुभव तो अैसा है कि जिस घरमें दवाकी शीशी दाखिल हुअी कि वहांसे फिर निकलती ही नहीं। असंख्य मनुष्य जीवनभर किसी न किसी रोगसे पीडित रहते हैं और आये दिन दवा बढ़ाते जाते हैं अेवं वैद्य और डाक्टर बदलते ही रहते हैं, रोग मिटानेवाले वैद्य या डाक्टर की खोजमें भटकते रहते हैं; और अन्तमें खुद ज़लील होकर, दूसरोंको ज़लील करके व्याकुलतासे मर जाते हैं। प्रसिद्ध स्वर्गस्थ जज स्टीवन जो हिंदुस्तानमें भी रह चुके थे, अुन्होंने अेक बार कहा था कि जिन वनस्पतियोंके बारेमें वैद्य बहुत कम जानते हैं, अुन वनस्पतियोंको अैसे शरीरोंमें दाखिल करते हैं कि जिनके बारेमें अुससे भी कम जानते हैं। वैद्य (चिकित्सक) खुद भी काफ़ी अनुभव करनेके बाद अैसे ही अुद्‌गार निकालते हैं। डाक्टर मेजेन्दी कह गये हैं, 'चिकित्साका व्यवसाय महापाखंड है।' सर अेस्ली कूपर अेक विख्यात डाक्टर हो गये हैं। अुन्होंने कहा है, 'चिकित्साशास्त्र केवल अनुमान पर रचा हुआ है।' सर जॉन फॉर्ब्सने कहा है, 'वैद्योंकी बुद्धिमत्ता होने पर भी अनेक मनुष्योंके रोग क़ुदरतने ही मिटाये हैं।' डाक्टर बेकर बताते हैं, 'लाल बुख़ारसे जितने बीमार मरते हैं अुसकी अपेक्षा अुस बीमारीकी दवासे बहुत ज़्यादा मरते हैं।' डाक्टर फरोथ कहते हैं, 'वैदककी अपेक्षा अधिक अप्रामाणिक पेशा शायद ही नज़र आता है।' डाक्टर वॉटसन कहते हैं, 'अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंके बारेमें शंकापूर्ण समुद्र पर हमारा व्यवसाय भटकता रहता है।' डाक्टर कॉज़वेलका कहना है, 'यदि वैद्यक नष्ट हो जाय तो मनुष्य जातिको अपार लाभ हो।' डाक्टर फ्रेंक कहते हैं कि, 'हज़ारों आदमियोंका क़त्ल दवाख़ानोंसे होता है।' डाक्टर मेसनगुड कहते हैं, 'युद्ध, महामारी और दुष्कालसे जितने आदमी मौतका शिकार होते हैं, अुससे कहीं ज़्यादा दवाअियोंसे मरते हैं।' जहां जहां वैद्य बढ़े हैं

वहां वहां रोग बढ़े हैं, अैसा हम जगह जगह देखते हैं। जिन अखबारोंमें दूसरे विज्ञापन नहीं छप सकते अुन अखबारोंमें दवाअियोंके बड़े बड़े विज्ञापन प्रकाशित हो जाते हैं। 'अिंडियन ओपिनियन'में जब विज्ञापन लिये जाते तब अुसके कर्मचारी विज्ञापन मांगनेके लिये दूसरोंके पास जाते; परन्तु दवाके मालिक दवाके विज्ञापन प्रकाशित करनेके लिये अिस पत्र पर दबाव डालते और खूब पैसा देनेका प्रलोभन देते थे। जिस दवाकी क़ीमत अेक पाअी है अुस दवाका हम अेक रुपया देते हैं। प्राय: दवा बनानेवाले हमें यह जानने ही नहीं देते कि दवा किससे बनी है। अेक दवावालेने 'गुप्त दवाअियां' नामकी अेक पुस्तक अभी प्रकाशित की है। अुसे प्रगट करनेका अुद्देश्य यह है कि लोग भ्रांतिमें न रहें। अुसमें वह बताता है कि सार्सापरिला, फ़्रूटसॉल्ट, सीरप वग़ैरह पेटेंट दवाअियां हैं, जिनके दाम हम तीन शिलिंगसे सात शिलिंग तक देते हैं। अुसमें बतायी हुअी दवाकी असल क़ीमत अेक फ़ार्दिंगसे अेक पेनी तक होती है। अिसलिये हम कमसे कम छत्तीस गुने और अधिकसे अधिक तीन सौ छत्तीस गुने दाम देते हैं। अर्थात् हम तीन हज़ार पांच सौ प्रतिशतसे पैंतीस हज़ार प्रतिशत तकका नफ़ा देते हैं।

"अिससे पाठकको अितना तो समझ लेना चाहिये कि रोगीको डाक्टरके पास दौड़नेकी ज़रुरत नहीं है, एकदम दवाअें नहीं लेना है। परन्तु सभी लोग अितना सबर नहीं रखेंगे। सभी डाक्टर अप्रामाणिक नहीं हैं। हर वक़्त दवा खराब ही है अैसा साधारण मनुष्य नहीं मानेगा। अिन सबको अितना तो कहा जा सकता है कि आप यथासंभव धैर्य रखें, डाक्टरोंको यथासंभव तकलीफ़ न दें, डाक्टरको बुलायें तो अच्छे डाक्टरको बुलायें। और अेक डाक्टरको बुलानेके बाद अुसीके अिलाज पर डटे रहें। वही जब दूसरे डाक्टरको बुलानेके लिये कहे तभी दूसरेको बुलायें। आपका रोग आपके डाक्टरके बसमें नहीं है। आपकी आयु होगी तो आप ज़रूर अच्छे हो जायेंगे। और आपके अुपाय करने पर भी आपकी या अ :के रिश्तेदारकी मौत हो जाय तो समझें कि वह भी जीवनका अेक प्रकारका परिवर्तन ही है।"

परिशिष्ट

मूत्रचिकित्साका हार्द

[मार्गदर्शक प्रश्नोत्तरी]

प्रस्तुत पुस्तकके सिलसिलेमें मुझे कुछ अैसा अनुभव हुआ है कि पाठक प्रायः न तो पुस्तकको अेकाग्रता अेवं सावधानतासे पढ़ते हैं और न ही अुसके बारेमें गंभीरतासे सोचते हैं। अुनकी दशा रामायणके अुन श्रोताओं जैसी है कि जो सारी रामायण सुनकर कथाकारसे यह प्रश्न करते हैं—'राम राक्षस था कि रावण राक्षस था?' पुस्तकमें यथा-स्थान सभी बातोंकी स्पष्टता की गयी है। फिर भी अुन बातोंके बारेमें मेरे पास प्रश्न आते हैं। अिसी तरह 'मूत्रचिकित्सानो स्वानुभव' नामक मेरे लेखकी स्पष्ट बातोंके बारेमें अनेक पाठक मुझे प्रश्न पूछते रहे हैं, अुन सबके अुत्तर मैं देते देते थक गया हूं। अिसलिये परिशिष्टके रूपमें यह प्रश्नोत्तरी देना ज़रूरी मालूम होता है। आशा है कि पाठकोंके लिये यह सरल अेवं सुविधाजनक सिद्ध होगी।

प्रश्न—मूत्रचिकित्सासे कौन कौनसे रोग मिटते हैं?

अुत्तर—मूत्र किसी अेक या अनेक रोगोंकी दवा नहीं है। प्रकृति-दत्त अिस शरीरको सदा स्वस्थ अेवं स्फूर्तिमान् बनाये रखनेके लिये मनुष्यको यह प्राकृतिक साधन मिला है।

प्रश्न—अर्थात् हमें कोअी भी रोग हुआ हो तो वह मूत्रचिकि-त्सासे मिट जाता है, अैसा आप कहते हैं?

उत्तर—अैसा मैं नहीं कहता, प्रकृति कहती है। मैंने आपकी तरह समझनेका प्रयत्न किया और मैं अैसा समझा हूं।

प्रश्न—तो फिर मुझे कौनसा रोग हुआ है, अुसे भी मुझे जाननेकी ज़रूरत नहीं है।

अुत्तर—जब हमने अिसे शारीरिक स्वास्थ्यकी रक्षाका साधन मान लिया तब यह जाननेकी ज़रूरत नहीं रहती कि शरीरमें कौनसा रोग हुआ है। रोगको खोज निकालनेका काम मूत्र स्वयं करता है और अुस रोगरूपी चोरका कान पकड़कर शरीररूपी घरसे बाहर निकाल देता है।

प्रश्न—आपकी यह बात ठीक तरहसे समझमें नहीं आयी। ज़रा अेकाध मिसाल देकर समझाअिये।

अुत्तर—अच्छा, मैं अेक अैतिहासिक तथ्य बताकर आपको समझानेका प्रयत्न करता हूं। बहुत बरस पहले मुझे यह मालूम हुआ कि योग-साधना करनेवाले साधकोंको योगाभ्यास शुरू करनेसे पहले अपना शरीर संपूर्ण स्वस्थ बना लेना चाहिये। अैसा न हो तो कोअी भी साधारण रोग योगसाधनाकी मुख्य चावी अर्थात् अेकाग्रताको प्राप्त करनेमें बाधक होता है। अेकाग्रताकी सिद्धिके लिये ध्यानमें बैठे कि खांसी छिड़ जाय या आधासीसी हो जाय या पेट दर्द करने लगे या दस्त लग जायें, तो तुरंत अेकाग्र होनेमें विक्षेप आता है और अस्थिरता आ जाती है। अैसी अस्थिरतासे योग कभी सफल नहीं हो सकता। अिसलिये योगाभ्यास करनेवालेका शरीर सर्वथा नीरोग होना चाहिये। यह कैसे हो? यह कैसे पता चले कि शरीरमें कौनसा छोटा रोग या बड़ा रोग है? किस वैद्य या डाक्टरको दिखा कर सच्चा निदान अेवं अुपचार कराया जाय? अिस प्रकार कभी सच्चा तथा सुरक्षित निर्णय नहीं हो सकता। अिसलिये योगियोंने अभ्याससे या सहज प्रेरणासे अैसा निर्णय किया कि मनुष्यके शरीरमें ही अैसे संपूर्ण द्रव्य हैं, जिनके अुचित अुपयोगसे बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको ठीक किया जा सकता है और अुसे सुरक्षित रखा जा सकता है।

प्रश्न—यह तो अद्भुत बात है। यदि अैसा था तो आज तक यह फ़िलासफ़ी कहां चली गयी थी? अभी अेकदम कहांसे टपक पड़ी?

अुत्तर – यह फ़िलासफ़ी कहीं चली तो नहीं गयी थी। हमारे आसपास ही खेल रही थी, अब भी खेल रही है, और अुसे हम अपनी आंखोंसे देखते हैं; परन्तु हमारी व्यभिचारिणी बुद्धि हमें यह समझने नहीं देती।

प्रश्न – आपकी अलंकारवाली भाषा समझमें नहीं आयी। ज़रा स्पष्ट शब्दोंमें समझानेका कष्ट करें।

अुत्तर – अीश्वरने अिस विराट् विश्वमें असंख्य प्रकारके स्थावर और जंगम जीवोंकी रचना की। अन्तमें मानव-शरीरकी रचना करके तो अुसने कमाल ही कर दिया। अीश्वरकी सृष्टिमें यह सर्वश्रेष्ठ कृति है। अीश्वरने जीव-जन्तु, पशु-पक्षी, जलचर, भूचर और खेचर जीवोंको जो साधन दिया है वही साधन मनुष्यको भी दिया है। दूसरे जीव अीश्वरकी दी हुअी प्रेरणाके अधीन होकर अुस साधनका सफल अुपयोग करते हैं। केवल मनुष्य ही बुद्धिके घमंडमें आकर अुसका ठीक अुपयोग नहीं करता। वह मुख्यतः स्वार्थ साधनेकी दृष्टिसे अपनी बुद्धि द्वारा वैज्ञानिक साधनोंकी खोज किया करता है। जिसे मैं बुद्धिका व्यभिचार मानता हूं। मानव-सेवाके लिये दी हुअी बुद्धिको धनप्राप्तिका साधन बनाना बुद्धिके साथ व्यभिचार करना है।

प्रश्न – अब मैं आपकी कटाक्षकी भाषाको समझा। आप यह कहना चाहते हैं कि जैसे पालतू या भटकते हुअे पशु-पक्षी अपना स्वास्थ्य अपने साधनसे ठीक कर लेते हैं, वैसे हमें भी अुसे ठीक करके अीश्वर-दत्त अिस शरीरको संपूर्ण अेवं स्वाधीन रखना चाहिये। अिसके बदले हमने अपने शरीरको दूसरे जड या सजीव साधनोंका ग़ुलाम बना डाला है। तो क्या मनुष्य को भी पशु-पक्षियोंकी तरह क़ुदरती प्रेरणाके आधार पर जीवित रहना चाहिये और अीश्वरकी दी हुअी बुद्धिका कोअी अुपयोग नहीं करना चाहिये?

अुत्तर – आप मेरे आशयको समझे तो सही। परन्तु मैं यह नहीं कहता कि हमें केवल जानवरोंकी तरह क़ुदरती प्रेरणा पर ही जीना

चाहिये, अपितु हमें अुस बुद्धिका भी अुपयोग करना चाहिये; पर अुसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिये।

प्रश्न – ठहरिये! ठहरिये! बुद्धिके सदुपयोग और दुरुपयोगकी बात यहां कहां है। यहां तो बुद्धिका अुपयोग करनेकी बात है। क्या मनुष्य अपनी बुद्धिका अुपयोग भी न करे?

अुत्तर – बुद्धिका अुपयोग अवश्य करे; परन्तु वह प्रकृतिके सहयोगमें रहकर अुसका अुपयोग करे, तभी मानवजातिका हित हो सकता है। प्रकृतिके विरुद्ध जाकर अुसका अुपयोग किया जाय तो वह बुद्धिका दुरुपयोग कहलाता है और अुससे मानवजातिका अहित होता है। परन्तु हम दूसरी पटरी पर चढ़ गये। बुद्धिहीन पशु जिस साधनका अुपयोग अव्यवस्थित रूपसे करते हैं, बुद्धियुक्त मनुष्य अुसी साधनका अुपयोग व्यवस्थित और विवेकपूर्वक करे तो वह प्रकृतिका पूरा लाभ अुठा सके।

प्रश्न – हां, अब मैं समझा। आपका आशय यह है कि अीश्वरने प्रत्येक मनुष्यको अेक अैसा अपूर्व साधन दिया है कि जिससे वह अपने स्वास्थ्यकी रक्षा कर सकता है और बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको ठीक कर सकता है। मनुष्य अुस साधनका यथोचित अेवं यथेष्ट अुपयोग करता रहे तो वह किसी भी प्रकारकी शारीरिक व्याधिका शिकार न हो। आपकी यह बात तो मेरी समझमें आ गयी। परन्तु मेरे मनमें अेक प्रश्न अुठा करता है कि हम अुस दिव्य साधनको कैसे भूल गये?

अुत्तर – अब अिसके कारणोंकी तफ़सीलमें या गहराअीमें जानेकी ज़रूरत नहीं है। चाहे जो कारण हों, परन्तु हमने अिस प्राकृतिक अमूल्य द्रव्यको मलिन अेवं घृणित मान लिया। जो अधिक नाक-भौं चढ़ाये और रूमालसे अपनी नाक बन्द करके रखे, वह अधिक संस्कारी साफ़-सुथरा और धर्मिष्ठ समझा जाने लगा। अिस बाह्य शुद्धिके भुलावेमें सच्ची वस्तु लुप्त हो गयी। हमने असली चीज़ खो दी।

प्रश्न – आपकी यह बात तो यथार्थ है। किन्तु अिस प्राकृतिक साधनमें कुछ कमी है, अिसे तो आप भी स्वीकार करेंगे न? अिसका

स्वाद कुछ अरुचिकर है। अिसकी गंध भी कुछ अैसी है कि अिसे पीते हुअे कंपकंपी होने लगती है। अैसा कहनेमें कोअी अतिशयोक्ति तो नहीं है? अिसका क्या अुपाय?

अुत्तर – आपकी दलील किसी हद तक ठीक है। अिसका आधार तो व्यक्तिगत आदत ही है। खसके सुगंधित अित्रकी गंधसे अफ्रीकाका सीदी अपनी नाक चढ़ा लेता है और बदबू आती है, यह कहकर वह दूर भागता है। शराब न पीनेवाले व्यक्तिको अुसकी गन्ध असह्य लगती है। मैं तो यह मानता हूं कि सुगंध, दुर्गंध, स्वाद, वेस्वाद आदि सब चोचले तभी तक हमें सूझते हैं जब तक हमें अुससे प्रयोजन नहीं है। दुःखों अेवं रोगोंसे छुटकारा पानेके लिये चाहे जैसी बदबूदार या वे-स्वाद लगनेवाली कड़वी दवा हम गटका जाते हैं। किन्तु सच बात तो यह है कि जब किसी साधनके प्रति श्रद्धा हो जाती है तब बुरी से बुरी चीज़ भी अच्छी लगती है। अिसलिये असली बात तो हृदयके निश्चयकी या श्रद्धाकी है। मनुष्यका स्वमूत्र अुसके शारीरिक स्वास्थ्यके लिये फ़ौलादी बकतर है, यह बात हमारे दिलमें जम जानी चाहिये और अिस बारेमें पूरी श्रद्धा होनी चाहिये। पिछले कअी महीनोंमें, मैंने स्वयं अैसे अनेक लोगोंको देखा है कि जिन्हें मूत्रकी बात सुनते ही कंपकंपी छूटती थी और फिर अुन्हीं लोगोंने मूत्र पीकर अपने आपको शारीरिक व्याधिके भयसे मुक्त कर लिया है। अिसलिये आपकी दुर्गंध या बेस्वादकी दलील टिक नहीं सकती; क्योंकि लोग रोगों और उनके खर्चीले अुपचारसे अितने तंग आ गये हैं कि यह अद्‌भुत अेवं अमूल्य द्रव्य उनके विश्वासका पात्र बने बिना रह नहीं सकता। भारतवर्षकी जनतामें यह जीवट है ही कि ज़रूरतके वक़्त वह सच्ची वस्तुको अपना लेती है।

प्रश्न – आपकी बात गंभीरतासे विचारणीय है, इसमें कोअी शक नहीं। किन्तु वैज्ञानिक किसी हिकमतसे अिसकी दुर्गंध अेवं कुस्वादको नष्ट कर दें, यह क्या अिष्ट नहीं है?

अुत्तर – अिस विषयमें मुझे तो शंका है। प्रत्येक व्यक्तिके लिये स्वमूत्र हितकर है। चिकित्साशास्त्रकी दृष्टिसे भी यह अुसीके शरीरके लिये अुपयोगी है। अिसलिये प्रकृतिने जो द्रव्य अुसके शरीरसे निकाला है, जिससे अमुक तत्त्वोंकी क्षति हुअी, अतः वह अुसे वापस देनेसे ही अुन तत्त्वोंकी क्षतिपूर्ति हो सकती है। परन्तु आपके कथनके अनुसार अिसकी दुर्गंध अुवं कुस्वादको निकाल देने पर अिसके मूल तत्त्व रहेंगे या नष्ट हो जायेंगे, अिसका निर्णय भी तो वैज्ञानिक ढंगसे होना चाहिये। मुझे तो विश्वास है कि वैसा करनेसे इसके महत्त्वमें बहुत अन्तर आ जायगा। फिर भी कोअी वैज्ञानिक मूत्रके गुणदोषोंमें तनिक भी अन्तर न आने देकर अपेक्षित संशोधन करे तो मुझे अुसमें कोअी आपत्ति न होगी। दूसरी अेक महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि मूत्र वैयक्तिक दृष्टिसे अुपयोगी है अर्थात् स्वमूत्र स्वके लिये अुपयोगी है, परके लिये नहीं। अिसलिये अिसके सामुदायिक संशोधनसे कुछ बात बनेगी नहीं। प्रत्युत अुस संशोधनसे अेक बड़ा खतरा यह पैदा होगा कि अेक-दूसरेके मूत्रके अुपयोगसे अेक-दूसरेके रोगके संक्रमणकी पूरी पूरी संभावना है। अिसलिये मैं तो यह मानता हूं कि अैसा संशोधन किसी वैज्ञानिक के बसकी बात नहीं है। प्रकृति स्वयं संपूर्ण है। अुसे जैसी है वैसी ही रहने देनेमें हमारा सच्चा पुरुषार्थ है।

प्रश्न – आपकी बात मैं समझ गया हूं कि मूल द्रव्य पर वैज्ञानिक क्रिया-प्रक्रिया करके अुसमें परिवर्तन करनेसे कोअी लाभ नहीं है। अिसलिये अुसे शुद्ध स्वरूपमें अपना लेनेमें ही अुसका सदुपयोग है। अन्य किसी भी प्रकारसे अुसमें परिवर्तन करके अुपयोग करनेमें तो नुक़सान होनेकी पूरी संभावना है। तो फिर मुझे यह समझाइये कि शरीरके भिन्न-भिन्न रोगों पर अुसका अुपयोग कैसे किया जाय?

अुत्तर – मैं आपको पहले ही यह बता चुका हूं कि मूत्र किसी अेक रोगको मिटानेकी दवा नहीं है, किन्तु शारीरिक स्वास्थ्यको सुरक्षित रखनेके लिये और बिगड़े हुअे स्वास्थ्यको ठीक करनेके लिये प्रकृतिका

दिया हुआ अमूल्य साधन है। अिसी दृष्टिको सामने रखकर अिसका अुपयोग करना चाहिये। अमुक ध्येयको ध्यानमें रखकर अुसी दृष्टिसे अिसकी आराधना करना भी योग है। विश्वको हम अध्यात्म दृष्टिसे देखना सीखें और अुसके अंगका अुपयोग अुसी दृष्टिसे करें तो अपना काम बहुत आसानीसे पूरा हो सकता है। यह द्रव्य बड़ौदाके अॅलेम्बिक या कलकत्ताके बंगाल केमिकल वर्क्स या झंडु फ़ार्मेसीमें तैयार किया हुआ नहीं है। परंतु विधाता का बनाया हुआ और सभी दृश्य-अदृश्य साधनोंसे सुसज्जित प्रकृतिकी फ़ार्मेसीमें तैयार हुआ यह द्रव्य है। यह अेक दिव्य साधन है और अिसमें शरीरको संपूर्ण स्वस्थ रखनेकी शक्ति है, अिस श्रद्धा अेवं निष्ठासे अिसका यथोचित अुपयोग करना चाहिये। साथ ही अेक और बात भी स्पष्ट कर दूं। कोअी यह न समझ बैठे कि शारीरिक स्वास्थ्यको सुरक्षित रखनेवालि द्रव्यके सेवनसे मनुष्य मृत्युसे भी मुक्त हो जाता है। जिसने जन्म लिया है अुसकी मृत्यु भी निश्चित है। परंतु कब होगी, यह तो कोअी नहीं जान सकता। किन्तु मूत्रमें अितनी शक्ति है कि अुसका निष्ठापूर्वक सेवन करनेवाला जीवन पर्यन्त संसूर्ण स्वस्थ अेवं नीरोग बना रहे और हंसते-हंसते मृत्युका आलिंगन करे। अिस शक्तिका न्यूनाधिक अनुभव करना तो प्रत्येक व्यक्तिके पुरुषार्थ पर निर्भर है।

प्रश्न — आपने विशेष महत्त्वकी बात स्पष्ट कर दी, यह बहुत अच्छा हुआ। मेरे समझनेमें भी अब कोअी गड़बड़ी नहीं रही। अब मुझे आगेकी बात समझाइये।

अुत्तर — अितना निश्चित है कि स्वस्थ व्यक्तिके लिये मूत्रका नियमित अुपयोग आवश्यक नहीं है। फिर भी दूरंदेशी अेवं सावधानताकी दृष्टिसे प्रतिदिन थोड़ी मात्रामें वह मूत्रपान करता रहे तो अिसमें कुछ नुक़सान तो है नहीं, प्रत्युत कुछ फ़ायदा ही है। हमें यह अनुभव है कि अिन्फ़्लूअेंजा दूर देशसे आकर मनुष्य पर आक्रमण करता है और टाअिफ़ायड भी हमला करता है। और उसका आक्रमण अमुक

निश्चित अवधिमें होता भी है। अुस समय कोअी भी नीरोग व्यक्ति प्रतिदिन प्रायः चार-पांच औंस मूत्र पीता रहे तो भावी रोग अुस पर आक्रमण नहीं कर सकता। यह अेक ठोस सत्य अनुभवकी अहरन पर पिट चुका है। अिसलिये कोअी स्वस्थ व्यक्ति रोज़ाना सुबह अिसका नियमित सेवन करे तो अुसे फ़ायदा ही होगा।

जो अपनी खराब सेहतके लिये अिसका प्रयोग करना चाहते हैं, वे भी अनेक रोगोंसे वचनेके लिये अिसी अेक अुपायको अपनावें। वे अिसका प्रयोग नीचे लिखे अनुसार कर सकते हैं:—

१. रोगकी गंभीरताके अनुपातमें न्यूनाधिक मात्रामें नियमित मूत्र-पान करें।

२. केवल मूत्र और पानीके साथ आवश्यकताके अनुसार अुपवास करें।

३. पुराने पेशावसे सारे शरीर पर काफ़ी समय तक मालिश करें।

४. शरीर पर फोड़े-फुंसियां हों, जलनेसे फफोले या ज़ख्म हो गये हों, कोअी अंग सड़ गया हो, छोटे-बड़े घाव हों या अैसी कोअी तकलीफ़ हो कि मालिश न हो सके, तब पुराने पेशावसे तर की हुअी पट्टीका अुपयोग करें और अुस पर पेशाब छींटते रहें।

५. पेड़ू जैसे नाज़ुक अंग पर या अैसे भाग पर कि जहां अधिक मालिश न हो सकती हो वहाँ पेशाबकी पट्टी रखें।

(अिस बारेमें विशेष जानकारीके लिये पुस्तकके तत्संबंधी प्रकरणको देखें।)

प्रश्न—परन्तु अिसके प्रयोगका आरंभ कहांसे और किस प्रकार किया जाय, अिसकी भी कुछ जानकारी दीजिये न?

अुत्तर—हां, यह जानकारी भी आवश्यक है। कअी लोग अत्यंत आवेश अेवं अुत्साहमें आकर अिसके प्रयोगकी मर्यादा भूल जाते हैं, जिससे विपरीत परिणाम आता है। अैसी अनेक घटनायें हुअी हैं। अिसके प्रयोगमें निश्चित मार्गदर्शन करनेवाला तो कोअी विरला ही

होता है। अिसलिये प्रत्येक रोगीको प्रयोगकी दृष्टिसे खूब सावधान रहना चाहिये और अधीर नहीं होना चाहिये। वस्तुतः सुरक्षित मार्ग यह है कि जिसे मूत्र पीनेसे घृणा आती हो या जिसका जी मतलाता हो, वह अपने-आप पर ज़बरदस्ती न करे और थोड़े दिनके लिये रुक जाय। मालिशसे आरंभ करना चाहिये। अिस आज़ादीसे मालिश की जाय कि आधी नफ़रत काफ़ूर हो जाय। साथ-साथ ताज़े पेशावसे दांतों और मसूड़ोंको घिसा जाय, जिससे दांत मज़बूत बनेंगे और अगर अुनमें कुछ खराबी होगी तो वह दूर हो जायगी, क्योंकि मूत्र जन्तु-नाशक भी है और अैसा करनेसे नफ़रत भी जाती रहेगी। अेक बात सभी को जान लेनी चाहिये कि दुनियाभरमें अेसा कोअी द्रव्य नहीं है कि जो निर्दोष होते हुअे भी कीटाणु-नाशक हो। पेशावको दीर्घकाल तक रख छोड़ने पर भी अुसमें जन्तु पैदा नहीं होते और स्वयं जन्तुओंका तुरन्त नाश कर देता है। गंगाजल या जमनाजलकी अपेक्षा भी यह अधिक जन्तुनाशक और निर्दोष है।

प्रश्न — यह बात तो आपने बहुत सुन्दर कही। अैसी बात आम जनतासे आज तक कैसे छिपी रही? आप अिसे ज़रा और समझाइये, मुझे सुननेमें बहुत आनन्द आ रहा है।

अुत्तर — यह बात कैसे छिपी रही, अिसकी गहराअीमें जानेकी अभी कोअी ज़रूरत नहीं। मूत्रमालिश करते करते दो चार रोज़ हो जायें तो फिर मूत्रपानके निर्णय पर आना चाहिये। प्रातःकाल जल्दी अुठकर हाथ-मुंह धोकर साफ़ गिलासमें पेशाव करके भक्तिभावसे पी जाना चाहिये। अुसके बाद थोड़ा पानी पिया जाय तो कोअी हर्ज नहीं। अिस प्रकार अपनी प्रकृतिको साधकर मूत्रप्रयोग किया जाय तो कोअी प्रतिक्रिया नहीं होती। परन्तु अिच्छा-विरुद्ध अपनी प्रकृति पर ज़बर-दस्ती करके मूत्रपान किया जाय तो प्रकृति ही अुसका विरोध करती है। अर्थात् क़ै द्वारा अुसे निकाल देती है और फिर शरीरमें अव्यवस्था खड़ी हो जाती है। आज तक, चिर कालसे हमने अपने शरीर और

मनको जिस रास्तेसे चलाया है, अुससे अुन्हें अेकदम मोड़नेसे प्रतिक्रिया होनेकी संभावना है ही। अिसलिये हमारी कोशिश यही रहे कि वह न होने पाये। किसी भी रोगके निवारणका यह राजमार्ग है। अिस पर श्रद्धा अेवं सावधानतासे चलते रहना चाहिये।

प्रश्न — यह अुपचार किस-किस रोग पर क़ितने-कितने दिनों तक करना चाहिये, अैसा कुछ निश्चित है क्या?

अुत्तर — यह आश्चर्यकी बात है कि अिस बारेमें पहलेसे कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता। कअी बार मुख्य रोगके साथ-साथ अनेक छोटे रोग भी शरीरमें होते हैं। अिस अुपचारसे पहले वे छोटे रोग भागने लगते हैं और बादमें मुख्य रोग भागता है। जबसे मालिश की क्रिया शुरू होती है और अेक बार पीना शुरू होता है तबसे शरीरमें रहे हुअे छोटे-बड़े रोग भागनेकी तैयारी करने लगते हैं। कितने ही रोग तो मालिशसे ही विदा हो जाते हैं। जो रोग गंभीर होते हैं वे मूत्र और शुद्ध पानीके साथ अुपवास करनेसे तथा कम या ज्यादा समय तक मालिश जारी रखनेसे बिदा हो जाते हैं। अिसलिये यह निश्चित नहीं कहा जा सकता कि अमुक रोग अमुक अवधिमें नष्ट हो जायगा। हां, अिसका कुछ ख़याल अिस पुस्तकमें दिये गये रोगियोंके विवरणोंसे ज़रूर आ जायगा। परन्तु क़ुदरतकी यह ख़ूबी है कि जिस रोगका हम अुपचार करते हैं, अुसके नष्ट होते ही क़ुदरत अपने-आप हमें सूचित कर देती है कि अब और अधिक अुपवास करनेकी कोअी ज़रूरत नहीं है।

प्रश्न — यह भी आश्चर्यकी बात है। परंतु अिस अुपचारको करते हुअे क्या कोअी अन्य तकलीफ़ पैदा होती है? यदि अैसा हो जाय तो क्या करना चाहिये।

अुत्तर — अुपर्युक्त रीतिसे सावधानीपूर्वक अुपचार शुरू किया हो तो प्रारंभमें कुछ नहीं होता। परन्तु प्रयोग शुरू होते ही मूत्रको शरीरके भीतर विभिन्न अवयवोंको स्वच्छ करनेका काम करना पड़ता है।

शरीरमें मल, कफ़ या दूसरे प्रकारका कचरा रास्ता रोक कर पड़ा हो तो मूत्र अुसे बाहर निकाल देता है। वह तीन तरहसे बाहर निकलता है—दस्त, क़ै या चमड़ीके द्वारा, अर्थात् अुपवास-कालमें दस्त या क़ै होनेकी पूरी संभावना है। कअी बार खुजली होकर शरीर पर गरमीकी फुंसियां भी निकल आती हैं। अैसी दशामें ज़रा भी घबराना नहीं चाहिये। यही समझें कि मूत्रने अंदरकी सफ़ाअीका काम शुरू कर दिया है। और हमें अपने प्रयोगको शांति अेवं निश्चिततासे स्थितप्रज्ञकी भांति देखते रहना चाहिये। अुस समय चाहे जैसे प्रिय मित्र या रिश्तेदारकी सलाह मानकर किसी प्रकारकी दवा या विजातीय द्रव्यको शरीरमें दाखिल नहीं करना चाहिये। जानबूझकर या भूलसे भी यदि कोअी अिस सूचनाका अुल्लंघन करेगा तो अुसे बड़ा खतरा अुठाना पड़ेगा। यदि धैर्य न रहे और श्रद्धा अुठ जाय तो प्रयोग बन्द करके जो चाहे सो करें। किन्तु प्रयोगके दौरानमें अन्य कोअी आन्तरिक या बाह्य अुपचार भूलकर भी न करें।

प्रश्न – तब क्या किया जाय? शरीर पर होनेवाली वह क्रिया-प्रतिक्रिया कब तक शान्त हो जायगी? बिना किसी अुपायके क्या वह शान्त हो जायगी?

अुत्तर – कुछ भी न करें। तटस्थ रहकर देखते रहें। शान्तिसे अपना काम करते रहें और मूत्रको अपना काम करने दें। अुसका काम पूरा हो जाने पर सब ठीक हो जायगा। अर्थात् प्रयोगके दौरानमें जो नयी तकलीफ़ें खड़ी होंगी वे अपने-आप दूर हो जायेंगी।

प्रश्न – यह तो आपने बड़े आश्चर्यकी बात सुनायी। पीड़ा अपने-आप पैदा हो और अपने-आप शान्त हो जाय, यह तो सचमुच ही आश्चर्यकी बात है! कैसी है प्रकृतिकी लीला! क्या विज्ञान अिससे टक्कर ले सकता है? अिस स्थितिमें अुपवाससे रोगीकी शक्ति क्षीण नहीं होती? कहां तक टिक सकती है?

अुत्तर—केवल पानीके साथ अुपवास करनेसे रोगीकी अशक्ति बढ़ती है सही, परन्तु मूत्रके साथ अुपवास करनेसे रोगीकी अशक्ति प्रायः अधिक नहीं बढ़ती; क्योंकि मूत्रके पोषक क्षारोंसे शरीरकी शक्ति बनी रहती है। फिर भी कभी अति गंभीर और हठीले रोगोंमें अधिक अुपवास करनेकी ज़रूरत रहती है। अुस समय यदि रोगी अधिक अशक्तिका अनुभव करे तो अेक-साथ दस अुपवास करनेके बदले पांच-पांच अुपवास दो बार में करे और पंद्रह अुपवास अेक-साथ करनेके बदले तीन बारमें पांच-पांच अुपवास करे। बीचके दिनोंमें फल आदि का पथ्य आहार लेकर अपनी शक्ति टिकाये रखे। अैसा करनेसे अितना ही अंतर पड़ता है कि जो कार्यसिद्धि अेक-साथ दस दिनोंके अुपवासमें हो जाती वह दो या तीन बार पांच-पांच अुपवास करनेसे पंद्रह या बीस दिनमें होगी। यह तो मैंने शक्ति टिकाये रखकर अुपवास करनेकी दूसरी रीति बतायी। यथासंभव अैसे लंबे अुपवास कम ही किये जायें।

प्रश्न—आपने बहुत व्यावहारिक अुपाय बताकर मेरी अुलझनको दूर कर दिया। अब यह प्रश्न अुठता है कि अुपवास छोड़नेका संकल्प किया जाय, तब किस प्रकार छोड़ना चाहिये।

अुत्तर—यह व्यावहारिक अुपाय वस्तुतः मेरा नहीं है। हज़ारों बीमारोंकी बीमारियां दूर करनेके लिये जिसने यह प्रयोग कराया है अुसने स्वानुभवसे इस बातका निर्णय किया है और हमारा मार्गदर्शन किया है, जो सच्चा सिद्ध हुआ है। अिस पुस्तकमें दिये हुअे केसोंके विवरणसे आपको वह मार्गदर्शन मिल जायगा। अब आपने यह बहुत अच्छा प्रश्न पूछा कि अुपवास कैसे छोड़ा जाय। अिस अुपचारमें अुपवास छोड़ते समय और अुसके बाद खूब सावधान रहनेकी ज़रूरत है। यदि पूरी सावधनता न रखी गयी तो सारा परिश्रम व्यर्थ सिद्ध होगा। अिसलिये अुपवास छोड़ते समय और अुसके बादके दिनोंमें हमें अपने आहार-विहारमें बहुत संयम रखना होगा।

सामान्य रूपसे तो यह कहा जा सकता है कि जितने दिनके अुपवास किये हों, मूल आहार पर आनेमें कमसे कम अुतने दिन तो लगने ही चाहिये। परन्तु प्रयोग करनेवाला अपनी जठराग्नि और प्रकृतिको ध्यानमें रखकर अुन दिनोंमें कमी-बेशी भी कर सकता है। यह बात अवश्य ध्यानमें रखें कि अुपवास छोड़नेके बाद अेकदम असली खुराक पर आना खतरा मोल लेना है। सर्दीका मौसिम न हो तो मोसंबीका रस लेकर अुपवास छोड़ा जा सकता है। मधुमेहका रोगी न हो तो रातभर पानीमें रखी हुअी पांच-सात खजूरों या पंद्रह-बीस द्राक्षाओंको सुबह अुसी पानीमें मसलकर और छानकर अुनका रस लेना श्रेष्ठ है। दूसरी बार पपीतेके गूदेको अेकरस करके और आवश्यकताके अनुसार अुसमें नीबूका रस मिलाकर खाना चाहिये। फिर बारी-बारीसे चीकू आदि रसदार फल लेने चाहिये। दूसरे दिन फलोंके अतिरिक्त अेक बार पानी मिलाकर अुबाला हुआ दूध और दूसरी बार मलाअी निकाल कर केवल दूध लेना चाहिये। यह ध्यान रहे कि दूध पॅश्च्यूराअिज़्ड न हो और अुसमें दानेदार खांड़ न डाली जाय। फिर धीरे-धीरे मूंगका पतला और गाढ़ा रसा तथा खूब पका हुआ ढीला भात लिया जाय। जिसने सात अुपवास किये हों वह सात दिन तक अुपर्युक्त क्रमसे आहार लेनेके बाद मूल आहार पर आये। अुपवास छोड़नेके बाद खानेमें जल्दी की जायगी तो अुसका खराब परिणाम आनेकी पूरी संभावना है।

प्रश्न — आराम हो जानेके बाद रोगीको किस प्रकारका आहार लेना चाहिये? अिसके बारेमें आप क्या सूचित करते हैं?

अुत्तर — यह अेक जटिल प्रश्न है। क्योंकि सभी रोगोंका मूल अपथ्य आहार है। क्या खाना चाहिये, यह हमें मालूम नहीं है। कितना और किस प्रकार खाना चाहिये, अिसका भी हमें ज्ञान नहीं है। जहां बैठे वहीं खाना, और कोअी व्यक्ति जो कुछ भी दे दे, अुसे खा लेना, अैसी हमारी बुरी आदत है। आम तौर पर मेज़बान और

मेहमानकी मनोदशा कुछ अैसी होती है। मेज़बान यह समझता है कि अगर मेहमान से कुछ खानेके लिये आग्रह न किया गया तो वह अविवेकी समझा जायगा और मेहमान वैसे आग्रहकी ताकमें ही रहता है, अर्थात् तनिकसा आग्रह होते ही वह खानेकी तत्परता बता देता है। परन्तु हमारे मनमें यह दृढ निश्चय होना चाहिये कि हम अमुक निश्चित समय पर ही पथ्य आहार करेंगे और लज्जा या आग्रहके वश नहीं होंगे — फिर चाहे हम किसी रईसके मेहमान ही क्यों न हों। हमारा 'न' अितना स्पष्ट और पक्का हो कि मेज़बानके दिलमें यह यक़ीन हो जाय कि 'न' शिष्टाचारका सूचक न होकर सचमुच खानेकी अनिच्छाका सूचक है। कअी व्यक्ति तो घर पर छककर भोजन कर लेनेके बाद भी होटल और रेस्तोरांमें मित्रोंके साथ डट जाते हैं, तला हुआ मसालेदार नाश्ता अुड़ाते हैं और ठंडे खाद्य और पेय डकारते जाते हैं। यह सब खराब आदतें हैं। जो अपने स्वास्थ्यकी रक्षा करना चाहते हैं अुन्हें अैसी खराब आदतोंसे बचना चाहिये।

प्रश्न — यह तो आपने सर्वसामान्य बात बतायी। यह भी सूचित करें कि अिस प्रयोगके करनेवाला कौनसा आहार ले और कौनसे आहार का त्याग करे?

अुत्तर — मैं आहारके सम्बन्धमें कुछ विशेष अधिकारके साथ तो नहीं कह सकता हूं। परन्तु गांधीजीने मुझे यह सिखाया है कि पेट मांगे वह खाना, जीभ मांगे वह नहीं खाना। "जिसने अिंद्रियां जीत लीं अुसने सारा संसार जीत लिया," अिस सूत्रके साथ गांधीजीने यह सूत्र और जोड़ दिया था — "जिसने जिह्वा जीत ली अुसने सभी अिंद्रियां जीत लीं।" अर्थात् जिसने जिह्वा जीत ली अुसने सारा जगत् जीत लिया। अिस सूत्रका आशय हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। फिर भी स्पष्टताके लिये यों कहा जा सकता है कि यथासंभव स्टार्चवाला आहार कम लेना चाहिये। ताज़ी शाकभाजी और अपने प्रदेशमें होनेवाले फल आवश्यकताके अनुसार लेने चाहिये। दालों

और अुनसे बने हुअे खाद्योंके अुपयोगमें संयम रखना चाहिये। भोजन सोनेसे दो-तीन घंटे पहले कर लिया जाय तो पचनेमें सरलता होती है। जेलमें अेक नियम बहुत ज़रूरी था — "कम खाना और ग़म खाना।" यह नियम बाहरके लिये भी अुतना ही ज़रूरी है। और विशेषतः अिस अुपचारमें निम्नलिखित वस्तुअें तो सदाके लिये छोड़ ही देनी चाहिये :—

१. दानेदार सफ़ेद खांड और अुसका बूरा। (२) मैदा और अुससे बनी हुअी चीज़ें, जैसे डबल रोटी, मिठाअी आदि। (३) पॅश्च्यूराअिज़्ड दूध। (४) मशीनसे पॉलिश किये हुअे चावल। (हाथकुटे चावलका अुपयोग करें।) (५) तम्बाकूके खाने, पीने, सूंघने आदिका व्यसन और किसी भी नशीली चीज़ पीनेका व्यसन। (६) डिब्बे या बोतलमें बन्द किये हुअे खाद्य अेवं पेय पदार्थ — फल, जूस आदि। (७) वनस्पति घी।

आहारके बारेमें गुजरातकी जनता बड़ी चटोरी मालूम होती है। अिसीलिये अुसकी शारीरिक शक्ति दिन-प्रति-दिन क्षीण होती जाती है और शरीरमें रोग बढ़ते जा रहे हैं। अिसलिये अब अिस बातका ज़ोरोंसे प्रचार होना चाहिये कि सभी घरोंमें और होटलोंमें अेवं सार्वजनिक भोजनालयोंमें निश्चित किया हुआ सात्त्विक अेवं पथ्य-कारक भोजन बनाया जाय। मुझे आशा है कि आहार-शास्त्री वैसे प्रचारके लिये भरसक प्रयत्न करेंगे।

प्रश्न — मेरी अेक शंका और रह गयी है। आपने शरीरके स्वास्थ्यके बारेमें कहा और स्वास्थ्य प्राप्त करनेका साधन भी बताया। परन्तु आंख, नाक और कान की बीमारीके लिये मूत्रका अुपयोग किस तरह करना चाहिये?

अुत्तर — जो वस्तु शरीरके लिये हितकर है वह अुसके अंगोपांगोंके लिये हितकर होती ही है। आंख, कान, नाक, दांत आदि सभी शरीरके अविभाज्य अंग हैं। कोअी भी रोग सीधा आंख या कानका नहीं होता। दूसरे रोगोंकी भांति शरीरके बिगड़नेसे आंख या कानके रोग

पैदा होते हैं। कअी डाक्टर अमुक अंगोंके विशेषज्ञ (स्पॅशॅलिस्ट) बनकर आते हैं। वे यदि अुस खास अंगका अिलाज सारे शरीरकी अवगणना करके करने जायें तो अुसमें निष्फल सिद्ध होंगे या शरीरको प्राय: बड़े खतरेमें डाल देंगे। अिसलिये काला मोतिया, सफ़ेद मोतिया, बहरापन या कानका पक जाना; अैसे सब रोग शरीरकी अस्वस्थतासे पैदा होते हैं और शरीरकी अस्वस्थता दूर होते ही मिट जाते हैं। अत: आंख, कान, नाक, या चमड़ीके रोगोंका अुपचार भी वही है जो पहले बताया जा चुका है। अिस पुस्तकमें आंख और कानके कुछ केस भी अैसे मिल जायेंगे कि जो अुसी साधनसे ठीक हो गये हैं।

प्रश्न — मुझे लगता है कि अब कोअी खास बात पूछनेकी नहीं रही। फिर भी अन्तमें अेक बात पूछ ही लेता हूं। क्या आपको विश्वास है कि लोग अिस कल्याणकारी मूत्रचिकित्साको अपना लेंगे? और अिस ज़मानेमें जिसकी जड़ें पातालमें पहुंची हैं, अुस अॅलोपैथी चिकित्साके नागपाशसे लोग छुटकारा पा सकेंगे?

अुत्तर — मुझे अिसकी चिंता नहीं है। मेरा यह पेशा नहीं है, व्यापार या व्यवसाय नहीं है। मुझे जो सत्य अकस्मात् मिला है अुसे मैंने पीडित जनताके सामने प्रस्तुत किया है। मुझे पीडासे छुटकारा पाना होगा। और मुझे अिस अुपचारमें श्रद्धा होगी तो मैं अिसका अुपयोग करूंगा। दूसरोंको श्रद्धा नहीं होगी तो वे नहीं करेंगे। अधिक दु:ख अुठाकर जब अुनमें श्रद्धा पैदा होगी तब वे यह अुपचार करेंगे। अिस बारेमें मुझे हाय-तोबा करनेकी क्या ज़रूरत? जिसे ग़रज़ हो, जिसे पीडासे छुटकारा पाना हो, जो प्रत्येक अुपाय करके निष्फल अेवं निराश हो चुका हो, अुसके लिये यही अेक अन्तिम अुपाय रह जाता है। अिसे आज़माना हो तो वह अपने-आपको खतरेमें डालकर भी करे। मैं कहां किसी से कहने जाता हूं कि आप यह प्रयोग कीजिये। मुझे यह प्रयोग अच्छा लगा और अिससे लाभ हुआ। मैं मानता हूं कि दूसरोंको भी अिससे लाभ होगा। मैं तो यह स्पष्ट कहता

हूं कि जिसे यह अुपचार करना हो वह हज़ार बार सोच समझकर अपनी ग़रज़से करे। पीडा और पैसेकी लूटसे बचना हो तो लोग मेरी बात आज़मा कर देखें। फिर भी मैं सभीसे आग्रहपूर्वक अितना तो कहता हूं कि कृपा करके सरसरी और अधूरा प्रयोग या अुपचार न करें। परन्तु निर्दिष्ट सूचनाओं अेवं मर्यादाओंके अनुसार शास्त्रीय ढंगसे करें। अैसा नहीं करेंगे तो आपकी निष्फलता अिस संपूर्ण चिकित्साको बदनाम करेगी। जो व्यक्ति मूत्रप्रयोगसे अपना अिलाज करना चाहता है वह यह न मान बैठे कि अुसे खान-पान और रहन-सहनमें स्वच्छंदताका परवाना मिल गया है।

अिस चिकित्सामें अभी बहुत अन्वेषणकी ज़रूरत है। अिसका अुपयोग करनेकी विस्मृत विधियोंको खोजना है और अनुभवके आधार पर नयी विधियां तैयार करनी हैं। अिस कार्यके सिद्ध होनेमें काफ़ी समय लग जायगा। फिर कहीं जाकर यह अुपचार सचमुच शास्त्रीय बनेगा। तभी आजकी शंकाअें-प्रतिशंकाअें दूर हो सकेंगी। मुझे तो आशा है कि यह अुपचार व्यापक बनेगा। मैं यह नहीं चाहता हूं कि अिस अुपचारके दवाख़ाने खोले जायें और अुनमें काम करनेवाले चिकित्सक मोटरें दौड़ाते फिरें। परन्तु मेरी यह अभिलाषा अवश्य है कि घर-घर वृद्ध दादियां अपने पौत्र-पौत्रियोंके स्वास्थ्यको पूर्ववत् अिस अमूल्य अेवं अचूक साधनसे सुधारने अेवं सुरक्षित रखने लग जायें। प्रभु मेरी अिस अभिलाषाको पूर्ण करें तो मृत्युसे पहले मुझे अपना फ़र्ज़ अदा करनेका आत्मसंतोष होगा। प्रभु सबका कल्याण करें।

अभिप्राय

१. अपार नैतिक साहस तथा प्रबल सेवाभावनाके लिये मैं सर्व-प्रथम श्री रावजीभाअीका अभिनंदन करता हूं।

२. अुन्होंने कहा है कि यह प्रयोग कोअी 'पैथी" नहीं है, किन्तु स्वास्थ्यका साधन है। फिर भी प्रयोग हुअे हैं और वे सफल भी हुअे हैं, अिससे अिनकार नहीं किया जा सकता।

३. प्रयोग आगे बढ़ाना ही चाहिये।

४. चमड़ीके रोगोंके लिये तो बड़े पैमाने पर अुसका अुपयोग हो सकता है। अिसी प्रकार कफ और दमेके रोगीके लिये भी वह अुपयुक्त प्रतीत होता है।

५. विशेष अनुसंधान होना चाहिये। और लोगोंके लिये मार्गदर्शक साहित्य प्रकाशित होना चाहिये।

६. अेक बात पर ध्यान देना है। अिस प्रयोगका चित्तपर क्या असर होता है? किसी भी प्रयोगका सात्त्विक, राजसी और तामसी असर होता ही है। अिसका निरीक्षण तो प्रयोगकर्ताको करना है। परन्तु मैं अिसे अत्यन्त महत्त्वकी बात समझता हूं।

अु. न. ढेबर